नही चल सकता, तो इसका कारण सभवत यह है कि वह भिन्न ध्वनियां को नही सुन पाता। उसे उस सगीत तक जाने दो, जिसे वह सुन रहा है चाहे कितनी ही दूर क्या न हो। जब उन्होंने भौतिकवाद पर प्रहार किया तो एक ऐसे रहस्यवादी के दृष्टिकोण से जिसने भगवदगीता पढ़ी थी। उन्होंने सादगी का पक्ष लिया। उनका विश्वास था कि आत्मा की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए धन नही चाहिए। उनका आशय था मनुष्य को उन चीजों का मूल्य नहीं चुकाना चाहिए, जो उसके लिए आवश्यक नही हैं। उसे उन चीजों के लिए अपने को नही खपाना चाहिए जिन्हें वह वास्तव में नहीं चाहता है। प्रकृति विषयक उनकी कृतियां में विश्वव्यापी आत्मीयता है। एक प्रकृति प्रेमी होने के नाते वे एक मानव प्रेमी भी थे।

थोरो भारतीय संस्कृति के अनन्य भक्त थे। उन्होंने वेद, महाभारत भगवद्गीता मनुस्मृति आदि कई भारतीय धर्मग्रंथों का गंभीर अध्ययन किया था और उनसे प्रेरणा प्राप्त की थी। उनके पुस्तकालय में भारतीय दर्शन संबंधी अनेक पुस्तकें थीं। उन्होंने पूर्व के अन्य कई देशों के धर्मग्रंथों का भी अध्ययन किया था और उनकी शिक्षाओं को पूरी आस्था के साथ अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया था। थोरो सच्चे अर्थ में एक मनीषी संत थे। जीवन की भागदौड़ में उनकी यह अमर रचना हमारे लिए एक दिव्य प्रकाशस्तंभ सिद्ध हो सकती है।

पथ की खोज

अर्थ व्यवस्था

ये कुछ पृष्ठ जिन दिनों लिखे गए थे उन दिनों मैं एक जंगल में अकेला रहता था। मैसाचूसेट्स के कानकार्ड प्रदेश में वाल्डेन सरोवर के तट पर अपने हाथों से मैंने एक घर बना लिया था। इस घर के चारों ओर मील-मील तक कोई बस्ती नहीं थी। वहां मैं सिर्फ अपने हाथों के श्रम से अपना पेट पालता था। इस प्रकार दो साल और दो महीने मैं वहां रहा। अब शायद कुछ दिनों के लिए सभ्य जीवन में मैं फिर लौट आया हूं।

वापसी पर मेरे नगरवालों ने मेरी जीवन विधि के बारे में बार-बार कर पूछताछ की है। कुछ लोग इसे व्यक्तिगत जिज्ञासा की घटना कह सकते हैं पर मुझे तो यह वैसा बिलकुल नहीं लगती। मुझे तो परिस्थितियों को देखते हुए ऐसी पूछताछ बड़ी ही स्वाभाविक और प्रसंगानुकूल मालूम पड़ती है। कुछ ने पूछा है मैंने वहां वन में क्या खाया? मुझे अकेलापन महसूस हुआ या नहीं? क्या मुझे डर नहीं लगा? इसी प्रकार के अनेकों प्रश्न। अन्य कुछ ने जानना चाहा है कि वहां अपनी आय का कितना भाग मैं दान में देता था। कुछ ऐसों ने जिनके घर में बाल-बच्चे हैं पूछा है कि मैं कितने गरीब बच्चों का पालन-पोषण करता था। इन प्रश्नों में से कुछ के उत्तर मैं इस पुस्तक में दे रहा हूं। कुछ पाठकों को मेरे इन व्यक्तिगत बातों में विशेष रुचि नहीं होगी। मैं ऐसे सज्जनों से पहले ही क्षमा मांग लेता हूं। अधिकतर पुस्तकों में लेखक अपने बारे में कुछ नहीं कहता। उनमें मैं या उत्तम पुरुष का उपयोग नहीं किया जाता। पर प्रस्तुत पुस्तक में मैं अपने बारे में बहुत कुछ कहूंगा और यही इसकी विशेषता होगी। हम आम तौर से यह भूल जाते हैं कि पुस्तक में जो कुछ कहा जाता है वह वास्तव में लेखक द्वारा ही कहा जाता है। यदि मैं किसी अन्य को उतना ही अच्छी तरह से जानता होता जितना कि अपने आपको जानता हूं तो मैं अपने बारे में इतनी बात न कहता।

मेरा तो दुर्भाग्य है कि मेरा अनुभव बहुत संकुचित है और मैं अपने व्यक्तिगत जीवन के दायरे तक सीमित हूं। पर मेरी हर लेखक से पहली और अन्तिम मांग यही रहती है कि वह अपने निजी जीवन का सरल, सीधा और सच्चा ब्योरा मुझे दे। वह दूसरों के बारे में जो लिखता है उसे पढ़कर मुझे सन्तोष नहीं मिलता। किसी दूर देश में बैठकर लेखक किसी सगे-सम्बन्धी को जैसी निजी बातें लिखेगा वैसे ही निजीपन की मुझे चाह रहती है। जिस लेखक ने अपना जीवन ईमानदारी से जिया है वह मेरे लिए तो एक दूरदेश के वासी की तरह ही उत्सुकता का पात्र है। अपने निजी जीवन को ध्यान में रखकर ही मुझे कहना पड़ता है कि ये कुछ पृष्ठ शायद गरीब विद्यार्थियों के लिए खास तौर पर लिखे गए हैं। मेरे शेष पाठक उन बातों को ग्रहण कर लें जो उनसे सम्बन्ध रखती हों। मेरा विश्वास है कि कोई भी व्यक्ति इस विषय की सीमा को इतना अधिक फैलाने की कोशिश नहीं करेगा कि एक तंग कोट की तरह इसकी सीवन ही उधड़ जाए क्योंकि यह कोट उसीके पास ठीक तरह चलेगा जिसपर वह फिट होगा।

मैं यहां अजनबियों के चीनियों या सैंडविच (हवाई) द्वीप के वासियों के बारे में कुछ कहने नहीं बैठा हूं। मैं तो आप सबके बारे में—आप जो इन पृष्ठों को पढ़ रहे हैं आप, जो न्यूइंगलैंड में रहते हैं—कुछ कहना चाहता हूं। मैं आपसे आपकी दशा के बारे में खासकर आपकी सांसारिक परिस्थिति और नगर की स्थिति के बारे में कुछ बातें करने को उत्सुक हूं। यह दशा क्या है? क्या जरूरी है कि यह इतनी ही खराब रहे? इसमें उचित सुधार किया जा सकता है या नहीं? कानकार्ड में मैं बहुत काफी घूमा हूं। मुझे लगा है दुकानों में, दफ्तरों में, खेतों में, सब कहीं यहां के लोग हजार विचित्र तरीकों में जुटे हैं जैसे एक तपस्या कर रहे हों। मैंने ब्राह्मणों की तपश्चर्या के बारे में बहुत कुछ सुन रखा है। वे अपने चारों ओर आग जलाते हैं और बीच में बैठकर सूर्य पर आंखें गड़ा लेते हैं। सिर नीचा करके आग की लपटों पर उलटा लटक जाते हैं। गर्दन उठाकर ऊपर आकाश की ओर इतने लम्बे समय तक देखते चले जाते हैं कि गर्दन का स्वाभाविक स्थिति में लौट आना असम्भव-सा हो जाता है और मुड़ी हुई गर्दन में से तरल पदार्थ के सिवाय कुछ भी पेट तक नहीं पहुंच पाता। वे स्वयं को जंजीरों से जकड़कर आयु भर के लिए पेड़ की जड़ों से बांध लेते हैं। वे दण्डवत् प्रणाम करते हुए रेंग रेंगकर बड़े-बड़े प्रदेशों की परिक्रमाएं कर डालते हैं। और स्तम्भ की चोटी पर एक टांग से खड़े रहते हैं।

पर जान-बूझकर किए गए थे तब भी शायद ही उतने अजीब और अविश्वसनीय होंगे जितने वे सब दृश्य हैं जिन्हें मैं यहाँ अपने नगर में प्रतिदिन देखता हूँ। हरक्युलीज़[1] ने जो बारह पराक्रम किए थे, वे तो उनकी तुलना में कुछ भी नहीं जो मेरे नगरवासी नित्य करते हैं। वे पराक्रम बारह थे उनका अन्त निश्चित था। पर ये लोग तो एक भी दैत्य को पकड़ या मारकर अपने एक भी पराक्रम की पूरी परिणति तक नहीं पहुँचा सके हैं। इनका आयोलअस[2] जैसा कोई मित्र भी नहीं है जो दहकते हुए लाल लोहे से हाइड्रा[3] के नित नये उगनेवाले सिरों की जड़ को जला डाले। मेरे ये पड़ोसी एक सिर कुचलते हैं दो उग आते हैं।

मैं अपने नगरवासी इन नवयुवकों को देखता हूँ। इनका दुर्भाग्य यहाँ तो है कि इन्हें घर, कोठार, पशु और कृषि-यन्त्र इन्हें विरासत में मिले हैं। इन सबको पाना तो आसान है, इनसे छुटकारा पाना आसान नहीं है। अच्छा होता यदि ये लोग खुले चरागाहों में पैदा हुए होते और किसी मादा भेड़िये का दूध पीकर पलते। तब शायद ये अधिक स्पष्ट देख-समझ सकते कि किस धरती पर इन्हें श्रम करना पड़ेगा। धरती का गुलाम इन्हें किसने बना दिया है? ये क्यों साठ एकड़ ज़मीन को खा डालने पर तुले हैं जबकि आदमी के भाग्य में चोंच भर गर्द के सिवाय और कुछ भी नहीं है? क्यों ये पैदा होते ही अपनी कब्रें खोदना आरम्भ कर देते हैं? इसीलिए तो न कि इन्हें मनुष्य बनकर जीना है और इसलिए इन सब चीज़ों को सिर पर उठाए फिरना है जिससे यथाशक्ति सम्पन्न बना जा सके। कितनी ही तथाकथित अमर पर बिचारी आत्माएँ मुझे मिली हैं जिन्हें सम्पत्ति के इस भार ने लगभग कुचल डाला है जिनका दम घुट रहा है जो जीवन की सड़क पर रेंग रही हैं, जो अपने कंधों पर पचहत्तर फुट लम्बे और चालीस फुट चौड़े कोठार का कभी साफ न की गई गन्दी घुड़साल का सौ एकड़ ज़मीन का जोतने-बोने का, चरागाह का, और एक वनस्थली का बोझ ढो रही हैं। यह अनावश्यक अभिशाप जिन्हें विरासत में नहीं मिला है वे भूमिहीन लोग तो चार फुट की इस मांस की लोथ को साधारण श्रम से ही पाल लेते हैं।

---

[1] ग्रीस का सर्वोत्तम वीर पुरुष जिसे अपने स्वामी से मुक्ति पाने के लिए बारह पराक्रम करने पड़े थे।

[2] ग्रीक पुराणों का एक वीर पुरुष

[3] पौराणिक नर-दैत्य जिसके अनेक सिर कटने पर फिर उग आते थे।

लोग एक भ्रम के वश होकर मेहनत करते हैं। मानव का अधिकांश कुछ ही समय में खाद बनकर धरती में मिल जाता है। आवश्यकता जो शायद भाग्य का ही प्रचलित नाम है मानव का जाल रचता है और जमा कि एक प्राचीन पोथी में कहा गया है वह खजाने जमा करता है जिन्हें अन्त में दीमक खा डालती है, जंग लग जाता है और चोर उठा ले जाते हैं। और पहले नहीं, तो जीवन के अन्त में, मानव को पता चलता है कि उसने मूर्खताओं में ही ज़िंदगी गुज़ार डाली है। यही भाव एक प्राचीन पुस्तक में भी व्यक्त किया गया है। ग्रीक पुराणों में कथा आती है कि डयूकेलियन और पीरा[1] पत्थर उठा उठाकर अपने सिरों के ऊपर से बिन देखे पीछे फेंकते रहे और वे पत्थर जीवित मानवों का आकार ग्रहण करते रहे। यही बात रेले ने अपने मधुर स्वर में गाकर बताई है

तब से पत्थर दिल हम कष्ट-यातना सहते।

'पत्थर से तन बना हमारा सहज मानते, कहते।

एक दोषपूर्ण देव-वाक्य पर अंधे बनकर चलनेवाले उन दोनों के बारे में क्या कहा जाए जो अपने सिरों पर से बिना देखे पत्थर पीछे फेंकते गए और यह नहीं सोचा कि इसका क्या परिणाम होगा।

यह देश (अमरीका) तुलना में कइयों से अधिक उन्मुक्त है पर यहां भी अधिकतर मानव अज्ञान और भ्रम के वशीभूत होकर जीवन की झूठी चिन्ताओं और अनावश्यक तुच्छ व्यस्तताओं में उलझे हैं। जीवन-तरु के श्रेष्ठतम फल वे कभी तोड नहीं सकते। अत्यधिक श्रम के कारण उनकी उंगलियां इतना बडौल हो गई हैं, वे इतनी कांपती हैं कि उनसे वह फल टूट नहीं सकता। असल में रात दिन हाड़ तोड़नेवाले मानव के पास जीवन की सच्ची समग्रता प्राप्त करने की फुरसत नहीं रहती। वह अपने साथी मानवों से एक भरपूर मानव के रूप में व्यवहार कर ही नहीं सकता। ऐसा करने से उसके श्रम का बाज़ार मूल्य जो घट जाएगा। एक मशीन से आगे कुछ और बनने का समय ही उसके पास नहीं होता। जिस श्रम श्रम पर अपना ज्ञान दिखाना पडता हो उसे अपने अज्ञान की अनुभूति कैसे हो सकती है? यद्यपि ऐसी अनुभूति उसके विकास के लिए बहुत ज़रूरी है। ऐसे व्यक्ति को पहले हम कुछ समय तक उदारतापूर्वक मुफ्त खिलाए पिलाए, कपड़े

[1] ग्रीक पुराणों की एक प्रसिद्ध कथा

पहनाए अपने निश्छल स्नेह से उसे सींचें तभी हम उसकी सही परख कर सकते हैं। हमारे स्वभाव के सर्वोत्तम गुण फला पर आए उस जीवन की तरह होते हैं जिसे उठा धरी म पूरी नजाकत बरतकर ही सुरक्षित रखा जा सकता है। पर हम स्वय के अथवा एक दूसरे के साथ वसी कोमलता कभी नहा वरतते।

आपम बहुत-से लोग गरीब हैं। गुजारा भी दूभर है और कभी-कभी तो कहिए, सास लेना भी कठिन हो जाता है। मुझे स देह नही कि आपम से कुछ जो इस पुस्तक का पढ रहे हैं, अपने खाए हुए भोजन के, अपने तेजी स फटते और टूटते अथवा फट चुके और टूट चुके कोट और जूत के पैसे चुकाने म भी असमर्थ हैं। आप उधार माग हुए अथवा चुराए हुए समय म इन पृष्ठों को पढ़ रहे हैं और इस प्रकार अपने मालिक को ठग रहे हैं। अनुभव ने मेरी दृष्टि का बहुत तेज बना दिया है। मुझे साफ दीख रहा है कि आपम से बहुत-से बडा ही ओछा और धूर्तता-पूर्ण जीवन बिता रहे हैं। आप हमेशा किसी न किसी ताक म रहते हैं कभी तो किसी कारोबार म घुसने की, और कभी किसी ऋण से छुटकारा पाने की। ऋण एक बहुत पुराना पाप है। लातीनी लोगों ने इसे 'पराया पीतल' नाम दे रखा था, क्योंकि उनके कुछ सिक्के पीतल स बनाए जाते थे। आप जी रहे हैं और मर रहे हैं और इस पराये पीतल के नीचे दफनाए जा रहे हैं। ऋण चुकाने का वचन देते हैं, कल का वचन देते हैं और आज दीवालिया बनकर मर जाते हैं। आप किसीकी कृपा पाना चाहते हैं चुगी बचाना चाहते हैं। उन अपराधों को छोडकर जो आपको जेल की हवा खिलाए स्वार्थसिद्धि के लिए आप सभी तरीके अपनाते हैं। आप झूठ बोलते हैं, खुशामद करते हैं झूठे मत देते हैं शिष्टता का चोला ओढते हैं, हलकी निस्सार उदारता का भ्रमजाल तानते हैं। हर कोशिश करते हैं कि आपका पडोसी आपसे अपने जूते माफ करा ले अपनी टोपी या कोट सिलवा ले, अपनी गाडी ठीक करा ले, अथवा आपसे कुछ सामान ही मगवा ले। और आप अपने-आपको बीमार बना लेते हैं जिससे बीमारी के समय के लिए कुछ जमा कर सकें कुछ जिसे अपनी पुरानी तिजोरी म आप सहेज सकें पलस्तर के पीछे या ईंटों के नीचे कहीं भी छिपा या दबा सकें। और आप चिन्ता नहीं करते कि यह राशि कितनी कम है या कितनी अधिक।

कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि हम इतने ओछे कम बन जाते हैं। नीग्रो लोगों को गुलाम बनाने की प्रथा कुत्सित है। पर दरअसल वह अमरीकी नही,

विदेशी है। उसीकी भाषा मे कहू तो कह सकता हू कि अमरीका के उत्तरी और दक्षिणी दोनो खड बड ही प्रबल और घृन मालिको के गुलाम हैं। दक्षिण का ओवरसीयर सख्त होना है उत्तर का उससे भी सख्त पर स्वय गुलाम बनकर खुद अपना ही ओवरसीयर बन जाना तो भयकरतम है। तुम मानव म देवत्व की बातें करते हो। राजमार्ग पर चलते उस गाडीवान को तो देखो जो रात दिन सफर करके मडी की ओर बढा जा रहा है। क्या कही उसमे देवत्व दीख पडता है ? उसका सबसे बडा कर्तव्य यही है न कि वह अपने घोडो को चारा पानी देता रहे ? माल ढोने के इस काम के सामने अपने भविष्य की कितनी चिंता उसे है ? क्या वह स्वय अपना गुलाम नही है ? देवत्व और अमरत्व का कितना अश है उसम ? देखो तो कैसे वह दुबकता है और पछ हिलाता है और दिन भर अकारण ही उसका दम सूखता रहता है। असल म न उसमे देवत्व है न अमरत्व। वह तो अपने बारे म अपनी निज की राय का कैदी और दास है। और यह स्थिति अपने ही कामो से उसने प्राप्त की है। अपनी निजी राय की तुलना म दूसरे लोगो की राय दुर्बल और कम निरकुश हुआ करती है। यह मानव का अपने बारे म निजी मत ही है जो उसके भाग्य को गढता है और इगित स उसके बारे म भन कुछ जतला भी देता है। जहा भावना और कल्पना का राज्य है उन वेस्ट इण्डियाई प्रदेशो के लिए भी आत्ममुक्ति का आग्रह ! कौन-सा विल्बरफोर्स[१] है जो वहा के लोगो को उन्मुक्त और उत्तीर्ण बना दे ? वहा की कुलीन स्त्रियो को देखिए। मौत के दिन को नजरदाज करने के लिए वे केश प्रसाधन की गद्दिया बुनने म व्यस्त हैं। इससे क्या यह प्रकट होता है कि इन्हें अपने भविष्य म बहुत गहरी निष्ठा है ? शायद काल की गति को क्षुण्ण किए बिना भी समय बरबाद किया जा सकता है।

अधिकतर लोग एक मौन निराशा स उन्मत्त जीवन बिताते हैं। जिसे वैराग्य कहते हैं वह तो निश्चय ही निराशा है। एक हताश नगर म एक हताश गाव मे आप जाते हैं। वहा ऊदबिलावो और छछून्दरो जसी हलचल और वीरता आपको देखने को मिलेगी। मानव जाति के खेलो और मनोरजनो म भी एक रूढ पर अचेन किस्म की निराशा छिपी होती है। उनम वास्तविक आनन्द की प्राप्ति नहीं

१ विलियम विल्बरफोर्स (१७५९ स १८३३ तक) गुलामो के व्यापार को रोकने के लिए लडा। उसे १८०७ म सफलता मिली। फिर उसने गुलाम प्रथा की समाप्ति के लिए आन्दोलन आरम्भ किया।

होती, क्योंकि आनन्द तो काम के बाद ही मिलता है। पर उतावले होकर काम न करना ही विवेक की पहचान है।

सुकरात[1] द्वारा प्रस्तुत मानव-संबंधी प्रश्नोत्तरी की भाषा में सोचें तो प्रश्न उठते हैं—मानव का प्रधान लक्ष्य क्या है ? जीवन की सच्ची आवश्यकताएं उसके सही उपादान क्या हैं ? तब लगता है लोगों ने जान-बूझकर ही जीवन की यह सामान्य विधि चुनी, क्योंकि यही उसे सबसे अच्छी और उपयुक्त लगी। फिर भी वह ईमानदारी से यह सोचता है कि अन्य कोई विकल्प शेष नहीं है। लेकिन जाग्रत और स्वस्थ प्रकृति के लोग यह नहीं भूलते कि सूरज हर सुबह ताजा हो जाता है। कभी भी किसी भी अवस्था में अपने पूर्वाग्रहों को त्यागना व्यर्थ और समयातीत नहीं होता। विचार और क्रिया की पुरानी से पुरानी विधि भी सबूत के बिना सही नहीं मानी जानी चाहिए। जो सत्य आज हर किसी की जबान पर है, सहज स्वीकृति मानकर जिसे ध्यान में लाना भी आवश्यक नहीं समझा जाता वही कल असत्य साबित हो सकता है। वह विचार जिसे कुछ लोग खेतों पर उपजाऊ जल बरसानेवाले बादल जैसा उपयोगी समझते हैं वह धुएं का खाली गुबार भी निकल सकता है। पुराने लोग जिस काम को आपके वश से बाहर मानते हैं, कोशिश करके आप उसे ही कर डालते हैं और अपने वश का बना लेते हैं। पुराने लोगों ने पुराने काम किए, पर नया आदमी तो नये काम करेगा। प्राचीन मानव शायद आग को जलाए रखने के लिए ताजा ईंधन उपलब्ध करने में बहुत कुशल नहीं था, पर नया आदमी थोड़ी-सी सूखी लकड़ी भट्ठी में झोंकता है और विहग-गति से धरती का चक्कर काट आने की समर्थता प्राप्त कर लेता है। और इस प्रकार शायद वह अतीत का विच्छेद कर डालता है। वृद्धावस्था वह सब नहीं सिखा सकती जो जवानी सिखा सकती है क्योंकि वह कमाती कम है खोती अधिक है। मात्र दीर्घायु ने किसी विज्ञ पुरुष को चरम भूषा की शिक्षा दी हो, यह सन्देह का ही विषय है। वृद्धों के पास जवानों को देने के लिए व्यवहार की दृष्टि से कोई खास सलाह नहीं होती। उनका अपना अनुभव बहुत एकांगी होता है। वे स्वयं महसूस करते होंगे कि उनका जीवन, कुछ अप्रकट कारणों से, बहुत विफल रहा है। हां, यह हो सकता है कि कुछ बूढ़ों में वह निष्ठा बची हो जिससे सामने विफलता तुच्छ सिद्ध हो जाए और वे अपनी आयु

[1] यूनान का सुप्रसिद्ध दार्शनिक और ऋषि

की तुलना म कम बूढे लगें। मैं इस धरती पर तीस वष जी चुका हू, पर अभी तक अपने बडो से किसी मूल्यवान तत्पर सम्मति का एक अक्षर सुनना भी मुझे नसीब नही हुआ है। वे कुछ भी उपयोगी मुझे नही द सके हैं। शायद वे द ही नही सकत है। यह जीवन एक बडी प्रयोगशाला है। अभी मैं इसके सभी प्रयोग पूरे नही कर सका हू। पूवजो के प्रयोग मेरे किसी भी काम क नही हैं। यदि मैं कोई नया अनुभव कर पाता हू जो मुझे मेरी दृष्टि से मूल्यवान लगता है तो यह निश्चय है कि उसके बारे म बडो ने मुझे कुछ नहीं बताया है।

एक किसान मुझसे कहता है सिफ शाकाहार पर नही रहा जा सकता, क्योकि उसमे हड्डियो को मजबूत बनानेवाले तत्त्व नही होते।' यह किसान अपने शरीर के लिए अस्थिवधक तत्त्वो को प्राप्त करने म दिन का एक अश बडी निष्ठापूवक लगा देता है। मजा यह कि यह बात वह उन बलो को हाकते हुए कहता है जो हर प्रकार की रुकावटो के बावजूद शाकाहार से ही बनी अपनी हड्डियो स उस और उसके भारी हल को खीच लेते हैं। जीवन के कुछ क्षत्रो म जैसेकि असमथ और बीमारो क लिए कुछ चीज दरअसल अनिवाय होती हैं, वही चीजें कुछ अन्यो क लिए विलास का साधन हो सकती हैं और सम्भव है कि कुछ लोगो ने अभी उन चीजों का परिचय भी प्राप्त न किया हो।

कुछ लोग कहा करते हैं कि हमारे पूवज जीवन-पथ के सम्पूण विस्तार को जाच परख चुके हैं। उन्होने इसकी ऊचाइयो को नाप लिया है गहराइयो की थाह ले ली है। वे सभी बातो क बारे म तो नियम बना गए है। एवलिन के अनुसार 'सुलेमान'[1] निश्चित आदेश दे गया है कि पेडो के बीच कितना अन्तर छोडा जाए और रोम क दण्डाधिकारी यहा तक तय कर गए हैं कि इतनी बार पडोसी क बाग म जाकर जमीन पर गिरे हुए बलूत चुन लेने स अतिक्रमण का दोष आपपर नही लगेगा, बशर्ते कि फलो का इतना हिस्सा अपने पडोसी को आप द दें।' हिप्पोक्रेटीज[2] ने तो नाखून काटने तक क तरीके बता छोडे हैं और व भी ऐसे कि उगलिया एक दूसरे स छोटी-बडी न रह बराबर हो जाए। जीवन की सभी विविधताओ को जान लेन

---

1 इसराइल के राजा डेविड का पुत्र सुलेमान ९७० ई० पू० में गद्दी पर बैठा था। व० अपनी न्यायपरायणता और बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध है।

2 ४६० ई० पू० में जन्मा एक यूनानी वैद्य

और सभी भोगों को भोग लेने का मानव प्रयास, निस्सन्देह आदम जितना ही पुराना है। लेकिन कभी भी मानव-सामर्थ्य को पूरी तरह नापा नहीं जा सका। इसकी इतनी कम गहराई अभी तक थाही जा सकी है कि पहले के किन्हीं भी दृष्टान्तों के आधार पर यह निर्णय नहीं किया जा सकता कि मानव क्या कर सकता है और क्या नहीं। कितनी भी विफलताएं तुझे अब तक मिली हों, मेरे बच्चे, तू निराश मत हो। भला अधूरे कामों को पूरा करने का काम दूसरा कौन तुझे सौंपने आएगा?

हम हजारों किस्म के साधारण परीक्षणों से अपने जीवन को जांच-समझ सकते हैं। उदाहरणार्थ जो सूर्य हमारी सेम की फलियों को पकाता है वही तो इस धरती जैसे पता नहीं कितने भूमण्डलों को एकसाथ ही प्रकाशित करता है। अगर यह तथ्य मेरे ध्यान में रहा होता तो इससे कुछ गलतियां न होने दी होतीं। उस समय इस तथ्य के प्रकाश में अपनी समझ की गुड़ाई मैंने नहीं की थी। ये तारे कैसे आश्चर्यजनक त्रिकोणों के शीर्षबिन्दु हैं। निखिल विश्व के विभिन्न भुवनों में दूर दूर बैठे कितने विविध प्राणी एक ही क्षण में, एक ही सत्य की कामना कर रहे हैं। प्रकृति में और मानव जीवन में इतना ही नानात्व है जितना हमारे अगणित व्या-पारों में। कौन बताएगा कि एक जीवन दूसरे के भविष्य निर्माण में क्या योग दे सकता है? हमारे लिए इससे बड़ा चमत्कार और क्या हो सकता है कि हम एक क्षण के लिए ही सही दूसरे के अन्दर झांक लें। एक घंटे में तो हम एक लोक के सभी युगों का नहीं-नहीं युगों-युगों के अनन्त लोकों का अनुभव प्राप्त कर लेंगे। इतिहास काव्य पुराण—मैं तो कहता हूं पुस्तक-ज्ञान में लिखी कोई भी परानुभूति उतनी ज्ञानवर्द्धक और चौंका देनेवाली नहीं हो सकती जितनी कि यह स्वानुभूति।

मेरे पड़ोसी जिन बातों को अच्छा बताते हैं उनमें से अधिकतर को मैं दिल से बुरा मानता हूं। और यदि मुझे कभी पछताना पड़ता है तो तभी जब मैं कोई तथाकथित अच्छी बात कर बैठता हूं। तब मैं सोच उठता हूं, पता नहीं कौन भूत मेरे सिर पर आया था कि मैं वैसा अच्छा काम कर बैठा! हे वृद्ध-प्रवर! मैं जानता हूं सत्तर साल का जीवन तुमने भोगा है और खास किस्म के सम्मान से भी तुम वंचित नहीं रहे हो। पर कितनी भी समझदारी की बातें तुम बघारो, मेरी आत्मा में तो एक ही दुर्निवार पुकार उठती है कि मैं उनसे दूर रहूं। एक पीढ़ी दूसरे के उद्यम-प्रयत्नों को धंसे हुए जलयानों की तरह छोड़कर आगे बढ़ जाती है।

मेरा विचार है जितने हम हैं उससे काफी अधिक आस्थावान हम निश्चिन्तता में बने रह सकते हैं। ईमानदारी से जितनी देख-रेख हम किसी अन्य की करें ठीक उतनी ही अपनी कम कर दें। हमारी कमजोरी के साथ भी प्रकृति उतनी ही अनुकूलित हो जाती है जितनी हमारी शक्ति के साथ। कुछ लोग लगातार इतने अधिक चिंताकुल रहते हैं और अपने पर जोर डालते हैं कि यह उनके लिए लगभग एक विशेष प्रकार का असाध्य रोग हो जाता है। हम स्वभावतः अपने किए काम के महत्त्व को बहुत बढ़ा चढ़ाकर दिखाते हैं। फिर भी कितना कुछ हमसे अनकिया रह जाता है! और कहीं हम बीमार पड़ जाते तब क्या होता? कितने सतर्क हम रहते हैं? हमारा दृढ़ निश्चय रहता कि जहां तक हो सके आस्था का सहारा न लिया जाए। दिन भर हम सन्नद्ध रहते हैं रात में बेमन से हम भगवान को याद करते हैं, और अपने को अनिश्चितताओं की गोदी में छोड़ देते हैं। ऐसे ही पूरे और खरे ढंग से जीते चले जाने को हम विवश हैं। अपने जीवन को हम प्रतिष्ठा देते हैं और परिवर्तन की किसी भी सम्भावना को अस्वीकार कर देते हैं। हम घोषणा करते हैं कि केवल यही एक मार्ग है। पर एक केन्द्र से जितने अर्द्धव्यास खींचे जा सकते हैं उतने ही मार्ग मौजूद हैं। सोचें तो हर परिवर्तन एक चमत्कार है। लेकिन वह ऐसा चमत्कार है जो हर क्षण घट रहा है। कनफ्यूशस[1] ने कहा है 'हम जानते हैं कि हम यह जानते हैं और हम नहीं जानते कि हम यह नहीं जानते—यह जानना ही सच्चा जानना है।' यदि एक भी व्यक्ति कल्पना के तथ्य को अपनी धारणा का तथ्य बना पाता है तो कभी न कभी सभी मानव इसी आधार पर अपने जीवन का निर्माण कर सकेंगे यह मैं साफ देख रहा हूं।

एक पल सोचें तो कि जिन परेशानियों और चिन्ताओं का मैंने ऊपर जिक्र किया है उनमें से अधिकतर किन बातों को लेकर पैदा होती हैं, और यह भी कि इन कष्टों को उठाना अथवा कम से कम इतना सतर्क रहना हमारे लिए कितनी दूर तक अनिवार्य है। यदि हम जानना चाहते हैं कि जीवन की मोटी आवश्यकताएं क्या हैं और उन्हें पूरा करने के लिए क्या-क्या तरीके अपनाए गए हैं तो एक आदिम और सीमान्तक जीवन का अनुभव प्राप्त करना थोड़ा लाभदायक सिद्ध हो सकेगा, भले ही ऐसा अनुभव हम एक बहिर्मुख सभ्यता के बीच रहकर प्राप्त करना पड़े।

---

१ ५५१ ई० पू० से ४७९ ई० पू० तक वर्तमान चीन का महान दार्शनिक सन्त

यह भी हो सकता है कि हम दुकानदारों के पुराने बहीखाता को टटोलें और देखें कि उनकी दुकानों में कौन सी चीज़ें सबसे अधिक खरीदी गई हैं किन चीज़ों को लोगों ने घर में जमा करना पसन्द किया है अथवा किराने की सबसे अधिक प्रचलित वस्तुएं कौन-सी हैं। युगों की उन्नति मानव-अस्तित्व के अनिवार्य नियमों पर बहुत थोड़ा ही असर डाल सकी है। शायद हमारे और हमारे पूर्वजों के अस्थि-पंजरों में कोई विभिन्नता नहीं खोजी जा सकती।

जीवन की आवश्यकताएं, इन शब्दों से मेरा क्या अभिप्राय है? जिन चीज़ों का मनुष्य ने अपने परिश्रम से उपलब्ध किया है उन सबमें से जो चीज़ें आदि से ही अथवा लगातार प्रयोग में आने के कारण मानव-जीवन के लिए इतनी महत्त्वपूर्ण बन गई हैं कि नगण्य संख्यक लोग ही, या तो अपनी बर्बर अवस्था के कारण या गरीबी के या एक विशेष दार्शनिक मान्यता के कारण उनके बिना गुज़ारा चलाने का प्रयास करते हैं वही कुछ चीज़ें जीवन की अनिवार्यताएं हैं। इस दृष्टि से कुछ प्राणियों के लिए तो बस एक ही आवश्यकता है भोजन। घास के मैदानों में मिलनेवाले अरने भैंसे को थोड़ी-सी स्वादिष्ट घास चाहिए, पीने को थोड़ा पानी चाहिए और अन्त में किसी जंगल अथवा पहाड़ की छाया में आश्रय। पशु जगत में किसीको भी भोजन और आश्रय से अधिक की आवश्यकता नहीं है। सही सही कहें तो, हमारे यहां की जलवायु में, आदमी की आवश्यकताओं को इन कुछ विभागों में विभाजित किया जा सकता है—भोजन, आश्रय, वस्त्र और ईंधन। जब तक ये चार चीज़ें हम उपलब्ध न हों तब तक हम स्वतन्त्र मन से, सफलता की आशा के साथ जीवन की असल गुत्थियों को सुलझाने के लिए तैयार नहीं होंगे। मनुष्य ने केवल घरों का ही आविष्कार नहीं किया है, वस्त्रों और पकाए हुए भोजन को भी उसने खोजा है। इसी प्रकार जब अचानक उसे पता चला कि आग में गर्मी है तो उसने आग सेकना आरम्भ किया। पहले-पहल ऐसा करना विलास की ही बात रही होगी, पर यही आज आवश्यकता बन गई है। हम देखते हैं कि कुत्ते और बिल्लियां भी इस आवश्यकता को अपनी प्रकृति में ग्रहण कर लेते हैं। आश्रय और वस्त्रों से हम अपने अन्दर ऊष्मा को ही न्यायसंगत रीति से सुरक्षित बनाते हैं। लेकिन खाना पकाना ठीक तरह आरम्भ हुआ कब से माना जाए? तभी से जब से मनुष्य के पास वस्त्र और आश्रय अथवा ईंधन की अधिकता हो गई, या कहिए कि जब से उसकी अपनी आन्तरिक ऊष्मा की अपेक्षा बाहरी ऊष्मा बढ़ गई।

मेरा विचार है जितने हम हैं उसमें काफी अधिक आस्थावान हम निश्चिन्तता से बने रह सकते हैं। ईमानदारी से जितनी देख-रेख हम किसी अन्य की करें ठीक उतनी ही अपनी कम कर दें। हमारी कमज़ोरी के साथ भी प्रकृति उतनी ही अनुकूलित हो जाती है जितनी हमारी शक्ति के साथ। कुछ लोग लगातार इतने अधिक चिन्ताकुल रहते हैं और अपने पर ज़ोर डालते हैं कि यह उनके लिए लगभग एक विशेष प्रकार का असाध्य रोग हो जाता है। हम स्वभावतः अपने किए काम के महत्त्व को बहुत बढ़ा चढ़ाकर दिखाते हैं। फिर भी कितना कुछ हमसे अनकिया रह जाता है ? और कहीं हम बीमार पड़ जाते तब क्या होता ? कितने सतर्क हम रहते हैं ? हमारा दृढ़ निश्चय रहता कि जहा तक हो सके आस्था का सहारा न लिया जाए। दिन भर हम सन्नद्ध रहते हैं रात में बेमन से हम भगवान को याद करते हैं और अपने को अनिश्चितताओं की गोदी में छोड़ देते हैं। ऐसे ही पूरे और करे ढंग से जीते चले जाने को हम विवश हैं। अपने जीवन को हम प्रतिष्ठा देते हैं और परिवर्तन की किसी भी सम्भावना को अस्वीकार कर देते हैं। हम घोषणा करते हैं कि केवल यही एक मार्ग है। पर एक केन्द्र से जितने अर्द्धव्यास खींचे जा सकते हैं उतने ही मार्ग मौजूद हैं। सोचें तो हर परिवर्तन एक चमत्कार है। लेकिन वह ऐसा चमत्कार है जो हर क्षण घट रहा है। 'कनफ्यूस'[1] ने कहा है 'हम जानते हैं कि हम यह जानते हैं और हम नहीं जानते कि हम यह नहीं जानते—यह जानना ही सच्चा जानना है।' यदि एक भी व्यक्ति कल्पना के तथ्य को अपनी धारणा का तथ्य बना पाता है तो कभी न कभी सभी मानव इसी आधार पर अपने जीवन का निर्माण कर सकेंगे यह मैं साफ देख रहा हूँ।

एक पल सोचें तो कि जिन परेशानियों और चिन्ताओं का मैंने ऊपर ज़िक्र किया है उनमें से अधिकतर किन बातों को लेकर पैदा होती है और यह भी कि इन कष्टों को उठाना अथवा कम से कम इतना सतर्क रहना हमारे लिए कितना दूर तक अनिवार्य है। यदि हम जानना चाहते हैं कि जीवन की मोटी आवश्यकताएं क्या हैं और उन्हें पूरा करने के लिए क्या-क्या तरीके अपनाए गए हैं तो एक आदिम और सीमान्तक जीवन का अनुभव प्राप्त करना थोड़ा लाभदायक सिद्ध हो सकेगा भले ही ऐसा अनुभव हमें एक बहिर्मुख सभ्यता के बीच रहकर प्राप्त करना पड़े।

[1] ५५१ ई० पू० से ४७९ ई० पू० तक वर्तमान चीन का महान दार्शनिक सन्त

प्रकृतिवादी डार्विन[1] ने टियरा डेल फ्यूगो के निवासियों के बारे में बताया है कि जब उसका दल अच्छी तरह कपड़े पहनकर और आग के सामने बैठकर भी ठंड महसूस कर रहा था, तब ये जंगली लोग आग से काफी दूर पर नंगे खड़े थे। आश्चर्य तो यह है कि इस आग के कारण उन्हें ऐसे पसीना छूट रहा था जैसे कि उन्हें तला जा रहा हो। इसी प्रकार बताया जाता है कि न्यू हालैंड का आदिमवासी बिना किसी असुविधा के नंगा घूमता है जबकि एक यूरोपियन वहां कपड़ों में भी ठंड से कांपता है। क्या इन असभ्य बर्बरों की हृष्ट-पुष्टता और सभ्य मानव की बुद्धि प्रखरता को एक जगह मिलाना असम्भव है? लाइबिग[2] के अनुसार मानव शरीर एक चूल्हे के समान है और भोजन उस ईंधन के समान है जो फेफड़ों में अन्तर्दहन क्रिया को बनाए रखता है। सर्दी के मौसम में हम अधिक खाते हैं, गर्मियों में कम। पशु शरीर की गर्मी मन्द दहन का परिणाम है और जब दहन बहुत तेज हो जाता है तब रोग पैदा होते हैं और मृत्यु आ घेरती है। अथवा यों कहिए कि ईंधन की कमी से या कर्षण-यन्त्र में कोई दोष पैदा हो जाने पर आग बुझ जाती है। इस मूल प्राणोष्मा को साधारण आग नहीं समझ लेना चाहिए। यह केवल एक उपमा है। इस प्रकार ऊपर की सूची से यह प्रतीत होता है कि उक्तियां पशु जीवन और पशु ऊष्मा लगभग पर्यायवाची हैं। भोजन को हमारे अन्दर की आग बनाए रखने वाला ईंधन समझा जाता है। बाहरी ईंधन इस भोजन को तैयार करने और हमारे अन्दर की गर्मी का बाहरी योगदान से बनाने का ही काम करता है। आश्रय और वस्त्र भी इस प्रणाली से उत्पन्न और अवशोषित ऊष्मा को सुरक्षित बनाने में ही संलग्न हैं।

तो हमारे शरीर की सबसे बड़ी आवश्यकता यही है न कि उसे गर्म रखा जाए और अन्दर की प्राणोष्मा को बनाए रखा जाए। सिर्फ भोजन, वस्त्र और आश्रय प्राप्त करने के लिए ही हम कष्ट नहीं उठाते, अपने बिस्तर पर भी हम बहुत ज्यादा ध्यान देते हैं। ये बिस्तर हमारे रात्रि-वसन हैं। आश्रय के अन्दर इस आश्रय को तैयार करने के लिए हम चिड़ियों के घोंसले को लूट लेते हैं। उनके शरीरों को नोच लेते हैं। एक निर्धन व्यक्ति शिकायत करने को बाध्य है कि संसार

---

1 (१८०९–१८८२) इंग्लैण्ड का प्रसिद्ध जीवशास्त्री, जिसने विकासवाद के सिद्धान्त को प्रसिद्ध किया।

2 जस्टस वान लाइबिग (१८०३–१८७३), एक जर्मन रसायनशास्त्री

हिम शीतल है। इस भौतिक और सामाजिक हिम शीतलता को ही हम अपने अधिकतर कष्टों का ज़िम्मेदार मानते हैं। कुछ देशों में ग्रीष्म ने एक तरह का स्वर्गीय या 'एलीसियन' जीवन[1] मानव के लिए सम्भव बना लिया है। सिवाय भोजन पकाने के काम के ईंधन उनके लिए बेकार है। सूर्य ही उन्हें गर्मी देता है और सूर्य की किरणें ही फलों को यथावश्यक पका देती हैं। वहां विविध प्रकार के भोजन बड़ी आसानी से उपलब्ध हैं। वस्त्र और आश्रय बिलकुल ही अनावश्यक अथवा कम आवश्यक है। अपने अनुभव से मैं कहता हूं कि आज दिन इस देश में एक चाकू, एक कुल्हाडी, एक फावडा, एक रेती—ये ही कुछ औजार आदमी को मुख्य रूप से चाहिए। यदि वह अध्ययनशील हो तो एक लैम्प, कुछ कागज़-कलम और कुछ पुस्तकें और गिन लीजिए। और ये सभी चीजें नगण्य मूल्य पर प्राप्त की जा सकती हैं। फिर भी कुछ लोग हैं—समझदार मैं उन्हें नहीं कहूंगा—जो धरती के दूसरे छोर तक दौड़ते हैं, असभ्य और अस्वास्थ्यकर प्रदेशों में जाते हैं, और वहां दस या बीस वर्षों तक व्यापार में जुटे रहते हैं। किसलिए? इसीलिए न कि वे जी सकें और अपने को आराम दे सकें और अपने को गर्म रख सकें और अन्त में न्यू इंग्लैंड में मर सकें। बहुत अधिक धनी लोगों को सिर्फ आवश्यक आराम और गर्मी ही नहीं मिल पाती, उन्हें अप्राकृतिक ढंग से सेंका भी जाता है। जैसा मैं पहले कह चुका हूं, उन्हें निस्सन्देह परिष्कृत ढंग से भूना भी जाता है।

विलास की अधिकतर वस्तुएं और तथाकथित सुख और सुविधा की चीजें अनावश्यक ही नहीं हैं, वे मानव के उत्कर्ष के मार्ग में ठोस बाधा भी हैं। जहां तक विलास और सुख सुविधा की वस्तुओं का सम्बन्ध है, विज्ञतम व्यक्तियों ने सदा ही गरीबों से भी अधिक सादा और गरीबी का जीवन बिताया है। सभी प्राचीन दार्शनिक—चीनी, हिन्दू, फारसी और ग्रीक—सांसारिक वैभव की दृष्टि से निर्धनतम थे और आत्मिक गुणों की दृष्टि से सम्पन्नतम। हम उनके बारे में बहुत अधिक नहीं जानते। जितना भी जानते हैं उतना हम जानते हैं, यह आश्चर्य की ही बात है। जो बात उन लोगों के विषय में तथ्य है वही मानव जाति के अधिक आधुनिक सुधारकों और सरक्षकों के बारे में भी सत्य है। मानव-जीवन की निष्पक्ष और विवेकपूर्ण जांच-परख उसके सिवाय कौन कर सकता है जो उस उन्नत भूमि

1 होमर के अनुसार मृत्यु के बाद पुण्यात्मा लोग 'एलीसियन फील्ड्स' में जाकर रहते हैं। वहां का जीवन 'एलीसियन जीवन' कहलाता है।

प्रकृतिवादी डार्विन[1] ने टियरा डेल फ्यूगो के निवासियों के बारे में बताया है कि जब उसका दल अच्छी तरह कपड़े पहनकर और आग के सामने बैठकर भी ठंड महसूस कर रहा था, तब ये जंगली लोग आग से काफी दूर पर नंगे खड़े थे। आश्चर्य तो यह है कि इस आग के कारण उन्हें ऐसे पसीना छूट रहा था जैसे कि उन्हें तला जा रहा हो। इसी प्रकार बताया जाता है कि न्यू हालैंड का आदिमवासी बिना किसी असुविधा के नंगा घूमता है जबकि एक यूरोपियन वहां कपड़ों में भी ठंड से कांपता है। क्या इन असभ्य बर्बरों की हृष्ट-पुष्टता और सभ्य मानव की बुद्धि-प्रखरता का एक जगह मिलाना असम्भव है? लाइबिग[2] के अनुसार मानव शरीर एक चूल्हे के समान है और भोजन उस ईंधन के समान है जो फेफड़ों में अन्तर्दहन क्रिया को बनाए रखता है। सर्दी के मौसम में हम अधिक खाते हैं, गर्मियों में कम। पशु-शरीर की गर्मी मन्द दहन का परिणाम है और जब दहन बहुत तेज हो जाता है तब रोग पैदा होते हैं और मृत्यु आ घेरती है। अथवा यों कहिए कि ईंधन की कमी से या कर्षण यन्त्र में कोई दोष पैदा हो जाने पर आग बुझ जाती है। इस मूल प्राणोष्मा को साधारण आग नहीं समझ लेना चाहिए। यह केवल एक उपमा है। इस प्रकार ऊपर की सूची से यह प्रतीत होता है कि उक्तियां 'पशु-जीवन' और 'पशु-ऊष्मा' लगभग पर्यायवाची हैं। भोजन को हमारे अन्दर की आग बनाए रखने वाला ईंधन समझा जाता है। बाहरी ईंधन इस भोजन को तैयार करने और हमारे अन्दर की गर्मी को बाहरी योगदान से बढ़ाने का ही काम करता है। आश्रय और वस्त्र भी इस प्रणाली से उत्पन्न और अवशोषित ऊष्मा को सुरक्षित बनाने में ही संलग्न हैं।

तो हमारे शरीर की सबसे बड़ी आवश्यकता यही है न कि उसे गर्म रखा जाए और अन्दर की प्राणोष्मा को बनाए रखा जाए। सिर्फ भोजन, वस्त्र और आश्रय प्राप्त करने के लिए ही हम कष्ट नहीं उठाते, अपने बिस्तर पर भी हम बहुत ज्यादा ध्यान देते हैं। ये बिस्तर हमारे रात्रि-वसन हैं। आश्रय के अन्दर इस आश्रय को तैयार करने के लिए हम चिड़ियों के घोंसलों को लूट लेते हैं। उनके शरीरों को नोच लेते हैं। एक निर्धन व्यक्ति शिकायत करने को बाध्य है कि संसार

---

1 (१८०९–१८८२) इंग्लैण्ड का प्रसिद्ध जीवशास्त्री, जिसने विकासवाद के सिद्धान्त को प्रसिद्ध किया।

2 जस्टस वॉन लीबिग (१८०३–१८७३), एक जर्मन रसायनशास्त्री।

हिम-शीतल है। इस भौतिक और सामाजिक हिम शीतलता को ही हम अपने अधिकतर कष्टों का ज़िम्मेदार मानते हैं। कुछ देशों में ग्रीष्म ने एक तरह का स्वर्गीय या 'एलीसियन' जीवन[1] मानव के लिए सम्भव बना दिया है। सिवाय भोजन पकाने के काम के ईंधन उनके लिए बेकार है। सूर्य ही उन्हें गर्मी देता है और सूर्य की किरणें ही फलों को यथावश्यक पका देती हैं। वहां विविध प्रकार के भोजन बड़ी आसानी से उपलब्ध हैं। वस्त्र और आश्रय बिलकुल ही अनावश्यक अथवा कम आवश्यक हैं। अपने अनुभव से मैं कहता हूं कि आज दिन इस देश में एक चाकू, एक कुल्हाड़ी, एक फावड़ा, एक रेढ़ी, ये ही कुछ औज़ार आदमी को मुख्य रूप से चाहिए। यदि वह अध्ययनशील हो तो एक लैम्प, कुछ कागज़-कलम और कुछ पुस्तकें और गिन लीजिए। और ये सभी चीज़ें नगण्य मूल्य पर प्राप्त की जा सकती हैं। फिर भी कुछ लोग हैं—समझदार मैं उन्हें नहीं कहूंगा—जो धरती के दूसरे छोर तक दौड़ते हैं, असभ्य और अस्वास्थ्यकर प्रदेशों में जाते हैं, और वहां दस या बीस वर्षों तक व्यापार में जुटे रहते हैं। किसलिए? इसीलिए न कि वे जी सकें और अपने को आराम दे सकें और अपने को गरम रख सकें और अन्त में न्यू इंग्लैंड में मर सकें। बहुत अधिक धनी लोगों को सिर्फ़ आवश्यक आराम और गर्मी ही नहीं मिल पाती, उन्हें अप्राकृतिक ढंग से सेंका भी जाता है। जैसा मैं पहले कह चुका हूं, उन्हें निस्सन्देह परिष्कृत ढंग से भूना भी जाता है।

विलास की अधिकतर वस्तुएं और तथाकथित सुख और सुविधा की चीज़ें अनावश्यक ही नहीं हैं, वे मानव के उत्कर्ष के मार्ग में ठोस बाधा भी हैं। जहां तक विलास और सुख-सुविधा की वस्तुओं का सम्बन्ध है, विवेकतम व्यक्तियों ने सदा ही गरीबों से भी अधिक सादा और गरीबी का जीवन बिताया है। सभी प्राचीन दार्शनिक—चीनी, हिन्दू, पारसी और ग्रीक—सांसारिक वैभव की दृष्टि से निर्धनतम थे और आत्मिक गुणों की दृष्टि से सम्पन्नतम। हम उनके बारे में बहुत अधिक नहीं जानते। जितना भी जानते हैं उतना हम जानते हैं, यह आश्चर्य की ही बात है। जो बात उन लोगों के विषय में तथ्य है वही मानव जाति के अधिक आधुनिक सुधारकों और संरक्षकों के बारे में भी सच है। मानव जीवन की निष्पक्ष और विवेकपूर्ण जांच-परख उसके सिवाय कौन कर सकता है जो हम उन्नत भूमि

[1] होमर के अनुसार मृत्यु के बाद पुण्यात्मा लोग 'एलीसियन फील्ड्स' में जाकर रहते हैं। वहां का जीवन 'एलीसियन जीवन' कहलाता है।

पर खड़ा है जिसका नाम स्वेच्छा से वरण की गई निर्धनता होना चाहिए। कृषि, वाणिज्य, साहित्य अथवा कला सभी क्षेत्रों में विलासपूर्ण जीवन का फल निश्चय विलास ही होता है। आजकल दार्शनिक नहीं मिलते, बस दर्शन के अध्यापक मिलते हैं। फिर भी दार्शनिक उपदेश देना प्रशंसनीय है, क्योंकि कभी उनके अनुसार जीना प्रशंसनीय माना गया था। दार्शनिक वह नहीं है जो बस सूक्ष्म विचार रखता है, न ही वह है जो किसी एक विचार पद्धति की नींव डालता है। दार्शनिक तो वह है जो ज्ञान से इतना प्रेम करता है कि उसके निर्देशों के अनुसार सादगी, स्वतन्त्रता, सदाशयता और आस्था का जीवन व्यतीत करता है। ऐसा वह इसलिए करता है कि जीवन की कुछ गुत्थियां केवल सैद्धान्तिक दृष्टि से नहीं, व्यावहारिक रूप से सुलझ जाएं। बड़े-बड़े विद्वानों और विचारकों की सफलता आम तौर से मुसाहिबों की सफलता होती है। वह न नृपोचित होती है, न पुरुषोचित। वे लोग बस पूर्वजों का अनुसरण करते हैं, उन्हीं के नमूने पर अपने जीवन को ढालते हैं। वे किसी भी दशा में मानव जाति की एक उत्तम पीढ़ी के पूर्वपुरुष बनने के योग्य नहीं होते। किन्तु मानव क्यों पतन की ओर ही सदा बढ़ता है? वंश क्यों विवशभाव से चुक जाते हैं? विलास की वस्तुओं में ऐसा क्या निहित है जो राष्ट्रों को निस्तेज और अन्त में समाप्त कर डालता है? क्या हमें पूरा विश्वास है कि हमारे अपने जीवन में वे तत्त्व मौजूद नहीं हैं? दार्शनिक तो जीवन के बाहरी रंग-ढंग में भी अपने युग से आगे होता है। वह अपने समसामयिकों की तरह भोजन, वस्त्र, आश्रय और ऊष्मा ग्रहण नहीं करता। भला वह पुरुष दार्शनिक कैसे हो सकता है जो अपनी प्राणोष्मा की रक्षा अन्यों की अपेक्षा अधिक अच्छे साधनों से करने में असमर्थ है?

जब व्यक्ति ऊपर बताए गए साधनों से अपनी मूल आवश्यकताएं पूरी कर चुकता है तब वह और क्या चाहता है? पहले जैसी ही और अधिक ऊष्मा नहीं, अधिक मात्रा में अधिक बढ़िया भोजन नहीं, अधिक विशाल और अधिक शानदार घर नहीं, अधिक मात्रा में अधिक बढ़िया वस्त्र एवं अधिक गर्म, लगातार जलती रहनेवाली अनगिनत अंगीठियां नहीं, और निश्चय ही ऐसा और बहुत कुछ नहीं। जब मनुष्य जीवन की मूल आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं तब वह इन सबको फालतू ढेर जमा करने के बदले कुछ अतिरिक्त करता है। जीवन रक्षण के तुच्छ प्रयासों से मुक्ति पाकर वह साहसिकता के क्षेत्र में कूदता है। लगता है, बीज के लिए धरती ही अनुकूल है। बीज का मूलांकुर धरती में गहरा प्रवेश कर चुका है।

अब वह अपने अकुर को विश्वासपूर्वक ऊर्ध्वगामी बना सकता है। मानव ने अपनी जडो को धरती म इतना गहरा क्यो गया है ? इसीलिए न कि वह उतने ही अनुपात म ऊपर आकाश म उठ सके ? उत्तम पौधो का महत्व उन फलो मे होता है जिन्हें व अनन्त धरती से बहुत ऊपर पवन और प्रकाश के बीच जन्म देते हैं। इनकी तुलना म कुछ निम्न जाति के खाद्य पौधे हैं भले ही वे द्विवर्षी हो किन्तु वस तभी तक पोसा जाता है जब तक उनकी जडें पनप चुकती हैं। कभी-कभी तो जडो की खातिर ऊपरी अकुर को काट डाला जाता है। जब ये पौधे अपने यौवन पर होते हैं तब भी लोग इनका दर्शन-लाभ नहीं कर पाते।

कुछ लोग होते हैं जो स्वर्ग हो या नरक हर कहीं अपना काम बना लेंगे। जो अगर मौका मिले तो धनी से धनी लोगो से भी अधिक शानदार भवन खड़ कर देंगे और रुपया पानी की तरह बहाएंगे। उन्हें गरीबी कभी नहीं सताएगी और वे जान भी नहीं पाएंगे कि वे कैसे रह रहे हैं। यदि वास्तव म ऐसे लोग हैं तो उन साहसी और पराक्रमी व्यक्तियो के लिए कोई नियम निश्चित करना यहाँ मेरा उद्देश्य नहीं है। मैं उस दूसरी किस्म के लोगो म भी कुछ कहना नहीं चाहूंगा जो सिर्फ वर्तमान परिस्थितियो म प्रेरणा और प्रोत्साहन पाते हैं और प्रेमियो के से चाव और उत्साह के साथ जागे करते हैं। कुछ दूर तक मैं अपने को भी इसी श्रेणी म गिनता हूं। मैं तीसरी किस्म के व्यक्तियो से भी कुछ नहीं कहूंगा जो कैसी भी परिस्थिति क्यो न हो गदन तक व्यस्तता म डूबे रहते हैं और चौकसी रखते हैं कि वे पूरी तरह व्यस्त हैं या नहीं। मैं तो ये सब बातें भीड की भीड उन लोगो को लक्ष्य कर कहना चाहता हू जो सदा असन्तुष्ट रहते हैं और खाली बठे समय की या अपनी परिस्थितियो की शिकायत करते हैं। यह समय वे अपनी परिस्थितियो को सुधारने म लगा सकते थ। कुछ लोग तो पूरी अधीरता से पूरी शक्ति स किसी के भी लिए रोने धोने लगते हैं दुहाई देते हैं कि हम तो अपना कर्तव्य कर रहे हैं। इस समय मेरे दिमाग म वह वर्ग भी है जो देखने म बहुत धनी है पर दरअसल जो सबस अधिक कंगाल है। इस वर्ग के लोग कूड़ा-करकट जमा कर लेते हैं। वे न इसका सदुपयोग करना जानते हैं न इसस छुटकारा पाना और इस प्रकार मान या चांदी की जजीरो म अपने आपको जकड लेते हैं।

विगत वर्षों म अपने जीवन को मैंने किस ढग पर ढालना चाहा है, यदि मैं यह

बताने का प्रयास करूँ तो शायद मेरे वे पाठक भी हैरान हो उठेंगे जो इन वर्षों के असल इतिहास से थोड़ा-बहुत परिचित हैं और जो उनसे बिलकुल परिचित नहीं हैं वे तो निश्चय ही आश्चर्यचकित रह जाएंगे। मैं अपने उद्यमों में से कुछ का ही उल्लेख यहां करूंगा।

कोई भी ऋतु हो दिन और रात का कोई भी घड़ी हो मेरी सदा कोशिश रहती है कि मैं समय के प्रस्तुत क्षण का पूरे से पूरा सदुपयोग करूं और उसे अपनी छड़ी पर जड़ लूं। मैं भूत और भविष्य रूपी दो सनातन कालों के संगम पर खड़ा हो जाऊं। इस संगम को ही वर्तमान क्षण कहते हैं। मैं इसी क्षण का पाबन्द रहना चाहता हूं। कुछ रहस्यमय बातें कह जाऊं तो आप मुझे क्षमा कर दें। और लोगों के धन्धों से बहुत अधिक भेद की बातें मेरे धन्धे में निहित हैं। मैं जान-बूझकर कुछ भी गोपनीय नहीं रखता। पर क्या करूं रहस्य मेरे धन्धे से चिपके हैं। इस विषय में जो कुछ भी मैं जानता हूं मैं बड़ी प्रसन्नता से बता दूंगा और अपने द्वार पर 'प्रवेश निषिद्ध है' की पटिया कभी नहीं लगाऊंगा।

बहुत दिन हुए एक शिकारी कुत्ता एक कुम्मैत घोड़ा और एक जंगली कबूतर मैंने खो दिया था और अभी तक मैं उनकी खोज में हूं। कितने ही यात्रियों से मैंने उनका जिक्र किया है उनकी लीक बताई है और बताया है कि किस पुकार पर वे जवाब देते हैं। एक या दो व्यक्ति मुझे ऐसे मिले जिन्होंने कुत्ते का भौंकना सुना था घोड़े की टापें सुनी थीं और जंगली कबूतर को बादलों में विलीन होते देखा था। उन्हें ढूंढ लाने को वे लोग मुझे ऐसे उत्सुक लगे जैसे वे ही उन्हें खो बैठे हों।

सिर्फ भोर और प्रभात में ही नहीं सम्भव हो तो स्वयं प्रकृति में गहरे उतरना ! गर्मी की कितनी सुबहों में इससे पहले कि मेरा कोई भी पड़ोसी उठकर अपने काम के लिए चला हो मैं अपने काम में लग गया हूं। मेरे कितने ही साथी नागरिक अपने काम के लिए किसान बोस्टन नगर के लिए अथवा लकड़हारे लकड़ी काटने के लिए जब धुंधलके में चले तो मैं उन्हें काम पर से लौटता हुआ मिला। सच है सूर्य के उदय होने में कोई सहायता मैं न दे सका पर इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि इस अवसर पर उपस्थित रहना कम महत्त्व की बात नहीं है।

पतझड़ हो या जाड़ा न जाने कितने ही दिन मैंने नगर से बाहर पवन में छिपा हुआ संगीत को सुनने उसे अपनी आत्मा में समा लेने और उसे अभिव्यक्ति देने के प्रयास में बिताए हैं। अपनी लगभग पूरी पूंजी ही मैं इसमें लगा बैठा हूं।

प्रकृति की यात्रा में भाग लेने के प्रयत्न में मैंने अपने स्वास्थ्य को भी बहुत गिरा लिया है। यदि कोई भी राजनीतिक दल मेरे इस काम को अपनी रुचि का पाता तो विश्वास मानिए इसका नये से नया विवरण गजट के पन्नों में छप चुका होता। मैं कितनी ही बार किसी टीले अथवा पेड़ की चोटी पर चढ़कर आकाश में होने-वाले नये परिवर्तनों का अध्ययन करता रहा हूँ। कितनी ही सन्ध्याएँ मैंने पहाड़ों की चोटियों पर आकाश का भूत आता देखने के लिए और शायद उसमें से कुछ पकड़ लेने की आशा में बिताई हैं। मैं सन्ध्या के घिरते अन्धकार को पकड़ नहीं पाया और यह धुँधलका सूर्य के प्रकाश में वैसे ही विलीन हो गया जैसे फूलों का रस हवा में लीन हो जाता है।

बहुत लम्बे समय तक मैं एक ऐसे पत्र का सम्वाददाता रहा जो बहुत ज्यादा नहीं बिकता था। जो कुछ मैंने इस पत्र को भेजा उसमें से अधिकांश प्रकाशन योग्य नहीं समझा गया। जैसा कि लेखकों के साथ साधारणतया होता है, मेरे इस सारे परिश्रम के बदले गुजारे-भर ही मुझे मिल पाया। कुछ भी हो, मैं समझता हूँ मेरा परिश्रम ही मेरा पारिश्रमिक बना।

बहुत वर्षों तक मैं बर्फीले तूफानों, वर्षा और आँधियों का आत्मनियुक्त निरीक्षक रहा। मैंने अपना काम बड़ी सच्चाई और लगन से किया। मैंने राजमार्गों का तो नहीं पर वन मार्गों का सर्वेक्षण भी किया। एक छोर से दूसरे छोर तक जानेवाले रास्तों को यात्रा योग्य बनाए रखने, जहाँ पर पुल बनाने और जो मार्ग जनहित के प्रयोग में आ सकता था उसे सब ऋतुओं में खुले रखने का काम भी मैंने किया।

नगर के पशुओं की देखभाल करने में भी मैं जुटा रहा। किसी वफ़ादार चरवाहे को यह काम दिया जाता तो भाग-दौड़कर बाड़ों पर से कूदने में उसे काफी असुविधा होती। यद्यपि मैं यह ध्यान नहीं रखता था कि जोनाथन और सॉलोमन नामक किसान आज किस खेत में काम कर रहे हैं और इस बात से मेरा कोई मतलब भी नहीं था। पर मैंने खेतों के उन कोनों तक की देखभाल का काम, जिसे शायद भी कोई पसन्द न करता। मैंने लाल ह्यकलबेरी, रेत में उगनेवाली चेरी, बिच्छू-बूटी, लाल देवदार, काले प्रमुज, सफेद अंगूर और पीले वायलेट जैसे कितने ही जंगली पौधों को पानी दिया, नहीं तो शुष्क मौसम में ये सब सूख जाते।

मैं कोई डींग नहीं हाँकता पर इसी तरह बहुत लम्बे समय तक बड़ी [illegible] और लगन से मैं ऐसे ही कामों में लगा रहा। अन्त में मैं समझ गया कि [illegible]

के लोग मुझे नगर रखवालियों की श्रेणी में शामिल नहीं करेंगे और न ही वे कोई ऐसी नियुक्ति मुझे देंगे जहाँ बिना कोई विशेष काम किए भी मैं साधारण भत्ता पाता रहूँ। इस बीच जो कुछ मैंने खर्च किया उसका मैंने पूरा हिसाब रखा पर किसीने उसकी पड़ताल तक नहीं की, उसे चुकता करने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता। छोड़िए इन सब बातों की आशा लेकर तो मैं चला नहीं था।

अभी कुछ दिन हुए मेरे पड़ोस में रहनेवाले एक प्रसिद्ध वकील के घर एक आदिवासी कुछ टोकरियाँ बेचने आया। 'क्या कुछ टोकरियाँ खरीदेंगे' उसने पूछा। 'नहीं, हमें नहीं चाहिए', उत्तर मिला। वह आदिवासी द्वार से बाहर निकलते हुए बड़बड़ाया, 'क्या तुम हमें भूखा मार डालना चाहते हो?' अपने इन परिश्रमी श्वेत पड़ोसियों को दिन पर दिन सम्पन्न बनते हुए वह देख ही रहा था। ये वकील महोदय भला तर्कजाल बुनने के सिवाय और क्या करते हैं? जादू की तरह धन और यश इनके पास खिंचा चला आता है। बेचारे आदिवासी ने सोचा होगा, मैं भी कारोबार करूँगा। मैं टोकरियाँ बनाऊँगा। यही काम मैं कर सकता हूँ। उसके मन में रहा होगा कि जब उसने टोकरियाँ बना ली, अपना काम समाप्त हो गया। उनको खरीदना तो इन श्वेत लोगों का कर्तव्य है। उसने यह नहीं सोचा होगा कि टोकरी ऐसी बनानी होगी जिसे दूसरा खरीदने को उत्सुक हो, कम से कम लोग उसे खरीदने योग्य तो समझ सकें, अथवा कोई और चीज उसे ऐसी बनानी होगी जिसे अन्य खरीदने योग्य मान सकें। मैंने भी एक बार ढीली और नाजुक बुनाई की टोकरी बनाई थी। पर मैंने बेचने की दृष्टि से उसे नहीं बनाया था। व्यापार के लिए टोकरी बनाना तो दूर, बनाना सीखना भी मैं नहीं चाहता था। मेरा लक्ष्य तो यह खोजना था कि बेचने की आवश्यकता से कैसे मुक्त हुआ जा सकता है। जिस जीवन-पद्धति को लोग सफल और प्रशंसनीय मानते हैं वह केवल एक पद्धति है। किसी एक पद्धति को दूसरी से बढ़ा-चढ़ाकर क्यों आँका जाए?

जब मैंने समझ लिया कि मेरे बन्धु नागरिक मुझे न्यायालय में या पादरी के पद या कहीं भी कोई जगह देने को तैयार नहीं हैं और मुझे अपना प्रबन्ध स्वयं करना होगा, तो मैंने पहले की अपेक्षा अधिक निरपेक्ष और निश्चिन्त भाव से जंगल की ओर रुख किया। और सच ही जंगल ही मेरा अधिक अपना था। मैंने आवश्यक पूँजी इकट्ठी होने तक प्रतीक्षा नहीं की। जो भी कम से कम साधन मेरे पास थे उन्हें लेकर अपने कारोबार में फौरन उतर पड़ने का मैं कृत-संकल्प हुआ। वाल्डेन

पाण्ड जाने म मेरा उद्देश्य बहुत सस्ते म अथवा बहुत महगे म जीवन निर्वाह करना नहीं था। मेरा उद्देश्य तो यह था कि मैं वहा रहकर निजी कारोबार कम मे कम बाधाए सहकर चला सक। थोडी-सी साधारण बुद्धि थोडे-स प्रयास और थाडे कारोबारी विवक की कमी से यदि मेरे काम म रुकावट पड जाती, तो यह मूखता की बात अधिक होती दुःख की कम।

मैंने सदा ही कठोर व्यावहारिक सस्कार ग्रहण करने का प्रयास किया है और यह हर व्यक्ति के लिए अनिवार्य भी है। यदि आपका व्यापार चीन देश से है तो समुद्र-तट पर अथवा सलेम[1] जसे किसी बन्दरगाह म हिसाब किताब का एक छोटा सा केन्द्र स्थापित कर लेना काफी होगा। उन वस्तुओ का निर्यात आप करेंगे जो विशुद्ध स्थानीय चीजें है जैसे बर्फ देवदार की लकडी, कुछ ग्रेनाइट आदि। यह सब आपको स्थानीय धरती म मिल जाएगा। व्यापार के लिए य चीजें बढिया रहेंगी। पर पूरे काम की हर बारीकी का निरीक्षण स्वय ही करना एकसाथ ही चालक और कप्तान, मालिक और बीमा करनेवाला बनना खरीदना, बेचना और हिसाब किताब रखना, हर प्राप्त पत्र को पढना और भेजे जानवाले पत्र को लिखना या पढना रात दिन आयातित वस्तुओ का निरीक्षण करना एक ही समय म समुद्र-तट के विभिन्न भागो मे उपस्थित रहना, विशेष कर जर्सी के तट पर जहा सबसे कीमती माल उतारा जाता है स्वय ही तार की मशीन बनना और आकाश को अथक रूप से चीरते हुए तट की ओर बढ़ते जहाजो से बातें करना दूरस्थ बडी बडी मण्डियो को लगातार माल भिजवाना मण्डियो के हालातो की, हर देश म युद्ध और शान्ति के भविष्य की जानकारी रखना और वाणिज्य और सभ्यता की प्रवृत्तियो की पूर्वकल्पना करना खोज-यात्राओ के परिणामो का लाभ उठाना और समुद्र यात्रा म नये मार्गों और नये सुधारो का उपयोग करना नक्शे पढना जलमग्न चट्टानो प्रकाश-स्तम्भो और बोयो की स्थिति की खोज-खबर रखना लॉग टेबल या जहाज सम्बन्धी सारणी का बारबार ठीक करना, क्योंकि गणना की मामूली भूल से कोई जहाज घाट पर लगने के बजाय चट्टान से टकराकर खण्ड-खण्ड हो सकता है (जहाज ला पेरूज[2] का अज्ञात

[1] अमरीका म मस्साचुसेट्स पर स्थित एक बन्दरगाह। सन् १८१२ से पहले तक पूर्वीय भारतीय चीनी व्यापार का एकाधिकार इसी बन्दरगाह के पास था।
[2] एक फ्रांसीसी नाविक जीन फ्रांकोस डि गलाप (१७४१—१७८८) ने प्रशान्त सागर के स (

दुर्भाग्य इस बात का दृष्टान्त है), सार्वभौमिक विज्ञान के साथ कदम मिलाना, प्राचीन हानो और फीनीशियन[1] नाविकों से लेकर आज तक के महान अन्वेषकों नाविकों, साहसी योद्धाओं और व्यापारियों के जीवन चरित्रों का अध्ययन करना अन्त में समय-समय पर माल की सभाल करना और अपनी स्थिति की थाह लेना—यह सारा काम व्यक्ति की क्षमताओं की परीक्षा लेनेवाला है। हानि-लाभ, ब्याज असली वजन और घडा निकालने के तरीके और सभी तरह के माप—ये समस्याएं ऐसी हैं जिनके लिए सार्वभौमिक ज्ञान की आवश्यकता होती है।

मैंने सोच लिया है वाल्डेन पाण्ड कारोबार के लिए एक बढिया स्थान रहेगा सिर्फ इसीलिए नहीं कि यहां रेल-मार्ग है और बर्फ का व्यापार चलता है, बल्कि यहां और भी कितने ही लाभ हो सकते हैं जिनका रहस्योदघाटन कर देना नीति विरुद्ध होगा। यहां नेवा[2] जैसा दलदल नहीं है जिसे भरना पडे। वैसे अपने ही लाभ के लिए घर हर कहीं ऊंची ही कुर्सी पर बनाना पडता है। कहते हैं कि नेवा में पश्चिमी हवाओं के साथ आनेवाली तूफानी बाढ और हिमपात ऐसा भयंकर होता है कि वह सेंट पीटर्सबर्ग[3] जैसे नगर को भी धरती से मिटा डाले।

मैं अपना कारोबार साधारणतया आवश्यक पूंजी के बिना ही आरम्भ करना चाहता था। इसलिए जो साधन इतने पर भी अनिवार्य थे, उन्हें कहां से प्राप्त किया जाए, यह गुत्थी आसान नहीं थी। मैं एकदम प्रश्न के व्यावहारिक पक्ष पर आता हूं। पहली समस्या कपडों की थी। कपडे बनाते समय हम नहीं उपयोगिता का उतना ध्यान नहीं रखते जितना दूसरों की पसन्द-नापसन्द का और एक नयेपन की लालसा का। जिस व्यक्ति को काम में व्यस्त रहना है उसे समझ लेना चाहिए कि कपडे हम दो उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पहनते हैं। प्रथम तो आन्तरिक ऊष्मा की रक्षा के लिए, दूसरे समाज की वर्तमान अवस्था में नंगेपन को ढकने के लिए। उसे यह बात जांच लेनी चाहिए कि पोशाक में किसी भी प्रकार की बढोतरी किए बिना आवश्यक अथवा महत्त्वपूर्ण काम का कितना अंश किया जा सकता है। दर्जी

का भ्रमण किया था। इसका जहाज 'ला पेरूज' आस्ट्रेलिया के पास किसी चट्टान से टकराकर नष्ट हो गया था।

१ लाल सागर के तट के प्राचीन सामी राज्य

२ रूस की एक नदी जिसके डेल्टा पर सेंट पीटर्सबर्ग अथवा लेनिनग्राद बसा है।

३ सेंट पीटर्सबर्ग का वर्तमान नाम लेनिनग्राद है।

या राजकीय भूपा निर्माता यद्यपि राजा रानियो की शान के अनुकूल पोशाक बनाते हैं पर राजा रानी उन्हें बस एक ही बार पहनते हैं। ये बडे लोग साधारण कपडे पहनने के आनन्द को नहीं जान सकते। ये लोग लकडी के उन खोटों से ऊँचे नहीं हैं जिनपर साफ बढिया कपडे लटका दिए जाते हैं। हमारे वस्त्र दिन दिन हमारे चरित्र के रंग में रंगकर हममें रमते और हमसे एकरूप होते चले जाते हैं। यहा तक कि बिना कुछ देर लगाए सम्भ्रम दिखाए और बिना डाक्टरी साधनो का प्रयोग किए उन्हें अपने से अलग करने में हम उसी प्रकार हिचकिचाते हैं पीछे हटते हैं जैसे कि इस शरीर को त्यागने में। कपडो में थिगली लगी देखकर मैंने किसी भी व्यक्ति को अपनी नजरों से नहीं गिराया। पर मैं निश्चय के साथ कह सकता हूँ कि नये फैशन के अथवा कम से कम साफ और बिना थिगली लगे वस्त्रों की लोग जितनी कामना करते हैं उतनी अपनी अन्तरात्मा को पुष्ट-पवित्र बनाने की नहीं करते। यदि फटे कपडे को न सिया जाए तो इससे पता लगता है कि हममें अविचार और फिजूलखर्ची का दोष है। मैं कभी-कभी अपने मित्रो को कुछ ऐसी बातों में परखा करता हूँ कौन है जो घुटने पर लगी एक थिगली अथवा दो में अतिरिक्त सीवनें सहन कर लेता है? अधिकतर लोगो का विश्वास रहता है कि यदि वे ऐसा करेंगे तो उन्नति की उनकी आशाएं नष्ट हो जाएंगी। टूटी हुई टांग में लंगडाते हुए नगर जाना उनके लिए सरल है पर फटी हुई पतलून पहनना आसान नहीं। यदि किसी सज्जन की टांगें दुर्घटनाग्रस्त हो जाएं तो उनका इलाज हो सकता है, पर ऐसी ही किसी दुर्घटना में फटी-टूटी बेचारी पतलून के लिए कोई आशा नहीं की जा सकती। कारण यह है कि व्यक्ति, असल सम्मान किसमें है इस बात की नहीं दुनिया सम्मान किसमें देखती है इस बात की चिन्ता अधिक करता है। हम आदमियो से परिचय कम रखते हैं कोटों और विरजिसो में अधिक। अपने ऊपर की पोशाक एक फूस के पुतले को पहना दीजिए और स्वयं बराबर में पोशाक के बिना खडे हो जाइए। भला ऐसा कौन है जो पहले उस पुतले को नमस्कार न करे। अभी पीछे एक खेत में से गुजरते हुए एक थून पर एक टोप और कोट इसी प्रकार लटके हुए और खेत के मालिक को उसमें सटकर खडे हुए मैंने देखा। मैंने उसे पहचान लिया। मुझे उस किसान का रंग रूप शायद ऋतु प्रभाव के कारण पहले की अपेक्षा उस समय अधिक उतरा हुआ लगा। मैंने एक कुत्ते के बारे में सुना है जो मालिक के घर में कपडे पहनकर घुसनेवाले हर आगन्तुक पर भौंकता था पर

दुर्भाग्य इस बात का दृष्टान्त है) सार्वभौमिक विज्ञान के साथ कदम मिलाना, प्राचीन हानो और फीनीशियन[1] नाविकों से लेकर आज तक के महान अन्वेषक नाविकों साहसी योद्धाओं और व्यापारियों के जीवन चरित्रों का अध्ययन करना अन्त में समय-समय पर माल को सभाल करना और अपनी स्थिति की थाह लेना—यह सारा काम व्यक्ति की क्षमताओं की परीक्षा लेनेवाला है। हानि-लाभ, ब्याज असली वजन और घड़ा निकालने के तरीके और सभी तरह के माप—ये समस्याएं ऐसी हैं जिनके लिए सार्वभौमिक ज्ञान की आवश्यकता होती है।

मैंने सोच लिया है वाल्डन पॉण्ड कारोबार के लिए एक बढ़िया स्थान रहेगा, सिर्फ इसीलिए नहीं कि यहां रेल मार्ग है और बर्फ का व्यापार चलता है, बल्कि यहां और भी कितने ही लाभ हो सकते हैं जिनका रहस्योद्घाटन कर देना नीति विरुद्ध होगा। यहां नेवा[2] जैसा दलदल नहीं है जिसे भरना पड़े। वरो अपने ही लाभ के लिए घर हर कहीं ऊंची ही कुर्सी पर बनाना पड़ता है। कहते हैं कि नेवा में पश्चिमी हवाओं के साथ आनेवाली तूफानी बाढ़ और हिमपात इतना भयंकर होता है कि वह सेंट पीटर्सबर्ग[3] जैसे नगर को भी धरती से मिटा डाले।

मैं अपना कारोबार साधारणतया आवश्यक पूंजी के बिना ही आरम्भ करना चाहता था। इसलिए जो साधन इतने पर भी अनिवार्य थे उन्हें कहां से प्राप्त किया जाए यह गुत्थी आसान नहीं थी। मैं एकदम प्रश्न के व्यावहारिक पक्ष पर आता हूं। पहली समस्या कपड़ों की थी। कपड़े बनाते समय हम सही उपयोगिता का उतना ध्यान नहीं रखते जितना दूसरों की पसन्द-नापसन्द का और एक नयेपन की लालसा का। जिस व्यक्ति को काम में व्यस्त रहना है उसे समझ लेना चाहिए कि कपड़े हम दो उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पहनते हैं। प्रथम तो आन्तरिक ऊष्मा की रक्षा के लिए दूसरे समाज की वर्तमान अवस्था में नंगेपन को ढकने के लिए। उसे यह बात जान लेनी चाहिए कि पोशाक में किसी भी प्रकार की बढ़ोतरी किए बिना आवश्यक अथवा महत्त्वपूर्ण काम का कितना अंश किया जा सकता है। दर्जी

का प्रचार किया था। उसका जहाज ला पेरूज' आस्ट्रेलिया के पास किसी चट्टान से टकराकर नष्ट हो गया था।

१ मध्य सागर के तट के प्राचीन नगर राज्य

२ रूस की एक नदी जिसके किनारे पर सेंट पीटर्सबर्ग अथवा लेनिनग्राद बसा है।

३ सेंट पीटर्सबर्ग का वर्तमान नाम लेनिनग्राद है।

चोर को भी नंगा आता हुआ देखकर चुप हो जाता था। यह एक रोचक प्रश्न है कि यदि मनुष्यों को वस्त्रहीन कर दिया जाए तो कितने होंगे जो अपने पद के गौरव को बनाए रख सकेंगे? तब क्या निश्चित रूप से इंगित किया जा सकेगा कि सभ्य लोगों के इस समूह में ये हैं जो सर्वाधिक प्रतिष्ठित वर्ग के हैं? जब श्रीमती फीफर[1] अपनी साहसपूर्ण विश्व यात्रा के बीच पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ती हुई एशियाई रूस में पहुंची तो उनके कहने के अनुसार उन्होंने अधिकारियों से मिलने जाते समय यात्रा के मैले कपड़े बदलकर अच्छे कपड़े पहनने की जरूरत महसूस की। क्यों? 'क्योंकि मैं अब एक सभ्य देश में थी जहां मानव को उसके कपड़ों से आंका जाता है।' हमारे प्रान्त प्रवासी न्यू इंग्लैंड के नगरों में भी जब कोई व्यक्ति अचानक धनवान बन जाता है तो वह सिर्फ कपड़ों और साज-सामान से ही धन का प्रदर्शन करता है और इस प्रकार वह सभी की प्रशंसा का पात्र बन जाता है। लेकिन कपड़ों को इतना इज्जत देनेवाले ये असंख्य लोग निश्चय ही जंगली हैं। इन्हें सभ्य बनाने के लिए इनके पास धर्म प्रचारकों को भेजा जाना चाहिए। कपड़ों के साथ-साथ सिलाई का धंधा आया। और आप समझिए इस धंधे का तो कोई अन्त ही नहीं। कम से कम स्त्री-वस्त्रों की सिलाई तो कभी पूरी हो ही नहीं सकती।

जिस व्यक्ति को बहुत समय बाद कुछ काम मिला है उसे करने के लिए उसे हर बार नए वस्त्र पहनने की जरूरत नहीं है। उसका काम तो अनिश्चित काल से दुछत्ती में पड़े धूल से सने पुराने कपड़ों में ही चल जाएगा। एक वीर कर्मिष्ठ पुरुष पुराने जूतों को अपने टहलुए की अपेक्षा अधिक दिनों तक चला लेता है। पर ऐसे वीर पुरुष टहलुआ रखा कहां करते हैं। फिर नंगे पैर तो जूतों से भी ज्यादा पुराने हैं। वह तो उनसे भी काम चला लेता है। नए कोट तो उन्हें ही चाहिए जिन्हें सांध्य-सभाओं और विधान-परिषदों में जाना है। वे उतनी ही बार कोट बदलते हैं जितनी बार कोट में लिपटे वे स्वयं बदलते हैं। किन्तु यदि मैं अपनी ऐसी जाकेट ऐसी पतलून ऐसा टोप और ऐसे जूतों को पहनकर भगवान की उपासना कर सकता हूं तो अन्य काम क्या नहीं कर सकता? एक व्यक्ति ने अपने पुराने वस्त्र अपना पुराना कोट पहनकर इतना चीर फाड़ कर डाला है कि का

---

[1] विश्व भ्रमण करनेवाली आस्ट्रियाई महिला फीफर (१७९७–१८५८)। इसने १ ००० मील का जल मार्ग और २१ ००० मील का थल मार्ग तय किया था।

अपनी आदिम अवस्था को प्राप्त हो गया है। उस कोट का किसी गरीब को दे देना दान नहीं कहना सकेगा। चूकि यह व्यक्ति, कम से कम म गुजारा कर सका है, इसलिए इसे अधिक धनी क्यो न मान लिया गया ? मैं तो कहता हू उन सब कामो से दूर रहना चाहिए जिनको करने के लिए कपडो का नया होना तो जरूरी हो, पहननेवाले के व्यक्तित्व का नया होना जरूरी न हो। यदि नया व्यक्तित्व नही उभर सका है तो उसपर नये कपडे सज कैसे सकते हैं ? यदि आपके पास करने को कुछ है तो उन पुराने ही कपडे पहनकर कीजिए। सभी लोग काम करने के लिए वस्त्र नहीं काम करना चाहते है कुछ बनना चाहते हैं। हमारे पुराने कपड़े कितने भी गन्दे और चिथडे क्यो न हो, हम तब तक नई पोशाक नहीं बनानी चाहिए जब तक हम कोई ऐसा काम न कर चुकें, किसी ऐसी दिशा की ओर न बढ चुकें कि हम अपने को पुराने वस्त्रो म नया आदमी महसूस करें और इन कपडे-पुराने कपडो को पहने रहना वैसा ही लग उठे जैसा पुरानी बोतल म नई शराब डाल देना। मुर्गों के लिए पखो के गिरने का समय जिस प्रकार एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन का समय होता है वैसा ही वह हमारे लिए भी होना चाहिए। मुर्गाबी पख-पतन के समय किसी अकेले तालाब म चली जाती है। साप अपनी केंचुली और तितली अपना लार्वा एक आन्तरिक कष्ट और खिचाव के बाद उतारती हैं। इसी प्रकार कपडे हमारे लिए बाहरी खाल की तरह और शरीर पर लिपटे लच्छे की तरह हैं। यदि हम उन्हें इतना अधिक महत्त्व नहीं देंगे, तो हम गलत लहरो म बह जाएगे और अनिवार्य रूप से अपनी और लोगो की धारणाओ के शिकार होंगे।

जैसे कि पौधे होते हैं, जिनपर बाहर की ओर पत पर पत चढ़ती जाती है, उन्हीं की तरह हम वस्त्र पर वस्त्र पहनते जाते हैं। हमारे ऊपरी वस्त्र जो बहुधा बढ़िया और बारीक होते है हमारी बाह्य त्वचा अथवा उस निर्जीव खाल की तरह हैं जो हमारे शरीर का अग नही है एव जिसे शरीर को घातक हानि पहुचाए बिना ही यहा वहा से अलग किया जा सकता है। लगातार पहने जानेवाले मोटे कपडे हमारी बाह्य त्वचा के समान है। लेकिन हमारी कमीज बहुत अन्दर की उस खाल के समान होनी है जिसे बिना शरीर को छील और इस प्रकार मनुष्य को मार डाले बिना उतारा नही जा सकता। मेरा विश्वास है सभी जातियो के लोग किसी न किसी ऋतु मे कमीज जैसे कपडे जरूर पहनते हैं। उचित यह है कि आदमी इतने सादे कपडे पहने कि वह अधेरे म अपनी आत्मा को टटोल सके। उसे सभी दृष्टियो

में इतना सुसंगत और सन्नद्ध रहना चाहिए कि यदि शत्रु नगर पर अधिकार कर ले तो वह बूढ़े दार्शनिक की तरह खाली हाथ निश्चिन्त नगर-द्वार से बाहर निकल जा सके। व्यवहार में एक मोटी झोटी पोशाक बढ़िया और बारीक तीन पोशाकों के बराबर ठहरती है। सस्ता कपड़ा आम ग्राहक की आर्थिक स्थिति के अनुकूल बैठता है। एक घटिया कोट पाँच डालर का आता है और पाँच वर्ष चलता है। घटिया पतलून दो डालर में और गर्म टोपी साढ़े बासठ सेंट में खरीदी जा सकती है। टोपी तो बहुत कम लागत पर घर में भी बनाई जा सकती है। अपने श्रम की कमाई से खरीदे गए इन सस्ते वस्त्रों को पहननेवाला व्यक्ति भला गरीब कैसे है और विज्ञ पुरुष उसे सम्मान क्यों न दें?

जब मैं अपनी दर्जिन से कहता हूँ मुझे फलाँ किस्म के कपड़े सी दो, तो वह मुँह बनाकर कहती है 'अब तो लोग वैसे कपड़े नहीं सिलवाते।' दर्जिन 'लोग' शब्द सहज रूप में कह जाती है उसपर जरा भी जोर नहीं डालती। शायद वह 'लोगों को ग्रीक पुराणों की भाग्य-देवियों'* के समान निरपेक्ष प्रमाण मानती है। वह विश्वास ही नहीं कर पाती कि मैं इतना भी असभ्य हो सकता हूँ कि जो मैं चाह रहा हूँ असल में वही मेरा मतलब भी है। इस प्रकार अपनी आवश्यकतानुसार कपड़े सिलवाना मेरे लिए कठिन हो जाता है। दर्जिन के देववचन जैसे इस वाक्य को सुनकर मैं एक क्षण के लिए अपने विचारों में डूब जाता हूँ। उसके एक एक शब्द पर अलग-अलग सोचता हूँ उनके अर्थों को समझने का प्रयत्न करता हूँ। मैं यह जानना चाहता हूँ कि वे लोग और मैं इन दोनों पक्षों में कितना रक्त सम्बन्ध है और उन्हें क्या अधिकार है कि वे मेरे इस निजी मामले में हस्तक्षेप करें? अन्त में मैं वैसे ही रहस्यपूर्ण ढंग से 'लोग' शब्द पर और अधिक जोर दिए बिना उत्तर देता हूँ सच है अभी कुछ ही पहले तक लोग ऐसे कपड़े नहीं पहनते थे पर अब पहनते हैं। यदि दर्जिन मेरे चरित्र की गहराई को नहीं नाप सकती तो मेरे कन्धों की चौड़ाई और मेरे शरीर की ऊँचाई को नापने से क्या लाभ? क्या मेरा शरीर एक खूँटी है जिसपर कोट लटका दिया जाएगा? हम ग्रीक पुराणों में वर्णित अनुग्रह की अथवा भाग्य की देवियों की पूजा नहीं करते, बल्कि फैशन की

* [illegible] जो मानव के जीवन के सूत्र बुनती हैं। वे [illegible] हैं।

पूजन हैं। दर्जिन पूरे अधिकार के साथ कातती, बुनती है और सीती है। परिस म प्रधान विदूषक यात्रियोंवाली साधारण टोपी पहनता है। अमरीका के विदूषक भी ऐसा ही करते हैं। कभी-कभी तो मुझे निराशा होने लगती है कि दुनिया में कोई भी सच्चा और सीधा काम क्या लोगों के सहयोग से किया जा सकता है? लोगों को पहले एक शक्तिशाली प्रेस म दबाना पड़ेगा। उनकी पुरानी धारणाओं को भींच-कर-खींचकर बाहर निकालना होगा। इतना कि वे दुबारा सिर न उठा सकें। लेकिन हो सकता है कि इतने पर भी किसी एक व्यक्ति के मस्तिष्क में एक कीड़ा मौजूद निकले जिसे पता नहीं कैसे और किसने वहां रख दिया हो, और जो सारे परिश्रम को व्यर्थ कर दे। आग भी इन वृत्तियों को नष्ट नहीं कर सकती। फिर यह भी हमें नहीं भूलना चाहिए कि मिस्र की एक ममी के माध्यम से उस पुराने युग के गेहूं का दाना हमारे हाथों में पहुंच सका है।

सार यह है कि मेरी विचारणा के अनुसार यह नहीं माना जा सकता कि वेश भूषा किसी भी देश में किसी भी काल में कला के सम्माननीय पद तक उठ सकी है। आजकल तो लोग जैसा देखते हैं वैसा ही वेश ग्रहण कर लेते हैं। किसी भग्न जलपान के नाविकों की तरह किनारे पर जो पड़ा मिल जाए उसे ही पहन लेते हैं और काल अथवा स्थान का थोड़ा-सा अन्तर पड़ जाने पर ही एक-दूसरे के बहु-रूपियेपन पर हंसते हैं। हर पीढ़ी पुराने फैशनों का मजाक उड़ाती है, पर नये फैशनों का धार्मिक श्रद्धा के साथ अनुसरण करती है। हेनरी अष्टम अथवा रानी एलिज़ाबेथ की वेशभूषा देखकर हमारा ऐसा मनोरंजन होता है जैसे वे मनुष्य भी जातियों के राजा रानी रहे हों। मनुष्य के ऊपर से सब कपड़े उतार देने पर उसकी दशा करुण अथवा हास्यास्पद बन जाती है। जिसने एक सच्चा, धर्म प्राण जीवन बिताया है वही किसी अन्य जाति की वेशभूषा को देखकर अपनी हंसी रोक सकता है और उसे उचित सम्मान दे सकता है। यदि कमर और भड़कीले वस्त्र पहने, नकाब लगाए, जादू की छड़ी लिए एक मूक विदूषक को गुर्दे का दर्द उठ आए तो उसके उन्हीं कपड़ों को उस करुण स्थिति में भी उसका साथ देना होगा। जब सैनिक पर तोप का गोला पड़ता है तो चिथड़े भी पहले की लाल-नीली वर्दी की तरह ही उसे शोभा प्रदान करते हैं।

स्त्रियों और पुरुषों में नये-नये वस्त्र पहनने की ऐसी बचकाना और असभ्य रुचि मिलती है कि कितने ही कारीगर बहुरूपदर्शी या कैलाइडस्कोप को हिला-

हिलाकर और उसमें घूर घूरकर वर्तमान पीढ़ी को पसन्द के डिज़ाइन खोजने में लग रहते हैं। निर्माता लोग समझ गए हैं कि यह अभिरुचि एक खब्त और सनक के सिवाय कुछ नहीं है। विशेष वर्ण के थोड़े-से धागे एक नमूने में कम हों और दूसरे में अधिक तो एक नमूना हाथों हाथ बिक जाता है और दूसरा पड़ा सड़ता रहता है। और ज्यों ही यह लहर बदलती है वह उपेक्षित नमूना अचानक फैशन की चीज़ बन उठता है। इस प्रवृत्ति की तुलना में मार्केट ता शरीर गुदवाना उतना गन्दी प्रथा नहीं है जितनी समझी जाती है। शरीर पर को जानेवाली यह छपाई क्योंकि खाल तक गहरी और अपरिवर्तनीय होती है बस इसीलिए वह जंगली नहीं कहला सकती।

मेरा विश्वास है कि कारखानों से कपड़े बनवाने का हमारा तरीका सबसे अच्छा तरीका नहीं है। हमारे यहाँ मजदूरों की स्थिति दिन पर दिन अंग्रेज़ों के यहाँ जैसी बनती जा रही है। और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि जहाँ तक मैंने सुना अथवा देखा है कारखानों का मुख्य उद्देश्य मानव मात्र को अच्छे और आवश्यक कपड़े पहनाना नहीं बल्कि असन्दिग्ध रूप में अपने को अधिक से अधिक धनी बनाना होता है। मानव जो लक्ष्य अपने सामने रखता है अन्त में उसी को तो प्राप्त करता है। इसीलिए भले ही शुरू-शुरू में कारखानों को सफलता न मिले फिर भी उन्हें अपने सामने महत्तर उद्देश्य रखने चाहिए।

जहाँ तक आश्रय का सम्बन्ध है मैं इस बात से इन्कार नहीं करूँगा कि अब वह जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। बस एसे दृष्टान्तों की कमी नहीं है जब लोगों ने यहाँ से भी अधिक ठंडे प्रदेशों में लम्बी अवधियों तक घरों के बिना काम चलाया है। समुअल लेंग कहता है, 'लैपलैंड के निवासी खाल के कपड़ों में खाल के ही एक थैले को अपने सिर और कंधों तक ओढ़कर रात को बर्फ पर सोते रहते हैं और उन्हें प्रदेश में इतनी सर्दी पड़ती है कि बढ़िया से बढ़िया ऊनी कपड़े पहनकर भी कोई आदमी खुले में जिन्दा नहीं रह सकता।' उसने उन लोगों को इसी प्रकार सोते देखा है। पर वह आगे कहता है वे लोग दूसरों की अपेक्षा अधिक हट्टे कट्टे नहीं हैं। शायद मानव घर से मिलनेवाले आराम को, घरेलू सुविधाओं के महत्त्व की पहचान बिना अधिक दिन नहीं रह पाया। आरम्भ में शायद 'घरेलू' शब्द पारिवारिक सुख के लिए उतना नहीं जितना आश्रय-स्थल से मिलनेवाले आराम के लिए प्रयुक्त हुआ होगा। लेकिन जिन प्रदेशों में घर की उपयोगिता विशेषकर गर्मी अथवा वर्षा ऋतु से बचाव के लिए ही हम मानते हैं और

हमारी कल्पना म घर का यही अथ निहित रहना है, और जहा वप क दो तिहाई भाग म छतरी के सिवाय सब कुछ अनावश्यक है, वहा घरेलू सुख एक बडी एकागी और सामयिक चीज बन जाना है। हमारे यहा की जलवायु म गर्मियो के दिनो म घर रात्रि क लिए आवश्यक एक आच्छादन मात्र था। यहा क आदिवासियों क विषय म प्राप्त सूचनाओ म पता चलता है कि भोपडे उनके लिए दिन की यात्रा का प्रतीक था। पड की छाल पर अकित अथवा चित्रित भोपडियो की पक्ति सूचित करती थी कि व कितने पडाव डाल चुके हैं। भगवान न मानव को इतना *मजबूत और उसकी टागो को इतना अथक नहीं बनाया है कि वह अपनी दुनिया* का सकीण बनाकर एक दीवार क घेरे म घेर लेने का प्रयास न करे। पहले वह खुले म नगा रहता था। यद्यपि शान्त और मधुर ऋतु म दिन क समय इस प्रकार रहना सुख देता था पर वर्षा और शीत ऋतुए, विशेष कर आग बरसाता हुआ सूय निश्चय ही उसक लिए *असह्य था*। मानव-जाति अपनी शैशवावस्था म ही काल की भेंट हो जाती यदि वह एक घर का आश्रय खोजने और उसके द्वारा स्वय का ढापन की तीव्रता न करती। आदम और हौवा कपडा म पहले टहनिया स अपने शरीर का ढक्त थे, ऐसा पुराणो म लिखा है। मानव न एक घर की, आराम और सुविधा का एक जगह की इच्छा की। पहले उसन अपने शरीर के लिए उष्णता और बाद म मन के लिए सहृदयता चाही।

उस समय की कल्पना कीजिए जब मानव जाति क शैशव म कोई प्रवासी मानव किसी चट्टान के आंचल म आश्रय क लिए जा घुसा था। हर बच्चा अपने सासारिक जीवन को कुछ मात्रा म वही स आरम्भ करता है। वर्षा हो या सर्दी घर म बाहर रहना उसे अच्छा लगता है। एक अन्त प्रेरणा स प्रेरित होकर वह घर और घास के खेल खेलता है। किसे याद नहीं कि छुटपन म वह चट्टान की ढलान को अथवा गुफा के द्वार को कितनी रुचि से निहारा करता था! यह प्रवृत्ति शायद हमम अभी तक जीवित उस अत्यन्त आदिकालीन पूवज की ही नैसर्गिक चाह है। गुफा से हम ताड क पत्तो के, छाल और टहनियो क बुने हुए कपडा के, घास और तिनको क लकडी के फट्टो के तथा पत्थर और टाइलो के घरो तक बढ आए हैं और आज हम खुली हवा म रहना बिलकुल भूल गए हैं। हमारा जीवन, जितना हम सोचते हैं उससे बहुत अधिक घरेलू बन गया है। घर की अपेक्षा खेत हमसे बहुत दूर पड गया है। अच्छा हो कि हम अपने और प्राकृतिक उपादानो के बीच

हिलाकर औ- उसम धूर धूरकर वतमान पीढा को पसन्द क डिजाइन खोजन म लग रहत हैं। निर्माता लोग समझ गए हैं कि यह अभिरुचि एक सस्त और सनक क सिवाय कुछ नही है। विशप वण क थान्न धागा एव नमून म कम हो और दूसर म अधिक ता एक नमूना हाथो-हाथ बिक जाता है और दूसरा पडा सडता रहता है। और जस ही यह लहर बदलती है वह उपक्षित नमूना अचानक फशन की चीज बन उठता है। इस प्रवत्ति की तुलना म मार्के ता शरीर गुदवाना उतनी गन्दी प्रथा नहा है जितनी समझी जाती है। शरीर पर की जानेवाली यह छपाई क्योकि खाल तक गहरी और अपरिवतनीय होनी है बस इसीलिए वह जगली नही कहला सकती।

मरा विश्वास है कि कारखाना स कपड बनवान का हमारा तरीका सबस अच्छा तरीका नही है। हमारे यहा मजदूरा की स्थिति दिन पर दिन अग्रजा क जसी बनती जा रही है। और इसम कोई आश्चय की बात नही है क्योकि जहा तक मैंन सुना अथवा दखा है कारखाना का मुख्य उद्दश्य मानव मात्र को अच्छ और आवश्यक कपड पहनाना नही बल्कि असदिग्ध रूप स अपन को अधि स अधिक धनी बनाना होता है। मानव जो लक्ष्य अपने सामन रखता है अन्त म उसीको ता प्राप्त करता है। इसीलिए भल हो शुरू-शुरू म कारखाना को सफलता न मिल फिर भी उन्ह अपन सामन महत्तर उद्देश्य रखन चाहिए।

जहा तक आश्रय का सम्बन्ध है म इस बात स इन्कार नही करूगा कि अब वह जीवन की अनिवाय आवश्यकता बन गया है। बस एस दृष्टान्ता की कमी नहा है जब लोगो न यहा स भी अधिक ठड प्रदेशा म लम्बी अवधियो तक घरा के बिना काम चलाया है। समुअल लग कहता है 'लपलड क निवासी खाल के कपडा म खाल के एक थन को अपने सिर और कधा तक ओढकर रात का बफ पर सोते रहत हैं और उनके प्रदश म इतनी सर्दी पडती है कि बढिया से बढिया ऊनी कपड पहनकर भी कोई आदमी खुल म जिदा नही रह सकता। उसने उन लोगा का इसी प्रकार सोत दखा है। पर वह आग कहता है व लाग दूसरो का अपक्षा अधिक हट्ट-कट्ट नही है। शायद मानव घर स मिलनवाल आराम को घरलू सुविधाओ क महत्त्व को पहचान बिना अधिक दिन नही रह सका। आरम्भ म शायद घर शब्द पारिवारिक सुख क लिए उतना नही जितना आश्रय-स्थल स मिलनवाल आराम क लिए प्रयुक्त हुआ होगा। लकिन जिन प्रदशा म घर की उपयोगिता विशेष कर सर्दी अथवा वर्षा ऋतु के बचाव क लिए ही हम मानत है और

हमारी कल्पना म घर का यही अथ निहित रहता है और जहा वप के दो तिहाई भाग म छतरी के सिवाय सब कुछ अनावश्यक ह, वहा घरेन सुख एव बडी एकागी और सामयिक चीज बन जाता है। हमारे यहा की जलवायु म गर्मिया व दिना म घर रात्रि के लिए आवश्यक एक आच्छादन मात्र था। यहा क आदिवासिया क विषय म प्राप्त सूचनाओ म पता चलता है कि झोपडा उनक लिए दिन की यात्रा का प्रतीक था। पड की छाल पर अकित अथवा चित्रित झापडिया का पक्ति सूचित करती थी कि वे कितने पडाव डाल चुके ह। भगवान न मानव का इतना मजबूत और उसकी टागो को इतना अथक नही बनाया है कि वह अपनी दुनिया को सकीण बनाकर एक दीवार के घेर म घेर लने का प्रयास न करे। पहले वह खुल म नगा रहता था। यद्यपि शात और मधुर ऋतु म दिन के समय इस प्रकार रहना सुख दता था, पर वर्षा और शीत ऋतुए, विशेष कर आग बरसाता हुआ सूय निश्चय ही उसके लिए असह्य था। मानव-जाति अपनी शशवावस्था म ही काल की भेंट हो जाती यदि वह एक घर का आश्रय खोजने और उसके द्वारा स्वय का ढापन की शीघ्रता न करती। आदम और हौवा कपडो म पहल टहनिया स अपन शरीर को ढकते थे, ऐसा पुराणो म लिखा है। मानव ने एक घर की, आराम और सुविधा की एक जगह की इच्छा की। पहले उसने अपन शरीर के लिए उष्णता और बाद म मन के लिए सहृदयता चाही।

उस समय की कल्पना कीजिए जब मानव जाति क शशव म कोई प्रयासी मानव किसी चट्टान क खोखल म आश्रय के लिए जा घुसा था। हर बच्चा अपने सासारिक जीवन को कुछ मात्रा मे वही से आरम्भ करता है। वर्षा हो या सर्दी घर से बाहर रहना उसे अच्छा लगता है। एक अन्त प्रेरणा स प्रेरित होकर वह घर और घाडे क खेल खेलता है। किसे याद नही कि छुटपन म वह चट्टान की ढलान को अथवा गुफा क द्वार को कितनी रुचि से निहारा करता था। यह प्रवृत्ति शायद हमम अभी तक जीवित उस अत्यन्त आदिकालीन पूवज की ही नैसर्गिक चाह है। गुफा से हम ताड के पत्तो के, छाल और टहनियो के बुन हुए कपडो के घास और तिनको के, लकडी के फट्टो के तथा पत्थर और टाइलो के घरो तक बढ आए है और आज हम खुली हवा म रहना बिलकुल भूल गए हैं। हमारा जीवन जितना हम सोचते हैं, उसम बहुत अधिक घरेलू बन गया है। घर की अपेक्षा खेत हमसे बहुत दूर पड गया है। अच्छा हो कि हम अपन और प्राकृतिक उपादानों के बीच

के व्यवधान को हटा दें और अपने अधिक से अधिक दिन रात बाहर बिताए। कवि छत के नीचे बठकर कविता न लिखे संन्यासी घर म ठहरना पसन्द न करें। पक्षी गुफाओ मे बन्द होकर नही गा सकते। कबूतर दर्बों म रहकर अपनी भोली भीडाए नही कर सकते।

खैर, यदि आप अपने लिए एक घर बनाना चाहते हैं तो शुभ यही होगा कि आप अमरीकिया की एतद्विषयक निपुणता का कम स कम उपयोग करें। नहीं तो हो सकता है घर के बदले आप अपने को किसी कारखाने म, किसी मार्ग शून्य भूल भुलया म अजायबघर म सेवा सदन म जेल म अथवा एक बढ़िया समाधि भवन म बठा पाए। विचारणीय पहली बात तो यह है कि आश्रय कितनी दूर तक एकदम अनिवार्य है। मैंन इसी नगर म पेनाब्सकाट आदिवासियो[१] को एक फुट गहरी वर्षा के बीच पतल सूती कपड के खेमा म रहते देखा है। मैंन सोचा शायद वे चाहते हैं कि बफ और अधिक ऊची जम जाए जिससे हवा दूर हो दूर रह सके। अपने मुख्य उद्यम मे स्वत त्रतापूवक सलग्न रहते हुए भी नतिक उपाय स जीविका कस उपार्जित की जाए—जिन दिनो यह समस्या मेरे लिए सिरदद बनी रहती थी उन दिनो की बात है आज की नही क्योकि दुर्भाग्यवश आज तो मैं कट्टर बन गया हू। उन दिनो मैं छ फुट लम्ब, तीन फुट चौड एक स दूक को अक्सर रेल की पटरी के किनारे पड देखा करता था। इसम मजदूर अपने औजार रात भर के लिए बन्द कर दिया करते थ। मैंन सोचा कि एक निधन, तग आदमी क्या न एसा ही एक सन्दूक एक डालर म खरीद ल ? हवा के लिए उसम कुछ छेद बना ल और रात के समय अथवा वर्षा होने पर उसम घुस जाए और अन्दर से हुक लगा ले। इस प्रकार उसकी आत्मा और उसके मनोभाव स्वतन्त्र रह सकेंगे। इसे किसी भी दशा म सबस भद्दा और त्याज्य आश्रय नहीं कहा जा सकता। जितनी भी देर स चाहे आप उठें और जब भी उठें निश्चिन्त भाव से बाहर चल जाए। कोई भी जमींदार अथवा मकान मालिक किराये के लिए आपका पीछा नही करेगा। वह सन्दूक आपको जाड स मरने नहीं देगा, लेकिन एक बड विलासपूर्ण मकान रूपी सन्दूक का किराया देने की चिन्ता निश्चय ही आपके प्राण ले लेगी। मैं मजाक नहीं करता, अय व्यवस्था को लोग हलका और महत्त्वशून्य विषय मानते है। पर इस

---

१ पेनाब्सकाट की खाडी पर रहनेवाले अलगाकियन परिवार के आदिवासी

प्रकार विषय मे छुटकारा तो नही मिल जाता। अधिकतर बाहर खुले म रहनवाली उद्धत और हट्टी-कट्टी मानव-जाति न पहला आरामदेह घर उस सामग्री मे बनाया था जो उसे प्रकृति का ओर से अनायास यथाप्रस्तुत मिल गई थी। मासाचूसेटस उपनिवेश के आदिवासिया के अधीक्षक गूकिन न सन १६७४ म लिखा था, "आदिवासी लोग पडा के वक्कला को जिस ऋतु म वे गील और हरे हान हैं, उतार लते हैं। उन्ह लकडी के भारी लट्ठा स दबाकर वे बडी-बडी फर्दें तैयार करते हैं जिनको उनके सर्वोत्तम कहलानवाले घरा पर डाला जाता है। इनस ये घर बडे हा साफ-सुथर, ठोस और गम बन जाते हैं। घटिया माने जानवाल घर एक किस्म की सवार घास की बनी चटाइया से ढाप जात हैं। ये भी पहल घरा जितन ता नही, पर काफी बन्द और गम हात हैं। इनमे से कुछ घर साठ अथवा सौ फुट तक लम्ब और तीस फुट तक चौडे पाए गए हैं। मैं बहुधा आदिवासिया के इन घरा म टिका हू और मैंन उन्हें बढिया मे बढिया अग्रजी घरा के समान ही आरामदेह पाया है।" *वह आग लिखता है कि इन घरा म साधारणतया बढिया बुनी हुई* और कसीदाकारी से सजी हुई चटाइया के कालीन बिछे हान हैं और कितन ही प्रकार के बतन भी वहा मिलते हैं। ये आदिवासी लाग इतनी प्रगति कर गए थे कि हवा के प्रभाव का नियमित करने के लिए वे छत म बन एक सूराख पर एक टाट लटका लत थे जिसे एक रस्सी के द्वारा हटाया अथवा डाला जा सकता था। ऐसा घर एक नहा ता अधिक से अधिक दो दिना म बनकर तयार हो जाता था और उस गिराकर कुछ ही घटा म दुबारा खडा किया जा सकता था। हर परिवार के पास अपना एक घर अथवा किसी घर म अपना एक कमरा हाता था।

उस जगली सभ्यता म हर परिवार के पास उनकी स्थिति के अनुकूल एक बढिया अपना घर था जो उनकी साधारण और मोटी भोटी आवश्यकताआ के लिए काफी हाता था। लेकिन यद्यपि पक्षिया के घोसल हान हैं और लामडिया के बिल और जगली जातिया अपन झापडा म रहती हैं, पर आधुनिक सभ्य समाज के आधे से अधिक परिवारा के पास उनके अपन घर नही हैं। मैं समझता हू कोई अनुचित और सीमा से *बाहर की बात मैं नहीं कह गया हू।* बडे नगरा म, जहा सभ्यता का विशेष प्रसार है पूरी आबादी का बहुत ही छोटा हिस्सा अपन घरा का मालिक है। शप लाग गर्मी और सर्दी दोना ऋतुआ म अनिवाय इस बाह्य परिधान के लिए वार्षिक किराया देते हैं। यह किराया आदिवासिया की भाप

डिया के एक पूरे गाँव को खरीद लेने के लिए काफी हो सकता है। यह किराया जीवन भर उन्हें गरीब बनाए रखता है। यहाँ मैं निजी घर की तुलना में किराये के घर की हानियाँ गिनाने नहीं चला हूँ। पर इतनी बात स्पष्ट है कि जंगली लोगों के घर उनके अपने इसीलिए बन पाते हैं क्योंकि वे बहुत ही थोड़े में बन जाते हैं और साधारणतया किराये में रहनेवाले सभ्य लोग इसीलिए अपना घर बनाने की क्षमता नहीं रखते क्योंकि वे बहुत ही महँगे बनते हैं और अन्त में तो अधिक अच्छा मकान किराये लेने की हिम्मत भी उनमें नहीं बचती। कहा जा सकता है कि गरीब सभ्य नागरिक इस मामूली किराये के बदले रहने के लिए ऐसा घर पा जाता है जो जंगली लोगों के महल जैसा होता है। यह सच है कि पच्चीस से लेकर सौ डालर तक का वार्षिक किराया (यह किराया ग्रामीण क्षेत्रों का है) देकर व्यक्ति सदियों में विकसित इन सुविधाओं को भोगने का अधिकार पा लेता है—दीवारों पर रोगन और कागज की मढ़ाई, रमफोर्ड की अंगीठियाँ, पलस्तर, वेनिस के ढंग के खिड़कियों के पर्दे, पीतल के पम्प, स्प्रिंग के ताले, बड़े खुले तहखाने और अन्य कितनी ही ऐसी चीजें। लेकिन क्या है ऐसा? इन सब सुविधाओं का आनन्द उठानेवाला व्यक्ति एक साधारण निर्धन सभ्य है, जबकि जिस जंगली के पास ये सब चीजें नहीं हैं, वह जंगली होते हुए भी सम्पन्न है। यदि यह कहा जाए कि मानव जीवन की स्थितियों में सच्ची प्रगति का नाम ही सभ्यता है—और मैं समझता हूँ यही सत्य भी है, यद्यपि सिर्फ विचक्षण पुरुष ही उसमें सुधार कर पाते हैं—तो हमें लागत बढ़ाए बिना पहले से बढ़िया घर बनाकर दिखाना चाहिए। वस्तु की कीमत पैसा नहीं है, वह जिन्दगी है जो हम उसके बदले में तत्काल अथवा बाद में देनी पड़ती है। इस प्रदेश में एक औसत घर की कीमत शायद आठ सौ डालर है। इतना धन जमा करने में एक मजदूर को अपने जीवन के दस से पन्द्रह तक वर्ष लगाने पड़ेंगे। यह भी तब हो सकेगा जब परिवार का बोझ उसके कन्धों पर न डाला जाए। यह गणना प्रति व्यक्ति प्रतिदिन एक डालर के हिसाब से लगाई गई है क्योंकि कुछ लोग अधिक कमाते हैं तो कुछ कम भी कमाते हैं। इस प्रकार अपने लिए एक निजी झोंपड़ा उपलब्ध कर लेने में व्यक्ति को साधारणतया अपना आधे से अधिक जीवन लगा देना पड़ेगा और यदि साथ ही उसे किराया भी देते रहना पड़ा तो यह चुनाव बहुत शुभ सिद्ध नहीं होगा। मैं पूछता हूँ, क्या एक जंगली अपने झोंपड़े के बदले इस कीमत पर एक महल लेने की बुद्धिमानी करेगा?

ऐसा लग सकता है कि इस आवश्यक सम्पत्ति से मिलनेवाले लाभ को मैंने एकदम न्यून बना दिया है। मैंने उसे भविष्य में काम आनेवाली एक पूंजी और जहा तक व्यक्ति का सम्बन्ध है उसकी अन्त्येष्टि का व्यय चुकाने के लिए रक्षित धन बता दिया है। लेकिन शायद व्यक्ति को अपने को स्वयं दफनाना नहीं पड़ता। फिर भी इस बात में सभ्य और जगली मानवों के बीच वर्तमान एक महत्त्वपूर्ण अन्तर की ओर संकेत निहित है। मानव ने सभ्य जातियों के जीवन को एक संस्था का रूप दे दिया है जिसमें व्यक्ति का जीवन बहुत दूर तक मानव-जाति को अमर और पूर्ण बनाने के उसके मनसूबों को पूरा करने में लगा दिया जाता है। निस्सन्देह यह हम सभी के लाभ के लिए है लेकिन मैं दिखाना चाहता हूं कि आज दिन यह लाभ कितने बड़े बलिदान के बाद प्राप्त किया जा रहा है। मैं यह प्रस्ताव रखना चाहता हूं कि सम्भव हो तो हम इस प्रणाली से रहें कि बिना कोई हानि उठाए हम पूरा लाभ प्राप्त कर सकें। ऐसी बातें कहने का क्या अर्थ है कि हममें से कुछ सदा ही गरीब रहेंगे, कि हमारे पूर्वजों को असफलताएं झेलनी पड़ी थीं, और यह कि उनकी सन्ततियों को वीभत्स त्रास का अनुभव करना पड़ रहा है?

"मसीहा ने कहा है क्योंकि मैं हूं इसलिए इसराईल में ऐसी बात कहने का अवसर तुम्हें आगे नहीं मिलेगा।

"देखो, सब आत्माएं मेरी हैं। पिता की आत्मा भी और उसी प्रकार पुत्र की आत्मा भी मेरी है। जो आत्मा पाप करेगी वह मर जाएगी।

मेरे पड़ोसी कानकाड के किसान-समाज के अन्य वर्गों के समान ही कम से कम अच्छे खाते-पीते लोग जरूर हैं। जब मैं उनके बारे में सोचता हूं तो पाता हूं कि वे अपने जीवन के बीस तीस चालीस वर्षों तक इस आशा में खून-पसीना बहाते रहते हैं कि वे अपने खेतों के असल मालिक बन सकेंगे। आम तौर से वे खेतों को या तो बन्धक रखी पतक सम्पत्ति के रूप में पाते हैं अथवा ऋण के धन से उन्हें खरीदते हैं। इस भार के तिहाई भाग को उनके घरों का मूल्य समझ लीजिए। साधारणतया उसे भी वे अदा नहीं कर चुके होते। सच तो यह है कि बन्धक में देय धन कभी-कभी खेतों के मूल्य से बढ़ जाता है और इस प्रकार खेत अपने में एक भारी मुसीबत बन जाते हैं। यह सब अच्छी तरह जानते-बूझते हुए भी व्यक्ति इस पतक सम्पत्ति को ग्रहण करता है। कर निर्धारकों से पूछ-ताछ करने पर यह जान कर मैं हैरान रह गया कि इस नगर में बारह व्यक्ति भी ऐसे नहीं हैं जिनके खेत

निबन्ध हों निस्सन्दिग्ध रूप में उनके अपने हों। यदि आप इन घरों का इतिहास जानना चाहते हैं तो उन बैंकों से पूछताछ कीजिए जहाँ वे गिरवी रखे हैं। जो विशेष कर श्रम करके उसकी कीमत चुका पाए हैं ऐसे व्यक्ति उँगलियों पर गिने जा सकते हैं। कानकार्ड में तो शायद ऐसे तीन भी व्यक्ति न हों। व्यापारियों के बारे में कहा गया है कि उनमें अधिकांश की सौ में सत्तानवे तक का विफलता सुनिश्चित है। यह बात किसानों के बारे में भी उतनी ही सच है। व्यापारियों में से एक ने अपने वर्ग के विषय में यथार्थ ही कहा है कि उनकी विफलताएँ अधिकतर आर्थिक विफलताएँ नहीं होतीं। वे असुविधाजनक वादों को पूरा करने में असमर्थताएँ मात्र होती हैं। यह उनके नैतिक चरित्र का पतन तो हुआ न। इससे वस्तुस्थिति का निकृष्टतम पक्ष सामने आता है। इससे पता चलता है कि सौ में बाकी बचे तीन व्यापारी भी अपनी आत्मा की रक्षा में सफल नहीं हो पाते क्योंकि वे प्रत्यक्षतः विफल दीखनेवाले व्यापारियों से भी अधिक दीवालिये बन चुके हैं। दीवालिया होना और ऋण से मुकर जाना वे उछाल तख्ते हैं जिनपर से हमारी अधिकांश सभ्यता ऊपर उछलती है, मुड़ती है और कलाबाजियाँ खाती है। लेकिन जंगली जातियाँ भूख और अकाल के कड़े तख्ते पर खड़ी रहती हैं। फिर भी मिडिलसेक्स का पशु मेला वर्ष-पर-वर्ष पूरी शान शौकत से लगता रहता है जिससे लगे कि हमारे कृषि-जीवन के सभी जोड़ ठीक और गतिशील हैं।

किसान जीविका की अपनी समस्या को एक ऐसे उपाय से हल करने का प्रयास कर रहा है जो मूल समस्या से भी अधिक उलझा हुआ है। इसके लिए वह पशुओं का सट्टा करता है। पूरी चतुराई से लासा लगाकर वह ऋण मुक्ति और सुविधाएँ पकड़ पाने की आशा में जाल फैलाता है। लेकिन जैसे ही वह मुड़ता है वह अपना ही पैर उस फन्दे में फँसा बैठता है। यही कारण है कि वह गरीब है। इन्हीं कारणों से हम सभी हर प्रकार के विलास साधनों से घिरे रहकर भी हजारों जंगली लोगों की तुलना में गरीब हैं। कवि चैपमैन ने लिखा है

> मानवों का झूठा समाज
> ऐहिक महत्त्व के लिए
> स्वर्ग के सुखों को हवा में उड़ा देता है।'

और यदि किसान निजी घर खरीद भी पाता है तो वह इस घर को लेकर धनी नहीं, पहले से गरीब ही बन जाता है क्योंकि उसने घर को नहीं शायद घर

ने ही उसे खरीद लिया होता है। ग्रीक पुराणा के मिनर्वा[1] ने जो घर बनाया था, मोमस[2] ने उसपर यह सगत आपत्ति की थी कि उसने घर का सचल नही बनाया है जिससे एक बुरे पडोसी के सग से बचा जा सके।" हमारे घरा के बारे म ठीक यही बात कही जा सकती है। व ऐसी दुवह सम्पत्ति है कि उनम रहने के बदले हम उनम कद हो जात हैं। लकिन यहा बुरा पडोसी कौन है ? वह है हमारा अपना क्षुद्र, अधम व्यक्तित्व। मैं इस नगर के कम से कम एक या दो ऐसे परिवारा को जानता हू जो उपनगर स्थित अपने घरो को बचकर गाव चले जाने के लिए लगभग एक पीढी से उत्कठित हैं, पर अभी तक जा नही सके हैं। शायद मौत ही उन्हें इन घरा से मुक्ति दिला सकेगी।

चलिए मान लिया कि अधिकतर लोग वतमान सुविधाआवाले इन आधुनिक घरो को खरीद लेने अथवा इन्हे किराये पर ले लेने म समथ हो जाते हैं। लेकिन जिस सभ्यता न हमारे घरा को इतना विकसित किया है वह उनम बसनेवाले मानवा को उतना ही सस्कृत नही बना सकी है। उसने महल खडे किए सही पर राजाआ और सामन्तो की सृष्टि करना उतना आसान नही है। यदि एक सभ्य मानव का जीवन लक्ष्य असभ्य जगली से उन्नत नही है यदि वह भी अपन जीवन का एक बडा भाग एहिक आवश्यकताआ और सुविधाआ को प्राप्त करन म ही लगा देता है, तो उस असभ्य की अपेक्षा अधिक बढिया घर म रहने का क्या अधिकार है ?

लकिन देखें ता कि गरीब अल्पसख्यका का बसर कसे होता है ? देखने पर शायद पता लग कि सासारिक स्थिति की दष्टि से कुछ लाग जगलियो से जितन अनुपात म उन्नत हैं शेष ठीक उतन ही अनुपात म अवनत हैं। एक वग का विलास दूसरे की दरिद्रता स सतुलित होता है। यदि एक आर महल खडे हैं तो दूसरी आर दान-गह हैं और 'मूक दरिद्र' हैं। वे लाखो लोग जिन्होने मिस्र के सम्राटा की कब्रा पर बडे-बडे पिरामिड बनाए खाली लहसुन खाकर जीवित रहते थे। शायद उन्हे स्वय बढिया तरह दफनाया जाना नसीब नही हो सका था। महल के मुडेर को रूप देनेवाला मिस्त्री उस कुटीर म रहता है जो एक जगली झोपडे से अच्छा

---

१ कला की शिल्पकला की देवी
२ ग्रीक पुराणों के अनुसार मोमस रात का बेटा है। वह हर किसीकी आलोचना करने और गलतिया निकालने का अधिकार रखता है।

कर सकता था ? मैं तो खुली हवा में रहना पसन्द करूँगा। घास तब तक भी नहीं होती जब तक आदमी वहाँ की जमीन खोद न डाले।

विलासी और व्यसनी किस्म के लोग होते हैं वे, जो फैशन चलाते हैं और भीड़ प्रयासपूर्वक उन्हीं के पीछे चल पड़ती है। तथाकथित सर्वोत्तम सरायों में टिकने वाला यात्री बहुत शीघ्र ही इस तथ्य को जान लेता है। नन्यिारे उसे असीरिया के विलासी और स्त्रैण राजा सारदनापालस[1] ही समझ बैठते हैं और यदि वह यात्री स्वयं को उनकी नाजुक मेहरबानियों पर छोड़ दे तो वे शीघ्र ही उसे पूरी तरह नपुंसक बना डालते हैं। मैं समझता हूँ रेल के डिब्बे बनाते समय हम सुरक्षा और सुविधा पर उतना खर्च नहीं करते जितना विलास साधनों पर। निर्माताओं को इस बात का डर लगा रहता है कि यदि रेल के डिब्बों में धूम्रपान-गृह, गद्देदार चौकियाँ, धूप के लिए पर्दे और सैकड़ों अन्य प्राच्य विलासोपकरण न जुटाए गए तो वे आधुनिक बैठकखानों से बढ़िया न बन पाएँगे। ये सब उपकरण पूर्व के हरमों की बेगमों और चीन के स्त्रैणचित्त नागरिकों के लिए बनाए जाते हैं। इन्हीं को हम लोग अपने साथ यहाँ पश्चिम में ले आए हैं। जोनाथन[2] तो शायद इनसे परिचित होने में भी शर्म महसूस करे। मैं अकेले तो एक कद्दू पर बैठना भी पसन्द करूँगा पर लोगों की भीड़ में मखमली गद्दों पर आसीन होना भी मुझे अरुचिकर होगा। एक बैलगाड़ी में बैठकर धरती पर आजादी के साथ घूमना मुझे अच्छा लगेगा, पर आमोद प्रमोद के लिए चली एक रेलगाड़ी के बढ़िया डिब्बे की गन्दी हवा में साँस लेकर स्वर्ग की भी सैर करना मेरे बस से बाहर की बात है।

आदिम युगों के मानव की सादगी और नग्नता का कम से कम इतना लाभ अवश्य था कि उसे प्रकृति के बीच सतत भ्रमणशील रहना पड़ता था। वह कहीं भी बहुत थोड़ी देर के लिए ही टिक पाता था। खाया पिया सोया ताजा हुआ और फिर अपनी यात्रा पर चल पड़ा। इस संसार में वह एक तम्बू में ही टिकता था और घाटियों में या रास्ता बनाता हुआ मैदानों को चीरता हुआ अथवा पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ता हुआ निरन्तर मार्ग बदलता रहता था। किन्तु लीजिए, आज का

---

१ प्राचीन असीरिया का अन्तिम राजा। यह बड़ा ही विलासी और कायर था।

२ अमरीका के लोग सामूहिक रूप से इसी नाम से पुकारे जाते हैं। यह नाम गवर्नर जोनाथन ट्रंबल (१७१० १७८५) के नाम पर पड़ा।

मानव अपने यत्रों का यत्र बन गया है। जो कभी खुले गगन पर स्वच्छन्दता से पंख तोड़कर गाता था वह अब विमान बन बैठा है जो कभी पेड़ के नीचे आश्रय लिया करता था वह अब गृहस्थी बन गया है। हम अब कहीं भी एक रात के लिए डेरा नहीं लगाते हम एक जगह बस गए हैं और स्वर्ग को भूल गए हैं। हमने स्थान्यन को कृषि की अथवा ग्रामीण संस्कृति को संस्कृत रूप मानकर ही ग्रहण किया है। हमने वर्तमान पीढ़ी के लिए एक कौटुम्बिक भवन बनाया है पर अगली पीढ़ी के लिए एक मामूली कब्र बना जाती है। सर्वोत्तम कलाकृतियाँ इस परिस्थिति से मुक्ति पाने के मानवीय संघर्ष की ही अभिव्यक्तियाँ हैं। लेकिन हमारी कला का हम पर यही प्रभाव पड़ा है कि हम इस हीन दशा को अपने लिए सुविधाजनक बना लें और उस उच्च स्थिति को भूल जाएँ। असल में बढ़िया कलाकृतियों के लिए इस गाँव में कोई स्थान नहीं है। अगर कोई कृति जीवन भर के लिए हम मिल भी जाए तो हमारे घरों में और हमारे मार्गों पर उसे स्थापित करने के लिए कोई उचित पीठिका नहीं मिलेगी। यहाँ कोई कील नहीं है जिसपर कोई चित्र लटकाया जा सके कोई अलमारी नहीं है जिसमें किसी वीर पुरुष अथवा सन्त की आवक्ष प्रतिमा सजाई जा सके। जब मैं सोचता हूँ कि कैसे हमारे इन घरों का निर्माण हुआ है कैसे इनकी कीमत अदा की गई है इनकी अर्थ-व्यवस्था कैसे चलाई और कायम रखी जाती है तो मुझे हैरानी होती है कि आज से सैकड़ भड़कीले खिलौना की तारीफ करनेवाले अतिथि के पैरों के नीचे से जमीन क्यों नहीं खिसक जाती और वह क्यों नहीं उस तलस्थान में जा पड़ता जहाँ की जमीन अधिक पक्की और वास्तविक है? मैं यह अनुभव किए बिना नहीं रह पाता कि इस तथाकथित सम्पन्न और सभ्य जीवन भूमि पर जबर्दस्ती कूद आया गया है। जब मैं इन घरों में सजी कलाकृतियों का स्मरण करता हूँ तो इस कूद आने की बात में इतना उलझ उठता हूँ कि कला का आनन्द ले ही नहीं पाता। जहाँ तक मुझे याद है मानवीय मांसपेशियों के बल पर सबसे लम्बी छलाँग उन खानाबदोश अरबों ने लगाई बताई जाती है जो समतल भूमि पर पचीस फुट ऊँचा कूद गए थे। बिना किसी कृत्रिम सहारे के मनुष्य इतना ऊँचा टिका नहीं रह सकता उसे धरती पर लौटना ही पड़ता है। इतनी बड़ी अनुचित सम्पत्ति के मालिक से मैं यह प्रश्न किए बिना नहीं रह सकता कि कौन है जो तुम्हें सहारा देता है? तुम असफल लोगों में सत्तानबे में से एक हो अथवा सफल होनेवाले तीन में से एक? पहले मेरे इस प्रश्न का उत्तर

दो और तभी मैं तुम्हारे इन भड़कीले खिलौनों का देख पाऊंगा और उन्हें सस्ता समझ पाऊंगा। घोड़े के आगे लगी गाड़ी न सुन्दर लगती है, न लाभप्रद। अपने घरों को सुन्दर वस्तुओं से सजाने से पहले हम दीवारों को उखाड़ डालना चाहिए अपने जीवन का निरावरण निश्चय कर लेना चाहिए और वास्तविक रूप में सुन्दर घर-द्वार और जीवन की नींव रखनी चाहिए। असल में सौन्दर्य की रुचि का विकास घर से बाहर ही किया जा सकता है जहां न घर होता है न घर का रखवाला।

वृद्ध जानसन[1] ने अपनी पुस्तक वण्डर वर्किंग प्राविडेन्स में समसामयिक उन लोगों के बारे में बताया है, जिन्होंने आकर इस नगर में पहली बस्ती बसाई थी। वह लिखता है अपने घर वे इस प्रकार बनाते हैं। वे किसी पहाड़ी से सटकर धरती में बड़े-बड़े गढे खोद लेते है। ऊपर लकड़ी बिछाकर उस मिट्टी से ढाप देते हैं। अन्दर ऊंचा तरफ जमीन पर वे चूल्हा सुलगाते हैं।' वह आगे लिखता है 'उन लोगों ने तब तक अपने लिए घर नहीं बनाए जब तक भूमि ईश्वर की कृपा से खाने के लिए पर्याप्त अन्न पैदा नहीं करने लगी। पहले वर्ष फसल इतनी कम हुई कि एक लम्बी अवधि तक उन्हें अपनी डबलरोटी के टुकड़े पतले काटने को विवश होना पड़ा। सन १६५० में न्यू नीदरलैंड प्रान्त के सचिव ने उन लोगों की सूचना के लिए जो इस भूमि पर आकर बसना चाहते थे डच भाषा में यह बात विशेष जोर देकर लिखी कि न्यू नीदरलैंड और विशेषकर न्यू इंगलैंड के लोगों के पास इच्छानुसार घर बना लेने के साधन नहीं हैं। वे तहखाने के ढंग का एक चौकोर गढ़ा ज़मीन में खोद लेते हैं जो छः या सात फुट गहरा और जितना भी वे ठीक समझते हैं उतना लम्बा और चौड़ा होता है। चारों ओर दीवारों पर वे लकड़ी मढ़ लेते हैं। धरती के धसाव को रोकने के लिए पेड़ों की छाल या कुछ और चीज़ वे उस लकड़ी पर अस्तर की तरह चढ़ा लेते हैं। इस तहखाने के फर्श पर वे तख्ते जड़ देते हैं और ऊपर सिर पर बल्लियां बिछाकर नीचे की तरफ तख्ता बन्दी कर देते हैं और छाल या घास मिट्टी बल्लियों के बीच में भरकर सतह एक सी कर देते है जिससे इन घरों में आवश्यक गर्मी और गुनगुना रह सके और पूरे के पूरे परिवार दो तीन, चार वर्षों तक इनमें बस सकें। वे परिवार का सदस्य

---

१ १७०१ से १७८४ तक जीवित अंग्रेजी का प्रसिद्ध लेखक

सख्या के अनुसार इन तहखानो के हिस्से भी कर लेते हैं। इन बस्तियो के आर-म्भिक दिनो मे न्यू इगलड के धनी और प्रमुख लोगो ने इसी किस्म के घरो मे रहना आरम्भ किया। इसके दो कारण रहे। पहले तो यह कि वे गृह निर्माण मे समय बर-बाद करना और अगले मौसम मे अन्न की कमी होने देना नही चाहते थे। दूसरे, वे उन गरीब मजदूरो को भी अनुत्साहित करना नही चाहते थे जिन्हें वे बडी सख्या मे पितृदेश से लाए थे। तीन या चार वर्षों बाद जब इस प्रदेश मे खूब खेती होने लगी, तब हजारो रुपये खर्च करके उन्होंने अपने लिए सुन्दर घर बना लिए।'

हमारे पूर्वजो ने जो मार्ग अपनाया उससे कम से कम उनका दूरदर्शी होना प्रकट है। उससे यह पता लगता है कि उन्होंने प्रमुखतम आवश्यकता पहले पूरा करने के सिद्धान्त को ग्रहण किया। लेकिन क्या आज भी प्रमुखतम आवश्यकताए पहले पूरी की जाती हैं ? जब भी मैं अपने लिए एक शानदार घर उपलब्ध करने की सोचता हू तभी यह विचार मुझे सकुचित करता है कि देश मे अभी तक एक मानवतावादी संस्कृति फलित नही हुई है और हम अभी तक अपनी आध्यात्मिक रोटी के टुकडे उससे भी अधिक पतले काटने को विवश हैं जितने कि हमारे पूर्वजो ने गेहू की रोटी के काटे थे। यह जरूरी नही है कि कठिन से कठिन समय मे भी स्थापत्य की सजावट की उपेक्षा की जाए। लेकिन प्रथमत हमारे घर उतनी ही दूर तक कलात्मक बनाए जाने चाहिए जितनी दूर तक बसा करना हमारे जीवन के लिए आवश्यक है। कला को जीवन पर लादा न जाए। शख और घोंघे अपने घर ठीक इसी नीति से बनाते हैं। लेकिन अफसोस, मैं एक या दो भवनो मे गया हू और मैं जानता हू कि वे किस कला से अलकृत है।

हम अभी इतने नही गिर गए हैं कि एक गुफा अथवा एक झोपडा मे न रह सकें और खाल पहनकर गुजारा न कर सकें। पर निश्चय ही अच्छा यही होगा कि आविष्कार और उद्योगो ने भारी मूल्य लेकर जो सुविधाए मानवता को प्रदान की हैं उसका लाभ हम उठाए। इस जैसे प्रदेश मे लकडी के तख्ते और छिपटिया, चूना और ईंटें आदि गुफाओ, लकडी के पूरे लट्ठो, पर्याप्त छाल, पकी हुई मिट्टी के ढेलो अथवा चपटे पत्थरो से ज्यादा सस्ते और सहज उपलब्ध हैं। मैं यह सब बात समझ-बूझकर कह रहा हू, क्योंकि बौद्धिक और व्यावहारिक दोनो ही रूपो मे मैंने इस विषय का ज्ञान प्राप्त किया है। यदि हम थोडा और बुद्धि से काम लें तो इसी सामग्री से हम आज के सम्पन्नतम लोगो से अधिक सम्पन्न बन सकते है और अपनी

दा और सभी की सुविधा के अनुसार इन मकानों में खिड़कियों का स्थान पाएगा और उन्हें ऐसा स्थान मिलना चाहिए। घर के अंग सभी स्थानों में सुन्दर लगते हैं न कि सामान्य। अपने घर को सुन्दर वस्तुओं से सजाने में अपने मन की भावना को उचित स्थान चाहिए। अपने जीवन का निजस्व भी घर में रहना चाहिए और वास्तविक रूप से सुन्दर घर द्वार और जीवन का नाता रखना चाहिए। अन्त में लोगों की रुचि का विचार घर से बाहर ही किया जा सकता है। ऐसा न घर होता है न घर का रखवाला।

यह ऑल्कट[1] ने अपनी पुस्तक वण्डरवर्ल्ड इंग्लिश में गमनागमन के उन लोगों के बारे में बताया है जिन्होंने आकर इस तरह से अपनी बस्ती बसाई थी। वह लिखता है कि अपने घर वे इस प्रकार बनाते हैं। वे जितना पसन्द करते हैं उतना स्वच्छ घरों में बन्द रहना पसन्द करते हैं। ऊपर लकड़ी बिछाकर उस मिट्टी से ढक देते हैं। अन्दर ऊँची सतह जमीन पर वे भूसा बिछाते हैं। वह आगे लिखता है कि उन लोगों ने तब तक अपने लिए घर नहीं बनाए जब तक भूमि रोपकर फसल न उगा लें। अपने लिए मकान उन्होंने नहीं बनाए। इतनी कम हुई कि इस लम्बी अवधि तक उन्हें अपनी झोंपड़ियों में रहकर काम करना पड़ा। सन १६५० में न्यू नीदरलैण्ड प्रान्त के सचिव ने उन लोगों की सूचना के लिए जो इस भूमि पर आकर बसना चाहते थे डच भाषा में यह बात लिखकर जाहिर की कि न्यू नीदरलैण्ड और विशेषकर न्यू इंग्लैण्ड के लोगों के पास इच्छानुसार घर बनाने के साधन नहीं हैं। वे तहखाने के रूप का इस प्रकार चौकोर गड्ढा जमीन में खोद लेते हैं जो छः या सात फुट गहरा और जितना भी वे ठीक समझते हैं उतना लम्बा और चौड़ा होता है। चारों ओर दीवारों पर वे लकड़ी जड़ देते हैं। धरती के धसाव को रोकने के लिए पेड़ों की छाल या कुछ और चीज़ से उस लकड़ी पर अस्तर की तरह चढ़ा देते हैं। इस तहखाने के फर्श पर वे तख्ते जड़ देते हैं और ऊपर सिर पर बल्लियाँ बिछाकर नीचे की तरफ लम्बा बल्ली रख देते हैं और छाल या घास मिट्टी बल्लियों के बीच में भरकर सतह एक सी कर देते हैं जिससे इन घरों में आवश्यक गर्मी और सुरक्षा रह सके और पूरे के पूरे परिवार को तीन चार वर्षों तक इनमें बसे रहें। वे परिवार की सम्पन्न

[1] १७५६ से १८२८ तक जीवित अंग्रेजी का प्रसिद्ध लेखक

सख्या के अनुमार दन तहखाना क हिस्स भी कर लेने हैं। दन बस्तिया न आर म्भिक दिना म न्यू इग्नड के धनी और प्रमुख नोगा न इसी किस्म के घग म रहना आरम्भ किया। इसके दो कारण रह। पहन तो यह कि व गृह निमाण म समय बरबाद करना और अगने मौसम म अन्न की कमी हान दना नहीं चाहते थे। दूसरे, व उन गरीब मजदूरा का भी अनुत्साहित करना नही चाहत थे जिन्ह व बडी सख्या मे पितृदेग स लाए थे। तीन या चार वर्षों बाद जब इस प्रदेश म खूब खेती हान लगी, तब हजारा रुपय खच करक उन्हाने अपन लिए सुन्दर घर बना लिए।

हमार पूवजा न जा माग अपनाया, उनम कम स कम उनका दूरदर्शी हाना प्रकट है। उमम यह पता लगता है कि उन्हाने प्रमुखतम आवश्यकता पहने पूरा करन क मिद्धान का ग्रहण किया। लकिन क्या आज भी प्रमुखतम आवश्यकताए पहन पूरी की जाती हैं? जब भी मैं अपन लिए एक गानदार घर उपलब्ध करन की सोचता हू तभी यह विचार मुझे सकुचित करता है कि देग म अभी तक एक मानवतावादी सस्कृति पनित नहीं हुई है और हम अभी तक अपनी आध्यात्मिक गरीबी क टुकड उमम भी अधिक पतल काटन का विवग हैं जितन कि हमारे पूवजा न गहू की राटी के काट थे। यह जरूरी नहीं है कि कठिन से कठिन समय म भी स्थापत्य की सजावट की उपेक्षा की जाए। लकिन प्रथमत हमार घर उतना ही दूर तक कलात्मक बनाए जान चाहिए जितनी दूर तक बसा करना हमारे जीवन के लिए आवश्यक है। कला का जीवन पर लादा न जाए। गख और घाघे अपन घर ठीक इसी नीति स बनात हैं। लकिन अपमास मैं एक या दो मकाना म गया हू और मैं जानता हू कि व किस कला स अलकृत है।

हम अभी इतन नहा गिर गए हैं कि एक गुफा अथवा एक झापडी म न रह सकें और खाल पहनकर गुजारा न कर सकें। पर निश्चय ही अच्छा यही होगा कि आविष्कार और उद्योगा न भारी मूल्य लेकर जो सुविधाए मानवता को प्रदान की हैं उनका लाभ हम उठाए। इस जसे प्रदेग म लकडी के तख्ते और छिपटिया, चूना और ईंटें आदि गुफाओ, लकडी के पूरे लट्ठो, पर्याप्त छाल पकी हुई मिट्टी क ढेला अथवा चपट पत्थरा स ज्यादा सस्ते और सहज उपलब्ध हैं। मैं यह सब बात समझ-बूझकर कह रहा हू क्याकि बौद्धिक और व्यावहारिक दाना ही रूपा म मैंन इस विषय का ज्ञान प्राप्त किया है। यदि हम थाडा और बुद्धि से काम ल ता इसी सामग्री से हम आज क सम्पन्नतम लोगा स अधिक सम्पन्न बन सकते हैं और अपनी

सज्जना को एक बन्धन बना लेता है। सज्जन पुरुष अधिक अनुभवी और बुद्धिमान बनकर ही लौटता है। लेकिन अब मैं अपने प्रयोग का ज़िक्र करूँगा।

सन् १८४५ के अंतिम दिनों की बात है मैंने एक सज्जन से कुल्हाड़ी माँगी और वाल्डेन पॉण्ड के पास जंगल में चला गया क्योंकि मैं अपना घर वाल्डेन पॉण्ड के निकट ही बनाना चाहता था। वहाँ पहुँचकर मैंने सफ़ेद लम्बे तीरनुमा पाइन के तनों को काटना शुरू किया। यदि किसी चीज़ को माँगे बिना कोई नया काम शुरू करना हो कठिन हो जाए और अपने प्रयोग में अपने साथियों की रुचि पैदा करने का शायद यही उत्तम तरीका भी है। कुल्हाड़ीवाले सज्जन ने उसे अपने मुट्ठी में अपने सौंपते समय कहा था—देखो, यह कुल्हाड़ी मेरी आँखों का तारा है। और मैंने भी उसकी चीज़ पहले से भी बेहतर अवस्था में लौटाई। मैं एक पहाड़ी के सुहाने ढलान पर काम में जुट गया। ढलान चीड़ के पेड़ों से ढका था। पेड़ों से तालाब और पेड़ों के बीचोंबीच दूर एक छोटा-सा खुला ज़मीन का टुकड़ा दीख पड़ रहा था। इस ज़मीन पर चीड़ और हिकरी के पेड़ पनप रहे थे। तालाब की बर्फ़ अभी पिघली नहीं थी, हाँ बीच-बीच में चौड़ी दरारें पड़ गई थीं। उसका रंग श्यामल था और पानी उसमें लबालब भरा था। जिन दिनों मैं व्यस्त था, बर्फ़ के हलके झोंके कभी-कभी चला करते थे। लेकिन अधिकतर ऐसा होता कि वापस घर जाते समय रेल-पथ की पीली रेत धूमिल वातावरण में चमकती और पटरियाँ वसन्त ऋतु की धूप में चमचमातीं मुझे दीख पड़तीं तथा एक और पक्षी हमारे साथ बिताने के लिए आ पहुँच गया। टिटहरी और दूसरे पक्षियों की आवाज़ें मुझे सुन पड़तीं। वे दिन वसन्त के सुहाने दिन थे। मानवीय असन्तोष पर और धरती पर जमा हिम पिघल रहा था। अब तक जड़, अवसन्न पड़ा जीवन सचेत हो रहा था। एक दिन मेरी कुल्हाड़ी का बेंटा टूट गया। एक कच्ची हिकरी का काटकर मैंने पत्थर से उस कुल्हाड़ी में ठोका और पूरी कुल्हाड़ी को पानी में डाल दिया जिससे लकड़ी फूल जाए। तभी मैंने देखा, एक धारीदार साँप भागकर पानी में घुस गया और जब तक मैं वहाँ ठहरा रहा—शायद पन्द्रह मिनट से भी अधिक—वह बिना हिले-डुले पानी की तली में ही पड़ा रहा। वह अभी तक अवसन्न अवस्था से अच्छी तरह उबर नहीं पाया था। मुझे लगा कि कुछ ऐसे ही कारणों से मानव भी अपनी वर्तमान आदिम पतितावस्था में पड़े रहते हैं। यदि वे अपने चतुर्दिक के वसन्त के प्रभाव को अनुभव करें तो निश्चय

हो वे एक उच्चतर आध्यात्मिक जीवन तक उठ सकते हैं। पहले भी हिमाच्छादित सुबहों में रास्तों पर पड़े ऐसे साँपों को मैंने देखा है जिनके शरीर ठंड से जम और अकड़ गए थे और जो बिना मुड़े-तुड़े सूरज निकलने की प्रतीक्षा में पड़े थे। पहली अप्रैल को वर्षा हुई, बर्फ पिघली और दिन के पहले पहर में जब बहुत घना कुहरा पड़ रहा था, मैंने एक एकाकी हंस की कुड़कुड़ाहट सुनी। वह तालाब में मार्ग ढूँढ रहा था, मानो कि पथ भ्रष्ट हो गया हो। वह मुझे उस कुहरे की आत्मा जैसा प्रतीत हुआ।

कुछ दिनों तक मैं इसी प्रकार अपनी छोटी-सी कुल्हाड़ी से ही शहतीरें काटता और उन्हें सँवारता रहा, थूनियाँ और कड़ियाँ बनाता रहा और इसी बीच ऐसे विचार, जो विद्वत्तापूर्ण और निवेदनीय हों, मेरे दिमाग में अधिक नहीं आए:

लोग कहते हैं, वे बहुत चीज़ें जानते हैं
लेकिन वे सब विदा हो चुके हैं—
कलाएँ, विज्ञान
और हज़ारों उपकरण
यह हवा जो चल रही है
यही है जिसे कोई जान सकता है।

खास शहतीरों को मैंने छः वर्गइंच के आकार में गढ़ दिया। अधिकतर थूनियों को सिर्फ दो ओर से और कड़ियों को तथा फर्श की शहतीरों को एक ओर से छीला और बाकी ओर छाल को ज्यों का त्यों रहने दिया। इस प्रकार वे आरे से चिरी हुई शहतीरों जितनी ही सीधी पर उनसे कहीं अधिक मज़बूत बन गईं। अब तक मैं अन्य औज़ार भी माँगकर ला चुका था। इसलिए मैंने हर तख्ते को अच्छी तरह जमाकर ठोका और चूल बिठाई। मैं जंगल में बहुत लम्बे समय तक नहीं रहता था। फिर भी अपनी मक्खन लगी रोटी अखबार के एक टुकड़े में लपेटकर साथ ले आता था। ताज़ी कटी चीड़ की हरी शाखाओं के बीच बैठकर मैं उन्हें खाता था और वह अखबार पढ़ता था। मेरे हाथ पर राल की मोटी तह जम जाती थी और मेरी रोटियाँ उसकी गंध से सुगंधित हो जाती थीं। अपना काम समाप्त करने से पहले ही चीड़ के वृक्षों का मैं शत्रु से अधिक मित्र बन चुका था। निस्सन्देह उनमें से कुछ को मैंने काटा था, पर इस कारण तो मेरा उनसे परिचय

और भी गहरा बन गया था। कभी-कभी कोई घूमता फिरता राहगीर मेरी कुल्हाड़ी की आवाज़ सुनकर पास आ खिंचता था और हम लोग कटी लकड़ियों पर पैर रखकर कुछ मीठी बात करते थे।

मैंने अपने काम में जल्दबाज़ी नहीं की। उसे अधिकतम खूबसूरती से किया। तब भी अप्रैल के मध्य तक मेरे घर का ढांचा बनकर तैयार हो चुका था। उसे सिर्फ खड़ा किया जाना था। तख्तों के लिए मैंने एक आयरलैण्डवासी जेम्स कालिन्स की जो फिचबर्ग रेल लाइन पर काम करता था, झुग्गी खरीद ली थी। जेम्स कालिन्स की झुग्गी असाधारण रूप से बढ़िया मानी जाती थी। जब मैं उसे देखने गया वह घर पर नहीं था। पहले पहल तो मैं अन्दरवालों को बिना दीखे बाहर से ही चारों ओर घूमकर उसे देख गया। उसकी खिड़की काफी ऊंचाई पर थी, तभी ऐसा हो सका। झुग्गी छोटे आयाम की शिखरदार छतवाली थी। और अधिक देखने को कुछ था नहीं। झुग्गी के चारों ओर कूड़े की पांच फुट मोटी तह जमी थी जैसे कि वह खाद का ढेर हो। छत में अधिकांश तख्ते धूप के कारण ऐंठ गए थे और उनमें दरारें पड़ गई थीं फिर भी छत ही उस झुग्गी का सबसे मज़बूत हिस्सा था। द्वार पर चौखट नहीं था। वहां बस एक तख्ता लगा था जिसके नीचे से मुर्गियां अविराम आती-जाती थीं। श्रीमती कालिन्स द्वार पर आई और उसने मुझे झुग्गी को अन्दर से देखने के लिए निमंत्रित किया। मुझे देखकर मुर्गियां अन्दर भागीं। अन्दर अंधेरा था। फर्श का अधिकतर भाग कूड़ा बिछाकर बनाया गया था। वह सीला और चिपचिपा था। उसके स्पर्श से जूड़ी सा चढ़ता था। यहां वहां एक आध तख्ता जड़ा था जो उखाड़ा जाना सहन नहीं कर सकता था। गृहिणी ने एक लैम्प जला लिया जिससे कि छत और दीवारें अन्दर से दीख सकें और यह भी दीख जाए कि तख्ता का फर्श बिस्तर के नीचे तक गया है। तहखाना दो फुट गहरा एक कूड़ा घर था जिसमें उसने मुझे नहीं जाने दिया। उसके अपने शब्दों में, 'छत के तख्ते बढ़िया हैं, चारों ओर हो बढ़िया तख्ते जड़े हैं और खिड़की भी बढ़िया है।' खिड़की कभी दो वर्गाकार चौखटों से जड़कर बनाई गई थी। और अब बहुत समय से सिर्फ बिल्ली ही उसमें से होकर आती जाती है। एक स्टोव, एक बिस्तर, एक बैठने की जगह, वहीं पैदा हुआ एक शिशु, एक सिल्क का छतरी, एक सुनहरे चौखटे का शीशा और बलूत की लकड़ी पर कीला ... चीज पीसने का यन्त्र, सब उसने गिना बता दिया। जेम्स

इसी बात नोट आता था इसलिए सौदा जल्दी हो तय हो गया। आज शाम चार डालर में पच्चास सेंट उसे दे दूंगा। अगले दिन पांच बजे सुबह वह झुग्गी खाली कर देगा और इस बीच किसी और से सौदा नहीं करेगा। ए बजे उसका कब्जा मुझे मिल जाएगा। उसने कहा, जरा जल्दी आना अच्छा रहेगा। कारण कि जमीन के किराए और टैक्स को लेकर एक निराधार समस्या पैदा किया जाने की आशंका उसे थी। उसने विश्वास दिलाया बस यही एक बाधा इस मामले में पड़ सकती है। ... बजे मैंने उसको सपरिवार सड़क पर छोड़ा। एक बड़े बण्डल में उसका सब कुछ—बिस्तर, कॉफी का यन्त्र, शाला और मुर्गियां—रखा गया था। बिल्ली उसके साथ नहीं गई। वह जंगल में भाग गई और जंगली बन गई। बाद में मुझे पता चला कि चूहों को पकड़ने के लिए फंसाए गए फन्दे में वह फंस गई और अन्ततः मर गई।

उसी सुबह मैंने कांटे निकाल रखे हुए कीलों को अलग किया और एक गाड़ी में थोड़ा-थोड़ा करके पूरा घर तालाब के तट पर ले गया। तख्तों को मैंने घास पर फैला दिया जिससे वे धूप में सूखकर साफ हो जाएं और उनकी ऐंठन दूर हो जाए। जब मैं वन मार्ग पर गाड़ी हांक रहा था तब एक मैना के दो एक मधुर स्वर मेरे कानों में पड़े। एक लड़के पैट्रिक ने अपने पड़ोसी आयरलैण्डवासी सीली से विश्वासघात करके मुझे बताया कि जब मैं गाड़ी पर था तब उसने कितनी ही गाड़ी भर काम लायक सीधी, कीलें और खूंटियां अपनी जेब के हवाले कर ली थीं। जब मैं उस दिन का कुछ समय गुजारने और ताजा होने के लिए लौटा, तो दूर-पार के दृश्य देखता वह सीधी इस तरह खड़ा हो गया जैसे उसे किसीसे मतलब ही न हो और वह अपने सुहाने विचारों में खोया हो। उसका मत था कि धन्धे की कमी के कारण ही उसने ऐसा किया था। मानो दर्शक-समाज का प्रतिनिधि बनकर वहां खड़ा था और इस प्रत्यक्षतः मामूली घटना को ट्राय के देवताओं के हटाए जाने[1] जितना महत्त्वपूर्ण बनाकर दिखाना चाह रहा था।

मैंने अपना तहखाना एक पहाड़ी के दक्षिण-मुख ढलाव की बगल में खोदा। यहां पहले कभी शायद एक भूखी सियार ने अपना बिल बनाया था। यहां सुमाक भाड़ी

[1] ट्रॉय नगर के नष्ट हो जाने के बाद एनियस अपने पिता को और घर के देवताओं की मूर्तियों को कंधे पर लादकर भाग निकला था। यह रोमन कवि वर्जिल का सन्दर्भ है।

और काली तरी की जड़े नीचे तक फैली थी और वनस्पति के चिह्न तली तक वर्तमान थे। उ वर्गफुट के सात फुट गहरे तहखाने का तला ऐसी बढ़िया बालू पर जाकर टिका जिसमें कम भी आड पड़ें आलुओं को पाला नहीं मार सकता था। तहखाने की दीवारों पर मैंने पत्थर नहीं चिने उन्हें ढालू छोड़ दिया। सूरज की किरण उनपर कभी नहीं पड़ी है इसलिए वहाँ बालू अभी तक अपने स्थान पर जमी है। इस काम में सिर्फ दो घण्टे लगे। धरती की खुदाई में मुझे विशेष आनन्द मिला क्योंकि सभी देशों के लोग समशीतोष्ण तापक्रम की खोज में धरती को ही खोदते हैं। नगर के बढ़िया से बढ़िया घरों के नीचे भी तहखाने बने होते हैं जिनमें लोग अतीत की तरह ही बीज और जड़ जमा करते हैं। बहुत समय बाद जब ये विशाल भवन धराशायी हो जाते हैं तब भी सन्ततियाँ इन तहखानों का वर्तमान पाती हैं और भवनों के खंडहर ऐसे लगते हैं जैसे किसी माँद के प्रवेश-द्वार पर बने दालान मात्र हों।

अन्त में मई के आरम्भ में अपने कुछ परिचितों के सहयोग से मैंने अपने घर का ढाँचा खड़ा किया। सहयोग मैंने आवश्यकतावश नहीं पड़ोसीपन को पक्का करने के इस बढ़िया अवसर का लाभ उठाने के लिए ही लिया। किसी भी अन्य व्यक्ति को उसके प्रत्साहकों ने उतना सम्मानित शायद ही किया होगा जितना मेरे मित्रों ने मुझे किया। मेरा विश्वास है एक दिन वे अधिक विशाल इमारतों के निर्माण में सहायक होंगे। तख्ते जड़ दिए गए छत डल गई और एकदम बाद ही ४ जुलाई से मैंने वहाँ रहना आरम्भ कर दिया। तख्तों के किनारों को रंदे से पतला पर्त की तरह का बनाकर एक-दूसरे पर ऐसा चिपका दिया गया था जिससे वर्षा का जल उनमें से न चू सके। रहना आरम्भ करने से पहले मैंने एक कोने में एक चिमनी की नींव भी रख दी थी। मैं तालाब के तट से दो गाड़ी भर पत्थर बाँहों में ढोकर ऊपर पहाड़ी पर ले आया था। आग तापना आवश्यक हो जाने से पहले ही ढलान की खुरपी से ठीक करके मैंने चिमनी बना ली। इस बीच मैं अपना खाना सुबह ही बाहर जमीन में पका लेता। मैं अब भी सोचता हूँ खाना पकाने का यह ढंग प्रचलित ढंग की अपेक्षा कई दृष्टियों से अधिक सुविधाजनक एवं सुखकर है। जब कभी मेरे खाना पकाने से पहले ही तूफान उठ आता, मैं चूल्हे के ऊपर कुछ तख्ते जमा देता और उनके नीचे बैठकर रोटी पकाता और इस प्रकार कुछ समय मजे मजे में बिता देता। उन दिनों जब मैं बहुत व्यस्त रहा मैं

बहुत ही थोड़ा पा सका। लेकिन ज़मीन पर बिखरे कागज के टुकड़े या मेरा होल्डर या मेजपोश मुझे उतना ही आनन्द देता और वही मतलब सिद्ध करता जो इलियड से सम्भव था।

असल में जितनी फुरसत से मैंने घर बनाने में काम किया उसमें भी अधिक धैर्य और सन्तोष से काम लेना अधिक लाभदायक होगा। उदाहरणार्थ यह सोचना होगा कि द्वार, खिड़की, तहखाना अथवा अटारी की मूल प्रेरणा मानव स्वभाव में कहाँ निहित है? हम भौतिक रूप में आवश्यक हो जाने पर भी विशाल भवन तब तक खड़े नहीं करने चाहिए जब तक ऐसा करने के लिए अधिक उदार कारण उपस्थित न हो जाए। मनुष्य द्वारा अपना घर आप बनाया जाना ठीक वैसा ही है जैसा कि चिड़िया का अपना घोसला स्वयं बनाना। यदि सब मानव अपने घर अपने हाथों से बनाएं और पर्याप्त सहज सरल और न्यायपूर्ण तरीके से रोटी कमा कर अपना और अपने परिवार का पेट पालें तो सम्भव है कि कवित्व गुण का विकास सार्वभौम हो जाए। पक्षियों की जाति की जाति गीत काम करते समय स्वभावतः गा उठती है। पर कितने दुःख की बात है कि हम प्यार काउ-बर्ड और कोयल जैसी चिड़ियाओं को करते हैं जो अपने अंडे दूसरी चिड़ियाओं द्वारा बनाए गए घोसलों में रख आती हैं और जिनकी कर्ण-कटु चटचटाहट किसी भी यात्री को सुखकर नहीं हो पाती। क्या हम निर्माण-सुख का लाभ सदा बढ़ई को ही लेने देंगे? मानव-मात्र के सामूहिक अनुभवों में स्थापत्य को क्या स्थान और कितना मूल्य प्राप्त है? अपनी इतनी घुमक्कड़ी में ऐसा एक भी आदमी मुझे नहीं मिला जो अपना घर स्वयं बनाने के सरल-सहज काम में व्यस्त हो। हम समुदाय के हैं समाज के हैं। कहा जाता है दर्जी पूर्ण मानव का नौवां हिस्सा है। पर उपदेशक भी नवांश ही है, व्यापारी भी और किसान भी। इस श्रम विभाजन का अन्त कहाँ होता है? हमारे किस अन्तिम उद्देश्य की यह सिद्धि करता है? निस्सन्देह दूसरे का मेरी चिन्ता करनी चाहिए लेकिन यह कैसे उचित है कि वह मेरी इतनी चिन्ता करे कि मैं अपनी चिन्ता स्वयं करना छोड़ दूँ?

सच ही, तथाकथित वास्तु शिल्पी इस देश में वर्तमान हैं। उनमें कम से कम एक के बारे में तो मैंने यह भी सुना है कि उसके सिर पर वास्तुकला के आलंकारिक नमूनों के केन्द्र में एक सत्य या एक उपयोगिता को निर्दिष्ट करने का भूत

मज़ार है। शायद उसने समझा हो उसे इलहाम हुआ है। अपनी दृष्टि में तो उसने ठीक ही समझा है। पर यह कल्पना जनसाधारण के मन नहीं केवल भ्रम में किंचित ही गहरी हो ता हो। स्थापत्य-क्षेत्र के उस भावुक सुधारक ने मूल से नहीं शिखर से आरम्भ किया है। यह प्रयास वैसा ही है जैसा कि आभूषणों के निर्माण को सत्य पर आधारित करना अथवा हर बताशे में एक बादाम या काला जीरा भरना। मेरा तो विश्वास है कि बादाम शक्कर के बिना ही अच्छा लगता है। तब घर बसाने वाला क्या न अन्दर और बाहर से अपना घर अपने ढंग से स्वयं बनाए और अलंकारों का उनके अपने ऊपर छोड़ दे ?

क्या किसी विचारशील व्यक्ति ने कभी सोचा है कि गहने बाहरी प्रसाधन मात्र हैं सिर्फ खाल तक ही उनका सम्बन्ध है ? क्या किसीने यह भी सोचा है कि कछुए को अपनी चित्रित पीठ सीपी को मोती और ब्राड वे के निवासियों को उनका ट्रिनिटी गिरजाघर—तीनों को ये तीनों चीज़ें एक समान करार के फलस्वरूप ही मिली थीं ? कछुए का अपनी पीठ की चित्रकारी से जितना मतलब है उससे अधिक मतलब एक व्यक्ति को अपने घर का वास्तु-पद्धति से नहीं होना चाहिए। क्या एक सैनिक इतना निठल्ला बने कि अपने ध्वज को अपने सत्व, अपने असल रंग से रंगने की हठ करे ? शत्रु उस सत्व का पता लगा लेगा। हो सकता है परीक्षा की घड़ी आने पर उसका रंग ही उड़ जाए। मुझे लगा जैसे उस कल्पनाशील शिल्पी ने मकान की मुँडेर से चिपककर अपना अर्द्ध सत्य मकान के उन उद्धत वासियों के कानों में फुसफुसाया हो जो असलियत को उससे कहीं अधिक पहचानते हैं। यह जो वास्तुगत सौन्दर्य दीख पड़ रहा है यह क्या है ? मैं कहता हूँ यह स्वयं ही अपना घर बनानेवाले गृहपति के चरित्र और उसकी ज़रूरतों में से अन्दर से बाहर की ओर क्रमशः विकसित हुआ है। ऐसा बाह्य रूप की बिलकुल चिन्ता किए बिना एक अचेत सत्यनिष्ठा और उदारता की प्रेरणा से ही सम्भव हो पाया है। और जितना भी अतिरिक्त सौन्दर्य आगे निरजा जाएगा वह ऐसे ही अप्रत्यक्ष जीवन सौन्दर्य से अनुप्राणित होगा। एक चित्रकार से पूछिए तो जानिएगा कि इस प्रदेश के सबसे सुन्दर घर लकड़ी के लट्ठों से बने दिखावे से एकदम शून्य गरीबों के मामूली झोपड़े और कुटीर ही हैं। इनके बाह्य रूप की असाधारणता नहीं, ये खोल जिनके आवरण हैं उन लोगों का जीवन ही इन्हें एक चित्र में स्थान पाने योग्य बनाता है। एक नागरिक का उपनगर स्थित घर भी उतना ही रोचक बन सकता

है, वार्ते कि वह भी अपने जीवन को उन गरीबों जितना ही सादा बना ले, एक ऊँची कल्पना के अनुरूप ढाल ले और अपने घर को खासा सरल बनाने और साज-सज्जित करने में कम से कम श्रम करे। वास्तुकला के आदर्श इन नागरिकों का एक बड़ा भाग वस्तुत मामला होता है। मिनस्टर की आविया उधार मागकर अटकाए गए परा की तरह उन्हें उखाड़कर ले जा सकती हैं जबकि ठोस मकानों को वे वास्तव हानि नहीं पहुंचा सकतीं। जिनके तहखाना में न जुलूस का तेल है न गगरी व स्थापत्य में कलात्मकता लाए बिना भी अपना काम चला सकते हैं। क्या होता यदि साहित्य का अलंकरण करने में सबको उतनी ही मुसीबत झेलनी पड़ती और हमारे पगम्बर धर्म-पुस्तकों के शिखर भागों को सजाने में उतना ही समय लगाते जितना मन्दिर गिरजा के शिल्पी उन्हें सजाने में लगाते हैं? इसी तरह तो ललित साहित्य और कलाओं की तथा उनके प्रचारकों की सृष्टि होती है। यह तो व्यक्ति विशेष की अपनी निजी बात अधिक है कि उनके घर में घर के ऊपर या नीचे कुछ पट्टियां किस तरीके से टेढ़ी या तिरछी जड़ी जाएं और उसके घर पर कौन-सा रंग पोता जाए। जब वह स्वयं किसी भाव विशेष में भरकर पट्टियों को वैसा जड़ता है और वर्ण विशेष पोतता है तब ऐसा करना अर्थपूर्ण होता है। लेकिन जब ही व्यक्ति विशेष की भाव प्रेरणा समाप्त हुई निर्माण स्वयं अपना ताबूत बनाने का और शिल्प यंत्र के ऊपर की कारीगरी का रूप ग्रहण कर लेता है और बढ़ई ताबूत बनाने वाले का दूसरा नाम सिद्ध हो जाता है। जीवन के प्रति निराशा अथवा उपेक्षा के वशीभूत होकर एक व्यक्ति कहता है अपने पैरों के नीचे की मुट्ठी भर मिट्टी लेकर उसके रंग में अपना घर क्यों न पोत लो? क्या वह अपने अन्तिम घर सकीर्ण यंत्र के बारे में सोच रहा है? क्या न इस कल्पनावान पर एक पैसा वार दिया जाए? कितनी फुरसत में बैठकर सोची है उसने यह बात! मुट्ठी भर धूल मिट्टी क्या लेते हैं? अच्छा हो कि आप अपने घर पर अपने चेहरे जैसा रंग पोत लें। आपके स्थान पर आपका घर ही कभी पीला पड़े कभी गुलाबी। गृह निर्माण शिल्प में सुधार का यह उत्तम प्रयास होगा। जब आप मेरे अलंकार बनाकर तैयार कर देंगे मैं पहन लूंगा।

जाड़े से पहले मैंने चिमनी तैयार कर ली। मेरे घर में किसी भी तरफ से वर्षा का जल घुस नहीं सकता था फिर भी मैंने अगल-बगल को छिपटियों (Shingles) से छत दिया। इसके लिए मैंने लट्ठों से उतरे पहले छिलकों के गोल अनगढ़ टुकड़ों

को चुन लिया था और उनके किनारों को रन्दा करके सीधा कर लिया था।

इस प्रकार खपच्चियों की जड़ाई से मजबूत और पलस्तर किया हुआ मेरा घर तैयार हो गया जो दस फुट चौड़ा, पन्द्रह फुट लम्बा और आठ फुट ऊंचा है, जिसमें एक ऊपर का कमरा और एक छोटी कोठरी अलग से है। हर दीवार में एक बड़ी खिड़की है, दो चोर दरवाजे हैं, एक द्वार अन्त में है और सामने ईंटों का बना एक चूल्हा है। मैं अपने घर पर लगी ठीक लागत नीचे दे रहा हूं। प्रयुक्त सामग्री का सामान्य मूल्य ही मैंने लगाया है। श्रम को मैंने नहीं गिना है क्योंकि वह मैंने स्वयं किया है। मैं व्यय का पूरा ब्यौरा लिख रहा हूं, क्योंकि बहुत ही कम लोग घर पर आई लागत को एकदम ठीक ठीक बता पाते हैं। प्रयुक्त सामग्री की अलग अलग कीमत तो और भी कम लोग बता पाएंगे। अस्तु

तख्ते	८ ०३½ अधिकांश झुग्गी के तख्ते
छत और अगल-बगल के लिए रद्दी छिपटियां	४ ००
लकड़ी की पतली पट्टियां	१ २५
शीशेवाली दो पुरानी खिड़कियां	२ ४३
एक हजार पुरानी ईंटें	४ ००
चूने के दो पीपे	२ ४० बड वाल
बाल	० १ आवश्यकता से अधिक
मेंटल का लोहा	० १५
कीलें	३ ६०
चूल और पेच	० १४
सांकल	० १०
खड़िया मिट्टी	० ०१
ढुलाई	१ ४० काफी बड़ा भाग मैंने पीठ पर ढोया
कुल	२८ १ ½ डालर

यही सब सामान है। शहतीर, पत्थर और रेत इनसे अलग हैं जो मुझे उपवेशी

अधिकारवश मुफ्त मिल गए। घर को पूरा करके जो सामान बच रहा उसमें मैंने गल में ही एक छोटा-सा मायबान बना लिया।

मैं एक ऐसा घर भी बनाना चाहता हूं जो कानकाड के मार्ग पर स्थित किसी ो भवन को शान शौकत में पीछे छोड़ सके। पर शर्त यही है कि वह मुझे वर्तमान र जितना ही आनन्द दे और उसपर इससे अधिक लागत न आए।

मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि एक विद्यार्थी अपने जीवन भर के लिए एक र ठीक उतना ही धन व्यय करके बना सकता है जितना धन वह एक वर्ष में किराये के रूप में दे डालता है। शायद मैं सीमा से बढ़कर बात कह गया हूं ! मगर निवेदन है मेरी यह डींग मेरे लिए नहीं मानव-जाति के लिए है। मेरी सब कमियां और अनियमितताएं मेरे वक्तव्य के सत्य को प्रभावित नहीं करती। मेरी बात में झूठ भेद और पाखंड हो सकता है। भूसी को गेहूं के दाने से अलग करना मेरे लिए कठिन है और इसका मुझे खेद भी है। फिर भी प्रस्तुत विषय पर मैं अपने खुले और उन्मुक्त विचार ही रखूंगा क्योंकि इससे मन और शरीर दोनों ही को अनुपम शान्ति मिलती है। मैंने निर्णय कर लिया है कि मैं सज्जनता के नाम पर शैतान की वकालत नहीं करूंगा। मैं सचाई के पक्ष में दो शब्द कहने का प्रयास कर रहा हूं। कैम्ब्रिज कालिज में छात्रावास के एक कमरे का किराया मात्र तीस डालर वार्षिक है। कमरा मेरे इस घर से मामूली बड़ा होगा। इतना तब है जब निगम को यह सुविधा रही कि उसने एक छत के नीचे बराबर-बराबर बत्तीस कमरे निकाल दिए और रहनेवाले का यह असुविधा है कि उसे इतने सारे पड़ोसियों के शोर-शराबे के बीच रहना पड़ता है। और हो सकता है कि कमरा उसे चौथी मंजिल पर मिले। मैं यह सोचे बिना नहीं रह सकता कि यदि हममें इस बारे में सच्चा विवेक हो तो यही नहीं कि थोड़ी शिक्षा से काम चल जाएगा बल्कि यह भी कि शिक्षा पर होने वाले व्यय में बहुत बड़ी कटौती हो जाएगी। दरअसल काफी अधिक ज्ञान तो विद्यार्थी पहले ही पा चुका होता है। कैम्ब्रिज का या कहीं का भी छात्र जिन सुविधाओं की अपेक्षा करता है उन्हें पाने के लिए उसे या किसीको भी उससे दस गुना जीवन शक्ति व्यय करना पड़ती है जितनी दोनों ओर से समुचित व्यवस्था की जाने पर करनी पड़ सकती है जिनके लिए सबसे अधिक धन चाहा जाता है वे चीज़ें कभी भी विद्यार्थी के सर्वाधिक उपयोग की चीज़ें नहीं होतीं। उदाहरणार्थ वर्ष के बिल में ट्यूशन की फीस एक खास मद होती है। लेकिन इससे भी अधिक मूल्यवान

शिक्षा विद्यार्थी को सुसभ्य सुसंस्कृत समसामयिकों के समग्र से प्राप्त हुआ करती है और इसके लिए कोई फीस नहीं ली जाती। एक कालिज की स्थापना करने का तरीका सामान्यतः यही तो है कि डालर और सेंटों में चन्दा जुटाया जाता है और तब अन्ध बनकर श्रम विभाजन के सिद्धान्त का उसके चरम तक अनुगमन किया जाता है। मेरे विचार में इस सिद्धान्त का आश्रय तभी लिया जाना चाहिए जब दूरंदेशी सम्भव हो सके। और फिर क्या होता है एक ठेकेदार बुला लिया जाता है जो सोचता है और हिसाब लगाता है। वह कुछ आयरिश या अन्य मजदूरों को लगा देता है जो कालिज की असल नींव रखते हैं। जिन्हें वहां पढ़ना है, उन्हें तो बस स्वयं को वहां के अनुकूल ढालना होता है। इस प्रमाद का फल अनिवार्यतः पीढ़ियों को भुगतना पड़ता है। मेरे विचार में तो विद्यार्थियों के लिए या और उसमें लाभान्वित होने के इच्छुक सभी के लिए वर्तमान प्रणाली से अच्छा यह रहेगा कि सम्बन्धित लोग भवन की नींव स्वयं रखें। एक विद्यार्थी अनिवार्य मानव श्रम से विधिपूर्वक बचकर जिस काम्य अवकाश और निवृत्ति को प्राप्त करता है वह निकृष्ट और लाभ रहित होती है। इस प्रकार वह छलपूर्वक अपने को उस अनुभव से वंचित कर लेता है जो अकेला अनुभव उसके अवकाश को कृतार्थ बना सकता था। एक कहता है 'लेकिन आपका यह मतलब तो नहीं कि विद्यार्थियों को अपने दिमागों के बदले हाथों से श्रम करना चाहिए।' मेरा ठीक यही मतलब तो नहीं है लेकिन जो मैं कहता हूं उसका ये सज्जन बहुत कुछ ऐसा ही मतलब लगा सकते हैं। मेरा मतलब है कि विद्यार्थियों को जीवन से बस खिलवाड़ या सिर्फ उसका अध्ययन ही नहीं करना है बल्कि लगनपूर्वक आरम्भ से अन्त तक उसे जीना है। उन्हें नहीं भूलना है कि इस खर्चीले खेल के लिए समाज उन्हें भरपूर धन दे रहा है। जीवन के प्रयोगों में तत्काल उतरकर नहीं तो और किस रास्ते से युवक जीने की अधिक अच्छी शिक्षा ले सकते हैं? मैं समझता हूं उपयुक्त विधि उनके दिमागों को उतना ही सक्रिय बना सकेगी जितना गणित बनाती है। उदाहरणार्थ मैं एक लड़के को कला और विज्ञान की शिक्षा दिलाना चाहता हूं। मैं इसके लिए रूढ़ पथ पर नहीं चलूंगा। मैं उसे किसी प्रोफेसर के पास नहीं भेजूंगा, जहां जीवन जीने की कला छोड़कर सभी कुछ पढ़ाया और अभ्यास कराया जाता है—यानी दूरबीन या खुर्दबीन के द्वारा संसार का सर्वेक्षण करना पर अपनी प्राकृतिक आंख से कभी कुछ न देखना, रसायनशास्त्र अथवा यन्त्रशास्त्र पढ़ना पर अपना

रोटी पकाना न जानना और रोटी कम कमाई जाती है यह न मानना, नपचून के उपग्रह खोजना पर अपनी आंखों में पड़े रेत-कणों को न देख सकना, मिर्च की एक बूंद में दवा के होने की कल्पना करना पर अपने चारों ओर उमड़नेवाले दया द्वारा सहज ही निगल लिया जाना। सोचिए, माम के अन्त में किसने अधिक प्रगति की होगी—उस लड़के ने जिसने खान से कच्चा लोहा स्वयं खोदा स्वयं उसे गलाकर साफ किया और अपने लिए चाकू बनाया और इसके लिए जितना जरूरी था उतना साथ-साथ पढ़ा भी या उस लड़के ने जिसने सम्स्थान में धातु विज्ञान पर भाषण सुने और इसी बीच अपने पिता द्वारा भेजा हुआ राजर का बढ़िया चाकू हथिया लिया? मेरा अपनी उंगली स्वयं काट लेने की सम्भावना किस विद्यार्थी के लिए अधिक है? मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब कालेज छोड़ते समय मुझे बताया गया कि मैंने नौका चालन भी सीखा है। कहीं एक बार भी मैं बन्दरगाह में उतर गया होता तो उससे कहीं अधिक सीख जाता। एक निर्धन विद्यार्थी भी अध्ययन करता है और उसे सिर्फ राजनीतिक अर्थ-व्यवस्था पढ़ाई जाती है जबकि जीवन की अर्थ-व्यवस्था जैसे विषय का जो दर्शन का समकक्ष है, हमारे कालिजों में यथार्थ अध्यापन तक नहीं किया जाता। परिणाम यह होता है कि जब विद्यार्थी आदम स्मिथ, रिकार्डो और से के ग्रन्थों में डूबा होता है तब उसका पिता अथाह अन्य ऋणों में गर्क हो जाता है।

जो बात हमारे कालेजों के बारे में है वही दस सकड़ों आधुनिक प्रगतियों के बारे में भी ठीक है। इन सबके विषय में एक भ्रम फैला है। असल में हमेशा ही असन्दिग्ध प्रगति नहीं होती। शैतान आरम्भ में खरीदे गए शेयर पर और इन प्रगति प्रयासों में बाद में लगाई गई अनगिनत राशियों पर चक्रवृद्धि ब्याज वसूल करता चला जाता है और हमारे आविष्कार ऐसे खूबसूरत खिलौने बन जाने को बाध्य हैं जो असल गम्भीर विषयों में हमारा ध्यान हटाते हैं। एक अनुन्नत लक्ष्य के वे उन्नत साधन हैं। इस लक्ष्य तक पहुंचना तो पहले ही बहुत सरल था, उतना ही जितना कि रेल से बोस्टन या न्यूयार्क पहुंचना। हम मेन से टैक्साज तक एक चुम्बकीय तार-लाइन बिछाने की बहुत जल्दी है लेकिन मेन और टैक्साज के पास ऐसी कोई भी विशेष सूचना नहीं है जिसे वे एक-दूसरे तक भेजना चाहते हैं। एक व्यक्ति एक प्रतिष्ठित बहरी स्त्री से परिचित होने के लिए व्यग्र था। जब वह सामने लाया गया और उस स्त्री के श्रवण-यन्त्र का एक सिरा उसके हाथों में

शिक्षा विद्यार्थी को सुसभ्य, सुसंस्कृत समसामयिकों के संसर्ग से प्राप्त हुआ करता है और इसके लिए कोई फीस नहीं ली जाती। एक कालिज की स्थापना करने का तरीका सामान्यत यही तो है कि डालर और सेंटों में चंदा जुटाया जाता है और तब अंधे बनकर श्रम विभाजन के सिद्धांत का उसके चरम तक अनुगमन किया जाता है। मेरे विचार में इस सिद्धान्त का आश्रय तभी लिया जाना चाहिए जब पूरी चौकसी सम्भव हो सके। और फिर क्या होता है एक ठेकेदार बुला लिया जाता है जो सोचता है और हिसाब लगाता है। वह कुछ आयरिश या अन्य मजदूरों को लगा देता है जो कालिज की असल नींव रखते हैं। जिन्हें वहां पढ़ना है, उन्हें तो बस स्वयं को वहां के अनुकूल ढालना होता है। इस प्रमाद का फल आनेवाली पीढ़ियों को भुगतना पड़ता है। मेरे विचार में तो विद्यार्थियों के लिए भी और उससे लाभान्वित होने के इच्छुक सभी के लिए वर्तमान प्रणाली से अच्छा यह रहेगा कि सम्बन्धित लोग भवन की नींव स्वयं रखें। एक विद्यार्थी अनिवार्य मानव श्रम से विधिपूर्वक बचकर जिस काम्य अवकाश और निवृत्ति को प्राप्त करता है वह निकृष्ट और लाभ रहित होती है। इस प्रकार वह छलपूर्वक अपने को उस अनुभव से वंचित कर लेता है जो अकेला अनुभव उसके अवकाश को कृतार्थ बना सकता था। कोई कहता है लेकिन आपका यह मतलब तो नहीं कि विद्यार्थियों को अपने दिमागों के बदले हाथों से श्रम करना चाहिए। मेरा ठीक यही मतलब तो नहीं है लेकिन जो मैं कहता हूं उसका ये सज्जन बहुत कुछ ऐसा ही मतलब लगा सकते हैं। मेरा मतलब है कि विद्यार्थियों को जीवन से बस खिलवाड़ या सिर्फ उसका अध्ययन ही नहीं करना है बल्कि लगनपूर्वक आरम्भ से अंत तक उसे जीना है। उन्हें नहीं भूलना है कि इस खर्चीले खेल के लिए समाज उन्हें भरपूर धन दे रहा है। जीवन के प्रयोगों में तत्काल उतरकर नहीं तो और किस रास्ते से युवक जीने की अधिक अच्छी शिक्षा ले सकते हैं? मैं समझता हूं उपयुक्त विधि उनके दिमागों को उतना ही सक्रिय बना सकेगी जितना गणित बनाती है। उदाहरणार्थ मैं एक लड़के को कला और विज्ञान की शिक्षा दिलाना चाहता हूं। मैं इसके लिए आम पथ पर नहीं चलूंगा। मैं उसे किसी प्रोफेसर के पास नहीं भेजूंगा, जहां जीवन जीने की कला छोड़कर सभी कुछ पढ़ाया और अभ्यास कराया जाता है—यानी दूरबीन या खुर्दबीन के द्वारा संसार का सर्वेक्षण करना पर अपनी प्राकृतिक आंख से कभी कुछ न देखना, रसायनशास्त्र अथवा यंत्रशास्त्र पढ़ना पर अपना

रोटी पकाना न जानना और रोटी कैसे कमाई जाती है यह न सीखना, जीवन के उत्कृष्ट मानदण्ड पर अपनी आत्मा में पड़े रत्न-कणों को न देख सकना, सिरके की एक बूँद में दया के दान की कल्पना करने पर अपने चारों ओर उन्नतिवान लोगों द्वारा मूर्ख ही मान लिया जाना। सोचिए, मास के अन्त में किसने अधिक प्रगति की होगी—उस लड़के ने जिसने खान से कच्चा लोहा स्वयं खोदा, स्वयं उसे गलाकर साफ किया और अपने लिए चाकू बनाया और इसके लिए जितना जरूरी था उतना साथ-साथ पढ़ा भी या उस लड़के ने जिसने संस्थान में धातु विज्ञान पर भाषण सुने और इसी बीच अपने पिता द्वारा भेजा हुआ रॉजर का बढ़िया चाकू हथिया लिया? भला अपनी उँगली स्वयं काट लेने की सम्भावना किस विद्यार्थी के लिए अधिक है? मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब कॉलेज छोड़ते समय मुझे बताया गया कि मैंने नौ-चालन भी सीखा है। यदि एक बार भी मैं बन्दरगाह में उतर गया होता तो उससे कहीं अधिक सीख जाता। एक 'निर्धन' विद्यार्थी भी 'अध्ययन' करता है और उसे सिर्फ 'राजनीतिक' अर्थ-व्यवस्था पढ़ाई जाती है जबकि जीवन की अर्थ-व्यवस्था जैसे विषय का, जो दर्शन का समकक्ष है, हमारे कॉलेजों में यथार्थ अध्यापन तक नहीं किया जाता। परिणाम यह होता है कि जब विद्यार्थी एडम स्मिथ, रिकार्डो और से के ग्रन्थों में डूबा होता है तब उसका पिता अपार ऋणों में गर्क हो जाता है।

जो बात हमारे कॉलेजों के बारे में है वही इन सैकड़ों 'आधुनिक प्रगतियों' के बारे में भी ठीक है। इन सबके विषय में एक भ्रम फैला है। असल में हमेशा ही वास्तविक प्रगति नहीं होती। शैतान आरम्भ में खरीदे गए शेयर पर और इन प्रतिष्ठानों में बाद में लगाई गई अनगिनत राशियों पर चक्रवृद्धि ब्याज वसूल करता रहता है और हमारे आविष्कार एक सुन्दर खिलौने बन जाने को बाध्य हैं जो असल गम्भीर विषयों से हमारा ध्यान हटाते हैं। एक अनुन्नत लक्ष्य के वे उन्नत साधन हैं। इस लक्ष्य तक पहुँचना तो पहले ही बहुत सरल था, उतना ही जितना कि रेल से बोस्टन या न्यूयार्क पहुँचना। हम मेन से टेक्सास तक एक चुम्बकीय तार-संचार विधान की बहुत जल्दी है लेकिन मेन और टेक्सास के पास ऐसी कोई भी विशेष सूचना नहीं है जिसे वे एक-दूसरे तक भेजना चाहते हैं। एक व्यक्ति एक प्रतिष्ठित बहरी स्त्री से परिचित होने के लिए व्यग्र था। जब वह सामने लाया गया और उस स्त्री के श्रवण-यन्त्र का एक सिरा उसके हाथों में

पकड़ा लिया गया तब उसके पास कहने को कुछ नहीं मिला। इन दोनों नगरों की स्थिति भी ठीक इतनी ही विषम है। लगता है प्रधान उद्देश्य तेज़ी से बात करना है, अक्ल की बातें करना नहीं। हम अतलान्तिक के नीचे लम्बा सुरंग बनाकर नई और पुरानी दुनिया के बीच के मार्ग को कुछ सप्ताह कम कर देने को उत्सुक हैं लेकिन इस मार्ग से होकर जो पहला समाचार अमरीका के फड़फड़ाते कानों पर पड़ेगा वह शायद यह होगा कि राजकुमारी अदलेड[1] को काली खाँसी हो गई है। यह आवश्यक नहीं है कि एक मिनट में एक मील दौड़नेवाला घुड़सवार निश्चय ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण समाचारों का वाहक होता है। वह कोई ईसाई धर्म प्रचारक नहीं होता न ही वह बाइबल का जान बैप्टिस्ट[2] होता है जो टिड्डियाँ और जंगली शहद खाकर प्रचार करता घूमता था। मुझे शक है कि फ्लाइंग चाइल्डर्स[3] गल्ले का एक दाना भी कभी मिल तक ले गए हों।

एक व्यक्ति मुझसे बोला, आश्चर्य है तुम पैसा जमा नहीं करते; तुम्हें यात्रा करने से बहुत प्रेम है, क्यों न तुम गाड़ी पकड़ो, आज ही फिचबर्ग पहुँचो और देहात का भ्रमण करो? लेकिन मैं उससे अधिक बुद्धिमान हूँ। मैंने सीखा है कि सबसे त्वरित यात्री वह है जो पैदल जाता है। मेरा अपने मित्र से निवेदन है, चलो देखें कौन वहाँ पहले पहुँचता है। दूरी तीस मील की है, किराया नब्बे सेंट है। यह एक दिन की दिहाड़ी के लगभग है। मुझे वे दिन याद हैं जब इसी सड़क पर श्रमिकों को साठ सेंट प्रतिदिन मिला करते थे। चलिए, मैं पैदल चलता हूँ और रात से पहले वहाँ पहुँच जाता हूँ। मैंने सप्ताह-सप्ताह भर लगातार इसी रफ़्तार से यात्राएँ की हैं। और भाग्यवश हो, समझिए इस मौसम में यदि काम आपको मिल भी सका तो पहले आप किराये जितना धन कमाएँगे तब कल या सम्भव हुआ तो आज सन्ध्या तक आप लक्ष्य तक पहुँच पाएँगे। फिचबर्ग जाने के बदले दिन का बड़ा भाग

1. १७९२ से १८४९ तक जीवित ग्रेट ब्रिटेन की एक कुलीन राजकुमारी, जो ड्यूक आफ क्लेरेंस की पत्नी थी। अपने अन्तिम वर्षों में बेचारी रोगग्रस्त रहने लगी थी।
2. यह बाइबल के न्यू टैस्टामेन्ट की ओर संकेत है। जॉन का वर्णन करते हुए कहा गया है: जॉन ऊँट के बालों से बना एक मोटा कोट पहनता था और चमड़े का पट्टा अपनी कमर पर बाँधता था। टिड्डियाँ और जंगली शहद उसका भोजन था। ईसा मसीह का बपतिस्मा इसने किया था।
3. यह शायद बाद में प्रसिद्ध घोड़ों की ओर संकेत है।

आप यहाँ काम करने में बिता देंगे। इस प्रकार यदि रेल लाइन दुनिया के चारों कोनों में भी पहुँच गई तब भी, मैं समझता हूँ मैं आपसे आगे ही रहूँगा। और जहाँ तक स्थान देखने और तद्विषयक अनुभव प्राप्त करने का सम्बन्ध है मैं आपके ज्ञान को बहुत पीछे छोड़ जाऊँगा।

यह सार्वभौमिक नियम है और इसे कोई कभी विफल नहीं बना सकता। रेलों पर भी यह एकदम पूरा उतरता है। धरती के चप्पे चप्पे पर पूरी मानव-जाति को उपलब्ध रेल-मार्ग बनाना, इस भूग्रह के पूरे धरातल को नाप लेने के बराबर है। लोगों की एक धुंधली-सी कल्पना है कि यदि संयुक्त पूँजी और श्रम का यह क्रिया-कलाप पर्याप्त लम्बे समय तक जारी रखा जाए तो सभी मानव कहीं न कहीं से नहीं के बराबर भाड़ा देकर गाड़ी पर सवार हो ही लेंगे और तब यात्रा में नहीं के बराबर समय लगा करेगा। लेकिन लीजिए एक भीड़ स्टेशन पर आ जमती है, कण्डक्टर चिल्लाता है, सब चढ़ जाओ और जब धुआँ साफ होता है और भाप घुल जाती है तो दीख पड़ता है कि चढ़े तो थोड़े ही हैं शेष कुचल गए हैं। एक शोकपूर्ण दुर्घटना ही इसे कहा जाएगा। निस्सन्देह जो भाड़ा जितना कमा चुकेंगे अर्थात् जो तब तक जीवित बच पाएँगे वे गाड़ी चढ़ लेंगे, लेकिन वे उस समय तक यात्रा करने की इच्छा और आग्रह को शायद खो चुके होंगे। जीवन के अन्तिम महत्त्वशून्य भाग में एक सन्दिग्ध स्वच्छन्दता का उपभोग कर लिया जाए इसके लिए पहले का सर्वोत्तम भाग रुपया कमाने में बरबाद कर देना वैसा ही है जैसा एक अंग्रेज ने किया था। वह भारत गया कि वहाँ से धन बटोरकर वह इंग्लैंड लौटे और तब एक कवि का जीवन बिताए। उस बावले को तो तत्काल भावना में लग जाना चाहिए था। देश भर के झुग्गियों में रहनेवाले दस लाख आयरिश लोगों ने चीखकर कहा—ये रेलें बनाकर क्या हमने एक शानदार काम नहीं किया है? मेरा उत्तर है हाँ, तुलनात्मक दृष्टि से तो शानदार ही किया है। कोई बुरा काम करने से तो यह अच्छा ही है। आप लोग मेरे भाई हैं और मैं सोचता हूँ इस गन्दगी में खनन हाड़ गोड़ने के बजाय किसी श्रेष्ठतर काम में आप अपना समय लगाते तो अच्छा होता।

घर पूरा बना चुकने से पहले ही निकट की मुलायम और रेतीली मिट्टीवाली ढाई एकड़ जमीन में ज्यादातर सेम और एक छोटे भाग में आलू, मक्का, मटर

और शलजम मैंने बो दिए थे। यह इसलिए कि एक सहज और निर्मल साधन से दस या बारह डालर कमाकर मैं अपने कुछ असाधारण खर्चे पूरे कर सकूँ। आस पास की सारी ज़मीन लगभग ग्यारह एकड़ है जिसके अधिकांश भाग पर चीड़ और हिकरी के पेड़ खड़े हैं। पिछली मौसम में इसे आठ डालर आठ सेंट प्रति एकड़ के हिसाब से बेच दिया गया था। एक किसान ने मुझसे कहा 'यह ज़मीन बेकार है। इसपर तो चीं चीं करनेवाली गिलहरियाँ ही पैदा हो सकती हैं।' मैं इस भूमि का स्वामी नहीं था सिर्फ उपवासी (Squatter) था और यह आशा भी मुझे नहीं थी कि मैं दूसरी बार भी इतनी ही ज़मीन जोतूँगा इसलिए मैंने खाद बिलकुल नहीं डाली और उसे एकसाथ ही पूरा निराया भी नहीं। हल चलाते हुए कई ढेरों जड़ मैंने उखाड़ ली थी जो काफी समय तक मेरा ईंधन का काम देती रही। जुती भूमि में यहाँ-वहाँ कुछ वृत्त मैंने खाली छोड़ दिए थे जो गर्मियों में हुई सेम की घनी उपज के बीच साफ दीख पड़ते थे। मेरे घर के पीछे जो सूखे और व्यापार के अयोग्य ठूँठ खड़े थे उनसे और तालाब में बहकर आई लकड़ी से ईंधन की मेरी बाकी जरूरत पूरी हो गई। जुताई के लिए मुझे एक हल और एक हलवाहा उपलब्ध करना पड़ा। बस हल की मूठ मैंने ही थामी। पहली मौसम में औज़ार बीज श्रम आदि कुल मिलाकर खेती पर मैंने १४ ७२½ डालर खर्च किए। बीज के लिए मक्का मुझे ऐसे ही मिल गई थी। मक्का के लिए कोई खास कीमत नहीं देनी पड़ती जब तक कि पर्याप्त से अधिक बुआई न करनी हो। बारह बुशल सेम अठारह बुशल आलू कुछ मटर और मीठी मक्का खेत में उगी। पीली मक्का और शलजम की बुवाई में इतनी देर हो गई थी कि कुछ न उग सका। खेत से मुझे कुल आय इस प्रकार हुई

कुल आय	२३ ४४
खर्च	१४ ७२½
शेष	८ ७१½ डालर

यह उस उपज के अतिरिक्त है जो खा डाली गई और जिसकी कीमत तभी की तभी ४ ५० डालर मैंने कूती थी। थोड़ी-सी घास जो मैं उगा सकता था, मैंने उगाई और इस हानि को इस उपज ने आवश्यकता से अधिक पूरा कर दिया। यद्यपि मेरा प्रयोग अल्पावधि का था और आंशिक रूप से वह अस्थायी भी था

तब भी मानव की आत्मा के और आज दिन के महत्त्व का विचार करते हुए मेरा विश्वास है कि उस वर्ष कानकार्ड के किसी भी किसान से अधिक पैदा मैंने की।

अगले वर्ष मैंने और भी अच्छा फल पाया। इस बार मैंने लगभग तिहाई एकड़ भूमि ली और उसे अच्छी तरह फावड़े से खोद डाला। आर्थर यंग[1] जैसे लेखकों द्वारा कृषि-कर्म पर लिखित अनेकों प्रतिष्ठित ग्रंथ मुझे ज़रा भी घबरा नहीं सके। और दो वर्षों के अनुभव से मैंने सीखा कि यदि व्यक्ति सादगी से रहे, जो उगाए वही खाए और जितना खाए उतना ही उगाए और अपनी उपज के बदले में उच्चस्तरीय कीमती चीज़ों की अपर्याप्त मात्रा का न ले तो उसे बहुत ही थोड़ी ज़मीन जोतनी पड़ेगी। ऐसी स्थिति में बैलों से हल चलवाने के बदले ज़मीन को फावड़े से खोदना और पुराने टुकड़े में खाद डालने के बदले हर बार ताज़ा टुकड़ा चुनना सस्ता रहेगा। वह व्यक्ति अपना सारा कृषि-कर्म गर्मियों के बाकी बचे घण्टों में बायें हाथ से कर लेगा और उसे आज की तरह किसी बैल या घोड़े या गाय या सूअर से बंधा रहना नहीं पड़ेगा। आज की आर्थिक या सामाजिक व्यवस्थाओं की सफलता या विफलता में मुझे कोई रुचि नहीं। इसलिए मैं इस विषय पर निष्पक्ष विचार रखना चाहता हूँ। मैं कानकार्ड के किसी भी किसान से अधिक स्वच्छन्द था, क्योंकि मैं किसी एक घर या एक खेत से जुड़ा नहीं था और अपनी उस प्रतिभा के जो प्रतिपल कुटिल से कुटिल रूप धारण करती रहती है निर्देश पर चल सकता था। जितने वे थे, मैं उनसे अधिक सम्पन्न था और यदि मेरा घर जल जाता और मेरी फसल नष्ट हो जाती तब भी लगभग पहले जितना सम्पन्न तो मैं रहता ही।

मैं यह सोचने पर विवश हूँ कि मनुष्यों ने पशुओं को उतना नहीं, जितना कि पशुओं ने मनुष्यों को पालतू बना रखा है और पशु उतने ही अनुपात में मनुष्यों से अधिक स्वतन्त्र हैं। मनुष्यों और बैलों ने काम को आपस में बाँट लिया है और यदि हम अनिवार्य श्रम को ही विचारार्थ चुनें तो हम देखेंगे कि बैल अधिक लाभ में हैं, क्योंकि उनके चारेवाला खेत उतना ही अधिक बड़ा है। आदमी अपने भाग के कार्य का एक अंश उन छः सप्ताहों में करता है जब वह घास सुखाता है, और यह काम कोई लड़कों का खिलवाड़ नहीं होता। जो जाति सभी तरह से सादा जीवन बिताना चाहती है वह निश्चय ही पशु-श्रम का उपयोग करने जैसी

१ १७४१ से १८२० तक जीवित इंग्लैंड का कृषि पण्डित एवं लेखक

कभी गलती नहीं कर सकती। दार्शनिकों की जाति की बात मैं नहीं करता। मत तो स्पष्ट है कि उनकी जाति न कभी हुई है न निकट भविष्य में उसके होने की सम्भावना है और मेरे निश्चित मतानुसार न उसका होना उचित ही है। कुछ भी हो घोड़ा या बैल मैं तो कभी न रखूँ और कभी उनसे खेतों का अपना काम न कराऊँ। मुझे डर रहता है कि मैं सिर्फ घोड़ेवाला या चरवाहा बनकर ही न रह जाऊँ। अगर समाज को वैसा करने में लाभ प्रतीत होता है तो क्या हम निश्चय है कि एक का लाभ दूसरे की हानि नहीं है और घुड़सवार के नौकरों को भी आत्मतुष्टि का उतना ही हक है जितना मालिक का? माना कि इस सहयोग के बिना निर्माण के कई काम न हो पाते और निर्माण के इस गौरव को घोड़ों और बैलों के साथ बाँटने में कोई हर्ज नहीं है तो क्या इससे यह मतलब निकलता है कि अकेला मानव उनसे भी अधिक गौरवपूर्ण काम नहीं कर सकता था? जब मनुष्य पशुओं की सहायता लेकर न सिर्फ अनावश्यक अथवा कलात्मक पर विलासपूर्ण और निरर्थक काम भी करना आरम्भ कर देता है तब अनिवार्यतः ही बहुत थोड़े लोग बच पाते हैं जो बैलों से कार्य विनिमय में हिस्सा आधा काम करें। दूसरे शब्दों में वे बलवान के गुलाम बन जाते हैं। इस प्रकार आदमी को अपने अन्दर के पशु के ही लिए नहीं उसके प्रतीक बाहरवाले पशु के लिए भी श्रम करना पड़ता है। हमारे पास ईंट या पत्थर के बने कितने भी मकान क्यों न हों किसान की सम्पन्नता का मापदण्ड आज तक यही है कि उसका कोठार घर से कितना ऊँचा है। कहा जाता है इस नगर में गउओं, बैलों और घोड़ों के थान विशालतम हैं और राजकीय भवनों की दृष्टि से भी यह नगर पीछे नहीं है। लेकिन इस प्रदेश में अबाधित पूजा अथवा उन्मुक्त भाषणों के लिए बहुत ही कम हॉल हैं। राष्ट्र अपने वास्तुशिल्प में नहीं अभौतिक चिन्तन की अपनी शक्ति में आत्मश्लाघा की पात्रता क्यों न खोजें? पूर्व के सारे खंडहरों की तुलना में एक भगवद्गीता कितनी ज्यादा प्रशंसनीय है! मन्दिर और मीनारें राजाओं के विलासोपकरण हैं। एक सरल स्वच्छन्द मानस किसी राजा की प्रेरणा से श्रम नहीं करता। प्रतिभा किसी सम्राट की दासी नहीं होती न ही नगण्य सीमा तक भले ही हो सोना चाँदी या संगमरमर उसके उपकरण होते हैं। तब भला यह इतना अधिक पत्थर किस लक्ष्य की पूर्ति के लिए गढ़ा जाता है? जब मैं आर्केडिया[1] गया तो मैंने वहाँ किसी को भी

[1] यूनान का एक प्रान्त

पत्थर तराशते हुए नहीं देखा। जनिया पर एक दावानी महत्त्वाकांक्षा हावी रहती है कि वे अपनी स्मृति का बनाए रखने के लिए बहुत सारे तराशे हुए पत्थर छोड़ जाए। कितना अच्छा होता कि अपने आचरण गढ़ने और सवारने के लिए व ध्यान ही कष्ट उठाते! एक सद्विचार या सद्भाव चाहे जितने ऊँचे स्मारक से अधिक स्मरणीय होता है। मुझे पत्थर को उनकी अपनी जगह देखना ही ज्यादा भाता है। थेबीज[1] की विशालता भद्दी और अनिष्ट है। एक सच्चे ईमानदार आदमी के खेत के चारों ओर खिंची पत्थर की दीवार सौ द्वारों वाले थेबीज से बहुत अधिक संगत और विचारपूर्ण है। थेबीज तो जीवन के सच्चे लक्ष्य से बहुत दूर भटक गया है। जो धर्म और सभ्यताएँ जंगली और असभ्य होती हैं वही शान-दार पूजागृह बनाती हैं पर जिन्हें ईसाइयत कहा जा सके वे ऐसा नहीं करतीं। एक जाति जितना पत्थर गढ़ती है उसका अधिकांश उसकी कब्र बनाने के ही काम आता है। वह अपने को जिन्दा ही दफना लेती है। और इन पिरामिडों में आश्चर्यचकित होने की बात यदि कुछ है तो यही कि इतनी बड़ी संख्या में इतने पतित-दलित लोग उपलब्ध हो सके जिन्होंने एक महत्त्वाकांक्षी अहमक के लिए एक कब्र बनाने में अपने जीवन नष्ट कर दिए। इस अहमक के लिए अधिक साहस और बुद्धिमत्ता की बात यह होती कि वह नील नदी में डूबकर मर जाता और अपने शरीर को कुत्तों के हवाले कर देता। शायद मैं उसके लिए और उन मजदूरों के लिए भी कोई रिहाई का उपाय ढूँढ सकूँ पर मेरे पास उसके लिए समय नहीं है। जहाँ तक निर्माताओं के धर्म और उनके कला प्रेम का सम्बन्ध है मिस्र के मन्दिर हों या अमरीका के बैंक विश्व भर में स्थिति बहुत कुछ एक जैसी ही है। लाभ से बहुत अधिक उसकी कीमत चुकानी पड़ती है। दम्भ उसका मूल प्रेरणा-स्रोत बनता है। लहसुन रोटी और मक्खन की लालसा उसको बढ़ावा देती है। एक होनहार युवक वास्तुविद् वाइट्रूवियस कागज पर सख्त पेंसिल और मापक से एक रूपाकृति बनाता है और सगनरात डाब्सन एण्ड सन्स को निर्माण का काम सौंप दिया जाता है। जब तीस शताब्दियाँ इस भवन को गिरते हुए देख लेती हैं तब मानव जाति की आँखों में इसकी प्रतिष्ठा ऊँची हो जाती है। आपकी ऊँची मीनारों और स्मारकों के बारे में मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि इस नगर के एक सनकी आदमी ने एक बार चीन तक सुरंग खोदने का इरादा किया था। उसका कहना था

[1] प्राचीन मिस्र की राजधानी। इसके विशाल भवनों के खण्डहर अब तक वर्तमान हैं।

कि वह इस काम में इतनी प्रगति कर गया था कि चीनियों के बर्तनों और चाय दानियों की खटखटाहट उसके कानों में पड़ने लगी थी। लेकिन उसके द्वारा निर्मित एक सुराख की प्रशंसा करने के लिए मैं अपनी मान्यता को नहीं छोड़ सकता। कितने ही लोग पूर्व और पश्चिम के स्मारकों की ओर किसने उन्हें बनाया इस बात की चिन्ता में पड़े रहते हैं। मैं तो यह जानना चाहूंगा कि कौन था जिसने उन दिनों वे स्मारक नहीं बनाए? कौन इन तुच्छ बातों से ऊपर था? लेकिन लीजिए मेरे हिसाब किताब की बात पीछे छूट गई।

जितनी मेरे हाथों में उंगलियां हैं उतने ही धन्धों से मैं परिचित हूं। इसलिए गांव में जाकर बढ़ईगिरी और दूसरे दिन में होनेवाले धन्धों का इसी बीच मैंने सर्वेक्षण किया और इस प्रकार १३ ३४ डालर कमाए। वहां दो वर्ष से अधिक मैं रहा, पर जिस अवधि में यह जांच-पड़ताल मैंने की उन आठ महीनों में अर्थात ४ जुलाई से १ मार्च तक—आलू थोड़ी-सी हरी मक्का कुछ मटर जो मैंने पैदा की थी इनको और अन्तिम तिथि पर जो हाथ में था उसकी कीमत को शामिल करते हुए—जो कुछ मैंने भोजन पर खर्च किया वह इस प्रकार है

चावल	१ ७३½
शीरा	१ ७३ सबसे सस्ती किस्म की सकरीन
राई का आटा	१ ०४¾
मक्का का आटा	० ९९¾ राई से भी सस्ता
सूअर का मांस	० २२
गेहूं का आटा	० ८८ पैसा और दिक्कत दोनों दृष्टियों से मक्का के आटे से महंगा
शक्कर	० ८०
सूअर की चर्बी	० ६५
सेब	० २५
सूखे हुए सेब	० २२
शकरकंद	० १०
एक कद्दू	० ०६
एक तरबूज	० ०२
नमक	० ०३

वे मेरे प्रयोग जो विफल रहे।

हाँ मैं ८ ७४ डालर खा गया और इसका मैंने ज्यों का त्यों हिसाब भी दे दिया है। पर मुझे अपने अपराध को इतने निर्लज्ज भाव से लिख नहीं डालना था भले ही मैं जानता हूँ कि मेरे अधिकांश पाठक भी इसी अपराध के अपराधी हैं, और छाप में छपने पर यह कृत्य उनको भला नहीं मालूम पड़ेगा। अगले वर्ष भोजन के लिए कभी-कभी मैं मछलियाँ पकड़ लेता और एक बार तो मैंने इतना तक किया कि सेम के खेत को बरबाद करनेवाले एक मूषक को, तात्त्विक रूप से प्रयोग की खातिर ही मैं काटकर खा गया। तातारी मान्यता के अनुसार मैंने उसके पुनर्जन्म को प्रेरित किया। यद्यपि इससे मुझे एक क्षणिक रस मिला पर उसकी कस्तूरी की सी सुगन्ध के बावजूद मैंने महसूस किया कि अधिकतम उपयोग करने की नीति को मानते हुए ऐसा करना उत्तम तरीका नहीं है। मूषकों को गाँव के कसाई द्वारा कटवाकर तैयार कराना ही बेहतर मालूम पड़ता है।

इन्हीं तिथियों के बीच कपड़ों पर और कुछ आनुषंगिक विषयों पर—यद्यपि इनका बता इन से उनका अनुमान भर ही हो सकता है—जो खर्च हुआ वह है

	८ ४०¾ डालर
तेल और कुछ घर के बर्तन	२ ००

इस प्रकार धुलाई और टूट-फूट ठीक करने के सिवाय—यह काम अधिकांश मैंने घर से बाहर कराया और इसके बिल मुझे अभी तक नहीं मिल सके हैं—और इस तरह का खर्चा—घरों के इस भाग में जिन जिन मदों पर पैसा खर्च होता है उनसे अधिक ही मदों पर मेरा पूरा खर्च इस प्रकार रहा

घर	२८ १२½
खेत पर एक वर्ष के लिए	१४ ७२½
आठ महीनों का खाना	८ ७४
आठ महीनों तक कपड़ा आदि	८ ४०¾
आठ महीनों तक तेल आदि	२ ००
कुल	६१ ९९¾ डालर

मैं अब अपने उन पाठकों से कुछ कहना चाहता हूँ जिन्हें अपनी रोजी के

घरों या आंगनों को सारे नगर को धोते और साफ करते हैं और सारा गन्दा बचा-खुचा अन्न और दूसरी पुरानी सामग्री निकालकर बाहर ढेर लगा लेते हैं और उसे आग में जला डालते हैं। दवाइयां खाकर तीन दिन तक व्रत रखने के बाद नगर में हर कहीं आग बुझा दी जाती है। व्रत के बीच वे हर प्रकार की भूख और वासना की तृप्ति से दूर रहते हैं। एक सर्वसाधारण क्षमादान घोषित कर दिया जाता है और सभी अपराधी नगर में वापस आने दिए जाते हैं।

चौथे दिन सुबह ही प्रधान पुजारी नगर के बड़े चौक में लकड़ी रगड़कर आग जलाता है और नगर का प्रत्येक घर वहीं से नई और पवित्र अग्नि ले जाता है।'

तब तीन दिन तक वे नये अन्न और फलों की दावतें खाते हैं, नाचते हैं और गाते हैं और अगले चार दिनों तक वे पड़ोसी नगरों से, जो इसी पद्धति से अपने को पवित्र और प्रस्तुत कर चुके होते हैं, आनेवाले मित्रों का स्वागत करते हैं और उनके साथ आनन्द मनाते हैं।

सैक्रामेण्ट[1]—शब्दकोष में इसका यही अर्थ दिया है न, 'अन्तर के आध्यात्मिक लावण्य का बाह्य दृश्यमान चिह्न।' तो उपर्युक्त त्योहार से बढ़कर सच्चे 'सैक्रा-मेण्ट' के बारे में मैंने कठिनाई से ही कभी कुछ सुना होगा। मैं निस्सन्देह कह सकता हूं कि उन्हें दैवी शक्तियों ने ही ऐसा करने के लिए प्रेरित किया होगा, पर हम इन लोगों का उनके पास कोई शास्त्रीय उल्लेख नहीं है।

पांच से भी अधिक वर्षों तक मैं एकमात्र शारीरिक श्रम से अपना पेट पालता रहा और मुझे पता चला कि वर्ष में छः सप्ताह काम करके मैं अपने सभी खर्चे निकाल सकता हूं। पूरे जाड़े और गर्मियों का अधिकांश मुझे अध्ययन के लिए खाली मिल जाता था। मैंने स्कूल चलाकर भी अच्छी तरह देखा है और पाया है कि इस धंधे में मेरे खर्चे या तो आय के समतुल्य रहते थे या उससे बढ़ जाते थे। विचारणा और आस्था की बात तो दूर, मुझे तो स्थिति के अनुकूल वेश-भूषा पहनने और स्वयं को तैयार करने में ही काफी समय नष्ट कर डालना पड़ता था। क्योंकि मेरा पढ़ाना अपने साथियों के हित के लिए नहीं अपनी रोटी के लिए था, इसलिए वह विफल सिद्ध होता था। मैंने व्यापार करके भी देखा, पर पाया कि उसमें कुशल बनने में मुझे दस वर्ष लगेंगे और तभी शायद मैं उस रास्ते की ओर बढ़ सकूंगा। असल में

१ इसाइयों का एक धार्मिक अनुष्ठान

तो मुझे भय था कि तब भी मैं व्यापार में मग्न हो सकूँगा या नहीं। एक बार जिन दिनों मित्रों के कहे पर चलने का दुखद अनुभव मेरे दिमाग में ताज़ा था और मेरी सूक्ष्म बुद्धि पर वह ज़ोर डाल रहा था, मैं एक सम्भावित जीविका की खोज में था। उन दिनों मैंने गम्भीरता से सोचा था कि मैं बकुल बेरियाँ तोड़ने का काम क्यों न कर लूँ? इसे मैं निश्चय ही कर सकता था और इससे होनेवाली मामूली आय मेरे लिए काफी थी। कारण कि अपनी आवश्यकताएँ कम करने में ही अपना कौशल मैंने सदा प्रदर्शित किया है। मूर्खतावश मैंने विचारा इस काम में बहुत कम पूँजी की ज़रूरत है और इससे मेरे अभ्यस्त जीवन में बहुत थोड़ा व्यवधान पड़ता है। जब मेरे सभी साथी किसी न किसी व्यापार अथवा धन्धे में निस्संकोच लग गए तब मैं भी अपने इस काम को उनके धन्धों के समकक्ष मानता हुआ व्यस्त हो गया। मार्ग में पड़ती बेरियों को चुनते पहाड़ियाँ नापने और एकत्रित माल को लापरवाही से बेचते मैंने गर्मियाँ बिता दीं और इस प्रकार अद्मेतस के रेवड़ों का[1] पेट पाला। मैंने यह भी सोचा कि गाड़ियों में भरकर जंगली जड़ें अथवा सदाबहार के पौधे भी उन गाँवों और नगरों में ले जाकर बेचूँ जो वनों की स्मृति से अभी तक प्रेम करते हैं। लेकिन इस बीच मैंने सीख लिया कि वाणिज्य जिस चीज़ को भी छू देता है वही अभिशप्त हो जाती है। यदि आप स्वर्गीय सन्देशों का भी व्यापार आरम्भ करें तो इस धन्धे में भी वाणिज्य का सारा अभिशाप लिपट जाएगा।

क्योंकि कुछ बातें अन्यों की अपेक्षा मुझे अधिक भाती हैं, अपनी स्वच्छन्दता को मैं विशेष रूप से मूल्यवान समझता हूँ, और गरीबी का कठोर जीवन बिताकर भी मैं सफलता प्राप्त कर सकता हूँ, इसलिए कीमती गलीचा, बढ़िया फर्नीचर, खाना पकाने के नाज़ुक बरतन अथवा यूनानी या गॉथिक स्थापत्य के भवन खड़े करने के लिए धन कमाने में अपना समय गँवाना मैंने कभी नहीं चाहा। जिन लोगों के लिए ये चीज़ें बाधा नहीं हैं और जो मिल जाने पर इनका उपयोग करना जानते हैं, इनको प्राप्त करने की धुन मैं उन्हीं के लिए छोड़ता हूँ। कुछ लोग उद्यमी होते हैं और श्रम को श्रम की खातिर अथवा इसलिए कि वह उन्हें शरारतों से बचाता है प्यार करते प्रतीत होते हैं। फिलहाल इन लोगों से मैं कुछ कहना नहीं चाहता। जिन लोगों की समझ में नहीं आ पाता कि जितना अवकाश उन्हें आज उपलब्ध है उसका

---

१ राजा अद्मेतस की भेड़-बकरियों का रेवड़ जिन्हें स्वर्ग से बहिष्कृत अपोलो ने चराया था और इस प्रकार वनवास के दिन काटे थे।

व किस प्रकार उपयोग करें उन्हें मैं सम्मति दूगा कि वे दुगुना श्रम करें और तब तक करते जाएं जब तक वे अपना मूल्य अदा कर मुक्तिपत्र न पा लें। जहा तक मेरा सम्बन्ध है मैंने देखा है कि दिवस-श्रमिक का धन्धा सबसे अधिक आजादी का धन्धा है। विशेष कर इसलिए कि वर्ष में तीस या चालीस दिन इस प्रकार काम करके व्यक्ति अपना पेट पाल सकता है। सूर्य के छिपने के साथ श्रमिक का दिवस समाप्त हो जाता है और तब वह अपनी जीविका से स्वतन्त्र अपनी लगन का कोई भी काम कर सकता है। लेकिन उसका मालिक जो महीने के महीने रुपया लगाता है और पूरा लाभ चाहता है उसे वर्ष के एक सिरे से दूसरे सिरे तक कभी भी शान्ति नसीब नही होती।

सक्षेप में मुझे आस्था और अनुभव दोनो दृष्टियो से यह विश्वास हो गया है कि यदि हम सादगी से और समझदारी से बसर करें तो एक व्यक्ति का अपना पेट पालना इस धरती पर कोई कठिन काम नहीं है बल्कि वह तो दिलबहलाव मात्र है क्योकि अधिक सादी जातिया जिन कामो को लक्ष्य रूप मानती हैं अपेक्षाकृत कृत्रिम जीवन बितानेवाली जातिया उन्हे खेल-मात्र समझती है। यह आवश्यक नहीं है कि व्यक्ति अपनी रोटी खून पसीना एक करके ही कमाए। यदि उसे मेरी अपेक्षा जल्दी पसीना आता हो तो बात दूसरी है।

मेरे परिचित एक युवक ने जिसे कुछ एकड भूमि वसीयत में मिली थी मुझे बताया कि यदि साधन जुट सके तो मैं आप जैसा जीवन बिताने का विचार कर रहा हू। मैं नही चाहता कि कोई भी मेरे आग्रह पर मेरी जीवन विधि को अपनाए। हो सकता है कि जब तक व्यक्ति विशेष मेरे तरीको को अच्छी तरह सीख पाए मैं अपने लिए कोई नया मार्ग ढूढ लू। मैं तो चाहता हू कि जितनी भी सम्भव हो सकें उतनी ही विभिन्नताए ससार के मानवो में मिलें पर मैं प्रत्येक व्यक्ति को चेतावनी देना चाहूगा कि वह अपना मार्ग स्वय खोजकर उसपर चले। अपने पिता का या माता का या पडोसी का मार्ग वह न अपनाए। युवक चाहे शिल्पी बने या किसान या नाविक, लेकिन जो कुछ भी काम वह करना चाहता है उससे उसे रोका नही जाना चाहिए। जिस तरह एक नाविक अथवा एक भागा हुआ गुलाम ध्रुवतारे पर अपनी दृष्टि गड़ाए रखता है उसी तरह हम लोग सिर्फ गणित की दृष्टि से ही समझदार होते हैं, लेकिन यह दृष्टि जीवन भर हमारा पर्याप्त मार्ग-दर्शन कर सकती है। हम एक निश्चित अवधि के बीच बन्दरगाह तक भले ही न पहुच सकें पर यह तय है कि ठीक मार्ग पर हम जमे रहेंगे।

इस विषय में निम्नस्तर जो बात एक के लिए सच है, एक हजार के लिए वह और भी अधिक सच है। एक बड़ा भवन छोटे-से आनुपातिक रूप में अधिक महँगा नहीं पड़ता, क्योंकि एक छत पूरे को ढक लेगी, नीचे एक तहखाना काफी होगा और एक दीवार कई कमरों को अलग कर सकेगी। लेकिन जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं तो एक घर में अकेले रहना ही पसन्द करता हूँ। दूसरे, पूरा घर स्वयं बना लेना किसी अन्य का साथ रहने के लाभ समझाने से सस्ता और सुगम है। यदि आप किसीको उधार कर भी लें तो हो सकता है कि बीच का पार्टीशन सस्ता होने के कारण बहुत पतला हो या दूसरा व्यक्ति एक बुरा पड़ोसी निकले और अपने हिस्से की मरम्मत भी न कराए। सहयोग, जो सामान्यतया सम्भव हो पाता है, दरअसल बड़ा ही आंशिक और ऊपरी होता है और थोड़ा-बहुत सच्चा सहयोग को जितना कुछ अस्तित्व है भी वह न होने के बराबर है क्योंकि सहयोग ऐसी समस्वरता है जिसे लोग सुन नहीं पाते। यदि व्यक्ति में आस्था है तो वह हर कहीं समान आस्थावानों से सहयोग करेगा लेकिन यदि उसमें आस्था नहीं है तो वह किसी भी दल में क्यों न मिल जाए, वह शेष समाज की तरह ही रहता चला जाएगा। उच्चतम और निम्नतम दोनों ही दृष्टियों से सहयोग करने का अर्थ साथ-साथ जीवन-निर्वाह करना ही होता है। पीछे किसीने यह प्रस्ताव रखा था कि दो युवक एक साथ संसार-यात्रा के लिए निकलें। उनमें एक बिना पैसे चले अपनी जीविका नाविक का काम करके या किसानी करके कमाए, और दूसरे की जेब में हुण्डियाँ हों। साफ है कि वे बहुत देर तक साथी या सहयोगी नहीं बन रह सकते क्योंकि उनमें से एक तो कार्य योग देगा ही नहीं। अपनी साहसपूर्ण यात्रा के पहले पहले रोचक संकट के सामने पड़ते ही वे अलग हो जाएँगे। सबसे बड़ी बात यह है, जैसाकि मैं पहले कह चुका हूँ कि अकेला यात्री तो आज ही कूच कर सकता है पर जिसे दूसरे के साथ जाना है, उसे साथी के तैयार हो जाने तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है और उन्हें यात्रारम्भ करने में बहुत लम्बा समय लग सकता है।

अपने नगर के कुछ लोगों को मैंने कहते सुना है कि यह तो बड़ा ही स्वार्थपूर्ण नीति है। मैं स्वीकार करता हूँ कि इधर लोककल्याण के कामों में मैं बहुत ही कम पड़ा हूँ। एक विशिष्ट कर्तव्य की वेदी पर मैंने कुछ बलिदान किए हैं। लोकहित में प्राप्त आनन्द का त्याग उन्हींमें से एक है। कुछ लोग हैं जिन्होंने नगर के किसी एक निर्धन परिवार का भरण-पोषण अपने ऊपर ले लेने के लिए मुझे हर उपाय से

तयार करना चाहा है। उन्होंने मुझे समझाया, तुम्हारे पास करने को कुछ नहीं है और खाली आदमी शैतान का दास बन जाता है इसलिए क्या न तुम ऐसा ही कुछ काम अपने हाथ में ले लो। खैर अन्त में ऐसा ही करना मैंने विचारा। जितनी अच्छी तरह मैं अपना पेट भरता हूं सभी दृष्टियों से उतनी ही अच्छी तरह कुछ निर्धन प्राणियों का पोषण करके उनके भगवान पर अहसान करने का मैंने उपक्रम किया। अपनी ओर से प्रस्ताव रखने का साहस भी मैं कर बैठा। लेकिन उन निर्धनों ने मेरे संरक्षण के बन्धन बिना किसी असमंजस के निर्धन बने रहना ही उत्तम समझा। मेरे नगर के स्त्री-पुरुष तरह-तरह से अपने भाइयों के उपकार में लगे ही हैं। मैं समझता हूं तब कम से कम एक व्यक्ति को तो इससे बख्श दिया जाए और उसे कम मानवीय अन्य उद्यमों में लगे रहने दिया जाए। क्योंकि किसी भी अन्य काम के लिए जैसे ही दान के लिए भी प्रतिभा की आवश्यकता होती है। जहां तक परोपकार का सम्बन्ध है वह तो इन धन्धों में एक है जिनमें पद रखने को जगह नहीं है। मैंने इस धन्धे को भी अच्छी तरह परखा है। बात अजीब लग सकती है पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि यह काम मेरी प्रकृति के अनुकूल नहीं है। जानबूझकर प्रयासपूर्वक अपने विशेष उद्यम को मुझे ऐसे सुकृत्य के लिए त्याग नहीं देना चाहिए जिसे समाज मुझसे इसलिए कराना चाहता है कि वह अन्तिम प्रलय से बच सके। लेकिन मेरा विश्वास है कि किसी भी अपर काम में उस किस्म का पर उससे कहीं अधिक असीम दृढ़ता ही सृष्टि को बचा सकती है। पर मैं किसी व्यक्ति और उसकी प्रतिभा के बीच आना नहीं चाहता। जो आदमी अपने पूरे मन से आत्मा से और जीवन से वह काम करता है जिसे करने से मैं इन्कार कर चुका हूं तो मैं कहूंगा डटे रहो दुनिया भर ही इस काम को पाप बताए और पाप वह जरूर बताएगी तब भी तुम अडिग रहो।

मेरे बहुत-से पाठक निस्सन्देह मेरे पक्ष में यही दलील देंगे पर मैं तो अनुमान भी नहीं कर सकता कि मेरी स्थिति एक निराली स्थिति है। जहां तक किसी भी श्रम करने का सम्बन्ध है—और मैं नहीं चाहूंगा कि मेरे पड़ोसी उसे अच्छा ही घोषित करें—यह कहने में मुझे कोई भी हिचकिचाहट नहीं है कि मैं उसके लिए एक ठिकाने का आदमी हूं। लेकिन क्या काम मेरे लिए उचित होगा यह निश्चित करना तो नियोजक का ही कर्तव्य है न। शब्द के सामान्य अर्थ में मैं क्या अच्छा करता हूं, मेरे प्रमुख कर्तृत्व में यह प्रश्न एकदम अलग है और अधिकांशतः अवांछ्य भी है। लोग ख्याव

हार्दिक दृष्टि में रहा करते हैं, जहाँ भी हों, जैसे भी हों, अधिक समय बिताने का लक्ष्य सामने न रखते हुए, पूर्वकल्पित सज्जनता के साथ बस चारों ओर भला करते घूमा। यदि इसी लहजे में मुझे भी किसी को उपदेश देना पड़े तो मैं इसके बदले यह कहूँगा कि भला बनने का प्रयास आरम्भ करो। लोगों की बात तो वैसी ही हुई कि जब सूर्य चाँद अथवा छठे आसमान पर स्थित तारों तक अपनी ज्योति पहुँचा चुके तो रुक जाय और भद्र पुरुष रॉबिन की तरह हर कुटीर की खिड़की में झाँकता हुआ, लोगों के मस्तिष्क विकृत करता हुआ, मांस को सड़ाता हुआ और अन्धकार को ज्योतित करता हुआ घूमे। सूर्य को तो चाहिए कि वह अपनी सुखद उष्णता और परोप-कारिता को स्थिरतापूर्वक तब तक बढ़ाता जाए जब तक उसकी ज्वलनता इतनी न बढ़ जाए कि कोई भी मर्त्य उसमें आँख न मिला सके। लेकिन तब भी और इस बीच भी वह बराबर अपनी कक्षा में घूमता रहे और सबका हित-साधन करता रहे बल्कि अधिक सच्चे दार्शनिक चिन्तन की भाषा में यह कहिए कि लोकहित-लाभ करते हुए उसकी परिक्रमा करते रहें। एक बार ग्रीक पुराणों के फिटन ने अपनी स्वर्गीय उत्पत्ति को अपनी उपकारशीलता से सिद्ध करना चाहा। सिर्फ एक दिन के लिए वह सूर्य का सारथि बना दिया गया। जब क्या था, सूर्य के रथ को उसने निर्दिष्ट मार्ग से हटाकर चलाया। फलतः स्वर्ग की निचली गलियों के कितने ही घर-कुंज जलकर राख हो गए, वसन्त की रंगीनी हर कहीं समाप्त हो गई और सहारा का विशाल मरुस्थल अस्तित्व में आ गया। अन्त में जुपिटर को अपना वज्र चलाकर उसे सिर के बल धरती पर फेंक देना पड़ा। उसकी मृत्यु से सूर्य को बड़ा दुःख हुआ और वह एक वर्ष तक नहीं चमका।

भ्रष्ट सज्जनता में से जैसी दुर्गन्ध आती है वैसी और कहीं से नहीं आती। यह मानवीय अथवा स्वर्गीय शव के समान है। यदि निश्चित रूप से मुझे पता लग जाए कि अमुक व्यक्ति मेरा भला करने के सचेत संकल्प के साथ मेरे घर आ रहा है तो मैं अपनी जान बचाने के लिए उसी तरह भाग लूँ जैसे कि अफ्रीका मरुस्थल की सूखी झुलसा देनेवाली सिमूम नामक उन आँधियों से मुझे भाग लेना चाहिए, जो मुँह नाक, कान और आँखों को धूल से भर देती हैं और साँस को रोक लेती हैं। मुझे डरना चाहिए कि कहीं उसकी सज्जनता का कुछ लाभ मुझे न मिल जाए और उसका सत्त्वांश विष मेरे रक्त में न मिल जाए। नहीं, उससे तो अच्छा यही है कि नैसर्गिक रूप से मिली हानि का कष्ट सहन कर लिया जाए। जो यदि मैं भूखा हूँ तो मुझे

मिला देता है मैं ठिठुर रहा हू तो मुझे कपड़े पहना देता है और यदि मैं कभी खड्ड में गिर जाता हू तो मुझे बाहर खींच लेता है वह इसीलिए अच्छा आदमी नहीं बन जाता। न्यूफाउण्डलैंड का एक कुत्ता भी इतना कर देगा। लोककल्याण सूक्ष्म अर्थों में साथी के प्रति प्रेम नहीं है। निस्सन्देह लोकोपकारक हावर्ड[1] अपने तरीके का अत्यन्त ही दयालु और श्रद्धेय व्यक्ति था और उसका फल उसे मिला है। लेकिन तुलनात्मक दृष्टि से विचार करें तो सकड़ो भी हावर्ड हमारे किस काम के यदि उनकी लोककल्याण भावना हमारी दुखिया हालत में हमारी कोई मदद नहीं कर सकती ? दरअसल तो इसी स्थिति में हम सहायता के सर्वाधिक पात्र होते हैं। किसी भी लोक कल्याणकारी समिति द्वारा मेरा या मेरे जैसे अन्यों की सहायता करने का सच्चा प्रयास नहीं किया गया है।

जसुइट सम्प्रदायवालो[2] ने आदिवासियों को जीवित जलाया था। जब उन्हीं आदिवासियों ने अपने सन्तापकों को यन्त्रणा देने के नये-नये तरीके बताए तो वे हतप्रभ हो उठे। शारीरिक यातना सह सकने में वे आदिवासी बहुत आगे थे। अवसर पर देखा गया कि मिशनरी लोगों द्वारा दिए गए किसी भी आश्वासन से वे बहुत ऊपर थे। 'जैसा व्यवहार करो जैसा व्यवहार किए जाने की तुम आशा करते हो।' इस नियम ने उन लोगों को कम आकर्षित किया था। उन्हें अपने साथ किए गए व्यवहार की चिन्ता नहीं थी। वे अपने शत्रुओं को भी एक नये ढंग का प्यार देते थे और उनका किया क्षमा करके उनके बहुत निकट आ जाते थे।

इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि गरीब को सहायता में वही दिया जाए जिसकी उसे सबसे अधिक जरूरत है। भले ही आपके दृष्टान्त के कारण वे पिछड़े के पिछड़े ही रह जाए। यदि आप पैसा देना चाहते हैं तो उसे अपने हाथ से खर्चिए पैसा दे मत डालिए। कभी-कभी हम बड़ा मजेदार गलतियां कर देते हैं। बहुधा गरीब उतना शीत-ग्रस्त और भूखा नहीं होता जितना कि वह गन्दा, चिथडों में लिपटा और रूखा होता है। इसके लिए सिर्फ उसका दुर्भाग्य ही नहीं उसकी कुरुचि भी आंशिक रूप में जिम्मेदार होती है। यदि पैसे आप उसे देंगे तो शायद वह और चिथड़े ही उनसे खरीद लाएगा। तालाब पर बर्फ काटनेवाले आयरिश मजदूर ऐसे मोटे भोंटे चिथड़े पहनते थे और इतने मल-कुचैले रहते थे कि मैं उनपर तरस खाने का

[1] पिलैंथापी का प्रचारक जॉन हावर्ड (१७२६-१७९०)
[2] १५३४ में स्थापित एक धार्मिक पंथ के लोग

अस्वस्थ हो गया था। कारण कि मैं अपने अधिक लाभ और अधिक दक्षिणा के कारण मैं भी आड़े न आया करता था। इनाम की सर्दियों में एक दिन दफ्तर में एक निमन्त्रण पानी में गिर पड़ा और मैं घर आग तापने आया। उसने सौकट और बिना तीन पटे और दो जाड़ी जुराबें अपने पैर में पहनीं। तब जाकर उसका शरीर मुझे ठीक पाया। फिर जो अतिरिक्त कपड़े मैंने उसे दिए उन्हें वह लौटा कर मुक्त था क्योंकि उसके पास नाव पहनने के सिवाय ही वस्त्र थे। अन्त में वह डूबता ही उसका मरा स्नान थी। तब तो मुझे अपने ऊपर दया आने लगी कि पूरा की पूरी कपड़ों की दुकान उस व्यक्ति को देने में बड़ा मानवीय यह देखा कि मैं अपने लिए फलालैन का एक कमीज बनवा लेता। यदि पाप की जड़ पर आघात करनेवाला व्यक्ति एक है, तो हजार ऐसे हैं जो सिर्फ उसकी शाखाओं पर प्रहार कर रहे हैं। यह सम्भव है कि जरूरतमन्दों पर सर्वाधिक धन और समय दान करने-वाला व्यक्ति अपनी विधि से उस विपन्नता को बढ़ा ही रहा है जिसे दूर करने का व्यर्थ प्रयास उसका लक्ष्य है। वह उस धार्मिक दास-व्यापारी के समान है जो प्रत्येक दसवें दास से होनेवाली आय शेष को इतवार को छुट्टी दिलाने में व्यय कर देता है। कुछ लोग गरीबों को अपने रसोईघर में नौकर रखकर उनपर कृपा दिखाते हैं। यदि वे स्वयं को वहां नियुक्त करें तो क्या यह अधिक सज्जनता का काम न होगा? आप अपनी आय का दसवां भाग दान देने का शेखी हांकते हैं। क्यों नहीं आप दस में नौ भाग दान दे डालिए और छुट्टी पाइए। पर इस दशा में समाज के काम तो सम्पत्ति का दसवां भाग ही आ पाया। अब प्रश्न है कि यह दसवां भाग उसके मालिक की उदारता के कारण बच पाया अथवा दानाधिकारियों की लापरवाही के कारण?

लोककल्याण की भावना ही एक ऐसा मानवीय गुण है जिसे मानव-जाति की प्रशंसा पर्याप्त मात्रा में मिल सकी है। नहीं उसका हमने अनुचित रूप से अधिक मूल्य लगा लिया है और ऐसा हमने स्वार्थवश ही किया है। एक दिन कानकाड में एक हट्टे-कट्टे निर्धन व्यक्ति ने यहीं के एक साथी नागरिक की प्रशंसा मुझसे की और कहा कि वह गरीबों पर बहुत दया करता है। उसका मतलब अपने से था। इस प्रकार के लोग अपने असल माता पिता की अपेक्षा कृपालु चाचाओं और बुआओं का अधिक इज्जत करते हैं। एक बार मैंने एक पादरी को इंग्लैंड पर भाषण करते हुए सुना। वह ज्ञान और बुद्धि से सम्पन्न व्यक्ति था। पहले उसने बतानिक,

साहित्यिक और राजनीतिक महापुरुषों के नाम गिनाए—शेक्सपियर, बर्क, क्रामवेल, मिल्टन, न्यूटन और अन्य, और इनके विषय में कहने के बाद वह इंग्लैंड के ईसाई धर्म के श्रेष्ठ पुरुषों पर आ गया। जैसेकि अपने ग्रन्थ की दृष्टि से ऐसा करना उसके लिए जरूरी हो, उन्हें उसने शेष से बहुत ऊंचा, महानतम से भी महान बनाकर पेश कर दिया। ये लोग थे—जॉन हावर्ड और श्रीमती फ्राई। हर व्यक्ति इस भेद को और उसकी व्यावसायिक नीति को समझ सका होगा। ये अन्तिम नाम इंग्लैंड के सर्वोत्तम स्त्री-पुरुषों के नहीं, उसके सर्वोत्तम लोककल्याणवादियों के थे।

मैं लोककल्याण संस्था की जितनी प्रशंसा मिलनी उचित है उसे कम करना नहीं चाहूंगा। मेरी मांग केवल यही है कि जिनके भी जीवन और कार्य मानव-जाति के लिए वरदान सिद्ध हुए हैं, उन सबके साथ न्याय किया जाए। मैं व्यक्ति की साधुता और उसकी सज्जनता को प्रमुख मूल्य नहीं देता। ये गुण तो उसके वृन्त और पत्ते हैं। जिन पौधों से, उनके सूख जाने पर, रोगियों के लिए औषधयुक्त चाय बनाई जाती है वे पौधे क्षुद्र हैं और उनका इस्तेमाल नीम-हकीम ही करते हैं। मैं तो मानव के फल और फूल चाहता हूं कि सुगंधि की एक हिलकोर उससे बहकर मुझ तक पहुंच सके और एक प्रौढ़ता हमारी बातचीत को सुस्वादु बना सके। उसकी सज्जनता एक आंशिक, अल्पकालिक कृत्य नहीं, एक स्थायी बहाव होना चाहिए जो उसपर जरा भी बोझ न बन सके और जिसका उसे भान तक न हो सके। यह वह दान है जो पापों के ढेर के ढेर को ढक सकता है। लोककल्याणवादी बहुधा अपने व्यतीत कष्टों की स्मृतियां मानव-जाति के चारों ओर वातावरण के रूप में फैला देता है और उसे सहानुभूति का नाम दे देता है। हमें अपनी हिम्मत देनी चाहिए, अपनी निराशा नहीं; अपना स्वास्थ्य, स्वारस्य देना चाहिए, अपने रोग नहीं और सतर्क रहना चाहिए कि संताप संक्रामक रूप धारण न कर ले। भला विलाप की ध्वनि किन दक्षिणी मैदानों से आ रही है? नास्तिक किस अक्षांश में रहते हैं जहां हम आत्म-ज्योति भेजें? कौन वह असंयमी क्रूर व्यक्ति है जिसका उद्धार हम करना है? जिसे भी कोई ऐसा रोग होता है कि वह अपना काम नहीं कर पाता—यदि उसके पेट में दर्द भी होता है, क्योंकि पेट से ही तो सहानुभूति की जाती है—वही फौरन संसार का सुधार करने चल देता है। वह स्वयं को एक सूक्ष्म ब्रह्माण्ड मान लेता है और खोज निकालता है कि दुनिया कच्चे ही सब खाए जा रही है। मजा यह कि उसकी यह खोज सच्ची होती है और वह समझता है कि ऐसी खोज सिर्फ वही कर

गया है। उसकी दृष्टि में यह भूमण्डल स्वयं एक विशाल वेश्यालय है और इस बात का भारी डर है कि मानव-सन्तान पतन से पहले ही कहीं उसमें भी मुँह न मारने लगे। उसकी प्रचण्ड लोककल्याणकामिता सीधे एशिया और पराधीनियन लोगों की नाड़ निकालती है, भारतीय और चीनी गावों की जनता को गर्त लगाती है और तब मृगारक के एक या दोनों गालों पर हल्की-सी लाली खिल आती है जबकि उसका पतन शुरू हो रहा था जीवन अपनी स्वच्छता खो देता है और एक बार फिर मधुर और आशाप्रद बन जाता है। जितना कुछ मैं आचरण में ला सका उससे अधिक बस्तु का सपना मैंने कभी नहीं लिया है। अपने से भी बुरे किसी व्यक्ति को न मैंने कभी जाना है न मैं कभी जानूंगा।

मेरा विश्वास है कि एक सुधारक वह ईश्वर का पावनतम पुत्र हो क्या हो उसकी उदासी का कारण साथियों के कष्ट की अनुभूति नहीं उसकी निजी यन्त्रणा ही होता है। जैसे ही यह दूर हुई जैसे ही वसन्त उसके पास आया प्रभात उसकी शय्या पर मुस्काया वैसे ही बिना किसी क्षमा-याचना के उसने अपने साथियों को उसने छोड़ दिया। तम्बाकू के प्रयोग के विरुद्ध भाषण न देने का मेरा कारण यह है कि मैंने कभी तम्बाकू नहीं चबाया है। यह हर्जाना उन तम्बाकू खानेवालों को भुगतना चाहिए जो उसका प्रयोग छोड़ चुके हैं। बस काफी चीज़ें हैं जिनका सेवन मैंने किया है और जिनके विरुद्ध मैं भाषण दे सकता हूँ। यदि कभी आपको इन लोककल्याण-कार्यों में घसीट लिया जाए तो अपने बायें हाथ को यह न जानने देना कि आपका दायां हाथ क्या कर रहा है। ऐसा जानकारी उसके लिए उचित नहीं होगी। डूबते हुए को बचा लो और अपने फीते बांध लो। अवसर पर काम करो और किसी स्वच्छन्द श्रम में लग जाओ।

सन्तों के संसर्ग में हमारे व्यवहार विकृत हो गए हैं। हमारे पवित्र ग्रन्थ ऐसे गानों और मन्त्रों से भरे हैं जिनमें ईश्वर का संगीतमय गानों में अभिशाप्त किया गया है और यह सब सतत सहन किया गया है। कहनेवाले कह सकते हैं कि पैगम्बरों और परित्राताओं ने भी तो मानव भय का निराकरण करने की ही बात की है और उसमें मानव की आशाएं बंधी भी हैं। मुझे कहीं भी तो ईश्वर के इस जीवनोपहार के प्रति एक सरल अदम्य सन्तोषाभिव्यक्ति उसकी स्मरणीय स्तुति अंकित नहीं मिली है। स्वास्थ्य और सफलता कितनी भी दूर और पीछे हटी हुई क्यों न प्रतीत हों मेरे लिए वही शुभ है। रोग और असफलताएं उन्हें मुझसे जो मुझे उनमें कितनी भी महानुभूति क्यों न हो मेरा अहित ही करती है और

उदास ही बनाता है। सच्चे भारतीय, वानस्पतिक चुम्बकीय अथवा प्राकृतिक साधना से मानव का वास्तविक उद्धार करने को यदि हम उत्सुक हैं तो पहले हम स्वयं को प्रकृति जितना ही सरल और पुष्ट बनाना होगा हमारे सिरों पर जो बादल घुमड़ रहे हैं उन्हें छितरा देना होगा और अपने राम-कृपा में थोड़ा जीवन रस भरना होगा। गरीबों के ओवरसियर मत बनो संसार के समर्थ पुरुष बनने का प्रयास करो।

शीराज के शेख सादी के 'गुलिस्ता' में मैंने पढ़ा उन्होंने एक दिन पुरुष से पूछा---सर्वशक्तिमान भगवान ने जितने भी यशस्वी वृक्षों को उन्नत और निविड छाया-सम्पन्न बनाया है, उनमें देवदारु के सिवाय किसीको भी आजाद नहीं कहा गया है। और देवदारु पर फल नहीं लगते। बताइए इसमें क्या रहस्य है ? उसने उत्तर दिया---प्रत्येक का अपना संगत फल होता है निश्चित ऋतु होता है। जब तक वह रहती है वह ताजा और फला फूला रहता है। उसके बीत जाने पर वह सूख जाता है बिखर जाता है। पर देवदारु इनमें किसी भी स्थिति का गुलाम नहीं है। वह सदा विकसित रहता है और यही आजादी अथवा धार्मिक दृष्टि से उन्मुक्त पुरुषों की प्रकृति है। किसी क्षणभंगुर चीज पर अपना मन मत टिकाओ क्योंकि दजला नदी खलीफाओं की जाति के विलुप्त हो जाने के बाद भी बगदाद में से बहता रहेगा। यदि तुम्हारे पास धन है तो खजूर के पेड़ की तरह उदार बनो, और यदि देने को कुछ नहीं है तो देवदारु की तरह आजाद अथवा मुक्त पुरुष बनो।

पूरक पंक्तियां

गरीबी की आकांक्षाएं

रे दीन दरिद्र अधम जन !
तुम महत्त्वाकांक्षा करते हो, जो
आसमान में जगह पाने का दावा करते हो
वह भी सिर्फ इसलिए कि तुम अपनी दीन-हीन आपदा में
या टब में सस्ती धूप में अथवा छायादार सोने के तट पर
जहां जहां जूही-कलियां उगी हैं
किसीकी साधारण सेवा का पुण्य कमा रहे हो।

और तुम्हारा दाहिना हाथ
उन मानवीय संस्कारों का, जिनकी प्रेरणा से
पुण्य निरन्तर उठता है, नीच फेंकता है।
वह प्रकृति को कलुषित बनाता है और
प्राणों को सुन्न करता है और गागन[1] की तरह
सचेत चपल लोगों को पाषाण बना देता है।
हम तुम्हारे उपयोगितावादी स्वभाव का
अथवा अप्राकृतिक जड़ता का
अनम सम्पर्क नहीं चाहिए
तू न रूप को समझता है न गोत्र का।
हम सचेष्ट से ऊपर तेरा भग्न उदात्त निश्चेष्ट
साहस भी नहीं चाहिए।
यह निम्न अधम चिन्तन
यह सामान्य स्तर
तुम्हारे दिमागों की गुलामी बन जाता है।
हम तो वैसा पुण्य चाहिए जो
वीर उदार कार्यों में
गाही उदात्तता में सर्वद्रष्टा विवेक में
असीम दानशीलता में मिलता है।
हम वह पुण्य चाहिए जिसको अतीत
कोई नाम नहीं दे सका है
वह कम कुछ रूप टोट गया है—
स्वयूनीज, पवित्रीज थीमियम आदि।
तू अपनी घृणित कोठरी में चला जा
और जब नूतन उत्कृष्ट गगन तुझे नीचे पर
ला दस कि व महान पुण्य क्या थे।

टी० ३

---

१ एक राक्षसी जिसको देखते ही व्यक्ति पत्थर बन जाता था।

'निराशा गीत' लिखने का नहीं है। मैं तो प्रभात के समय दड़बे या छत पर खड़े मुर्गे की तरह बाँग देना चाहता हूँ जिससे यदि सम्भव हो सके तो अपने पड़ोसियों को जगा सकूँ।

जिस दिन से मैंने जंगल में पूरी तरह रहना अर्थात अपने दिन और रात को जंगल में ही बिताना आरम्भ किया वह दिन संयोगवश स्वतन्त्रता दिवस अर्थात चौथी जुलाई १८४५ का दिन था। उस समय तक मेरा घर जाड़ों के मतलब का नहीं बन सका था। वर्षा के लिए भी वह आड़ मात्र ही था। न पलस्तर हुआ था न चिमनी थी। दीवारें ऋतुओं के प्रभाव से जर्जर तख्तों से बना था और खुला था। उसमें चौड़ी दरारें पड़ी थीं जिससे रात के समय ठण्डक हो जाती थी। सीधी खड़ी कटी हुई, सफेद थूनियाँ, अभी-अभी रंग किया हुआ दरवाज़ा और खिड़कियाँ इन सबसे विशेष कर प्रभात के समय जब लकड़ियाँ ओस से तर होती थीं घर का रूप बड़ा ही निखरा हुआ और हवादार मालूम पड़ता था। मैं सोचता था कि दोपहर तक कुछ मीठा गोंद उनमें से रिसने लगता है। यह घर मेरी कल्पना में तो दिन भर ही अपनी उषाकालीन आभा को बनाए रखता था और मुझे पर्वत पर बने उस घर की याद दिला देता था जहाँ एक वर्ष पूर्व मैं गया था। यह बिना पलस्तर किया हुआ हवादार एक छोटा-सा घर था और इस योग्य था कि कोई देवता अपनी यात्रा के बीच इसमें ठहरे और उसकी देवी के लम्बे वस्त्र वहाँ लहराएँ। मेरे घर के ऊपर से जो हवाएँ गुज़रती थीं वे वैसी ही थीं जो पहाड़ों की चोटियों पर चला करती हैं। जिनमें पार्थिव संगीत के कुछ टूटे फूटे सुर अथवा उस संगीत का मात्र दिव्य अंश घुला रहता है। प्रातः समीर निरन्तर चलती रहती है, सृष्टि का काव्य अविच्छिन्न गाया जाता रहता है पर बहुत ही कम लोग उसे सुन पाते हैं। ओलिम्पस[1] तो कहीं धरती से ऊपर ही तो है।

इससे पहले जिस घर को मैं अपना कह सकता था वह नाव के अतिरिक्त एक तम्बू-मात्र था। गर्मियों में भ्रमण के लिए निकलने पर मैं अक्सर उसका उपयोग करता था। वह तम्बू मेरी कोठरी में अब भी लिपटा हुआ पड़ा है। लेकिन नाव इस हाथ से उस हाथ में जाकर समय की लहरों पर बह गई है। इस अधिक ठोस आश्रय को प्राप्त करके संसार में वहाँ टिककर रहने की दिशा में मैंने कदम बढ़ाया था। यह घर रूपी आवरण जो इतना हल्का था मेरे चारों ओर एक प्रकार के मणिभी

[1] ग्रीक देवताओं की इन्द्रपुरी जो ओलिम्पस नामक पर्वत पर कही जाती है।

दर्पण के समान था और अपने निर्मलता पर इसकी प्रतिक्रिया छोड़ता था। यह बहुत कुछ एक रेखाचित्र की तरह मनोरम था। हवा खाने के लिए मुझे बाहर जाने की जरूरत नहीं थी, क्योंकि अन्दर के वातावरण में ताजगी की दृष्टि से कोई भी कमी नहीं आई थी। धुंआधार वर्षा के अवसरों पर भी मैं उसमें द्वार के अन्दर इतना नहीं जितना कि द्वार के पीछे रहता था। हरिवंश[1] में लिखा है "चिड़ियों के बिना घर बसा ही है जैसे कि बिना मसाले का माँस"। मेरा घर ऐसा नहीं था। मैंने अकस्मात ही स्वयं को पक्षियों का पड़ोसी पाया और वह भी किसी एक को पिंजड़े में बन्द करके नहीं, बल्कि अपने को उनके पास में पिंजड़े में बन्द करके। मैं सिर्फ उन्हीं चिड़ियों के निकटतर नहीं था जो उद्यानों और बगीचों में साधारणतया मिलती हैं पर वनों की उन जंगली पर लुभावने गायिकाओं के भी बहुत पास था जो या तो ग्रामों में आती ही नहीं या कभी-कभी ही आती हैं। उदाहरणार्थ जंगली मैना, पीली मैना, सिन्दूरी गौरय्या, अबाबील आदि।

मेरा यह घर एक छोटे-से सरोवर के तट पर था। यह जगह कानकार्ड गांव से डेढ़ मील दक्षिण में उससे कुछ ऊंची भूमि पर इस नगर के और लिंकन के मध्य एक विस्तृत वन के बीच स्थित है। इससे दो मील दक्षिण में हमारा एकमात्र प्रसिद्ध युद्धस्थल कानकार्ड है। लेकिन मैं वनों के बीच इतना नीचे के तल पर रहता था कि आधे मील पर सामने भूभाग की ही तरह जंगल से ढंका सामने का सरोवर-तट ही मेरा सुदूरस्थ क्षितिज था। पहले सप्ताह में तो जब कभी भी मैं सरोवर पर दृष्टिपात करता था वह मुझे बहुत ऊंचे किसी पहाड़ी स्थान पर स्थित एक झील जैसा दीख पड़ता था। इसकी तली भी दूसरी झीलों की सतह से बहुत ऊंची थी। जैसे ही सूर्योदय होता था मुझे लगता था कि यह सरोवर कुहरे के अपने रात्रि-परिधान को यहां-वहां से क्रम-क्रम से धीमे-धीमे उतारकर फेंक रहा है। रात्रि में जुड़ी किसी गुप्त सभा के विसर्जन के समान जब कुहरा भूतों की तरह चोरी-चोरी हर दिशा से वन की ओर पीछे हटने लगता था तब सरोवर की नन्हीं वामन लहरें और उसके चमकदार सतह उसी क्रम से प्रकट होती जाती थीं। दिन में साधारण समय से बहुत बाद तक ओस की बूंदें पड़ी पर वह ही लटकी प्रतीत होती थीं जैसे कि वे पर्वतों के पार्श्वों पर लटकी रहती हैं।

अगस्त मास की अखंड-वर्षाओं के बीच-बीच जब पवन और जल एकदम

1 हरिवंश पुराण जिसका फ्रांसीसी अनुवाद लंगलों ने प्रस्तुत किया था।

स्तब्ध मिलते थे आकाश मेघाच्छन्न रहता था, तीसरा पहर भी सन्ध्या जितना भारी भारी लगता था और जगली मना का सगीत एक तट से दूसरे तट तक सुना जा सकता था उस समय उन मन्यावधियो म यह छोटी-सी झील एक मूल्यवान पडोसी का काम देती थी। इसी झील वष के इस समय जितनी शान्त मिलती उतनी किसी भी अन्य समय नही। उसके ऊपर के वायुमण्डल म स्वच्छ वायु की पट्टी बहुत सकीण होती है और वह जम बादलो के कारण धुधला दीख पडता है। और सबसे विशेष बात यह कि प्रकाश और छायाओ से सकुल जल धरती के स्वग जसा प्रतीत होता है। पास की ही एक पहाडी की चोटी पर का जगल अभी ही साफ किया गया है। यहा से तट की पहाडियो के बीच पडे एक कटाव म दक्षिण की ओर तालाब के पार तक का भाग साफ दीख पडता है। वहा जब पहाडिया एक-दूसरे की ओर नीचे की तरफ ढलती हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि वनाच्छादित घाटी के बीच कोई सोता बह रहा है। पर सोता वहा कोई नही है। उसी दिशा म पास की हरी पहाडियो के बीच और उनके ऊपर से मैं क्षितिज से सटी दूर की अधिक ऊची पहाडियो को देखता तो व मुझे नीली आभा से युक्त नजर पडती। उत्तर-पश्चिम दिशा म और दूर की पवतश्रेणियो की अधिक नीली चोटियो को स्वग की अपनी टकसाल म ढले इन सच्चे नीले सिक्कों की और गाव के थोडे-से हिस्से की विचित्र झाकी मैं उचककर अगूठा पर खडा होकर ही देख पाता था। लेकिन दूसरी दिशाओ म इस स्थल तक से इतना उचककर भी मैं अपने चारो ओर घिरे वनो के पार कुछ भी देख न पाता। यदि पास पडोस म जल हो जिसके कारण धरती तरल-सी और तरती-सी दीख सके तो अच्छा ही लगता है। छोटे से छोटे कुए का भी इतना लाभ तो अवश्य है ही कि जब आप इसमे झाकते हैं तो दीख पडता है कि धरती एक अविच्छिन्न महाद्वीप नही है जलावेष्टित द्वीप भर है। यह बात उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी यह कि कुए म मक्खन ठडा रहता है। उपर्युक्त चोटी पर से सरोवर के उस पार सडबरी के चरागाहो को मैं देखता था। जब बाढ आती तो शायद भ्रमवश ही मे चरागाह खौलती हुई घाटी म कटोरे म पड सिक्के की तरह जलम ऊपर उठ हुए से मुझे दीख पडते थे। उस घाटी म सरोवर के पार की सारी भूमि बीच के इस छोटे-से जल विस्तार के ही कारण मुझे द्वीप जसा और तरती-सा मालूम पडती थी और मुझे लगता था कि जहा मैं रह रहा हू वह सूखी जमीन बस वही है।

यद्यपि मेरे गृह-द्वार से दृश्य और भी सकुचित दीख पडता था फिर भी मुझे

घुटा-सा और कटा-सा मैं बिलकुल अनुभव नहीं करता था। मेरी कल्पना के लिए वहाँ काफी बड़ा चरागाह था। सामने का तट बलूत के नन्हे तरु-गुल्मों से ढके जिस पठार के आकार में उभरता था, वह पश्चिम के प्रेरी मैदानों और टारटरी के चरागाहों की ओर ढल जाता था, और वहाँ मानव-जाति के समस्त खानाबदोश परिवारों के लिए पर्याप्त जगह थी। जब दामोदर[1] को अपने पशुओं के लिए नये-नये विशालतर चरागाहों की जरूरत पड़ी, तब उसने कहा था, 'जो विस्तृत सीमाओं की स्वच्छन्दता का उपभोग करते हैं, उनके अतिरिक्त और कोई भी इस संसार में प्रसन्न नहीं है।'

स्थान और काल दोनों बदल गए थे और सृष्टि के उन हिस्सों और इतिहास के उन युगों के निकटतम मैं रह रहा था, जिन्होंने मुझे सबसे अधिक आकर्षित किया था। खगोलशास्त्री रात के समय जिन सुदूरवर्ती ग्रहों को देखा करते हैं, मेरे रहने की जगह उन जितनी ही दूर थी। कोलाहल और उपद्रवों से परे कैसियोपिया चेयर[2] नामक उत्तरी नक्षत्र-मंडल के पीछे खगोल-चक्र के एक सुदूर और अधिक दिव्य कोने में दुर्लभ और रमणीक स्थानों की कल्पनाएँ हम किया करते हैं। मैंने पाया कि मेरा घर दरअसल सृष्टि के एक ऐसे ही एकान्त पर चिरनवीन और अकलुष भाग में स्थित था। प्लाइएडीज[3] या हाएडीज[4] या आल्डेबरान[5] या आल्टेयर[6] के निकट के स्थानों में बसना यदि तनिक भी उचित है तो सचमुच मैं वैसी ही जगह रह रहा था। कम से कम जिस जिन्दगी को मैं पीछे छोड़ आया था, उससे तो मैं इन नक्षत्रों जितना ही दूर था। मैं इन ग्रहों जितना ही छोटा बन गया था, वैसी ही सूक्ष्म किरणें मेरे अन्दर से फूटती थीं और मेरा निकटतम पड़ोसी मुझे चन्द्रमा रहित रातों में ही देख पाता था। ऐसा था सृष्टि का वह भाग जहाँ मैं रह रहा था।

एक कविता का अंश है एक चरवाहा था, जो अपने विचारों को उतना ही ऊँचा रखता था जितने कि वे पहाड़ थे जिनपर चरकर उसके पशु हर घड़ी उसका पोषण करते थे।

---

१ सम्भवतः यहाँ कृष्ण से ही लेखक का तात्पर्य है।

२ कैसियोपिया सेफियस की बेटी और ... की पत्नी थी। उत्तरी गोलार्ध में स्थित नक्षत्र मण्डल का नाम इसीके नाम पर रखा गया।

३, ४ ग्रीक पुराणों में एटलस की बेटियाँ जिन्हें ज्यूस (Zeus) ने नक्षत्र बना दिया, नक्षत्रों के नाम।

५ रोहिणी नक्षत्र ६ एक नक्षत्र

यदि चरवाहे व पशु उनके विचारों में भी अधिक ऊँचे चरागाहों पर ही निरन्तर चरा करें, तब उनके जीवन के बारे में क्या कहा जाए ?

हर सुबह मेरे लिए एक आह्लादकर निमन्त्रण लाती थी कि मैं अपने जीवन को स्वयं प्रकृति जितना ही सरल, सादा, अकृत्रिम बनाऊँ। मैं अरोरा[1] देवी का ग्रीस वासियों जितना ही सच्चा भक्त रहा हूँ। मैं सुबह ही जल्दी उठता और सरोवर में स्नान करता। मेरे लिए यह एक धार्मिक कृत्य बन गया था। जितने सर्वोत्तम काम मैं करता था, यह उनमें से एक था। प्रसिद्ध है कि चीनी सम्राट चिंग थांग के स्नान के टब पर कुछ इस आशय के अक्षर खुदे हुए थे, "प्रतिदिन पूरी तरह अपना कायाकल्प करो, फिर करो, फिर करो, और सदा करते जाओ।" मैं उसका भाव समझ सकता हूँ। प्रभात व्यतीत वीर युगों को वापस लाता है। ब्राह्ममुहूर्त में जब मैं द्वार और खिड़कियाँ खोले बैठा था, तब एक अदृश्य और अकल्पनीय भ्रमण पर निकला एक मच्छर मेरे कमरे में से गुज़रा। उसकी मीठी भनभनाहट ने मुझे उतना ही प्रभावित किया जितना कि वीरों की कीर्ति में बजती हुई कोई तुरही मुझे कर सकती थी। मच्छर का गीत शायद मृतात्माओं की शान्ति के लिए गाया गया होमर[2] का कोई गान था। वह शायद स्वयं हवा में उड़ता हुआ कोई इलियड या ओडिसी था जो अपने ही युद्धों और यात्राओं के गीत गा रहा था। उसमें कुछ ब्रह्माण्डीय था। विश्व की अक्षय ओजपूर्णता और उर्वरता का, जब तक रोका न जाए, वह स्थायी विज्ञापन कर रहा था। प्रभात दिन का सर्वाधिक स्मरणीय समय है, वह जागृति की घड़ी है। उस समय हममें न्यूनतम तन्द्रा होती है और कम से कम एक घंटे तक हमारे अन्तरंग का वह अंश जागता है जो शेष दिन और रात के समय नींद में डूबा रहता है। उस दिन से कोई आशा नहीं की जा सकती—उसे दिन कहा जाए यही संशयास्पद है—जिस दिन कि हम अपनी प्रज्ञा के संकेत पर नहीं, किसी नौकर के द्वारा झकझोड़े जाने पर जागते हैं; जिस दिन अन्तरंग की नवोपलब्ध शक्ति और आकांक्षाएँ नहीं, दिव्य संगीत की लहरें नहीं, बल्कि किसी कारखाने का घंटा हमें उठाता है। प्रभात के पवन में एक सुगन्ध भरी होती है। जिस जीवन में हम सोए थे, उससे उच्चतर जीवन में हम जागते हैं, और इस प्रकार अंधकार एक फल देता है और सिद्ध करता है कि वह

१ ग्रीक पुराणों की उषा
२ ग्रीक पुराणों का एक महाकवि था होमर। इलियड एवं ओडिसी उसके द्वारा लिखित वीर काव्य हैं।

नतारा म वम गुम नही ह । जा व्यक्ति नही मानना कि न्नि के जिन पहरा का वह दूपित कर चुका ह, उनम पहन भा एक पहर हाना है जा अधिक पवित्र और प्रत्यूपोय हाता है, समझिए कि वह व्यक्ति अपने जीवन स निराश ह और पतना मुख अधकार पथ पर चल रहा है। हर न्नि ऐन्द्रिय जीवन आशिक रूप स रखता है और मनुष्य की आत्मा अथवा उसके अग नये प्राण प्राप्त करने हैं और प्रना जीवन का यथासम्भव श्रेष्ठ बनाने का फिर से प्रयास करती है। मैं कहूगा सभी स्मरणीय घटनाए प्रभात के समय अथवा प्रभात के वातावरण म ही अकुरित होती है। वेदा म लिखा है 'सब प्रनाए प्रभात के साथ-साथ जाग उठती ह । कविता और कना तथा मानवा क सुन्दरतम और सर्वाधिक स्मरणीय कृत्या का मूल प्रभात म हा निहित है। सभी कवि और महान व्यक्तित्व समनन[1] का तरह अरारा की ही सन्ततिया हैं और उनका सगीत उनम स सूर्योदय क समय ही फूटता है। जिसक नचील ओजस्वी विचार सूय के साथ-साथ सहगमन करत हैं उसक लिए पूरा दिन ही प्रभात है। घडिया क्या कहती हैं, नागा क रुख और प्रयास क्या घापित करते ह यह एक तुच्छ बात है। जब मैं जागता हू तभी सुबह हाती है और प्रभात ता मरे अन्तस्तल म निहित है। निद्रा का भगा दन क प्रयास का ही तो नैतिक सस्कार कहते हैं। लोग जिस दिन सो नही पात उस दिन का बडा ही उत्साहशून्य विवरण क्यो दिया करते है? इतन कच्चे हिसाबी वे हात ता नही। यदि व तद्रा म पड न रहत ता शायद कुछ कर पाते। शारीरिक श्रम क लिए तो नाखा ही सचेत रहते हैं पर दस लाखा म कोई एक हा व्यक्ति प्रभावशाली बौद्धिक श्रम के लिए पर्याप्त सजग मिलता है और सौ नाखा म जाकर कोई एक मिलता है जो कवि का अथवा दिव्य पुरुष का जीवन बिताता है। जाग्रत रहना ही जीवित रहना है। मुझे अभी तक एक भी व्यक्ति ऐसा नही मिल सका जो पूर्ण सजग हो। भला ऐसे व्यक्ति की आखा म मैं कस झाक सकता?

हम यान्त्रिक साधना स नहा गहरी स गहरी नीद म भी हमारा साथ न छाडन वाल प्रभात की अनन्त आकाक्षा स प्रेरित होकर ही फिर स जाग उठना और जाग्रत रहना सीखना चाहिए। सचेत प्रयत्न द्वारा अपन जीवन का ऊचा उठान की

---

1 ग्रीक पुराणो का एक अरारा का पुत्र या समनान। नल नदी पर उसका मूर्तिया था। जैसे हा सूय का प्रथम किरणें उन्हें छूती थी, उनमें स एक सगीत फूटता था, जिसे मेमनन का सगीत कहत थ।

मानव की असन्दिग्ध क्षमता से अधिक उत्साहवर्द्धक किसी दूसरे तथ्य की जानकारी मुझे तो नहीं है। एक विशेष चित्र चित्रित करना अथवा एक मूर्ति गढ़ना और इस प्रकार कुछ चीजों को सुन्दर बना देना कुछ है लेकिन दृष्टि के माध्यम को और स्वयं वातावरण को ही चित्रित करना या गढ़ डालना एक बहुत ही उत्कृष्ट कार्य है और ऐसा नैतिक साधना से ही किया जा सकता है। दिन के गुण धर्म को प्रभावित करना कलाओं में सर्वोच्च कला है। प्रत्येक मानव पर अपने जीवन की तफसील तक को भी इस योग्य बना देने का भार है कि चरम उत्कर्ष और संकट की घड़ियों में वह उनका चिन्तन कर सके। जो नगण्य-से साधन हमारे पास हैं यदि हम उन्हें न आजमाएं अथवा उन्हें चुका डालें तब तो भविष्यवक्ता ही साफ-साफ बता सकेंगे कि वैसा फिर किस साधन से किया जाए।

मैं वन में गया था क्योंकि मैं शान्तिपूर्वक रहना चाहता था। मैं चाहता था कि जीवन की मात्र अनिवार्य समस्याओं का सामना ही मुझे करना पड़े, और मैं देखना चाहता था कि जीवन के पास सिखाने को जो कुछ है उससे मैं सीखता हूँ या नहीं। कहीं ऐसा न हो कि जब मैं मरने लगूं तो महसूस करूं कि मैं तो जिया ही नहीं। जो जीवन नहीं है उसे जीना मैं नहीं चाहता था क्योंकि जीना एक महंगी चीज है। जब तक अनिवार्य न हो जाए मैं वैराग्य धारण करने को भी उन्मुख नहीं था। मैं गहराई से जीना और जीवन-तत्त्व को पूरी तरह चूस लेना चाहता था। मैं चाहता था जीवन को स्पार्टनों[१] की तरह कठोर श्रमपूर्वक जिऊं जिससे जो जीवन नहीं है उसे उखाड़कर फेंक सकूं। घास के लिए चौड़ा खण्ड चुनूं और दबाकर छीलूं। जीवन को एक कोने में घेर लूं और उसको मांग को न्यून से न्यूनतर पर ले आऊं। यदि जीवन क्षुद्र सिद्ध हो तो इस समग्र वास्तविक क्षुद्रता को ग्रहण हो क्यों किया जाए और संसार के सामने उसे प्रकाशित हो क्यों किया जाए? और यदि जीवन उदात्त है तो अनुभव से उसे जाना जाए और अपनी अगली यात्रा में उसका सच्चा विवरण देने के योग्य बना जाए। मुझे लगता है अधिकतर लोग इस विषय पर कि जीवन शैतान का है या भगवान का एक आश्चर्यजनक दुविधा में पड़े रहते हैं और जल्दबाजी में यह निर्णय कर लेते हैं कि मानव का प्रधान ऐहिक लक्ष्य यह होना चाहिए कि भगवान की प्रशंसा की जाए और सदा सुख लूटा जाए।

---

१ प्राचीन ग्रीस के लकोनिया राज्य की राजधानी के निवासी। ये लोग सरल, परिश्रमी और युद्धप्रेमी थे।

यद्यपि एक पौराणिक आख्यायिका के अनुसार बहुत काल पूर्व ही मानव-रूप हम पा चुके थे, पर आज भी हम चींटियों की तरह क्षुद्रता का जीवन ही बिताते हैं। बौनों की तरह हम सारसों से युद्ध करते हैं, गलती पर गलती करते और पैबन्द पर पैबन्द लगाते हैं और हमारे सर्वोत्तम गुणों का परिणाम एक अनावश्यक और परिहार्य दैन्य ही होता है। हमारा जीवन निरर्थक तफसीलों में नष्ट हो जाता है। एक सच्चे ईमानदार आदमी को अपने हाथों की दस उँगलियों और विशेष मामलों में पैरों की दस और जोड़ लीजिए—बस, इससे अधिक हिसाब किताब की जरूरत कठिनाई से ही पड़नी चाहिए। शेष सब उस कूड़े पर फेंक देना चाहिए। सादगी, सादगी, सादगी! मैं कहता हूँ, आपके मामले दो या तीन तक सीमित हों, सौ या हजार तक न पहुँचें। दस लाख तक गिनने के बदले आधी दर्जन तक गिनो और अँगूठे के नाखून पर अपना हिसाब करने योग्य बनो। सभ्य जीवन के इस अशान्त समुद्र में ऐसे बादल, तूफान और बालुकाचूड़ हैं और एक हजार एक ऐसी समस्याएँ हैं कि यदि व्यक्ति लड़खड़ाकर डूबना, तली में बैठना और अपना जरा-सी भी हानि करना नहीं चाहता, तो उसे ठोस गणना के आधार पर ही चलना पड़ेगा। जो इसमें सफल हो जाए वह निश्चय ही बड़ा भारी हिसाबी होना चाहिए। जीवन को सरल बनाओ, सरल बनाओ! दिन में तीन बार भोजन करने के बदले जरूरत हो तो एक ही बार खाओ। थाली में सौ तरकारियों के बदले पाँच ही रखो और दूसरी चीजों को भी अनुपात से घटा लो। हमारा जीवन जर्मन राज्य-संघ के समान है, जिसमें छोटी-छोटी रियासतें सम्मिलित हैं, जिनकी सीमाएँ निरन्तर घटती-बढ़ती रहती हैं, इतना कि एक जर्मन भी यह नहीं बता सकता कि उस क्षण राज्य विशेष की सही सीमा क्या है। अपने सभी तथाकथित उन आन्तरिक सुधारों के बावजूद, जो वास्तव में निहायत सतही और अनावश्यक होते हैं, राष्ट्र स्वयं अपने में एक भारी भरकम विशालकाय संगठन बन गया है। साज-सामान से ठसाठस भरा हुआ, अपने ही फन्दों में फँसा हुआ, हिसाब-किताब की कमी और एक श्रेष्ठ उद्देश्य के अभाव के कारण विनाश के और अंधाधुंध खर्चों के द्वारा आज यह राष्ट्र भी उतना ही बर्बाद है जितने कि ये लाखों घर हैं। इसका भी और इन सबका भी एक ही इलाज है, और वह है कड़ी तथा अर्थ-व्यवस्था, स्पार्टावालों से भी अधिक सादा और कठोर जीवन और उद्देश्य की उन्नतता। राष्ट्र बहुत तेजी से भागता है। लोग स्वयं पता कर सकें या नहीं, इसे निस्सन्देह अनिवार्य मानते हैं कि राष्ट्र वाणिज्य करे, बर्फ का निर्यात करे, तार-

बातचीत करे और तीस मील प्रतिघण्टा की चाल से सवारी करे। लेकिन हम मानवों की तरह ह या लगन की तरह इस विषय पर व एकदम स्पष्ट भन है। यदि हम जीवन रूपी बनन मे टाके लगाने और उस सुधारने म ही लगे रह और स्लीपर न जमाए उनपर रेल की पटरिया न बिछाए और इस काम म अपने दिन रात एक न कर द तो भला रेल पथो का निर्माण कौन करेगा ? और यदि रेल पथ न बन सके तो हम समय के भीतर स्वर्ग तक कैसे पहुच सकेंगे ? लेकिन यदि हम घर पर ही टिके और अपने अपने धन्धो म व्यस्त रह तो भला रेल पर चढ़ने कौन जाएगा ? हम रेल पर नही चढ़ते रेलें हमपर चढ़ती हैं। क्या कभी आपने सोचा है कि रेल की पटरियो के नीचे पडे स्लीपर क्या हैं ? उनम से प्रत्येक एक मानव है आयरिश या अमरीकन कोई भी उनके ऊपर पटरिया बिछा दी जाती है। रेत से उन्हे ढक दिया जाता है और सब डिब्बे उनके ऊपर से सहज रूप म दौड़ने लगते हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता ह कि व बडी गहरी नीद सोनेवाले स्लीपर (सोने वाले) ह। हर कुछ वर्षों के बाद नये स्लीपर डाले जाते है और उनपर रेलें चलाई जाती ह। यदि कुछ लोग रेल की सवारी का आनन्द उठाते है तो अन्य उनका बोझ ढोने के दुर्भाग्य से नीचे पिसते है। और जब कभी नींद म चलने की बीमारीवाला कोई आदमी एक फालतू स्लीपर की तरह जाकर पटरी पर लेट जाता है और रेल के नीचे कुचला जाता ह तो रेल रोक दी जाती है और लोग इस घटना को लेकर ऐसा शोर मचाते हैं जैसे यह अनहोनी हो। यह जानकर मुझे खुशी होती है कि हर पाच मील के ऊपर कामगरो का एक गिरोह नियुक्त रहता ह, जो इस बात की देखभाल करता है कि स्लीपर यथास्थान अपने बिस्तरो म लेटे है या नही। यह इस बात का प्रमाण है कि वे अवसर पाकर उठ खडे हो सकते ह।

हम क्या जीवन को इतनी जल्दबाजी म जीते और उसे बरबाद करते हैं ? हम क्या भूखे होने से पहले ही भूख म मर जाने का दृढ़-सकल्प है ? लोग कहा करते हैं, वक्त का एक टाका बाद के दस से उत्तम है। तथा स्तीविग क एक हजार टाके आज लगाते हैं कि कल नौ न लगाने पड ? जहा तक काम का सम्बन्ध है, कोई महत्त्व का काम हमारे पास नहा है। हम सन्त वाइटस[1] क नृत्य म भाग लेते हैं और अपने सिरो को जरा भी स्थिर नहा रख पाते। यदि मैं गिरजाघर के घण्टे की रस्सी को ला जार बार लगातार इस खीच दू जैसे कि आग लग जाने पर उस खीचा

[1] एक ईसा सन्त जिनकी स्मृति में १५ जून के दिन उत्सव, नृत्य आदि किया जाता है।

जाता है, तो वानकाड के सीमावर्ती ग्रामो का कोई पुरुष या स्त्री या बालक घर म कठिनाई स ही रुक पाएगा। लोग सुबह जिन कामो म व्यस्त होने का बहाना बना रहे थ, उन कामो को छोडकर वे आवाज की तरफ भागेंगे और उनका उद्देश्य सम्पत्ति को लपटो स बचाना नही, बल्कि सच कह तो उसे जलते हुए देखना होगा क्योंकि उसे जल तो जाना ही है। सबको मालूम हो कि आग हमने नहीं लगाई थी, हमने तो उसे बुझते हुए देखा है और यदि वह खूबसूरती स बुझ जाए तो हम कहेंगे कि हमने उसके बुझाने म हाथ बटाया है। यदि आग स्वय गिरजाघर म भी लग जाए तब भी हमारी प्रवृत्ति यही होगी। व्यक्ति भोजन के बाद कठिनाई स आध घण्टे की नींद लगा और जागकर सिर ऊपर उठाएगा और पूछेगा 'क्या खबर है?' जैसे शेष मानव-जाति उसकी चौकीदारी कर रही हो। कुछ लोगो का आदेश रहता है कि हर आध घण्टे के बाद उन्हें जगा दिया जाए। पर किसलिए? निस्सन्देह, किसी अन्य उद्देश्य के लिए नहीं। और तब मानो उठाए जाने के पारि श्रमिक के रूप म वे सुनाएगे कि क्या सपना उन्होंने देखा है। रात भर सोने के बाद तो समाचार नाश्ते जितने ही अनिवार्य हो जाते है। 'कोई नई खबर बताइए न, कोई घटना जो इस भू-गोलक पर कहीं भी किसी भी आदमी के साथ घटी हो।' काफी पीते हुए और बिस्कुट खाते हुए व्यक्ति पढ़ता है कि फला सुबह वाचितो नदी पर एक आदमी ने अपनी आखें निकलवा दीं। और इस बात की वह कल्पना भी नहीं करेगा कि वह स्वय दुनिया की इस विशाल अथाह गुफा म रह रहा है और स्वय उसके पास आखो के प्राथमिक चिह्नो के सिवाय और कुछ नहीं है।

जहा तक मेरा सम्बन्ध है मैं डाकखाने के बिना काम चला सकता हू। मेरे विचार म उनके माध्यम स बहुत ही कम महत्त्वपूर्ण पत्र भेजे जाते है। एक सख्त बात कहू तो पूरे जीवन म एक या दो पत्रो से अधिक ऐसे पत्र मुझे नहीं मिले है जिन पर टिकट का पैसा उचित ही खर्चा गया था। कुछ वर्ष पहले भी मैंने यही बात लिखी थी। पैसा-पोस्ट (एक पैसा की सीमा का समाचारपत्र) वह सस्था है जिसके माध्यम से आप अपना एक पैसा गम्भीरतापूर्वक एक व्यक्ति तक उसके विचारो या भावो के रूप म पहुचाते है। यही पैसा जब मजाक म हम किसीको भेंट कर देते हैं तब शायद वह अधिक सुरक्षित रहता है। म निश्चय के साथ कहता हू कि किसी भी समाचारपत्र म कोई भी स्मरणीय समाचार मैंने कभी नहीं पढ़ा। यदि हम एक बार पढ़ लेते हैं—एक आदमी लूट लिया गया या कत्ल कर दिया गया, या

दुर्घटना में मारा गया अथवा एक घर जल गया, एक जहाज़ टूट गया, एक स्टीम बोट फट गया, पश्चिमी रेल-मार्ग पर एक गाय कुचली गई, एक पागल कुत्ता मार डाला गया, या जाड़ों में टिड्डीदल चढ़ आया—तो इसे दूसरी बार पढ़ने की जरूरत हमें नहीं होनी चाहिए। यह सब एक बार ही काफी है। यदि आप एक सिद्धान्त से परिचित हैं तो उसके लाखों दृष्टान्तों और प्रयोगों को जानना बेकार है। एक दार्शनिक के लिए तथाकथित सब समाचार गप्पें हैं। चाय पर जमा हुई वृद्धा स्त्रियाँ ही उनका सम्पादन करतीं और उन्हें पढ़ती हैं। फिर भी इन गप्पों के पीछे ललकनेवाले लोग थोड़े नहीं हैं। जैसा मैंने सुना है, अभी उस दिन विदेशों से आई ताज़ी खबरों को जानने के लिए एक समाचारपत्र के दफ्तर पर इतनी भीड़ जमा हुई कि धक्कमधक्के में दफ्तर के कितने ही बड़े-बड़े शीशे टूट गए। मैं समझता हूँ, एक चपल बुद्धिवाला व्यक्ति बारह महीने क्या, बारह वर्ष पहले भी इन समाचारों को पर्याप्त यथार्थतापूर्वक गढ़ सकता। जहाँ तक स्पेन से सम्बन्ध है, यदि आप जानते हैं कि डान कार्लो[1] और इन्फैन्टा[2] और डान पेड्रो[3] और सेविल[4] और ग्रेनेडा[5] का ज़िक्र समय-समय पर उचित मात्रा में कैसे कर दिया जाए—अखबार पढ़े मुझे बहुत दिन हो गए हैं, हो सकता है इस बीच नाम कुछ बदल गए हों—और यदि आप अन्य आकर्षणों के विफल होने पर साँडों की लड़ाई का वर्णन कर सकते हैं तो समझ लीजिए कि स्पेन की यथार्थ दशा अथवा दुर्दशा का उतना ही शब्दशः सही चित्र आपने खींच दिया है जितना कि अखबारों के तत्सम्बन्धी कालमों की संक्षिप्त और स्पष्ट सूचनाओं में प्राप्त किया जा सकता है। और जहाँ तक इंग्लैंड का सम्बन्ध है, वहाँ का पिछला महत्त्वपूर्ण समाचार १६४९ की क्रान्ति[6] था। फसलों की एक औसत साल की प्रगति का अध्ययन करने के बाद इस विषय में कुछ और ज्ञातव्य नहीं रहता। हाँ, यदि आपका उद्देश्य मात्र आर्थिक

---

१ १५४५ से १५६८ तक जीवित स्पेन का एक राजकुमार जो आधा पागल था।
२ स्पेन के राजकुमारों का सामान्य नाम
३ [illegible] तक पुर्तगाल का राजा तथा ब्राज़ील का प्रथम स्वतन्त्र सम्राट
४ स्पेन का एक प्रान्त
५ निकारागुआ का एक प्रमुख नगर
६ इंग्लैंड की संसद द्वारा राजा चार्ल्स के विरुद्ध की गई क्रान्ति जिसके फलस्वरूप राजा को मृत्युदण्ड देकर कामनवेल्थ की स्थापना की गई थी।

है तो बात अलग है। जो कभी-कभी ही अखबार पढ़ता है यदि वह निर्णय दे तो यही देगा कि विदेश में कोई नई घटना कभी नहीं घटती। फ्रान्सीसी क्रान्ति जैसी घटनाएं भी इसका अपवाद नहीं हैं।

क्या खबर है! कितना महत्त्वपूर्ण है उसे जानना जो कभी पुराना नहीं पड़ता! क्यू-हे-यू[1] (वाई राज्य का एक बड़ा पदाधिकारी) ने एक आदमी को खग-त्से[2] के पास उसके समाचार जानने को भेजा। खग-त्से ने इस दूत को अपने पास बिठाया और उससे इस प्रकार पूछा, 'तुम्हारा स्वामी क्या कर रहा है?' दूत ने ससम्मान उत्तर दिया मेरा स्वामी अपने दोषों की संख्या कम करना चाहता है पर उन्हें उनके अन्त तक पहुंचा ही नहीं पाता। दूत के चले जाने पर दार्शनिक कह उठा "दूत कितना योग्य था! दूत कितना चतुर था! सप्ताह के अन्त में आरम्भ के दिन, क्योंकि इतवार कठोर श्रम में बीते सप्ताह का उचित अन्त है एक नये सप्ताह का ताज़ा और साहसपूर्ण आरम्भ नहीं—निंदियाए किसानों के कानों में एक और बहुत उपदेश उड़ेलने के बदले एक धर्मोपदेशक को तो चिल्ला चिल्लाकर यह कहना चाहिए 'ठहरो, ठहरो! इतने तेज़ क्यों भागे जाते हो? बहुत धीमे चलो।

प्रवंचनाओं और भ्रान्तियों को पुष्टतम सत्यों का गौरव दिया जाता है, जबकि यथार्थ को कपोलकल्पित माना जाता है। यदि लोग दृढतापूर्वक केवल वास्तविकताओं को परखें और भ्रान्तियों में न ठगे जाएं और जीवन की सुपरिचित उपमानों से तुलना करें तो वह सकते हैं कि वह परियों की कहानी और अरब की हजार रातों की कथाओं जैसा बन जाएगा। यदि हम अपरिहार्य को और जिसे होने का हक है उसीका ग्रहण करते हैं, तो संगीत और कविता गलियों में गूंजती घूमेगी। जब हम अधीर नहीं होते और समझदारी से काम लेते हैं, तब हम समझ लेते हैं कि केवल उदात्त और श्रेष्ठ चीज़ों का ही स्थायी और चरम अस्तित्व होता है। तुच्छ भय और तुच्छ मनोरंजन तो बस सत्य की छाया-मात्र हैं ऐसा समझ लेना सदा ही आह्लादक और महान होता है। हम वही लोग आंखें बन्द करके ऊंघते हैं और स्वयं को सपनों से छले जाने देते हैं। यह उस दैनिक जीवन क्रम और स्वभाव को स्थापित और सिद्ध ही करता है जो विशुद्ध भ्रमों की नींव पर ही अभी तक भी निर्मित किया जाता है। बच्चे ज़िन्दगी के खेल खेलते हैं। वे जीवन के सच्चे नियमों

[1] १०वीं शती ईसापूर्व का एक चीनी राजनीतिज्ञ

[2] एक चीनी दार्शनिक

दुर्घटना में मारा गया अथवा एक घर जल गया, एक जहाज टूट गया, एक स्टीम बोट फट गया, पश्चिमी रेल-मार्ग पर एक गाय कुचली गई, एक पागल कुत्ता मार डाला गया या जाड़ों में टिड्डीदल चढ़ आया—तो इसे दूसरी बार पढ़ने की जरूरत हमें नहीं होनी चाहिए। यह सब एक बार ही काफी है। यदि आप एक सिद्धांत से परिचित हैं तो उसके लाखों दृष्टान्तों और प्रयोगों को जानना बेकार है। एक दार्शनिक के लिए तथाकथित सब समाचार गप्पें हैं। चाय पर जमा हुई बूढ़ी स्त्रियां ही उनका सम्पादन करती और उन्हें पढ़ती हैं। फिर भी इन गप्पों के पीछे ललकनेवाले लोग थोड़े नहीं हैं। जैसा मैंने सुना है, अभी उस दिन विदेशों से आई ताजी खबरों को जानने के लिए एक समाचारपत्र के दफ्तर पर इतनी भीड़ जमा हुई कि धक्कम-धक्के में दफ्तर के कितने ही बड़े-बड़े शीशे टूट गए। मैं समझता हूं एक चपल बुद्धिवाला व्यक्ति बारह महीने क्या, बारह वर्ष पहले भी इन्हीं समाचारों को पर्याप्त यथार्थतापूर्वक गढ़ सकता था। जहां तक स्पेन का सम्बन्ध है, यदि आप जानते हैं कि डान कार्लो[1] और इन्फन्टा[2] और डान पेड्रो[3] और सेविल[4] और ग्रेनेडा[5] का जिक्र समय-समय पर उचित मात्रा में कैसे कर दिया जाए—अखबार पढ़े मुझे बहुत दिन हो गए हैं, हो सकता है इस बीच नाम कुछ बदल गए हों—और यदि आप अन्य आकर्षणों के विफल होने पर सांडों की लड़ाई का वर्णन कर सकते हैं, तो समझ लीजिए कि स्पेन की यथार्थ दशा अथवा दुर्दशा का उतना ही सादा, सही चित्र आपने खींच दिया है जितना कि अखबारों के तत्सम्बन्धी कालमों की संक्षिप्त और स्पष्ट सूचनाओं में प्राप्त किया जा सकता है। और जहां तक इंग्लैंड का सम्बन्ध है, वहां का पिछला महत्त्वपूर्ण समाचार १६४९ की क्रान्ति[6] था। फसलों की एक औसत साल की प्रगति का अध्ययन करने के बाद इस विषय में कुछ और ज्ञातव्य नहीं रहता। हां, यदि आपका उद्देश्य मात्र आर्थिक

---

१ १५४५ से १५६८ तक जीवित स्पेन का एक राजकुमार, जो आधा पागल था।
२ स्पेन के राजकुमारों का सामान्य नाम
३ १७९८ से १८३४ तक जीवित स्पेन का राजा तथा ब्राजील का प्रथम सम्राट
४ स्पेन का एक प्रांत
५ निकारागुआ का एक प्रमुख नगर
६ इंग्लैंड की संसद द्वारा राजा चार्ल्स के विरुद्ध की गई क्रांति, जिसके फलस्वरूप राजा को ... कामनवेल्थ की स्थापना की गई थी।

है तो बात अलग है। जो कभी-कभी ही अखबार पढ़ता है, यदि वह निर्णय दे तो यही देगा कि विदेश में कोई नई घटना कभी नहीं घटती। फ्रान्सीसी क्रान्ति जसी घटनाएं भी इसका अपवाद नहीं हैं।

क्या खबर है! कितना महत्वपूर्ण है उसे जानना जो कभी पुराना नहीं पड़ता! क्यू-ट्-यू[1] (वाई राज्य का एक बड़ा पदाधिकारी) ने एक आदमी को स्वग-त्से[2] के पास उसके समाचार जानने को भेजा। स्वग-त्से ने इस दूत को अपने पास बिठाया और उससे इस प्रकार पूछा 'तुम्हारा स्वामी क्या कर रहा है?' दूत ने सम्मान उत्तर दिया, मेरा स्वामी अपने दोषों की संख्या कम करना चाहता है पर उन्हें उनके अन्त तक पहुंचा ही नहीं पाता। दूत के चले जाने पर दार्शनिक कह उठा, दूत कितना योग्य था! दूत कितना चतुर था!' सप्ताह के अन्त में आरम्भ के दिन, क्योंकि इतवार करार श्रम में बीते सप्ताह का उचित अन्त है एक नये सप्ताह का ताजा और साहसपूर्ण आरम्भ नहीं—निंदियाए किसानों के कानों में एक और बहुत उपन्यास उड़ेलने के बदले एक धर्मोपदेशक को तो चिल्ला चिल्लाकर यह कहना चाहिए, ठहरो ठहरो! इतने तेज क्या भागे जाते हो? बहुत धीमे चलो।'

प्रवंचनाओं और भ्रान्तियों को पुष्टतम सत्यों का गौरव दिया जाता है, जबकि यथार्थ को कपोलकल्पित माना जाता है। यदि लोग दृढ़तापूर्वक केवल वास्तविकताओं को परखें और भ्रान्तियों में न ठगे जाएं और जीवन की सुपरिचित उपमाओं से तुलना करें, तो वह सकते हैं कि वह परियों की कहानी और अरब की हजार रातों की कथाओं जैसा बन जाएगा। यदि हम अपरिहार्य को और जिसे होने का हक है उसीको ग्रहण करते हैं, तो संगीत और कविता गलियों में गूंजती घूमेगी। जब हम अधीर नहीं होते और समझदारी से काम लेते हैं तब हम समझ लेते हैं कि केवल उदात्त और श्रेष्ठ चीजों का ही स्थायी और चरम अस्तित्व होता है। तुच्छ भय और तुच्छ मनोरंजन तो बस सत्य की छाया-मात्र हैं ऐसा समझना सदा ही आह्लादक और महान होता है। हर कहीं लोग आंखें बन्द करके ऊंघते हैं और स्वयं को सपनों में छले जाने देते हैं। यह उस दैनिक जीवन क्रम और स्वभाव को स्थापित और सिद्ध ही करता है जो विशुद्ध भ्रमों की नींव पर ही अभी तक भी निर्मित किया जाता है। बच्चे जिन्दगी के खेल खेलते हैं। वे जीवन के सच्चे नियमों

1. १०वीं शती ईसापूर्व का एक चीनी राजनीतिज्ञ
2. एक चीनी दार्शनिक

और उसकी कठिनाई को उन लोगों से अधिक अच्छी तरह पहचानते हैं जो जीवन को ठीक तरह जीने में तो असफल रहे हैं पर जो सोचते हैं कि अनुभव ने अथवा असफलताओं ने उन्हें और भी बुद्धिमान बना दिया है। हिन्दुओं की एक पुस्तक में ऐसा वर्णन है एक राजकुमार था जिसे बचपन में ही उसके नगर से निकाल दिया गया था। उसे एक जंगली आदमी ने पाला। उसी वातावरण में वह बड़ा हुआ और सोचने लगा कि वह भी उसी जंगली जाति में से एक है जिसमें कि वह रह रहा है। उसके पिता के एक मन्त्री ने उसे पहचान लिया और उसे बता दिया कि वह कौन और क्या है। अपने चरित्र से सम्बन्धित उसकी गलत धारणा दूर हो गई और उसने जान लिया कि वह तो राजकुमार है। यही स्थिति आत्मा की भी है। हिन्दू दार्शनिक आगे लिखता है आत्मा अपनी प्रकृति को गलत समझ लेती है। तब कोई पवित्रात्मा गुरु उसके सामने सत्य का उद्घाटन करता है और आत्मा जान लेती है कि वह तो ब्रह्म है। मैं देखता हूँ कि हम न्यू इंग्लैंड के वासी यह हीन जीवन इसलिए जी रहे हैं क्योंकि हमारी दृष्टि पदार्थों के ऊपरी तल को बींधकर गहरे में नहीं जा पाती। हम सोचते हैं कि जैसा जो दीखता है वह वैसा ही है। यदि कोई व्यक्ति इस नगर में से गुजर जाए और सिर्फ वास्तविकता को ही देखे तो जरा सोचिए कारखाने के लिए बनाये गए बाँध को उसकी दृष्टि में क्या स्थान मिलेगा? यदि वह हमें देखी गई वास्तविकताओं का विवरण हमें देगा तो हम उसके वर्णन में स्थान विशेष को पहचान भी नहीं सकेंगे। सभा भवन या न्यायालय या जेल या घर इन सबको एक सत्य द्रष्टा की दृष्टि से देखिए और बताइए कि ये सब असल में हैं क्या। तब आपके वर्णन में इनका यह रूप छिन्न भिन्न हो जाएगा। लोग सुदूरवर्ती सत्य का ही आदर करते हैं उस सत्य का जो ग्रह-चक्र के सीमान्त में सबसे दूरस्थ तारे से भी पीछे आरम्भ से भी पहले या अन्तिम मानव के बाद स्थित है। चिरन्तनता में सचमुच ही कुछ सत्य और उदात्त अवश्य है। लेकिन सभी काल स्थान और अवसर अब हैं और यहाँ हैं। ईश्वर वर्तमान क्षण में ही अपने चरम पर होता है और सारे युगों के बीत जाने पर भी आज से अधिक दिव्य वह नहीं होगा। क्या श्रेष्ठ और उदात्त है इसको हम तभी जान पाते हैं जब हम चारों ओर घिरी वास्तविकता में निरन्तर भीगते हैं और उसमें अपने में मग्न रहते हैं। सृष्टि स्थायी रूप से और आज्ञाकारिता के साथ हमारी धारणाओं का उत्तर देती है। हम तेज चलें या धीमे, हमारा रास्ता पहले से बना पड़ा है। तब हम अपना जीवन चिन्तन में धारणा में

ही मिताना चाहिए। कोई कवि या कलाकार अभी तक इतनी सुन्दर और भव्य कलाकृति नहा बना पाया है तब उसकी सन्ततिया म भ ही कार्य कर काम पूरा कर पाएगा।

आइए हम एक दिन ता प्रकृति निान ही सहज रूप म गुजारकर रवें। हम रन वा तरह हर गुठरी या मन्दरा क पग क सामन पग्त ही पटरी पर म न उतर जाए। हम जरुन जल्दी उठें व्रत रखें या नाश्ता नें निन सहजता म और बिना घबराए। नाग आग नोग चल जाए घण्टिया बज और बच्चे चीखें पर हम दम एक दिन वा सफल बनान क लिए कृत-सकल्प रह। क्या हम ठोकर खाकर गली मे नीचे आ जाए और धारा क साथ बह जाए ? मध्याह्न क छिन्न जल म उत्पन्न वाली मध्याह्न भोज नामक उस भयानक तेज लहर और भवर सा डरकर हम घबरा न उठें अस्त-व्यस्त न हो जाए। इस सकट का सामना कर मर्स न्ता कि आप सुरक्षित हैं और शेष रास्ता उतराई का है। यूलीसिस[१] की तरह मस्तूल म स्वय को बाध लो और दूसरी तरफ देखने हुए प्रभात के उत्साह क साथ शील पड बिना बस सफ जाओ। यदि इजन सीटी द रहा है तो उस देन दो, तब तक जब तक उसका आवाज भरा न जाए। यदि घण्टी बज रही है तो सुनकर हम क्या दौड पड़ें ? हम सोचेंगे कि रन सबका संगीत है किस प्रकार का ? पहले हम स्थिर हो लें और कीचड और गार म टटोलकर अपने पर जमा लें। कीचड ? विचार पूवाग्रह परम्परा भ्रान्ति और छल क वाचड की परत जिमम यह भूगोल लिपटा है जो पेरिस और लन्दन न्यूयार्क और बास्टन और वानकाद गिरजाघर और राज्य कविता और दर्शन और धर्म सब कहा व्याप्त है। इस कीचड के नीचे वास्तविकता की सख्त भूमि और चट्टान है। उसपर हम अपने पैर जमा लें और तब हम कह कि यही सत्य है और इसम कोई गलती नहीं है। और तब चलन जल क वर्फ क और आग क नीच एक आश्रय-केन्द्र खोजकर वहा एक दीवार या तम्भ या दीपाधार सुरक्षित ढग म स्थापित कर द अथवा एक माप—परन्तु नील नदी का स्तर-मापक स्तम्भ नहीं, बल्कि एक सत्य मापक यन्त्र—हम वहा लगा द जिसम भावी युग जान लें कि पाखण्ड और छल का तल समय-समय पर कितना ऊचा चढ़ सकता है। यदि आप तथ्य के ठीक सामने जमकर खड़े रह पाएंगे तो आप देखेंगे कि सूय उसके दोनों पृष्ठों पर चमक उठा है और यदि सत्य एक खड्ग हो तो आप उसकी मीठी धार स हृदय

१ ग्रीक पुराणों का एक वीर [illegible]

और मांस मज्जा के बीच प्रवेश करते हुए अनुभव करेंगे और इस प्रकार आप सानन्द अपने पार्थिव जीवन के लक्ष्य का निर्णय कर लेंगे। जीवन का सामना हो या मृत्यु का हम केवल सत्य की आकांक्षा करें। यदि सच ही हम मर भी रहे हों तब भी हम अपने गले में घरघराहट की आवाज को सुनें और अपने अन्तस्तल को हिम होता हुआ अनुभव करें और यदि हम जीवित हैं तो हम जाएं अपना धन्धा देखें।

समय वही नदी तो है जहां मछलियां पकड़ने मैं जाया करता हूं। मैं उसके तट पर पानी पीता हूं। लेकिन पानी पीते पर मैं उसकी रेतीली तली को देखता हूं। देखता हूं कि वह कितनी उथली है। इसकी छोटी-पतली लहरें बह जाती हैं पर शाश्वतता स्थिर रहती है। मैं और गहरा जल पियूंगा उस आकाश में ही मछलियां पकड़ूंगा, जिसकी गहराइयों में तारों के पत्थर बिखरे हैं। इकाई तक तो मैं गिन नहीं सकता। वर्णमाला के पहले वर्ण तक को तो मैं पढ़ नहीं सकता। मुझे हमेशा इस बात का दुःख रहा है कि मैं उतना समझदार आज नहीं हूं जितना मैं पैदा होने के समय था। बुद्धि प्रखर मर्मभेदी होती है। वह विषय के रहस्यों में घुसकर अपना मार्ग बना लेती है। मैं शारीरिक श्रम में आवश्यकता से अधिक व्यस्त होना नहीं चाहता। मेरा मस्तिष्क ही मेरे हाथ और पैर है। मैं अपनी सर्वोत्तम प्रतिभाओं को उसमें केन्द्रित पाता हूं। मेरी अन्तरात्मा मुझसे कहती है मेरे लिए मेरा सिर ही खोदनेवाला अंग है। कुछ प्राणी अपनी थूथनी और सामने के पंजों से मिट्टी हटाते हैं। मैं इसी प्रकार अपने सिर से इन पहाड़ियों में से अपना रास्ता बनाऊंगा। मैं सोचता हूं सबसे मूल्यवान खनिज की पट्टी यहीं कहीं वर्तमान है। जलान्वेषण दण्ड यही कहता है और यह भाप का उठना भी यही संकेत देता है। खुदाई मैं यहीं से आरम्भ करूंगा।

अध्ययन

लोग यदि व्यवसाय के चुनाव में चिन्तन विचारणा से थोड़ा अधिक काम लें तो शायद वे सभी अनिवार्य रूप से विद्यार्थी और पर्यवेक्षक बन जाएँगे क्योंकि सभी की अपनी प्रकृति और नियति में निश्चय ही समान रुचि रहा करती है। जब हम अपने या अपनी सन्ततियों के लिए सम्पत्ति एकत्र करते हैं, जब हम एक परिवार अथवा राज्य की नींव रखते हैं या यश प्राप्त करने चलते हैं, उस समय हम मर्त्य ही होते हैं, किन्तु सत्य की साधना करते समय हम अमर्त्य होते हैं और तब किसी परिवर्तन अथवा दुर्घटना से डरने की हमें जरूरत नहीं रहती। प्राचीनतम मिस्री अथवा हिन्दू दार्शनिकों ने दिव्य की प्रतिमा पर पड़े पर्दे के एक छोर को ऊपर उठाया था। अभी तक वह कम्पित आवरण उठा का उठा ही है और उस तेजोमण्डल को आज भी मैं उतना ही ताजा देखता हूँ जितना उस दिन उन दार्शनिकों ने देखा होगा, क्योंकि उनमें मैं ही था जो उतना साहसी बन सका था और आज मुझमें भी वे ही हैं जो उस झाँकी का पुनरावलोकन कर रहे हैं। उस पर्दे पर जरा-सी भी धूल नहीं जम सकी है, क्योंकि समय आगे बढ़ ही नहीं पाया है। वह काल, जिसे हम वास्तव में उपयोगी बना रहे हैं या उपयोगी बनाया जा सकता है, वह तो न भूत होता है, न वर्तमान, न भविष्य।

सिर्फ चिन्तन के ही लिए नहीं, मेरा घर गम्भीर अध्ययन के लिए भी एक विश्वविद्यालय की अपेक्षा अधिक उपयुक्त था। यद्यपि वन में रहते हुए, बाहर से पुस्तकें मँगवाना और भी साधारण पुस्तकालय मेरी पहुँच से बाहर था, फिर भी मैं उन ग्रन्थों के रस का पठन में अधिक ले सका, जिनका कि पूरे विश्व में संचार है, जिनके वाक्य पहले-पहल छाल पर लिखे गए थे और अब बढ़िया कागजों पर जब तब बस उनकी नकल ही की जाती है। कवि मीर कमरुद्दीन मस्त[1] ने कहा है

१ ईरान का एक मस्त कवि

बड़े-बड़े अध्यात्म-जगत के प्रदेशों में घूम आना, ऐसी उपलब्धि मुझे पुस्तकों के द्वारा ही हो सकी है। सुरा का सिर्फ एक पात्र पीकर नशे में झूमने लगना, ऐसा आनन्द मैंने तभी अनुभव किया है जब मैंने रहस्यवादी सिद्धान्तों की शराब पी है। गर्मियों भर होमर की इलियड मेरी मेज पर रही यद्यपि जब-तब ही मैं उसके पन्ने पलट सका। आरम्भ में लगातार शारीरिक श्रम करते रहने के कारण ज्यादा पढ़ पाना असम्भव बन गया था क्योंकि मुझे अपना घर भी बनाना था और साथ ही साथ सेमों की निराई भी करनी थी। पर मैं भविष्य में पढ़ पाने की आशा लेकर धीरज धरे हुए था। काम के बीच-बीच मैंने यात्रा विषयक एक-दो हलकी फुलकी किताबें पढ़ीं पर शीघ्र ही ऐसी पुस्तकों से मुझे अपने ऊपर शर्म आने लगी और मैंने अपने से प्रश्न किया कि तब भला मैं रह कहाँ रहा हूँ।

विद्यार्थी होमर अथवा एस्काइलस[1] के ग्रन्थ ग्रीक भाषा में ही क्यों न पढ़ें? अपव्यय अथवा विलासिता का खतरा इसमें बिलकुल नहीं है। इसका अर्थ इतना ही है व्यक्ति कुछ सीमा तक उन ग्रन्थों के वीर योद्धाओं की होड़ करे और उन पृष्ठों के पाठ में अपने प्रातः-क्षणों को पवित्र करे। वे वीर काव्य भले ही हमारी मातृभाषा में लिखे छपे मिल जाएँ पर पतनशील युगों के लिए तो इनकी भाषा मृत हो चुकी है। इसलिए उनकी प्रत्येक पंक्ति और शब्द का अर्थ हमें श्रमपूर्वक निकालना चाहिए विद्या वीरता और उदारता का जो भी वर्तमान साधारण स्तर है, उससे बहुत ऊँचे उठकर बहुत ही उदात्त अर्थ लगाने चाहिए। सस्ता और थोक माल निकालनेवाला हमारा प्रकाशन-यन्त्र इतने भारी अनुवाद छापकर भी हमें सुदूर अतीत के उन वीर काव्यकारों के निकट ले जाने में अधिक सफल नहीं हो पाया है। वे सदा की भाँति हमें अद्वितीय ही प्रतीत होते हैं और जिन अक्षरों में वे छपे हैं वे हमें दुर्लभ और निराले ही लगते हैं। यदि किसी प्राचीन भाषा के कुछ शब्द आप सीख सकें सड़क की तुच्छता से उठाकर अपने लिए उन्हें प्रेरक एवं उत्प्रेरक बना सकें तो यह काम यौवन के दिनों और मूल्यवान क्षणों के उपयुक्त होगा। जो थोड़े से सुने-सुनाए लैटिन के शब्द किसान को याद रहते हैं और वह जो उन्हें बार-बार दुहराता रहता है वह निरर्थक ही नहीं होता। लोग कभी-कभी कुछ ऐसा कहा करते हैं कि प्राचीन गौरवग्रन्थों के अध्ययन का स्थान एक न एक दिन अधिक आधुनिक

---

१ एस्काइलस (५२५ से ४५६ ई० पू०) ग्रीक कवि एवं सैनिक। इन्होंने ट्रैजेडी की नींव डाली थी।

और व्यावहारिक अध्ययन ले लेगा। गौरवग्रन्थ किसी भी भाषा में कितने भी प्राचीन युगों में लिखे गए क्यों न हों एक साहसी विद्यार्थी सदा उन्हीं का अध्ययन करता है। गौरवग्रन्थ क्या है? वे मानव के उत्कृष्टतम विचारों के संकलन ही तो हैं। वे ही मात्र ऐसे भविष्यवक्ता हैं जो कभी जर्जर नहीं होते और आधुनिकतम प्रश्नों का उनमें से ऐसा उत्तर पाया जा सकता है जैसा डेल्फी[1] और डोडोना[2] के देवता भी कभी नहीं दे सके। हम चाहें तो प्रकृति का अध्ययन छोड़ दें क्योंकि प्रकृति बूढ़ी हो चुकी है। अच्छी तरह पढ़ना अर्थात् सत्य ग्रन्थों का सत्य निष्ठा से अध्ययन करना, एक ऐसा उत्कृष्ट व्यायाम है जो वर्तमान व्यवस्था द्वारा पुरस्कृत किसी भी व्यायाम की अपेक्षा अध्येता पर अधिक भारी पड़ता है। उसके लिए मल्लों जैसे प्रशिक्षण और अभ्यास की, इस लक्ष्य की ओर पूरे जीवन को दृढ़तापूर्वक लगा देने की ज़रूरत होती है। जिस गम्भीर चिन्तन एवं संयम से पुस्तकें लिखी गई थीं उसी से उन्हें पढ़ा भी जाना चाहिए। जिस जाति ने उन पुस्तकों को लिखा था उस जाति की भाषा को बोलना सीख लेना ही काफी नहीं है क्योंकि बोली हुई और लिखी तथा सुनी हुई और पढ़ी हुई भाषाओं के बीच स्मरणीय व्यवधान और अन्तर है। बोली हुई भाषा साधारणतया अस्थायी मात्र एक ध्वनि, एक आवाज़ सिर्फ एक बोली होती है लगभग पशु जैसी जिसे हम अनजाने में पशुओं की तरह ही अपनी माताओं से सीख लेते हैं। निश्चित इस पहली का परिपाक है उसका अनुभव है। एक हमारी मातृभाषा है तो दूसरी पितृभाषा एक संयमित विशिष्ट अभिव्यक्ति इतनी महत्त्वपूर्ण कि उसको कानों से सुनना नहीं हो सकता उसे बोल पाने के लिए तो हमें पुनर्जन्म ही लेना पड़ेगा। भीड़ की भीड़ वे लोग जो मध्य युगों में ग्रीक और लैटिन भाषाओं को बोलने भर थे, सिर्फ जन्म के संयोग के कारण प्रतिभाओं द्वारा इन भाषाओं में लिखी गई कृतियों के अध्ययन का अधिकार उन्हें नहीं मिल गया था। कारण कि ये कृतियाँ उनकी जानी-पहचानी ग्रीक या लैटिन में नहीं बल्कि साहित्य की विशिष्ट भाषा में लिखी गई थीं। उन्होंने ग्रीस और रोम की अधिक उन्नत बोलियों को नहीं सीखा था। जिन कागज़ों पर ये लिखी जाती थीं वे उनके लिए रद्दी कागज़ भर थे और वे इनके बदले समसामयिक सस्ते साहित्य को ही महत्त्व देते थे। लेकिन जब यूरोप के कई राष्ट्रों ने अपने उन्मुख साहित्यों के लिए

---

१ प्राचीन ग्रीस का भविष्यवाणियों का सबसे प्राचीन मंदिर। यहाँ देवता पुरोहित के मुख से भविष्य कथन करता था। २ ज़ियस का मन्दिर यहाँ भी भविष्य कथन किया जाता था।

विशिष्ट यद्यपि असंस्कृत निजी भाषाओं का विकास कर लिया गया और प्राचीन विद्या का पुनरुज्जीवन मिला तो विद्वान सुदूर अतीत में से उन खजानों को ढूढ निकालने की योग्यता पा गए। रोम और यूनान की भीड जिसे कानों से सुन न सकी थी युगों बाद मुट्ठी भर विद्वानों ने उसे पढा और आज भी थोड़े-से ही विद्वान उसे पढ़ रहे हैं।

किसी वक्ता की भाषण शक्ति और उसके प्रासंगिक उद्गारों की कितनी भी प्रशंसा क्यों न की जाए श्रेष्ठतम लिखित शब्द मुख से बहती हुई अजस्र भाषा से साधारणतया उतने ही परे अथवा ऊपर हैं जितना कि तारक-मण्डित आकाश बादलों से ऊपर होता है। तारे उपस्थित हैं और जो उनकी भाषा पढ़ सकते हैं, वे पढ़ लें। खगोलशास्त्री उनका पर्यवेक्षण और उनपर टीका टिप्पणी निरन्तर करते रहते हैं। वे भापयुक्त श्वासों अथवा हमारे दैनिक सतायों की तरह उच्छ्वास-मात्र नहीं हैं। सभा के बीच जिसे वक्तृत्व शक्ति कहा जाता है साहित्य में वही अलंकारिता कहलाती है। वक्ता एक क्षणिक प्रसंग से प्रेरित होकर समक्ष जन-समूह के सामने उन्हें लक्ष्य करके बोलता है जो उसे सुन सकते हैं। लेकिन लेखक अपने अपेक्षाकृत समरस जीवन का प्रसंग लेकर चलता है घटना और भीड जो एक वक्ता को प्रेरित करते हैं वही उसे शायद उखाड डालें। वह तो मानव की बुद्धि से, उसके हृदय से उसे समझ सकनेवाले प्रत्येक युग के सभी मानवों से अपनी बात कहता है।

क्या आश्चर्य यदि सिकन्दर इलियड की प्रति को एक मूल्यवान मंजूषा में रख कर अपनी विजय-यात्राओं में अपने साथ रखता रहा। लिखित शब्द सबसे मूल्यवान अवशेष होता है। यह किसी भी अन्य कलाकृति से बढ़कर घनिष्ठ और सार्वभौम होता है। यह ऐसी कलाकृति है जो जीवन से निकटतम है। इसका हर भाषा में अनुवाद किया जा सकता है। इसे केवल पढ़ा ही नहीं जा सकता, सभी मानव अपने अधरों के माध्यम से इस सांस के साथ अन्तस्तल तक पहुंचा भी सकते हैं। इसे चित्र-पटल पर चित्रित अथवा पत्थर पर गढ़ा ही नहीं जा सकता स्वयं जीवन की सांसों में ढाला भी जा सकता है। प्राचीन मानव के विचारों का प्रतीक आधुनिक मानव की भाषा बन जाता है। दो हजार ग्रीष्मों ने यूनान की पाषाण प्रतिमाओं की तरह ही उसके साहित्यिक स्मारकों को भी अधिक परिपक्व स्वर्णिम और एक शरत्कालीन आभा प्रदान कर दी है। ऐसा इसीलिए हो सका क्योंकि काल-क्षय से बचने के लिए अपने गम्भीर और दिव्य वातावरण को वे दूर दिशाओं में ले गए। पुस्तकें संसार के संचित कोष

हैं और पीढ़ियों तथा राष्ट्रों के उपयुक्त दायधन हैं। प्राचीनतम और सर्वोत्तम पुस्तकें हर घर की अलमारी में स्वभावतः और अधिकांशतः ही सुशोभित मिलती हैं। उन्हें कोई अपना स्वार्थ सिद्ध करना नहीं होता, लेकिन जब वे पाठक के मन को दृढ़ और उत्तीर्ण बनाती हैं तब पाठक की साधारण बुद्धि उनका निषेध नहीं कर पाती। उन ग्रन्थों का लेखक-वर्ग ही हर समाज का स्वाभाविक और अनिवार्य अभिजात वर्ग होता है, जो राजाओं और सम्राटों से भी बढ़कर मानव मात्र को प्रभावित करता है। जब एक अशिक्षित और सम्भवतः तिरस्कार योग्य वणिक श्रम और उद्यम के द्वारा चिरकांक्षित अवकाश और स्वच्छन्दता प्राप्त कर लेता है और शृंगार और वैभव के क्षेत्र में वह अपना स्थान बना चुकता है तब वह अनिवार्यतः बुद्धि और प्रतिभा के उन उच्चतर क्षेत्रों की तरफ मुड़ता है जो अभी तक उसकी पहुँच से बाहर थे। तब उसे संस्कृति की दृष्टि से अपनी अपरिपक्वता का, अपने थोथे घमंड का और अपने वैभव के अधूरेपन का अहसास हो जाता है। वह समझदारी से काम लेता है और जिस बौद्धिक संस्कृति की वह इतनी कमी महसूस करता है उसे अपने बच्चों को उपलब्ध कराता है और तभी जाकर वह एक कुल की नींव डालनेवाला बन पाता है।

प्राचीन गौरवग्रन्थों को उनकी मूल भाषाओं में पढ़ना जो नहीं सीख पाए हैं उनका मानव-जाति के इतिहास का ज्ञान बड़ा ही अपूर्ण माना जाना चाहिए। कारण कि किसी भी आधुनिक भाषा में उनकी प्रतिलिपि तब तक तैयार नहीं हो सकती जब तक हमारी सभ्यता भी वैसी ही प्रतिलिपि न मान ली जाए। होमर अभी तक अंग्रेजी में नहीं छप सका है, न ही एस्काइलस, न ही वर्जिल। ये ग्रन्थ स्वयं प्रभात जितने ही स्वच्छ, ठोस और सुन्दर थे। बाद के लेखकों में उनकी प्रतिभा के बारे में हम जो चाहे कहें, प्राचीनों जैसा सर्वांगीण सौन्दर्य, आकर्षण और उनके जैसा साहसपूर्ण आमरण साहित्यिक उद्यम कदाचित ही देखने को मिलेगा। जिन्होंने कभी उन्हें जाना तक नहीं, वही उन्हें भूल जाने की बातें करते हैं। प्राचीन कृतियों के अध्ययन और उनके मूल्यांकन के लिए आवश्यक शिक्षा और प्रतिभा को पा लेने में पहले ही उन्हें भूल जाना बहुत जल्दबाजी की बात होगी। वह युग निश्चय ही बहुत सम्पन्न होगा जबकि गौरवग्रन्थ-रूपी ये अवशेष और राष्ट्रों के इनसे भी प्राचीन और इनसे भी महत्त्वपूर्ण अन्य अभिलेख और अधिक इकट्ठे किए जाएँगे, जब गाम के पास के नगर का वेश और जिन्दावेस्ताओं[1] और इजोला अनगिनत होमरों,

[1] प्राचीन अग्निपूजक पारसियों का धर्म-ग्रन्थ

दान्ते[1] और शक्सपियर के ग्रथो से भर दिया जाएगा जब आनेवाली शताब्दिया विश्वकोष म अपने अपने उपहार क्रमश भेंट कर चुकेंगी। इस ढेर पर चढकर हा शायद हम कभी न कभी स्वग तक पहुच सकें।

महान कवियो की कृतियां जनगण के द्वारा कभी भी नही पढी गई है क्योकि महान कवि ही उन्हे पढ सकते हैं। उन्हे पढा भी गया है तो उसी तरह जसे जन समूह तारो को पढता है, अधिक से अधिक ज्योतिषियो की तरह खगोलशास्त्रियो की तरह नहीं। अधिकतर लोग तुच्छ सुविधाओ की प्राप्ति के लिए पढते हैं। गणित व इसलिए तो सीखते हैं कि हिसाब किताब कर सकें और ठग न जाए। लेकिन एक उच्च बौद्धिक व्यायाम के रूप म अध्ययन करने के बारे म या तो वे बहुत कम जानते हैं या बिलकुल ही नही जानते। पर अध्ययन हम किसीको कहेंगे। स्वाध्याय हम उसको नहीं कहेंगे जो विलास का साधन बनकर हम लोरी देता है और हमारी 'उच्च तर प्रतिभा' को तत्काल के लिए सुला देता है बल्कि उस कहेंगे जिस पढने के लिए हम उचककर सीधा खडा होना पडे और जिसे अपने सर्वाधिक सजग और सचेत क्षण हम अर्पित करने पडें।

मैं समझता हू पढना सीखने के बाद हम साहित्य का सर्वश्रेष्ठ अश पढना चाहिए हम चौथी अथवा पाचवी कक्षा की सबसे निचली और आगे की पक्ति म बैठकर क ख ग अथवा छोटे छोटे शब्द रटने म ही अपनी पूरी आयु न गुजार दें। अधिकाश लोग इतने से ही सन्तुष्ट रहते हैं, व पढ लेते हैं अथवा पढा हुआ सुन लेते हैं और कभी-कभी इंजील जसी किसी श्रेष्ठ पुस्तक का ज्ञान भी उनके पल्ले पड जाता है और शेष जीवन भर वे तथाकथित हलकी पुस्तकें पढने म ही अपनी शक्तियो का विकास और व्यय करते हैं। हमारे पुस्तकालय म कई भागो म एक पुस्तक है जिसका नाम है लिटिल रीडिंग (सहज पठन)। पहले तो मैंने समझा था कि यह पुस्तक इसी नाम के किसी नगर के बारे म है जिसको कि मैं अभी तक देख नही सका हू। कुछ लोग होते हैं जो पटू जलकाको और शुतुरमुर्गों की तरह भरपेट मांसाहार और शाकाहार के बाद भी इस प्रकार की हर चीज पचा जाते हैं क्योकि वे किसी भी चीज को बेकार जाना सहन नही कर सकते। यदि कुछ लोग यह भूसा तैयार करनेवाले यन्त्र हैं तो य उसे पढनेवाले यन्त्र हैं। व जबुलन और सफरोनिया[2] की नौ हजारवी कहानी

१ इटालवी कामदी का लेखक इटली का प्रसिद्ध कवि (१२६५-१३२१)
२ प्राचीन यहूदियों की एक प्रेम कथा

भी पढ़ सकेंगे। कम उनका अभूतपूर्व प्रेम कहा कम उनके सच्चे प्यार की एक भी रात मीठी न आ सकी फिर भी भला कैसे वे चल कम उन्होंने ठोकरें खाईं व उठे और वे फिर चल पड़े। कैसे वह अभागा जो गिरजे में रात घण्टे तक नहीं चढ़ सकता था उसके सर्वोच्च शिखर तक चढ़ गया! उपन्यासकार व्यर्थ ही उसे वहाँ चढ़ाकर अब सारी दुनिया को घण्टियाँ बजा-बजाकर बुला रहा है कि ह लोगो आओ और देखो कि वह नीचे कैसे उतरे। मैं तो चाहता कि जैसे प्राचीन नगर अपने नायकों को युद्ध में भेजा करते थे वैसे ही ये उपन्यासकार कला से अपने उपन्यासों के सर्वोत्कृष्ट नायकों का रूप-परिवर्तन करके उन्हें वात-सूचक (वैदर-कॉक) मानव पुतले बना दें और शिखर पर उन्हें तब तक चढ़ाकर स्थान दें जब तक उनमें जंग न लग जाए। वे उन्हें कभी भी नीचे न उतरने दें जिससे वे अपनी चुहलबाजियों से भले लोगों को परेशान न कर सकें। अगली बार यदि कभी इस उपन्यासकार ने घण्टा बजाई तो मैं तो अपनी जगह से हिलूँगा भी नहीं भले ही वह सभा भवन जलकर भस्म ही क्यों न हो जाए।

'टिप-टो-हॉप की दुनाई' मध्य युग का एक रोमांस, लेखक हैं 'टिडिल-टाउन्स' का प्रतिष्ठित रचयिता सामयिक मासिक में प्रकाशित होगा। भारी भीड़ है, सब इकट्ठे मत आइए। यह सब वे लोग बड़ी आशा से अपनी आत्मिक उत्कंठा से सीधे तनकर पढ़ते हैं। अपने उपयुक्त उच्चस्थान में यह सब वे भरते जाते हैं पर पद की सरलता का सीधा करने की जरूरत तक उन्हें नहीं पड़ती। उनका यह व्यवहार वैसा ही है जैसाकि इस चार वर्ष के नन्हे बालक का जो दो सेंटवाली सुनहरी जिल्द की अपनी 'सिण्डरेला'[1] को पढ़ने में खोया हो। वह पढ़े जा रहा है पर उच्चारण स्वराघात अथवा बल विशेष की दृष्टि से अपने में कोई सुधार नहीं कर पा रहा है और कृति में से नैतिक शिक्षा प्राप्त करने की योग्यता का भी विकास उसमें नहीं हो रहा है। परिणाम यह होता है कि उनकी दृष्टि मन्द पड़ जाती है, सब रस का संचरण रुक जाता है और उनकी बौद्धिक क्षमताएँ मूर्छित हो जाती हैं और कीचड़ में फँस जाती हैं। इसी प्रकार की साफ-सिकी मोटी रोटियाँ शुद्ध गेहूँ अथवा रई और मक्का की रोटियों से कहीं अधिक अध्यवसायपूर्वक प्रतिदिन हर तन्दूर पर पकाई जाती हैं और निश्चय ही बिक भी जाती हैं।

जो अच्छे पाठक कहलाते हैं वे भी सर्वोत्तम पुस्तकें नहीं पढ़ते। हमारे कानकार्ड

[1] एक प्राचीन कहानी, जिसमें एक साँवली लड़की की कष्टकथा कही गई है।

नगर की सस्कृति की क्या स्थिति है ? अग्रेजी को हम सभी पढ और समझ सकते हैं पर बहुत थोडे नागरिकों को छोडकर किसी को भी अग्रेजी साहित्य की सर्वोत्तम अथवा उत्तम पुस्तकों को पढने म कोई रुचि नही है। यहा क्या हर कही कालेजो म पले और जी भर शिक्षा पाए तथाकथित शिक्षित लोग भी अग्रेजी के गौरवग्रन्थो का या तो बहुत थोडा परिचय रखते हैं या बिलकुल ही नही रखते। जहा तक सब सुलभ प्राचीन ग्रन्थो और धर्म-पुस्तको का सम्बन्ध है उनका परिचय पाने के लिए भी हर कही न्यूनतम प्रयास किए जाते हैं। मैं एक प्रौढ लकडहारे को जानता हू जो फ्रासीसी भाषा का समाचारपत्र, जसाकि वह कहता है, खबरो के लिए नही क्योंकि उनकी तो उसे चाह ही नही है बल्कि इसलिए लेता है कि उसका भाषा का अभ्यास बना रहे। वह जन्म से कनाडावासी है। जब मैंने उससे पूछा कि इस दुनिया म कौन-सा सबसे अच्छा काम है जिसे तुम करना चाहोगे तो उसने उत्तर दिया फ्रासीसी पढने के सिवाय अपनी अग्रेजी के स्तर को बनाए रखना उसे अधिक ऊचा उठाना मैं चाहूगा। कालेजो म पढे शिक्षित जन भी आम तौर से यही महत्त्वाकाक्षा रखते हैं और इस मतलब के लिए वे समाचारपत्र लेते हैं। मान लीजिए एक व्यक्ति अभी-अभी साहित्य की एक सर्वोत्तम पुस्तक पढकर लौटा है। कितने आदमी उसे मिलेंगे जिनसे वह उसपर चर्चा कर सके ? अच्छा मान लीजिए वह मूल यूनानी अथवा लैटिन भाषा म वह गौरवग्रन्थ पढकर आता है जिससे यश म तथा कथित अनपढ लोग भी सुपरिचित हैं तब तो उस चर्चा के लिए एक भी व्यक्ति नही मिल सकेगा और उसे चुप ही रह जाना पडेगा। असल म हमारे कालेजो म कठिनाई से ही कोई प्राध्यापक ऐसा मिलेगा, जिसने भाषा की कठिनाइयो को पूरी तरह हल करने के साथ-साथ किसी यूनानी कवि की कविता के कवित्व की गुत्थियो को भी उतने ही अनुपात म सुलझा लिया है और जो किसी सजग और साहसी पाठक तक उस रस को पहुचाने म रुचि भी रखता है। जहा तक मानव-जाति के पवित्र ग्रन्थो अथवा बाइबल की कोटि के अन्य धर्म-ग्रन्थो का सम्बन्ध है इस नगर म भला कौन ऐसा मिलेगा जो उनके नाम भी गिना सके। अधिकाश लोग नही जानते कि यहूदियो के सिवाय भी किसी जाति के पास पवित्र लेख रहे हैं। कोई भी व्यक्ति चादी के एक सिक्के को प्राप्त करने के लिए काफी दूर तक पथ भ्रष्ट होना स्वीकार कर लेगा लेकिन यहा वे स्वर्ण-वचन लिखे पडे हैं जिन्हे अतीत के सर्वोत्तम ऋषियो ने लिखा है और अनुवर्ती युगो के सभी विद्वानो ने जिनकी महानता के

विषय म हम आश्वस्त किया है। लेकिन इतने पर भी हम बस प्राथमिक भाषा ज्ञान की और कक्षा की पुस्तकों जैसी हलकी फुलकी पुस्तकें ही पढ़ते है और विद्यालय छोड़ने के बाद 'लिटिल रीडिंग' और कहानी की किताबों मे उलझ जाते हैं, जोकि लड़कों के लिए और पढ़ाई आरम्भ करनेवालो के लिए हैं। हमारा पढना, हमारी बातचीत, हमारा सोचना विचारना सब इतने निम्न स्तर तक का है कि वह पिग्मियो और बौनो के ही उपयुक्त हो सकता है।

मैं उन विद्वानो का परिचय प्राप्त करना चाहता हू जो इस कानकाड की धरती के स्तर म ऊचे हैं और यहा जिन्हे कठिनाई स ही कोई जानता है। अथवा क्या प्लेटो का नाम मैं सुन तो लू, पर उसकी पुस्तकें कभी न पढू ? जबकि प्लेटो मेरे अपने नगर का हो और मैंने उसे कभी न देखा हो वह ठीक मेरा पडोसी हो और मैंने कभी उसका प्रवचन न सुना हो और उसके ज्ञानप्रद शब्दो का रस न लिया हो। लेकिन वास्तविकता क्या यही नही है ? उसम जो कुछ शाश्वत था वह सब उसकी जिन वार्ताओ मे सन्निहित हुआ वे वार्ताएं पास की अलमारी म ही पडी है। फिर भी मैं उन्हें कभी नही पढता। हमारा पालन-पोषण और रहन-सहन बहुत निम्नस्तर का है और हम अनपढ हैं। इस सम्बन्ध म मैं मानता हू कि पढना एकदम ही न जाननेवाले अनपढो की अशिक्षा म और मात्र बच्चो और क्षीणबुद्धि लोगो के लिए उपयुक्त साहित्य को पढनेवाले शिक्षितो की अशिक्षा म मैं कोई बडा अन्तर नही करता। हम अतीत के महापुरुषो जितना ही श्रेष्ठ बनना चाहिए पर उसमे पहले यह जानना आवश्यक है कि कितने श्रेष्ठ वे थे। हम नन्ही चिडिया की जाति के मानव हैं और दैनिक समाचारपत्रो मे ऊची बौद्धिक उडान बहुत कम लगा पाते हैं।

सभी पुस्तकें उनके पाठको जितनी पिछडी हुई हो नही होती। सम्भवत कुछ बातें ऐसी अवश्य कही गई हैं जो ठीक हमारी दशा को लक्ष्य करके कही गई हैं। यदि हम सचमुच ही उन्हे सुन और समझ सकें तो वे हमारे जीवन के लिए प्रभात अथवा वसन्त से भी अधिक अभिनन्दनीय बन सकती हैं। हो सकता है कि पदार्थों के विषय म एक नया दृष्टिकोण वे हम दे सकें। कितने ही लोग पुस्तक विशेष पढकर अपने जीवन म एक नया अध्याय आरम्भ कर सके हैं। पुस्तको का अस्तित्व हमारे लिए है। वे हमारी वतमान गुत्थियो को सुलझाती हैं और नये रहस्यो का उद्घाटन करती हैं। कितनी ही ऐसी बातो के बारे म, जो अभी तक अकथ हैं शायद

कहीं कुछ इनमें लिखा मिल जाए। ये ही प्रश्न जो आज हम उलझाते हैं अस्त व्यस्त करते और त्रस्त करते हैं सभी विद्वानों के सामने प्रस्तुत हो चुके हैं। इनमें से कोई भी प्रश्न छोड़ा नहीं गया है। हर विद्वान ने अपनी योग्यतानुसार शब्द में अथवा आचरण से उनका उत्तर दिया है। फिर च्यान से हम उदारता सीखते हैं। कानकाड के उत्तर के किसी खेत में नियुक्त वह एकाकी मजदूर, जिसने दीक्षा ले ली है और विशिष्ट धार्मिक अनुभव प्राप्त कर लिया है जो अपनी आस्था के अनुसार एक मौन गम्भीरता और पवित्रभाव को अपने अन्तर में स्थान दे चुका है हो सकता है वह सोचे कि यह बात सच नहीं है। हजारों वर्ष पहले जरथुस्त्र इसी मार्ग पर चला था। ठीक ऐसा ही अनुभव उसने भी प्राप्त किया था। पर वह बुद्धिमान था। उसने जान लिया था कि यह अनुभव सार्वभौम है और उसीके अनुकूल पड़ोसियों से उसने व्यवहार किया। यहां तक कहा जाता है कि उसने उपासना का आविष्कार किया और उसे मानवों में प्रतिष्ठित किया। क्यों यह मजदूर जरथुस्त्र से विचार विनिमय न करे? क्यों वह सभी महापुरुषों के सम्पर्क में प्राप्त उदारता के माध्यम से सीधे ईसा मसीह से संयुक्त न हो, और अपने चर्च को तिलांजलि न दे?

हम लोग डींग हांकते हैं कि हम उन्नीसवीं शताब्दी में रह रहे हैं और किसी भी राष्ट्र से अधिक प्रगति कर रहे हैं। लेकिन जरा सोचिए तो गांव अपनी संस्कृति के विकास के लिए कितना कम काम कर रहा है। मैं अपने नगरवालों की प्रशंसा नहीं करना चाहता और न ही उनसे प्रभावित होना चाहता हूं क्योंकि इस प्रकार तो हममें से कोई भी उन्नति नहीं कर सकेगा। दौड़ने के लिए हमें उत्तेजित किया जाना और बैलों की तरह हमें आर लगाई जानी बहुत आवश्यक है। हमारे यहां छोटे बच्चों के लिए तो सामान्य पाठशालाओं की अपेक्षाकृत बढ़िया क्रम वर्तमान है लेकिन हम बड़ों के लिए जाड़ों के अधकचरे व्याख्यान भवन (लीसियम) और राज्य द्वारा बाद में आरम्भ किए गए छोटे-से पुस्तकालय के सिवाय कोई विद्यालय नहीं है। हम अपने शरीर की भूख मिटाने पर अथवा उसके इलाज पर मानसिक भूख की अपेक्षा बहुत अधिक खर्च करते हैं। समय है कि विशेष पाठशालाएं चलाई जाएं और स्त्री-पुरुष बन जाने के बाद भी हम लोग पढ़ना न छोड़ें। समय है कि गांव विश्वविद्यालयों का रूप ग्रहण कर लें। बड़े-बूढ़े ग्रामीण उन विश्वविद्यालयों के सदस्य बन जाएं और यदि वे दरअसल सम्पन्न हों तो अपना शेष जीवन फुरसत में उच्च अध्ययन में लगा दें। क्या संसार सदा एक पेरिस और एक आक्सफोर्ड तक

हा सीमित रहेगा ? क्या विद्यार्थी इस कानकाड के आकाश के तले ही रहकर उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते ? क्या हम किसी अबलार[1] का मूल्य भाषण के लिए नहीं बुला सकते ? और पशुओं को चारा डालने और गोदाम की देख भाल करने से क्या लाभ है यदि विद्यालयों से हम इतने लम्बे समय तक दूर रखा जाए और हमारी शिक्षा की कष्टप्रद उपेक्षा की जाए ? इस देश के ग्राम को बहुत दूर तक यूरोप के सामन्त का स्थान ग्रहण कर लेना चाहिए। उसे ललितकलाओं का सरक्षक बनना चाहिए। उसके पास बहुत काफी धन है। सदाशयता और संस्कृति की ही उसके पास कमी है। ग्राम, किसान और व्यापारियों के काम की चीजों पर तो बहुत काफी धन व्यय कर सकता है लेकिन जिन चीजों को अधिक बुद्धिमान लोग मूल्यवान मानते हैं उनपर धन व्यय करना यहां एक हवाई (यूटोपियन)[2] विचार माना जाता है। भाग्य को अथवा राजनीति का धन्यवाद दीजिए कि इस नगर ने एक सार्वजनिक भवन के निर्माण पर सत्रह हजार डालर खर्च किए। लेकिन शायद जीवित साहित्यकारों पर उनके मस्तकों को अन्न और रस प्रदान करने के लिए उतना ही रुपया सौ वर्षों में भी वह खर्च नहीं करेगा। जाड़े के कालेज को एक सौ पच्चीस डालर चन्दा दिया जाता है। मैं समझता हूं नगर में किसी भी अन्य काम के लिए उगाह गए इतने ही धन की अपेक्षा यह राशि अधिक शुभ काम में खर्च की जाती है। यदि हम उन्नीसवीं शताब्दी में रह रहे हैं तो उन्नीसवीं शताब्दी द्वारा दी गई सुविधाओं का भोग क्यों नहीं करते ? किसी भी दृष्टि से हमारा जीवन गवारू ही क्यों रह जाए ? अगर हम अखबार पढ़ना चाहते हैं तो बोस्टन की गपबाजियों को ठुकरा तत्काल ही ससार का सर्वोत्तम समाचारपत्र क्यों नहीं लेते ? क्या हम 'न्यू इंग्लैण्ड' के 'आलिव ब्रान्चेज' पत्रों की कापत्रों को कुतरना और तटस्थ पारिवारिक पत्रों के चुचुक को चूसना बन्द नहीं करते ? क्या न सभी विद्वमण्डलों के विवरण हम तक पहुंचें और हम उनके ज्ञान की थाह लें ? क्या हम हार्पर एण्ड ब्रदर्स तथा रेडिंग एण्ड कम्पनी पर ही छोड़ें कि वे हमारे लिए पाठ्य-सामग्री का चुनाव करें ? जिस प्रकार एक सुस्कृत रुचि का सामन्त, अपनी संस्कृति के अनुकूल जो कुछ भी उसे मिलता है वही अपने चारों ओर इकट्ठा कर लेता है—प्रतिमा, शिक्षा, व्यग्य

[1] अबेलार (१०७९–११४२), एक प्रतिष्ठित फ्रांसीसी दार्शनिक

[2] सर टामस मूर नामक अंग्रेज लेखक ने लैटिन भाषा में एक व्यग्य लिखा था, जिसमें उसने एक काल्पनिक राज्य का वर्णन किया था। इस हवाई कल्पना को ही यूटोपिया कहते हैं।

पुस्तकें चित्र मूर्तियां संगीत, दार्शनिक तत्त्व आदि आदि, हमारे गांव भी वैसा ही क्या न करें ? एक अध्यापक एक पादरी एक समाधिलेखक, गिरजाघर का पुस्तकालय और तीन निर्वाचित परिषद—बस इन्हीं तक हमारे गांव सीमित क्यों रहें ? क्या इसलिए कि जब हमारे दादा-परदादा को एक शीतऋतु एक काली चट्टान पर काटनी पड़ी थी तो ये ही सब उनके साथी थे।[१] सामूहिक रूप में काम करना हमारी संस्थाओं की आत्मा के अनुकूल ही है और मेरा विश्वास है कि क्योंकि हमारी परिस्थितियां उन सामन्तों की अपेक्षा बहुत उत्तम हैं इसलिए हमारे साधन भी उनसे बहुत अधिक हैं। न्यू इंग्लैंड चाहे तो संसार के सभी विद्वानों को पारिश्रमिक देकर अपनी शिक्षा के लिए बुला ले उन्हें रहने को घर दे उनका भरण पोषण करे और ज़रा भी असंस्कृत न रह जाए। हम ऐसा ही विशेष विद्यालय अपने लिए चाहते हैं। ये ग्राम मनुष्यों के भद्र ग्राम बन जाएं। यदि ज़रूरत पड़े तो नदी के ऊपर एक पुल मत बांधो थोड़ा चक्कर लगाकर चल जाओ पर अपने चारों ओर मुंह बाए पड़े अज्ञान के अंधेरे गड्ढे पर कम से कम एक महराब तो डाल दो।

---

१ जो पहले यात्री इंग्लैंड से चलकर ५ अगस्त, १६४० के दिन अमरीका के तट पर उतरे थे जिन्होंने न्यू इंग्लैंड की बस्ती बसाना आरम्भ की था, यह उन्हीं की ओर संकेत है।

आवाजे

जब हम पुस्तकों तक भले ही व चुनीदा और सर्वोत्तम हा सामित रहते हैं और केवल वे विशिष्ट लिखित भाषाए ही पढ़ते हैं जो मूल रूप में बोलियां हैं और असंस्कृत हैं तब यह खतरा बराबर बना रहता है कि हम उस भाषा को न भूल जाए जिसमें सभी पदार्थ और घटनाए अनलंकृत रूप म बोलती हैं जो व्यापक है और जो स्तर की तो एकमात्र भाषा है। प्रकाशित तो बहुत-सा होता है पर छाप बहुत थोड़े की ही पड़ता है। यदि झिलमिली खिड़की को उतारकर एक तरफ रख दिया जाए तो झिलमिलो म स छन-छनकर आनवाली किरणें आगे याद नहीं की जाएगी। कोई भी तरीका कोई भी अनुशासन सदा-सर्वदा सतक रहने के महत्त्व को कम नहीं कर सकता। दृष्टव्य क्या है, इसके प्रति सतत सचेत रहने व अनुशासन के सामने इतिहास या दर्शन की गति बढ़िया से बढ़िया चुनी हुई कविता अथवा सर्वोत्तम संसग अथवा प्रशंसा योग्य एक उत्कृष्ट जीवन क्रम भी कुछ नहीं हैं। आप एक पाठक बनेंगे या सिर्फ एक विद्यार्थी या एक सिद्ध ऋषि ! अपने भाग्य को पढ़िए, देखिए आपके सामने क्या है और तब भविष्य म आगे बढ़ जाइए।

पहली गर्मी म किताबें मैंने बिलकुल नहीं पढ़ी, मैं अपनी सेमा को निराता रहा। नहीं, नहीं अक्सर मैंने इसस भी उत्तम काम किया। ऐसे अवसर आए जब मैं बौद्धिक अथवा शारीरिक किसी भी काम के लिए वर्तमान क्षण के आकर्षण को बलि देना गवारा नहीं कर सका। अपने जीवन के किनारा पर चौड़ा हाशिया रखना मुझे अच्छा लगता है। कभी-कभी गर्मी की किसी सुबह को प्रतिदिन की तरह नहाकर मैं अपने घर के द्वार पर धूप म बैठ जाता, दोपहर तक बैठा रहता और अनेक कल्पनाओं म खोया रहता। चीड, हिकरी के पेड़ों और स्यूमक की झाड़ियों के बीच अविच्छिन्न एकाकीपन और स्तब्धता रहती। चारों ओर चिड़िया गाती अथवा घर के बीच म को होकर चुपचाप फुर स निकल जाता। और जब सूर्य मेरी पश्चिमी

खिडकी पर था टिकता अथवा सुदूर सडक पर यात्रियो की गाडी का शोर मुझे सुन पडता तभी मैं जागता और तभी कितना समय बीत गया है इस बात का अहसास मुझे होता। ऐसे अवसरो पर मेरा मन उतना ही बढ जाता जितने कि रात मे अन्न के पौधे लम्बे हो जाते है। और यह समय किसी हाथ के काम की अपेक्षा कहीं ज्यादा बढिया तरह कट जाता। यह समय जसे मेरे जीवन की अवधि मे से कम नहीं हो गया था बल्कि निश्चित अवधि से अधिक ही मुझे मिल गया था। ध्यान के और कर्म के विसर्जन का पूर्व के लोग क्या मतलब लगाते हैं यह मैंने तभी अनुभव किया। समय कैसे बीत रहा है इस बात की मुझे अधिक चिन्ता नहीं होती थी। दिन चलता रहता और मेरे काम को कम व हलका करता जाता। अब सुबह थी तो अब सन्ध्या हो गई और कुछ भी स्मरणीय नहीं किया जा सका। अपने निरन्तर सौभाग्य पर चिडिया की तरह गाने के बदले मैं चुपचाप मुस्करा भर देता। जिस तरह मेरे द्वार के सामने हिकरी वृक्ष पर बैठी गौरैया कम्पित स्वर मे गाती है उसी प्रकार मेरे अन्दर से एक मन्द हसी या दबा दबा सा तराना फूटता जिसे मेरे घोसले मे से बाहर बहता वह चिडिया सुन सकती। मेरे दिन किसी प्राचीन देवी देवता की छापवाले सप्ताह के दिन नहीं थे। उन्हे घण्टो मे खण्ड-खण्ड नहीं कर दिया गया था। मेरा दिन घडी का टिक टिक से उद्विग्न नहीं रहता था। मैं तो पुरी जाति के आदिम वासियो की तरह रहता था जिनके बारे मे यह कहा जाता है कि कल आज और आनेवाले कल के लिए उनके पास केवल एक ही शब्द है और अर्थ की विभिन्नता को वे शब्द से पहले क्रमश बीता हुआ अब का और आनेवाला बताकर प्रकट करते हैं। निस्सन्देह मेरे नगरवासो की दृष्टि मे यह सब शुद्ध काहिली था लेकिन यदि चिडियो और फूलो ने मुझे अपने मापदण्ड से नापा होता तो मुझमे जरा भी कमी न मिलती। यह सच है कि मानव को आत्मचिन्तन के क्षण ढूढ निकालने ही चाहिए। नैसर्गिक दिन बडा ही शान्त होता है। वह मानव के ऐसे निठल्लेपन की भर्त्सना कठिनाई से ही करेगा।

अपनी जीवन पद्धति मे औरो से कम से कम एक लाभ मुझे अधिक प्राप्त था। और लोगो को मनोरजन के लिए सभा-सोसाइटियो मे या नाटकगृहो मे जाना पडता था पर मेरा जीवन ही मेरे लिए मनोरजन बन गया था और उसके नयेपन मे कभी भी फर्क नहीं आता था। वह बहुरूपदृश्य सा था एक अन्तहीन नाटक था। वास्तव मे यदि निकट-अतीत मे सीखी सर्वोत्तम पद्धति के अनुसार जीवन का निर्वाह

और उसका नियमन हम सतत करते चले जाएं तो मानसिक क्लान्ति हम कभी भी अनुभव नहीं करेंगे। अपनी प्रज्ञा का बहुत नज़दीक से अनुसरण कीजिए और आपके सामने नये मार्ग खोलने में वह कभी चूक नहीं करेगी। घर का काम मेरे लिए एक सुन्दर मनोरंजन था। जब मेरा फर्श गन्दा हो जाता तो मैं जल्दी ही उठता और अपना सामान बिस्तर और परदे सब एक ढेर बनाकर बाहर घास पर रख देता। तब मैं फर्श पर पानी छिड़क देता, तालाब से सफेद रेत लाकर वहां बिखेर देता और झाड़ू से रगड़-रगड़कर फर्श को स्वच्छ और श्वेत बना देता। जब तक गांववाले सुबह का नाश्ता खत्म करते, सूरज मेरे घर को इतना सुखा चुकता कि मैं अन्दर बैठ सकूं। मेरा चिन्तन इस बीच भी अविच्छिन्न चलता रहता। अपने घर का सारा सामान किसी खानाबदोश के छोटे-से गट्ठर जैसा छोटी-सी ढेरी में घास पर रखा देखना बहुत ही सुहाना लगता था। मेरी तीन टांगोंवाली मेज़ जिसपर से किताबें कलम और स्याही मैं हटाता नहीं था, चीड़ और हिकरी के पेड़ों के बीच रखी बहुत ही प्यारी लगती थी। ये चीज़ें बाहर निकलकर स्वयं भी बहुत प्रसन्न दीखती थीं और जैसे अन्दर आने को राज़ी नहीं होती थीं। कभी-कभी तो मेरी इच्छा होती कि मैं इनके ऊपर एक तिरपाल तान दूं और वहीं बैठ जाऊं। इन चीज़ों पर धूप का चमकना देखना और इनपर से चलते मुक्त पवन की सरसराहट को सुनना समय का सदुपयोग था। ये सर्वाधिक सुपरिचित चीज़ें घर के अन्दर की अपेक्षा बाहर रखी कहीं अधिक रोचक लगती थीं। एक चिड़िया सबसे पासवाली टहनी पर बैठी है, 'लाइफ एवरलास्टिंग' का पौधा मेज़ के नीचे उग रहा है, कृष्ण बदरी की लताएं मेज़ की टांगों से लिपटी हैं और चीड़ के और बबूल के फल और तृण बदरी के पत्ते उसके चारों ओर बिखरे हैं। साफ दीख पड़ता था कि फर्नीचर, मेज़, कुर्सियों और पलंगों के रूप में रूपान्तरित होने से पहले ये सब वस्तुएं अपने मूल रूप में इन्हीं पेड़ों के बीच रही होंगी।

मेरा घर एक पहाड़ी की ढलान पर, बड़े जंगल के तटवर्ती चीड़ और हिकरी के छोटे-से जंगल के बीच में स्थित था। तालाब मेरे घर से लगभग तैनाम गज़ की दूरी पर था। एक पतली पगडण्डी पहाड़ी से उतरकर तालाब तक जाती थी। मेरे सामने के आंगन में तृण बदरी, कृष्ण बदरी, लाइफ-एवरलास्टिंग, जान्सवर्ट और स्वर्णनाका, झबओक और रसभरी, नीलबदरी और मूंगफली के पौधे उगा करते थे। मई के अन्त तक कोमल से फूलों से रसभरी के पौधे पगडण्डी के दोनों ओर सज उठे। अपनी

छाटी डडियो पर छतर-सा बनाए वे नलाकार छत्त य फूल किरणो की तरह भूमि पर दोना आर वृत्ताकार भरते थ। इन्ही डडियो पर पिछली बार बहुत खूबसूरत बडी बडी बेरी उगी थी। व फूल स्वादिष्ट नही थ पर प्रकृति को उचित सम्मान दने की खातिर मैंने उन्हें चखा। "मक" घर के चारो ओर जमकर उगा। वह मरी बनाई मड म को भीतर घुस आया और पहली मौसम म ही पाच या छ फुट लम्बा हो गया। उसके पखनुमा उष्णकटिबन्धीय पत्ते विचित्र दीखते हुए भी बहुत ही सुहान लगते थे। मरी-सी लगनेवाली सूखी टहनिया का बडी-बडा डोडिया वसत के अन्तिम भाग म अचानक ही जादू के खेल की तरह स्वय ही टरी हो आइ और एक इच मोटी कोमल आकर्षक टहनियों के रूप म फट आइ। ये टहनिया इतनी तजी स और लापरवाही स उगती थी और अपन दुबल जोडो पर इतना जोर डालती थी कि कभी कभी जब मैं खिडकी म बठा होता था तो किसी ताजी और कोमल टहनी को अपन ही बोझ से चटखकर अचानक टटत और पख की तरह धरती पर गिरते सुनता था। मजा यह कि उस समय हवा सास भी नही भर रही होती थी। जिन बरियो पर जब वे फूल थी शहद की मक्खिया मडरा उठती थी भूरे की भुण्ड वही बरिया अब अगस्त म गहरे लाल मखमल क चमकदार रग म खिल उठी थी। उनके बोझ से कोमल टहनिया झुकी और टटी पडती थी।

गर्मियो के ऐसे तीसरे पहर मैं खिडकी म बठा हू। बाज मेरे घर के चारो आर पडी खाली जगह के ऊपर चक्कर लगा रहे हैं। जगली कबूतर दो दो तीन-तीन के जोडो म मरी आखो के सामने दौड भपट करते हैं या फिर मेरे घर के पीछे खडे सफेद चीड की टहनियो पर अस्थिर भाव से बठते है और इस प्रकार हवा म एक सरसराहट पैदा करते हैं। एक मछलीमार बाज तालाब की शीशे की तरह चमकती सतह पर चाकू चलाकर एक मछली ले उडता है। मेरे द्वार के सामने के दलदल म स चुपचाप निकलकर एक ऊदबिलाव तालाब के किनारे स एक मेढक पकड ले जाता है। पानी की चिडियाए इधर से उधर फुदकती फिर रही हैं और उनके बोझ म मुस्ता घास झुकी जाती है। पिछले आधे घण्टे से मैं रेल के डिब्बो की खडखडाहट सुन रहा हू जो तीतर की आवाज की तरह कभी रुक जाता है कभी फिर उभर उठती है। यह रेल यात्रियो को बास्टन नगर से ग्रामो की ओर ले जा रही है। मैं इतना तो दुनिया से बाहर नही रह रहा था जितना कि वह लडका जिसके बारे म सुना जाता

है कि उसकी अपनी मर्जी से उसे पूर्वी भाग में एक किसान के यहां रख दिया गया। पर बहुत जल्दी ही वह वहां से भाग निकला। जब वह घर वापस पहुंचा तो उसकी दशा बड़ी ही भयावह थी और वह घर के लिए तरस रहा था। उसने ऐसी उकता देनेवाली अलग-थलग जगह कभी नहीं देखी था। सभी लोग वहां से भाग चुके थे। एक मोटर तक तो वहां सुन नहीं पड़ती थी। ऐसी जगह मसाचूसेट्स में अब कहीं शायद ही हो

अमरीका में हमारा गांव रम्य बिन्दु बन गया है
रत्न-रूपी तीरों की बौछारों का
हमारी शान्त धरती पर दौड़ते हुए
उनकी आवाज रहती है—बानक्राड।

जहां मैं रहता हूं वहां से लगभग ५५० गज दक्षिण में फिचबर्ग रेल-पथ सरोवर को छूता है। मैं इसके साथ-साथ जानेवाली पगडण्डी से ही आम तौर पर गांव जाया करता हूं। इसी सूत्र से मैं समाज से जुड़ा हूं। सड़क के साथ-साथ अन्त तक जानेवाली मालगाड़ियों पर चढ़े लोग पुराना परिचित मानकर अक्सर मेरा अभिवादन करते हैं। कितनी ही बार वे मेरे पास से गुजरते हैं और स्पष्ट है कि वे मुझे एक कर्मचारी समझते हैं। और वह मैं हूं भी। मैं तो इस भू-ग्रह की कक्षा में कहीं भी सड़क को मरम्मत करनेवाला मजदूर बनना सहर्ष स्वीकार कर लूंगा।

इंजन की सीटी किसी किसान के खेत के ऊपर से तैरते हुए बाज की चीख की तरह जाड़े-गर्मी मेरे जंगल को चीरती रहती है। वह मुझे सूचित करता रहती है कि कितने ही व्याकुल व्यापारी कस्बे की सीमा में पहुंच रहे हैं अथवा दूसरी दिशा से ग्रामों के साहसी बनिये चले आ रहे हैं। जैसे ही वे एक आसमान के तले पहुंचते हैं वे एक-दूसरे को अपने रास्ते से हट जाने की चेतावनी देते हैं। कभी-कभी तो उनका शोर दो कस्बों तक सुना जा सकता है। गांववालो! यह लो अपना पसारट्टा और यह है तुम्हारा भोजन! अपने खेत में मजा कोई भी किसान इतना आत्मनिर्भर नहीं है कि वह सब लेने से इन्कार कर सके। ग्रामीण सीटी-सी बजाता हुआ चलता है, यह लो अपना पसा! लम्बे मूसलों की तरह लकड़ियां बीस मील प्रति घण्टा की गति से नगर प्राचीर में प्रवेश कर रही हैं। साथ ही इन दीवारों के पीछे रहनेवाले थके-मांदे भार से भुके नागरिकों के बैठने के लिए बहुत काफी कुर्सियां भी वहां

भेजी जा रही हैं। ऐसे भारी भरकम ग्रामीण शिष्टाचार के साथ ग्राम नगर को कुर्सी पेश करता है। आदिवासियों की पहाड़ियों से सारी हक्कन बेरियाँ और मसाली झाड़ियों से अम्लउदरी चट-चटकर नगर में पहुँचा दी जाती है। कपास इधर आता है बुना हुआ कपड़ा उधर जाता है रेशमी कपड़ा इधर आता है ऊनी उधर जाता है। पुस्तकें इधर आती हैं पर उनको लिखनेवाली प्रतिभा उधर चली जाती है।

जब मैं किसी इंजन को ग्रहों के गतिक्रम में अथवा एक पुच्छल तारे की तरह—देखनेवाला नहीं कह सकता कि इतने ही वेग से इसी दिशा से इसी जगह यह तारा फिर कभी लौटेगा या नहीं क्योंकि उसका ग्रह-पथ वर्तुलाकार नहीं दीख पड़ता—डिब्बों की कतार के आगे आगे चलते हुए देखता हूँ जब मैं उसके धुएँ के बादल को पताका की तरह आकाश में बहुत ऊँचे जाकर प्रकाश के सामने अपने को छितरा देनेवाले कामरूप जलद की तरह पीछे की तरफ लहराते और सुनहरे स्वप्न छोड़ते हुए देखता हूँ मानो कि यह यात्री यम यह धूम्रपायी संध्या के आकाश को अपने डिब्बों के भोजन के रूप में कब अभी नीचे ले आएगा जब मैं इस लोहे के घोड़े को अपनी वज्र गर्जना जैसी हिनहिनाहट से आकाश को गुंजाते और धरा से धरती को कँपाते हुए और अपने नथनों में आग और धुआँ निकालते हुए देखता हूँ (मैं नहीं जानता कि नये पुराण शास्त्र में उसे किस किस्म का उड़नेवाला घोड़ा या आग उगलनेवाला दैत्य कहेंगे) तब मुझे लगने लगता है कि धरती को बसने के योग्य असल जाति अब आकर मिली है। कहीं जैसा लगता है वैसा ही सच हुआ भी होता और आदमी ने उदार लक्ष्य लेकर ही पंचभूतों को अपना दास बनाया होता! कहीं इंजन के ऊपर मँडरानेवाला धुएँ का बादल किन्हीं वीर-कृत्यों के कारण आया पसीना होता अथवा वह उतना ही लाभदायक होता जितना कि किसान के खेत पर मँडरानेवाला जलद होता है तब पंचभूत और स्वयं प्रकृति सभी मानवीय प्रयासों में आनन्द से उसका साथ देते और उसका संरक्षण करते।

मैं प्रातःकालीन रेलगाड़ियों के गुजरने को उसी भाव से देखता हूँ जिस भाव से मैं सूर्योदय को देखता हूँ क्योंकि सूर्य कठिनाई से ही उनकी अपेक्षा अधिक नियमित होगा। उनके धुएँ की लहरें बहुत दूर पीछे तक फैलती और ऊँचे में ऊँचे उठती चली जाती हैं। ये स्वर्ग की ओर बढ़ती हैं जबकि रेल बोस्टन नगर की ओर चली जाती है। ये लहरें क्षण भर के लिए सूर्य तक को ढक देती और मेरे सुदूरस्थ खेत पर छाया कर देती हैं। धुएँ के बादलों की

इस स्वर्गीय रेल की बराबर में मैंडली हुई धरती से चिपटी यह डिब्बावाली रेल माले पर के छल्ला जमी ही प्रतीत होती है। इस लौह-अश्व का सारथी अपने तुरग को चारा देने और उसे जोतने के लिए इन पहाड़ों के शीत में भी बहुत सुबह ही तारों के प्रकाश में उठ गया था। उसमें आवश्यक गर्मी लाने के लिए और उसे चालू करने के लिए आग बहुत जल्दी ही जला ली गई थी। यदि कहीं यह प्रात श्रम भी उतना ही श्रेष्ठ हुआ होता जितना कि यह प्रभात पवित्र है! जब भारी बर्फ पड़ी होती है तब इंजन के पैरों से बर्फ के जूते बांध दिए जाते और वह एक दैत्याकार हल से पहाड़ों में लेकर समुद्र-तट तक एक खाई खोदता जाता है जिसमें अनाज बोने की कल जैसे किसी व्याकुल लोगों को दिनरात और तरह-तरह का सामान बीज के रूप में ग्रामीण अंचलों में फैलाते चले जाते हैं। पूरे दिन यह आग से चलनेवाला घोड़ा देश भर में उड़ता फिरता है बस तभी रुकता है जब इसका स्वामी आराम लेना चाहता है। मैं आधी रात के समय इसकी घड़घड़ाहट और अक्खड़ हिनहिनाहट को सुनकर जाग उठता हूं। उस समय यह किसी सुदूर घाटी के जंगलों में बर्फ के आंधी-तूफान का सामना करता होता है। यह अपने अड्डे पर भोर के तारे के साथ ही पहुंच पाता है और तत्काल ही बिना आराम या नींद लिए फिर अपनी यात्रा पर चल देता है। अथवा कभी-कभी इसकी आवाज को मैं इसकी घुड़साल में आती सुनता हूं। वहां यह कुछ घण्टों की लौह निद्रा में पहले दिन भर की फालतू भाप निकालता है जिससे इसकी नस नाड़ी शान्त हो सके और पेट तथा दिमाग ठण्डा हो सके। यह उद्यम जितना लम्बा और अथक है वही यह उतना ही वीरत्वपूर्ण और प्रभावी भी हुआ होता!

प्रदेशों के सामान्तों पर खड़े उन अछूते जंगलों में जहां दिन तक में कभी कोई शिकारी ही जाता था माहौल करता था घुप्प अंधेरी रातों में चमकते हुए डिब्बे भपाक से निकल जाते हैं और अन्दर बैठे लोगों का पता भी नहीं चलता। अब ये कस्बे या नगर के किसी गैलनदार स्टेशन पर जहां भीड़ के भीड़ नागरिक इकट्ठे हैं रुकते हैं तो अब उल्लुओं और लोमड़ियों को डराता हुआ डिस्मल स्वाम्प जैसे किसी अंधेरे दलदली प्रदेश में जा खड़ा होता है। इन गाड़ियों के पहुंचने और रवाना होने के क्षण गाववालों के लिए दिन के महत्त्वपूर्ण क्षण बन गए हैं। ये गाड़ियां इतने नियमित और अनिश्चित ढंग से आती-जाती हैं और इनकी मांगियां इतनी दूर तक सुनी जा सकती हैं कि किसान उनसे अपनी घड़ियां ठीक करते हैं। इस प्रकार

सुचालित संस्था पूरे देश का नियमन करती है। रेलों के आविष्कार के बाद से लोगों की समय की पाबन्दी क्या कुछ बढ नहीं गई है ? बग्घियों के अड्डे की अपेक्षा रेल के स्टेशन पर लोग क्या अधिक तेजी से नहीं सोचते या बातें करते ? रेलवे स्टेशन के वातावरण में कुछ बिजली का सा असर है। इसके चमत्कारों को देखकर मैं ताज्जुब में रह जाता हूं। अपने कुछ पडोसियों के बारे में मेरी निश्चित भविष्यवाणी थी कि वे इतनी पाबन्द सवारी से बोस्टन की यात्रा कभी भी नहीं कर सकते। वही लोग अब घण्टी बजते ही गाडी पकड लेते हैं। रेलवाले तरीके से काम करना अब एक लोकोक्ति बन गया है। यह ठीक ही है कि ऐसी शक्ति अपने रास्ते से हट जाने की ठोस चेतावनी बार-बार सबको दे। इसके लिए उस उपद्रव-सम्बन्धी कानून का अध्ययन करने की और भीड के सिरों के ऊपर से गोलियां दागने की जरूरत नहीं पडती। इंजन के रूप में हमने एक भाग्य की जीवन के धागे को काट देनेवाली ग्रीक पुराणों की देवी अत्रपास[1] की सृष्टि कर ली है और वह अपने पथ से कभी नहीं हटती। (आपके इंजन का भी यही नाम होना चाहिए।) लोगों को विज्ञापित किया जाता है कि अमुक घण्टे के अमुक मिनट ये तीर नक्शे के अमुक विशिष्ट दिशा की ओर छोड जाएंगे। फिर भी ये इंजन किसी के काम धन्धे में हस्तक्षेप नहीं करते। बच्चे दूसरे मार्ग से निश्चिन्त अपनी पाठशालाओं को जाते हैं। इसके कारण हमारा जीवन और दृढ हो गया है। इस प्रकार हम सभी को टेल[2] के पुत्र बनने के लिए शिक्षित किया जाता है। हवा अदृश्य बाणों से भरी हुई है। आपके अपने मार्ग के सिवाय सभी अन्य राहें भाग्य की राह हैं। तब आप अपने ही मार्ग पर जमे रहिए।

वाणिज्य की उद्यमशीलता और साहसिकता की मैं प्रशंसा करता हूं। वाणिज्य हाथों को नहीं मलता, जुपिटर[3] की प्रार्थनाएं भी नहीं करता। कम या अधिक साहस और विश्वास से भरे इन लोगों को मैं प्रतिदिन अपने-अपने धन्धों पर जाते देखता हूं। ये लोग अनुमान से भी अधिक कर जाते हैं और शायद किसी भी सुयोजित धन्धे की अपेक्षा अधिक उत्तम और सफल उद्यम में ये जुटे हैं।

१ ग्रीक पुराणों की तीन भाग्य देवियों में सबसे बडी, जो जीवन सूत्र को काट देती है।
२ पन्द्रहवीं सदी में स्विट्जरलैंड पर आस्ट्रिया का राज्य था। आस्ट्रियन प्रशासक गेस्लर के अत्याचारों के विरुद्ध वालचन के किसान टेल ने विद्रोह किया था। गेस्लर ने उसे दण्ड दिया कि वह अपने बेटे के सिर पर रखे सेब का निशाना लगाए। टेल सफल रहा।
३ प्राचीन रोमनों का देवराज

व्यूना विस्टा[1] म जो लोग अग्रिम पंक्ति म आधे घण्टे तक टिके रहे उनकी वीरता मुझे इतनी प्रभावित नहा करती जितनी कि इन लोगा का दृढ़ता और साहसिकता जो प्रसन्नता के साथ शरे जाडा म वर्फ हटानेवाली गाडी का ही अपना घर बना लेते हैं, जिनम,नेपोलियन बोनापार्ट द्वारा दुर्लभतम बताई गई प्रात तीन बजे उठने की हिम्मत ही सिर्फ नहा है वल्कि जिनका उद्यम आराम लेना नही जानता जो तभी सोने का नाम लेते हैं जब तूफान मा जाता है या उनके लौह अश्व की नसें ठडी पड जाती हैं। इस सुबह जब भीषण हिमपात हुआ है, हिम-खण्ड अभी तक गरज रहा है और लोगा के रक्त का जमाए दे रहा है मैं उनकी जमी हुई निश्वासा स बने कुहरे के भीतर से फूटती उनके इजन की सीटी की दबी हुई आवाज का सुन पा रहा हूँ। यह घोषित कर रही है कि न्यू इग्लैंड के उत्तर-पूर्वी हिम झझावात की अवहेलना करके रेल अविलम्ब ही चली आ रही है। बर्फ हटानेवाले हल के चालकों का मैं देखता हू। वे हिम और कुहर मे आवृत हैं। उनके सिर मिट्टी धकेलनेवाले उस पटट के ऊपर उठे दीख पड रहे हैं जो गुलबहार के पौधा और चूहा के बिला को उखाडकर इधर उधर छितराता जाता है। ये ढेर विश्व से बहिष्कृत जमे सियरा नेवादा[2] प्रदेश की विशाल शिलाओ के समान वडे प्रतीत होते हैं।

वाणिज्य अप्रत्याशित रूप से आत्म विश्वस्त गम्भीर, सतर्क साहसिक और अथक होता है। इसकी प्रणालिया कितने ही ऊटपटांग उद्यमा तथा भावुक प्रयोगा की तुलना म कहा अधिक स्वाभाविक होती हैं और यही इसकी अद्वितीय सफलता का रहस्य है। जब मैं अपने पास से मालगाडियो को खडखडाकर गुजरते देखता हू और उनके माल की उस सुगध का सूघता हू जिसे वे लाग वार्फ[3] से लेकर लेक चाम्प्लेन[4] तक रास्ते भर बाटती चलती हैं तो मैं ताजा हो उठता हू और मेरी छाती फूल जाती है। यह मुझे विदेशी भूभागा की, मूंगे की चट्टाना की हिन्द महासागर की, उष्णकटिबन्धीय जलवायु की और इस भूगोलक के विस्तार की याद दिलाती है। जब मैं ताड के उन पत्ता को देखता हू जो अगली गर्मिया म न्यू इग्लैंड के कितने ही लोगा के सन के से रगवाले सिरा को ढकेगे, जब मैं मनीला से आए सन और गोले के वालो को पुराने कबाड़, बोरियाँ रद्दी लोहे के ढेर और जग लगी कीलो को

१ नार्थ रीवर पर अवस्थित रावलिन काउण्टी का एक नगर
२ पूर्वी कैलिफोर्निया की एक पर्वत श्रेणी
३ एक बन्दरगाह ४ एक झील, जिसका कुछ भाग कनाडा में है शेष अमरीका में

देखता हूँ तब मैं अपने को विश्व का नागरिक समझने लगता हूँ। ये फटे-पुराने गाड़ी भर बादबान अब अधिक सुन्दर और रोचक लगते हैं। कागजों और छपी हुई पुस्तकों में रूपान्तरित होकर ये ऐसे नहीं लगेंगे। इनके इन छेदों को छोड़कर भला कौन है जो इनके द्वारा सह गए तूफानों के इतिहास को इतने चित्रात्मक ढंग से अंकित कर सके। ये वे प्रूफ हैं जिनके और अधिक गौर की जरूरत नहीं है। यह मेन के वनों की लकड़ी जा रही है। पिछली बार की बाढ़ में इसे समुद्र तक नहीं भेजा जा सका था। अब हजार पर चार डालर चढ़ गए हैं क्योंकि कुछ को तो भेजा गया ही था और कुछ को चीर लिया गया था। पहली, दूसरी, तीसरी और चौथी श्रेणी की चीड़, सनोवर और देवदारु की लकड़ियाँ इनमें हैं। अभी कुछ ही पहले तक ये सब एक ही श्रेणी की थी और भालुओं, हिरनों तथा रेनडियरों के ऊपर छाया करती थी। यह बहुत बढ़िया किस्म का थॉमस्टन का चूना जा रहा है जो बहुत सारी पहाड़ियों को पार करते-करते चरा बन चुकेगा। ये पुराने चिथड़ों की गाँठें हैं। इनमें सभी रंग और किस्मों के कपड़े हैं। सूती और रेशमी पोशाकें इस निम्नतम अवस्था को प्राप्त हो जाती हैं। जिनमें मलमल आदि से और अंग्रेजी, फ्रान्सीसी, अमरीकी छापों के बढ़िया कपड़ों से मिली पोशाकों की और उन नमूनों की मिलवाँकी को छोड़कर जिनके लिए अब कोई नहीं चीखता यही अन्तिम गति है। गरीब और धनी सभी क्षेत्रों में ये चिथड़े इकट्ठे किए जाते हैं। इनसे एक अथवा कई रंगों का कागज बनेगा जिनपर उच्च और निम्न वास्तव जीवन की तथ्याधारित कहानियाँ लिखी जाएँगी। इस बन्द डिब्बे से नमक लगी मछली की गंध आ रही है। यह न्यू इंग्लैंड की तेज तिजारती गंध है जो मुझे ग्रैंड बैंक्स और मछलीगाहों की याद दिलाती है। नमक लगी मछली किसने नहीं देखी है? उसे ऐसा तैयार कर लिया जाता है कि कोई भी चीज उसे खराब नहीं कर सकती। उसके धैर्य के सामने सन्त भी लजा जाएँ। इससे आप सड़क साफ कर लीजिए अथवा इसे उसपर जड़ ही दीजिए। इससे अपनी लकड़ियाँ फाड़ लीजिए। कोचवान चाहे तो धूप, आँधी और वर्षा में अपनी और अपनी सवारियों की रक्षा करने के लिए इनका प्रयोग कर ले। कोई दुकानदार—और बोस्टन के एक दुकानदार ने एक बार ऐसा किया भी था—चाहे तो इसे अपनी दुकान के सामने दुकान खोलने के समय सूचक-पट्ट के रूप में लटका दे और पुराने से पुराना कोई ग्राहक निश्चित रूप से यह नहीं बता सकेगा कि यह कोई पशु है या सब्जी है या धातु है। इतने पर भी यह बर्फ के गाले जैसी विशुद्ध बनी

एगी और यदि उस बरतन में डालकर उबाल लिया जाए तो यह शनिवार के रात्रि-भोज के लिए बहुत उत्तम भोजन सिद्ध होगी। इसके बाद मन में आई बातें है। इनकी पटों में वही बल और काण वनमान हैं जो तब था जब मैं बना के रूप में स्पेन के वमहान मस्ताना में भाग नीड रही थी। यह हर विस्म के हठवाद का ही प्रतीक है। इससे प्रकट है कि शारीरिक बनावट में रह गए सभी तरह के दोष कितने असाध्य होते हैं। मैं यह मानता हूं कि व्यवहारत जब मैं किसी व्यक्ति के असल स्वभाव को जान लेता हूं तो मुझे उसके इस जन्म में सुधरने या बिगडने की कोई आशा नहीं रहती। पूर्व के लोग कहा करते हैं कुत्ते की पूछ को गरम करके दबाकर उसपर पट्टियां लपेट दीजिए। बारह वर्षों तक इसी प्रकार करते रहने पर भी उसकी नैसर्गिक आकृति यथावत ही रहगी। इन पट्टो में जैसी बद्धमूलता मिलती है उसका तो बस एक ही रामबाण निदान है कि इनसे सरेस बना लिया जाए। मैं समझता हूं आम तौर से इनसे सरेस ही बनाया जाता है और तब ये चिपककर एक जगह स्थिर रहती हैं। ये सिरके अथवा ब्रांडी के पीपे हैं जो ग्रीन माउण्टेन्स से कर्टिगविल दरमाट के किसी जान स्मिथ नामक व्यापारी के लिए जा रहे हैं। वह स्वदेशी आयात तब करता है जब माल समाप्त होने लगता है। फिलहाल वह अपनी दुकान पर खड़ा होकर तट पर अभी पहुंचे माल का ही ध्यान कर रहा होगा और सोच रहा होगा कि दरी का मूल्य पर क्या प्रभाव पडेगा। और इसी क्षण वह अपने ग्राहकों को बता रहा होगा कि मैं बस अगली ही गाड़ी में बढिया किस्म का माल आने की आशा कर रहा हूं। यही बात सुबह से बीस बार वह उन्हें बता चुका होगा और कर्टिगविले टाइम्स में भी इसका विज्ञापन कर चुका होगा।

ये चीजें जा रही हैं तो दूसरी आ रही हैं। सनसनाहट की आवाज से चौंककर मैं पुस्तक से सिर उठाता हूं तो क्या देखता हूं कि सुदूर उत्तरी पहाड़ियों से काटकर लाया गया ग्रीनमाउण्टेन्स और कनेक्टीकट के ऊपर से उड़कर आया हुआ चीड का एक लम्बा पेड़ कस्बे के बीच में दस मिनट में तीर की तरह निकल जाता है और कोई अन्य कठिनाई से ही उसे देख पाता है। यह शायद किसी महान नौसेना पति का मस्तूल बनने जा रहा है।

और सुनिए, यह पशुओं की गाड़ी चली आ रही है। इसमें एक हजार पहाड़ियों के पशु हैं। भेड़ें के बाड़े घुड़सार और गोशालाएं हवा में उड़ी चली जा रही हैं ... अपना डंडिया लिए ग्वाले सरल और चरवाह अपने यूथों के बीच में खड़े हैं। पहाड़ी

चरागाहा के सिवाय सभी कुछ तो है और सितम्बर की आ्ंधिया मे पहाडो म टट पत्ता की तरह ये सब उडे जा रहे हैं। बछडा और भेडा के मिमियाने और बला के रभान की आवाजें हवा मे एसे गज रही हैं जसेकि एक गावर घाटी हो चली जा रही हो। जब आगेवाले पशु के गले की घण्टी बजती है तो पहाड मरा की तरह छोटी पहाडिया मेमना की तरह सचमुच ही फुदकने लगती हैं। बीच के एक डिब्बे म ग्वाल सईस और चरवाहे भरे हैं। उनका धधा जा चुका है और व अपने पशुओ मे समस्तर हो गए हैं। लेकिन अपनी बेकार छडिया को अब भी अपने पद क बिल्ला की तरह उहाने छाती से चिपका रखा है। लेकिन उनके कुत्ते कहा हैं? उनके लिए तो यह सब एक खलबली और भगदड है। उह दूर भगा दिया गया है। व सबने की अपनी शक्ति खो बठे ह। मुझे लगता है पीटरवरा हिल्स के पीछे कहीं से उनके भौंकन अथवा ग्रीन माउण्टेन्स के पश्चिमी इलाका पर उनके सरपट दौडने की आवाज़ मेरे काना म पड रही है। अब मरने समय वे अपने स्वामी क साथ नही होंगे। उनका धन्धा छिन चुका है। अब उनकी स्वामिभक्ति और बुद्धिमत्ता अपने स्तर से गिर चुकी है। वे अपमानित की तरह या तो अपनी मादा म मुह छिपा लेंगे या शायद जगली बन जाएगे और भेडिया और लोमडिया क साथ दौड लगाएगे। इस तरह आपकी पशुचारण सस्कृति सनसनाती आई और निकल गई। लेकिन रेल की सीटी बज रही है। मुझे पटरी स हट जाना चाहिए और डिब्बा को आग बढन दना चाहिए

रेल-पथ मेरे लिए क्या है ?
उसका सिरा कहा है
यह दरसन मैं कभी नही जाना।
यह कुछ गड्ढा का भर दता है
अबाबीला को बठन की जगह दता है
रेत को उडाता है
कृष्ण बदरी को उगाता है।

लेकिन मैं बगाडिया की लीक की तरह रेल की पटरियो को पार कर जाता हू। मैं इसके धुए और भाप से और इसकी आवाज़ म अपनी आखा और काना को फोडना नहीं चाहूगा।

रेल के डिब्बे और उनके साथ उनकी व्याकुल दुनिया जा चुकी है। तालाब की मछलियां अब उनकी धड़धड़ाहट महसूस नहीं कर रही हैं। मैं सदा की अपेक्षा अधिक अकेला हो गया हूं। लम्बे तीसरे पहर के शेषांश में सुदूर मार्ग पर से जाने वाली गाड़ी या बग्घी की हलकी खड़खड़ ही मेरे ध्यान मनन में बाधा डाल ती रहती।

कभी-कभी इतवार के दिन जब हवा अनुकूल होती है मैं लिंकन, एक्टन, बेडफोर्ड अथवा कानकार्ड के गिरजा की घण्टियां सुनता हूं। यह एक मन्द, मधुर प्राकृतिक संगीत होता है। इसका इस उजाड़ में पहुंच पाना अभिनन्दनीय लगता है। जंगलों के ऊपर से बहुत लम्बी दूरी तय करने के कारण इस ध्वनि में एक विशेष थरथराहट से भरा राग आ जाती है, लगता है जैसे आकाश में उठे चीड़ के पत्ते सारंगी के तार हों जिनको छूकर यह ध्वनि चली आ रही है। दूर कहीं धरती के उभारों के बीच का आकाश एक ऐसी नीली आभा प्रदान करता है कि वह हमारी आंखों को और भी अधिक रोचक लगने लगता है। ठीक इसी प्रकार अधिकतम सम्भव दूरी से आकर कानों में पड़नेवाली सभी ध्वनियां एक जैसा ही प्रभाव पैदा करती हैं। वे विश्व-वीणा की थिरकन का रूप ग्रहण कर लेती हैं। मुझे तो इस रूप में वह स्वर-लहरी सुनने को मिली जिसे पवन ने प्रसारित किया, जिस वन के हर पत्ते और नुकीली पत्ती का स्पर्श प्राप्त हुआ, जो पंचभूतों द्वारा बनाए, संवारे गए और घाटी घाटी में गुंजाए गए ध्वनि-संगम का एक अंश थी। प्रतिध्वनि कुछ दूर तक मूल ध्वनि ही होती है और इसीमें उसका जादू और आकर्षण निहित है। घंटी की ध्वनि में जो कुछ पुनरावृत्ति योग्य था सिर्फ वही यह नहीं है, आंशिक रूप में यह जंगल की आवाज भी है। शब्द और लय तो वही सही पर इसे एक वनदेवी ने गाया है।

सन्ध्या समय जंगलों के परे बहुत दूर स्थित किसी गाय का रंभाना आकाश में उठकर मुझ तक पहुंचता है और बड़ा ही मीठा और सुरीला मालूम पड़ता है। पहले-पहल तो मैं समझा कि यह किन्हीं उन वनगायिकों का संगीत है जिनका माधुर्यगायन मैंने कई बार सुना है और जो शायद अब भी पहाड़ियों पर और घाटियों में घूम रहे हैं। लेकिन जब गाय के सस्ते नैसर्गिक संगीत के रूप में यह ध्वनि लम्बी खिंचती तो मैं असल बात जान गया पर इससे कोई अरुचि या निराशा मुझे नहीं हुई। जब मैं कहता हूं कि उन नवयुवक गायकों का संगीत गाय के संगीत के समकक्ष

था, तो मेरा उद्देश्य उनपर व्यंग्य करना नहीं है। मैं तो उनकी प्रशंसा ही करना चाहता हूं। आखिर उनका संगीत भी प्रकृति का अनुसरण ही तो है।

गर्मियों के विशेष दिनों में संध्या की रेल के चले जाने के बाद, नियम से ठीक साढे सात बजे दरवाज़े के थूण पर या मकान की ऊंची कडी पर बैठकर अबाबील आध घण्टे तक अपना सान्ध्य-गीत गाती थी। जैसेकि घडी देखकर एक निश्चित समय के पांच मिनटों के अन्दर-अन्दर वे अपना संगीत आरम्भ कर देती थी। यह निश्चित समय था सूर्यास्त का समय। उनकी आदतों से परिचित होने का यह दुर्लभ अवसर मुझे मिला था। कभी-कभी तो मैं वन के विभिन्न भागों में चार या पांच अबाबीलों को एक के ठीक बाद दूसरे के क्रम में गाते सुनता। वे मेरे इतने निकट होतीं कि मैं हर गीत के बाद होनेवाली कुट की आवाज़ को ही नहीं बल्कि मकडी के जाले में फंसी मक्खी की बजबजाहट जैसी ध्वनि को भी सुन पाता। हां, यह ध्वनि अनुपात में अधिक ज़ोर की होती। जब कभी मैं किसी अबाबील के अडों के आसपास होता तो वह ऐसी मेरे चारों ओर चक्कर पर चक्कर लगाती जैसे उसे किसी धागे से बांध दिया गया हो। थोडा रुक-रुककर ये पक्षी वैसे तो सारी रात ही गाते रहते लेकिन भोर के ठीक पहले या उसके आसपास उनका स्वर पहले जैसा ही सुरीला होता।

जब अन्य पक्षी चुप हो जाते तो आतनादक उल्लू उनका स्थान ले लेते हैं। वे विलाप करनेवाली स्त्रियों की तरह अपनी उन्-लू-लू ध्वनि निकालते हैं। उनकी शोकपूर्ण चीत्कार ठीक बेन जॉनसन की शैली की होती है। आधी रात की समझदार चुडैलें थे। कवियों द्वारा किया गया उल्लू की बोली का संगत और स्पष्ट रूपान्तर टु हिट-टु-हू यह नहीं था। मज़ाक मत मानिए, यह तो आत्महत्या करके मरनेवाले प्रेमी-युगल का परस्पर आश्वासन तथा नरक के निकुंजों में पारलौकिक प्रणय की पीडाओं और सुखों का स्मरण था। इतने पर भी वन प्रदेश में कम्पायमान उनका यह विलाप और आर्तगायन मुझे प्यारा लगता है। यह कभी-कभी मुझे गायक पक्षियों के संगीत की याद दिला देता है जबकि यह उनके संगीत का अश्रु भीगा कृष्णपक्ष हो। वे अनुताप और आहें हों जिन्हें गा दिया गया हो। जिन पतितात्माओं ने कभी मानव वार में इस धरती पर रात्रि चरण किया था और काले कारनामे किए थे वे हो मानो अब अनिवारो के अपने दुष्कर्म के प्रदेश में विलाप करती और रुदन-गीत गाती घूम रही हैं और इस प्रकार अपने पापों का प्रायश्चित्त कर रही हैं। ये उल्लू उन्हीं अधम

भूत हैं, ये उन्हीकी विपाद्युक्त चेतावनिया हैं। य उल्लू हम मबक सामूहिक निवास-स्थल प्रकृति के विभिन्न रूपा एव उमकी शक्तिया की एक नतन अनुभूति मुझे देत हैं। 'ऊ ह ऊ ऊ—कि मैं कभी पदा न हुआ हाना'—तालाव के उम तट पर एक उल्लू चीखना है और निराश विह्वलता के माथ मफेद वलूत की किमी नई शाखा के चारा आर मडराता है। तब—'मैं कभी पदा न हुआ होता'—यह ध्वनि दूर कही और वठे दूमरे उल्लू के प्राणा मे गजती है और उतना ही मकम्प स्वर लहरो म वह भी चीख उठता है और 'होना आ-आ' की मन्द ध्वनि सुदूर लिंकन के वना से आती सुन पडती है।

सन्ध्या समय एक 'हू ऊ-ऊ' करनेवाले उल्लू की आवाज भी मेरे काना म पडी थी। यदि वहुत पास हो ता आप उस गहनतम विपाद से भरी प्रकृति की आवाज कह सकते हैं। शायद वह अपने इस सगीत मे किमी मरते हुए मानव की चीत्कारा को स्यायी रूप से वद्धमूल करना चाहती हो। यह मानव मत्य मानवता का वह विवश कमज़ोर अवशेष होगा जो आशा छोड चुका होगा, जो उस काली घाटी म प्रवेश करते हुए जिस एक विशेष घरघराहट भरे मगीत न और भी भयानक बना दिया है मानवीय हिचकिया म भी पशु की तरह चीखता होगा। जव मैं इस घरघराहट का अनुकरण करना चाहता हू ता मैं देखता हू कि मैं 'ग' अक्षर म आरम्भ करता हू। यह इस बात का सूचक है कि स्वस्थ और साहमपूर्ण विचारणा का पूर्ण ह्रास हो चुकने के कारण दिमाग एक लसलसी और फफूंदी स्थिति को प्राप्त हो गया है। यह सव मुझे पिशाचा जड मूर्खों और पागला की चीत्कारा की याद दिलाता है। लेकिन सुदूर जगला से कोई उल्लू दूरी के कारण मचमुच ही सुरीली वनी लय म चीखता है हू-हू-हू हुरर-हू। और सच ही अधिकाशत इसने सुखद सम्बन्धा म ही स्मृति के सूत्र जोड हैं भले हा मैंने इसे दिन म सुना हो या रात म, गर्मिया म या जाडो मे।

इन उल्लुआ की सत्ता मुझे खुशी ही देती है। अच्छा हो कि मानवा के स्थान पर य जडता और सनक म भरी अपनी हू हू करते बन जाए। यह आवाज़ दलदला के लिए और उन अधेरे वना के लिए, जिन्हें कोई भी दिन प्रकाशित नही कर सका है वहुत ही उपयुक्त है। यह उन विस्तत अविकसित प्राकृतिक प्रदेशा की सूचना हमे देती है जिन्हे अभी तक मानव पहचान नही सका है। यह गोधूलि वना की और असीम वर्तमान अतृप्त आकाक्षाओ की प्रतीक है। पिछले पूरे दिन उस दलदली वन प्रदेश की धरती पर सूरज चमकता रहा है जहा भाऊ का एक अकेला पेड खडा

एक हलके-से उन्मत्त भाव की उपस्थिति की चेतना भी मुझे हो रही थी और मैं यह भी साफ देख रहा था कि मैं जल्दी ही स्वस्थ हो जाऊंगा। जब ये विचार मेरे अन्दर घुमड़ रहे थे तब हल्की वर्षा हो रही थी। तभी अचानक ही प्रकृति में बूंदों की उस टप टप् में, अपने घर के चतुर्दिक हर ध्वनि और दृश्य में एक मधुर लाभदायक संग का एक अपरिसीम अपरिगणनीय मित्र भाव की अनुभूति हो उठी। मुझे लगा कि सारा वातावरण मुझे सभाल रहा है और मानवों के पड़ोस के कल्पित लाभ मेरे लिए तुच्छ बन गए। उसके बाद से उनके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं। चीड़ का हर छोटा-सा पत्ता मेरे प्रति मित्र भाव और सहानुभूति से फला और फूला-सा मुझे प्रतीत होता था। जिन दृश्यों को हम जंगली और डरावने कहने के आदी हैं उनमें भी मुझे स्पष्ट रूप से एक अपनत्व भाव वर्तमान मिलता था। मेरा निकटतम एक सम्बन्धी और मानवोचित गुणसम्पन्न जन अब कोई नागरिक अथवा ग्रामीण नहीं था। कोई भी जगह अब मुझे अपरिचित नहीं लग सकती थी।

जो तास्कर की सुंदर बेटी!
विनाप असमय ही दुःखी जन को खा डालता है
और जीवितों के देश में उनके दिन
बहुत थोड़े रह जाते हैं।

बसन्त या पतझड़ में जब बहुत लम्बे समय तक वर्षा और अंधड़ चलते रहते थे और मैं दोपहर से पहले भी और बाद में भी घर में बन्द होकर रह जाता था, तब मेरे वे कुछ घण्टे सबसे अधिक आनन्द में बीतते थे। निरंतर गरज और टप्-टप् मुझे सान्त्वना-सी देती थी। झुटपुटा बहुत जल्दी उतर आता था और सन्ध्या बहुत लम्बी हो जाती थी। ऐसे क्षणों में ही अनेक तरह के भावों को अंकुरित होने और व्यक्त होने का अवसर मिलता था। गांव के घरों को हिला देनेवाली उत्तर-पूर्व की उन भयंकर वर्षाओं तक में, जब नौकरानियां झाड़ू और बाल्टी लेकर अतिरिक्त पानी को बाहर फेंकने के लिए सदर दरवाजों पर तैनात खड़ी रहती हैं, तब भी अपने छोटे से घर में मैं अकेला अपने एकमात्र द्वार के पीछे बैठा रहता था और पूर्ण सुरक्षा का रस-लाभ करता था। एक बार एक भीषण वर्षा और तूफान के दिन तालाब के पार एक बड़े चीड़ के पेड़ पर बिजली गिरी थी। बिजली ने उस पेड़ में सिर से तनों तक एक साफ और गहरी सर्पिल नाली बना दी थी जो एक इंच या अधिक गहरी और

चार या पाच इच चौडा थी। यह वसी ही थी जसी हम अपनी छडी म खोद लेन हैं। जभी पाद एक दिन मैं उसक पास म गुजरा। आठ वष पहल हानिरहित आकाश म टूटकर एक भाषण अप्रनिरोध्य वज्र जिम स्थल पर गिरा था वना बना निशान जब पहल म भा माफ था जिम दखकर मरा हृदय एक भय म भर उठा। लाग अक्मर मुझन कहा करन हैं मैं समझना हू आप वहा अकेलापन महसूस करेंगे और विशेष कर वषा और हिमपान क दिना और राना म लागा के निकट मरक जाना चाहग।' इम लागा का मैं यह उत्तर द बैठना हू यह धरती जिसपर हम रहने है महाशून्य म एक बिन्दु क बराबर ही ता है। आपक विचार म उम सुदूरतम तारे के निवासी हमम कितनी दूर हांगे?—उम तार क जिसकी गोलाई को नापना भी हमारे यन्त्रा क वस की बात नही है। तब मैं अकेलापन अनुभव क्या करू? क्या हमारा भू-ग्रह आकाशगगा के बीच नहा है? आपका यह प्रश्न मुझे सबम महत्त्वपूण प्रश्न मालूम नही पडता। वह शय क्या चीज है जो एक व्यक्ति का उमक साथिया म अलग करता है और उम एकाकी बनाता है? मैंन यह समझा है कि रागा का कितना भी श्रम दा मना का एक-दूसर के निकट नही ला मक्ता। हम मबम अधिक किसक निकट रहना चाहते हैं? निश्चय ही बहुसख्यक मानवा क नहा डिपो डाकखान मद्यपान-गृह सभा भवन पाठशाला पसारी की दुकान बकनहिल अथवा जहा सर्वाधिक लाग एकत्र होन हैं उम फाइव पाइण्ट्स क निकट भी नहा। हम अपन जीवन के उम चिरन्तन स्रात क पाम रहना चाहत हैं जा हमारे सारे अनुभवा को प्रेरित करता है। सरपत पानी के निकट उगती है और अपनी जडा का उसीकी दिशा म फलाती है। भिन्न प्रकृति क लागा क साथ भिन्न स्थितियां हो सकती हैं लेकिन एक बुद्धिमान व्यक्ति इसी स्थान क निकट अपना तहखाना खोदेगा। एक दिन मैं अपने कस्बे क एक परिचित से टकरा गया। इन सज्जन न वाल्डन सरोवर मारा पर तथाकथित मारी जायदाद बना रखी है। वस मैं कभी उस जायदाद का भली प्रकार दख नही सका हू। खर इस समय ता य सज्जन एक जोडी पशु हाककर बाजार ल जा रह थे। उन्होंने मुझम पूछा जीवन की इतनी सुख-सुविधाओ का तिलाजलि दन की बात आप साच भी कम सके? मैंन उत्तर दिया मैं तो यह सब खूब-खूब पसन्द कर सका ह। और सचमुच ही यह मैंन मजाक म नहा कहा था। मैं ता अपन घर मान चला गया और उन अधेरे और गारे मिट्टी म ब्राइटन या ब्राइट-टाउन का मारा रहन के लिए छाड आया। कभी सुबह जाकर वह अपनी मंजिल

पर पहुच पाएगा।

यदि एक मृतक व्यक्ति क जाग उठन उसक फिर से जी उठने की आशा फलित होने लग तो उस व्यक्ति के लिए समय और स्थान का प्रश्न निरर्थक हो रहता है। जिस भी स्थान पर यह घटना घटित होगी वही उसकी इन्द्रियो के लिए अवर्णनीय रूप मे सुखप्रद हो जाएगा। अधिकतर बाह्य और अस्थायी परिस्थितियो को हम अपने विशिष्ट क्षणो का कारण हम बनने देते है। असल म तो वे हमारी एकाग्रता म खलल डालने का ही काम करते हैं। पदार्था का अस्तित्व निर्माण करनेवाली शक्ति ही उन सबक निकटतम है। प्रकृति के महानतम कानून हमारी आत्मा के ठीक सामने लागू किए जा रहे हैं। हमारे सामने वह कमकर नहीं है जिस हमने काम पर रखा है और जिससे बातें करना हम बहुत पसन्द है बल्कि वह कारीगर है जिसने हम सबको बनाया है।

आकाश और धरती को अतिसूक्ष्म शक्तियो का हमपर कितना व्यापक और गहरा प्रभाव है?

"हम उन्ह पहचानना चाहते हैं पर उन्ह देख भी नहीं पाते हम उन्ह सुनना चाहते हैं, पर सुन नहीं पाते वे पदार्थों के मागतत्त्वो मे एकाकृत है उन्ह उनम अलग नहीं किया जा सकता।

वे पूरी सृष्टि म हर कहीं मानव को मजबूर करती हैं कि वह अपने हृदय को पवित्र और पापमुक्त बनाए उल्लासमूचक छुट्टी के वस्त्र पहने और अपने पूर्वजो को बलिदान और चढ़ावे समर्पित कर। यह तो सूक्ष्म बौद्धिक तरगो का एक महा सागर है। ऊपर बाय, दायें वे हर कहीं हैं और हम चारो ओर से घरे है।

हम एक ऐसे प्रयोग के विषय बन गए हैं जो मुझ जरा भी रुचिकर नहीं है। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि वर्तमान परिस्थितियो म थोडी देर के लिए भी हम अपनी गपबाजियों को त्याग दें और अपने विचारो से ही अपना मनोविनोद कर लें। कनफ्यूशस न सच ही कहा है, 'सुदूर एक परित्यक्त पारासिम की तरह अकेला नहीं रह सकता पड़ोसी उस अनिवार्यत मिल जाएंगे।

विचारणा के द्वारा हम प्रकृतिस्थ रहते हुए भी आप म बाहर हो सकते हैं। मन के एक सचेत प्रयास के द्वारा हम कम और उसके परिणामो से अलग बने रह सकते हैं। यह हो जाता है कि सभी चीजें—अच्छी भी और बुरी भी—एक हमारे पास से निकल जाए जैसे तेज लहर निकल जाती है। हम प्रकृति म पूरी तरह बधे नहीं हैं।

इस बनाव में वह जानेवाली लकड़ी भी बन सकते हैं और आकाश से सब कुछ देखने-वाला इन्द्र भी। किसी नाटक का दृश्य भी मुझे विचलित कर सकता है और हो सकता है मुझसे अधिकाधिक सम्बद्ध लगनेवाली वैसी ही असल घटना तक मुझे जरा भी प्रभावित न करे। मैं अपने को एक मानवीय इकाई के रूप में और यह कहिए कि विचारों और संवेदनाओं के समत्व के रूप में ही पहचानता हूं। एक दोहरेपन की चेतना भी मुझमें बनी है जिसके द्वारा मैं अपने से उतनी ही दूर खड़ा हो सकता हूं जितनी दूर कि मैं किसी अन्य से खड़ा हूं। मेरी अनुभूति कितनी ही तीव्र क्यों न हो मुझे बराबर अहसास रहता है कि मेरा ही एक अंश ऐसा मेरी आलोचना कर रहा है जैसेकि वह मेरा अंग न होकर बस एक दर्शक-मात्र हो वह उस अनुभूति में भागीदार न हो बस उसका विवरण लिखनेवाला भर हो। वह 'मैं' इतना नहीं है जितना कि 'तुम' है। जब जीवन का नाटक—भले ही वह दुःखान्त हो—समाप्त हो जाता है तो द्रष्टा अपनी राह लेता है। जहां तक उसका सम्बन्ध है उसके लिए तो वह एक कहानी थी कल्पना की एक क्रीडा-मात्र थी। कभी-कभी यह दोहरापन बड़ी आसानी से हम एक अच्छा मित्र या अच्छा पड़ोसी बनने देता है।

अपने समय का अधिकतर भाग अकेले बिताना मुझे बहुत अच्छा लगता है। सर्वोत्तम मित्र-मण्डली में बैठकर भी मैं जल्दी ही थक उठता हूं ऊब उठता हूं। अकेलापन तो ही मुझे प्यार है। एकाकीपन में बढ़िया कोई साथी मुझे कभी नहीं मिला। जब हम बाहर लोगों से मिलने जाते हैं उस समय अपने कमरे में बैठे रहने की अपेक्षा हम कहीं अधिक अकेलापन महसूस करते हैं। सोचते समय या काम करते समय व्यक्ति हमेशा अकेला ही होता है। एकाकीपन इस बात से नहीं नापा जा सकता कि व्यक्ति-विशेष के और उसके साथियों के बीच कितना फासला है। कैम्ब्रिज कालेज के छात्रावास की भीड़-भाड़ में रहनेवाला एक पाठ्यरत छात्र उतना ही अकेला होता है जितना कि रेगिस्तान का कोई भी दरवेश। एक किसान अकेला अपने खेत को निराता रहेगा या जंगल में लकड़ियां काटता रहेगा पर एकाकीपन महसूस नहीं करेगा क्योंकि वह काम में लगा है। लेकिन जब वह रात को घर लौटता है तब अपने विचारों के सहारे अपने कमरे में वह अकेला बैठा नहीं रह सकता। लोगों से मिलकर अपना मनोरंजन करने वह निकल ही पड़ता है जैसेकि दिन भर के अकेलेपन की क्षतिपूर्ति कर रहा हो। और उसे आश्चर्य होता है कि एक विद्यार्थी पूरी रात और अधिकांश दिन बस बिना उकताए और मन मैला किए अपने

घर म बन्द रह जाता है। वह यह नही सोचता कि विद्यार्थी यद्यपि घर म है पर वह किसान की तरह ही अपन खेत म कार्य-व्यस्त है और अपन अन्तर म लकडिया काट रहा है और उसे भी उसीकी तरह सग-साथ और मनोरजन की जरूरत होती है। हो यह सग-साथ और मनोरजन उसकी अपेक्षा अधिक ठोस किस्म का हो सकता है।

आम तौर मे सग साथ बहुत हलका चीज है। हम बहुत जल्दी-जल्दी मिलत हैं और इस बीच एक-दूसरे के प्रति कोई नई विचारणा यानी नया मूल्य अर्जित नही कर पाते। हम दिन म तीन बार खान पर मिलते हैं। हम सभी जो एक बासी पनीर के समान हैं, उसीका नया स्वाद हम दूसरे को प्रदान करते हैं। इस बार-बार के मिलन को सहनीय बनान क लिए और इसलिए कि हम खुल आम लड ही न पडें हमने व्यवहार के लिए कुछ नियम बनाए ह और उन्ह हमने सभ्यता और विनम्रता का नाम दिया ह। हम डाकघर म मिल जाते हैं ताश म मिलते है और हर रात आग के पास मिलना होता ही है। हम भीड बनकर रहत हैं एक-दूसर क रास्ते म आते हैं और एक दूसर से टकराते हैं। मैं समझता हू इसीमे एक-दूसर के प्रति आवश्यक सम्मान को भी हम थोडा बहुत खो बठते हैं। सभी महत्त्वपूर्ण हार्दिक सम्बन्धो को बनाए रखन के लिए निश्चय ही कम मिलना भी बहुत काफी रहेगा। किसी कार खान म काम करनवाली लडकिया को देखिए। वे कभी अकेली नही होती। कभी कठिनाई मे ही वे अपन सपनो म डूब पाती होंगी। अच्छा तो यह होगा कि जसे मैं रहता हू एक वर्गमील म एक आदमी रहे। मानव का मूल्य उसकी खाल म नही है कि हम उसम रगड खाए।

मैंने सुना है एक बार एक व्यक्ति जगल म खो गया। भूख और थकान म मृत प्राय होकर वह एक पेड के नीचे गिर पडा। शरीर की कमजोरी और रुग्णता के कारण उस बडे हो अस्पष्ट दृश्य अपनी कल्पना म दीख पडे। इन्हे उसन वास्तविक मान लिया और इन्होंने ही उसके अकेलेपन को बाटा। इसी प्रकार शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की अवस्था म भी हम ऐसे ही पर अधिक स्वाभाविक और सगत सपनो के सहारे लगातार अपना मनोरजन करते रह सकते हैं और हम अनु भव कर सकते हैं कि हम अकेले एकदम नही हैं।

मुझे अपन घर म ह, बहुत काफी सग-साथ मिल सकता है विशेषकर सुबह के समय जब कोई मुझसे मिलने नही आता। मैं कुछ तुलनाए प्रस्तुत करता हू जिनसे

मेरी स्थिति को पूरी तरह समझा जा सके। मैं ज़ोर से हँसनेवाली मुर्गाबी या स्वयं वाल्डेन सरोवर से अधिक तो अकेला नहीं हूँ। भला बताइए इस अकेले तालाब का साथी कौन है? तब भी इसके नीलाभायुक्त जल में नीले दैत्य नहीं बल्कि नीली परियाँ ही वर्तमान हैं। सूर्य भी एकाकी ही है। कभी-कभी घने कुहरे में ऐसा लगता है कि सूर्य दो हो गए हैं, पर दूसरा तो अवास्तविक ही होता है। ईश्वर भी एक ही है। लेकिन शैतान वह बिलकुल अकेला नहीं है। उसे बहुत-से संगी-साथी मिल जाते हैं। उसकी तो एक अपार सेना है। चारागाह में उगे एक अकेले स्वर्णधान्य के पौधे अथवा कुकरौंधे में या सेम के पत्ते में या लोनी में या गोमक्खी में या भौंरे से अधिक अकेला मैं नहीं हूँ। मिल ब्रुक या वातसूचक मुर्गे (वेदर कॉक) से या उत्तरी ध्रुव से या दक्षिणी पवन से या अप्रैल की वर्षा से या जनवरी के हिम-द्राव से या एक नये घर की पहली मकड़ी से अकेला तो मैं नहीं हूँ।

जाड़े की संध्याओं में जब बर्फ बहुत तेजी से गिरती है और जंगलों में हवाएँ घूँ-घूँ करती हैं, तब अक्सर एक वृद्ध सज्जन मेरे पास आकर बैठ जाया करते हैं। यही इस स्थान के मूल स्वामी थे और कहते हैं इन्होंने ही इस वाल्डेन सरोवर को खोदा था, इसके तट पर पत्थर जड़े थे और किनारे किनारे चीड़ के पेड़ लगाए थे। ये मुझे बीते युग की कहानियाँ और आनेवाले युगों की बातें सुनाया करते हैं। हम दोनों सेब और उसकी शराब को बीच में रखे बिना भी आमोद प्रमोद और मधुर चर्चा के द्वारा ही अपनी संध्या आनन्द से बिता लेते हैं। वे बड़े ही बुद्धिमान और विनोदी मित्र हैं। वे अपने को गॉफ[1] या व्हाली से भी अधिक गुप्त रखते हैं। माना जाता है कि वे मर चुके हैं लेकिन कोई नहीं बता सकता कि उन्हें कहाँ दफनाया गया है। मेरे पड़ोस में एक पुरातन बुढ़िया भी रहती है। अधिकतर लोग उसे देख भी नहीं पाते। कभी-कभी उसके जड़ी-बूटियोंवाले गंधयुक्त बगीचे में घूमना, बूटियाँ इकट्ठी करना और पौराणिक कथाएँ सुनना मुझे बड़ा ही प्यारा लगता है। कहानियाँ गढ़ने की उसमें अद्वितीय प्रतिभा है। उसकी स्मृति पुराण युग से भी परे तक जाती है। हर पौराणिक कथा का मूल रूप और जिसपर उनमें से प्रत्येक आधारित है वह

१ इंग्लैंड के गृहयुद्ध के दिनों में गॉफ एक महत्त्वपूर्ण संसद्-सदस्य था और व्हाली एक जनरल। गॉफ ने चार्ल्स प्रथम के मृत्युदण्ड के आज्ञापत्र पर हस्ताक्षर किए थे। बाद में अपनी जान बचाने के लिए इन्हें भागकर अमरीका चला जाना पड़ा। वहीं वेश बदल कर ये अन्त तक रहे।

घर मे ब द रह जाता है। वह यह नही माचना कि विद्यार्थी यद्यपि घर म है, पर वह
किसान की तरह ही अपन खेत म काय-व्यस्त है और अपन जगल म लकडिया काट
रहा है और उसे भी उसीकी तरह सग-साथ और मनोरजन की जरूरत होती है।
हा यह सग साथ और मनोरजन उसकी अपेक्षा अधिक ठोस किस्म का हो सकता
है।

आम तौर म सग-साथ बहुत हलका चीज है। हम बहुत जल्दी-जल्दी मिलते हैं
और इस बीच एक-दूसरे क प्रति कोई नई विचारणा कोई नया मूल्य अर्जित नहा
कर पात। हम दिन म तीन बार खान पर मिलन ह। हम सभी जो एक बासी पनीर
क समान है उसका नया स्वाद हम दूसरे का प्रदान करत ह। इस बार-बार क
मिलन को सहनीय बनान के लिए और इसलिए कि हम खुले आम लड़ाई न पड़ें हमन
व्यवहार के लिए कुछ नियम बनाए हैं और उन्हें हमन सभ्यता और विनम्रता का
नाम दिया ह। हम डाकघर म मिल जात हैं ताश म मिलत हैं और हर रात आग
के पास मिलना होता ही है। हम भीड बनकर रहन है एक दूसर क रास्त म आत
हैं और एक-दूसरे से टकराते हैं। मैं समझता हू इसीसे एक-दूसर के प्रति आवश्यक
सम्मान को भी हम थोडा बहुत खो बठने हैं। सभी महत्वपूर्ण हार्दिक सम्बन्धा का
बनाए रखन के लिए निश्चय ही कम मिलना भी बहुत काफी रहेगा। किसी कार
खान म काम करनवाली लडकिया का देखिए। वे कभी अकेली नहा होती। कभी
कठिनाई से ही व अपन सपना म डूब पाती होगी। अच्छा ता यह होगा कि जस मैं
रहता हू एक वगमील म एक आदमी रह। मानव का मूल्य उसकी खाल म नही है
कि हम उसम रगड खाए।

मैंन सुना है एक बार एक व्यक्ति जगल म खो गया। भूख और थकान म मत
प्राय होकर वह एक पेड के नीचे गिर पडा। शरीर की कमजोरी और रुग्णता क
कारण उस बडे ही अटपट दृश्य अपना कल्पना म दीख पडे। इन्हे उसन वास्तविक
मान लिया और इन्हान ही उसक अकेलपन का बाटा। इसी प्रकार शारीरिक और
मानसिक स्वास्थ्य की अवस्था म भी हम एस हा पर अधिक स्वाभाविक और
सगत सपना क सहारे लगातार अपना मनोरजन करत रह सकत हैं और हम एसा
लग सकता है कि हम अकेल एकदम नहा हैं।

मुझ अपन घर म ह। बहुत काफी सग-साथ मिल सकता है विशेषकर सुबह के
समय जब कोई मुझस मिलन नहीं आता। मैं कुछ तुलनाए प्रस्तुत करना हू जिससे

मेरी स्थिति को पूरी तरह समझा जा सके। मैं जोर से हँसनेवाली मुर्गाबी या स्वयं वाल्डेन सरोवर से अधिक तो अकेला नहीं हूँ। भला बताइए इस अकेले तालाब का साथी यहाँ कौन है? तब भी इसके नीलाभायुक्त जल में नील दैत्य नहीं बल्कि नीली परियाँ ही वर्तमान हैं। सूर्य भी एकाकी ही है। कभी-कभी घने कुहरे में ऐसा लगता है कि सूर्य दो हो गए हैं, पर दूसरा तो अवास्तविक ही होता है। ईश्वर भी एक ही है। लेकिन शैतान, वह बिलकुल अकेला नहीं है। उसे बहुत-से संगी-साथी मिल जाते हैं। उसकी तो एक अपार सेना है। चारागाह में उगे एक अकेले स्वर्णधान्य के पौधे अथवा कुकरौंधे में या सेम के पत्ते में या लानी में या गोमक्खी में या भौंरे से अधिक अकेला मैं नहीं हूँ। मिल ब्रुक या वातसूचक मुर्गे (वेदर कॉक) से या उत्तरी ध्रुव से या दक्षिणी पवन से या अप्रैल की वर्षा से या जनवरी के हिम-द्राव से या एक नये घर की पहली मकड़ी से अकेला तो मैं नहीं हूँ।

जाड़ों की सन्ध्याओं में जब बर्फ बहुत तेजी से गिरती है और जंगल में हवाएँ घूँ-घूँ करती हैं, तब अक्सर एक वृद्ध सज्जन मेरे पास आकर बैठ जाया करते हैं। यही इस स्थान के मूल स्वामी थे और कहते हैं इन्होंने ही इस वाल्डेन सरोवर को खोदा था, इसके तट पर पत्थर जड़े थे और किनारे किनारे चीड़ के पेड़ लगाए थे। ये मुझे बीते युग की कहानियाँ और आनेवाले युगों की बातें सुनाया करते हैं। हम दोनों सेब और उसकी शराब को बीच में रखे बिना भी आमोद प्रमोद और मधुर चर्चा के द्वारा ही अपनी सन्ध्या सानन्द बिता लेते हैं। वे बड़े ही बुद्धिमान और विनोदी मित्र हैं। वे अपने को गॉफ[1] या व्हेली से भी अधिक गुप्त रखते हैं। माना जाता है कि वे मर चुके हैं, लेकिन कोई नहीं बता सकता कि उन्हें कहाँ दफनाया गया है। मेरे पड़ोस में एक पुरातन बुढ़िया भी रहती है। अधिकतर लोग उसे देख भी नहीं पाते। कभी-कभी उसके जड़ी-बूटियोंवाले गन्धयुक्त बगीचे में घूमना, बूटियाँ इकट्ठी करना और पौराणिक कथाएँ सुनना मुझे बड़ा ही प्यारा लगता है। कहानियाँ गढ़ने की उसमें अद्वितीय प्रतिभा है। उसकी स्मृति पुराण-युग से भी परे तक जाती है। हर पौराणिक कथा का मूल रूप और जिसपर उनमें से प्रत्येक आधारित है वह

---

१ इंग्लैंड के गृह युद्ध के दिनों में गॉफ एक महत्त्वपूर्ण सेनाध्यक्ष था और व्हेली एक कर्नल। गोफे ने चार्ल्स प्रथम के मृत्युदण्ड के आज्ञापत्र पर हस्ताक्षर किए थे। बाद में अपनी जान बचाने के लिए इन्हें भागकर अमरीका चला आना पड़ा। वहीं वेश बदल कर ये अन्त तक रहे।

तथ्य वह मुझे बता सकती है। जब वह युवती थी तब शायद कुछ विशिष्ट घटनाएं घटी थीं। वह एक लाल रंग की सत्त्वशील हृष्टकाय बुढ़िया है। हर ऋतु और मौसम का वह आनन्दपूर्वक भोगती है और अपने सभी बच्चों के बाद तक भी वह शायद जीवित बनी रहेगी।

प्रकृति में सूर्य पवन वर्षा जाड़े और गर्मी सब में एक अवर्णनीय अबाधता और परोपकारिता भरी है और कैसा एक स्वास्थ्य और आनन्द वह हमें सदा देती रहती है! हमारी जाति के प्रति ऐसी सहानुभूति इन सब में है कि जब भी कोई मानव किसी संगत कारण से दुःखग्रस्त होता है तभी सारी प्रकृति पर उसका प्रभाव पड़ता है। सूर्य की चमक मन्द पड़ जाती है हवाएं मानवों की तरह आहें भरने लगती हैं बादल अश्रु वर्षा करते हैं जंगलों के पत्ते झड़ने लगते हैं और मध्य ग्रीष्म में मातमी कपड़े पहन लेते हैं। क्या मैं धरती से गुप्त बातचीत न करूं? आखिर रूप से क्या मैं पत्तों और वनस्पतियों का ही बना हुआ नहीं हूं?

वह कौन-सी औषधि है जो हमें स्वस्थ शान्त और आत्मतुष्ट बनाए रख सकती है? मेरे या आपके परदादा की बनाई नहीं बल्कि हम सबकी परदादी प्रकृति की सार्वभौमिक वानस्पतिक उद्भिदीय उस औषध में ही वैसा होना सम्भव है जिसके द्वारा प्रकृति ने स्वयं को चिर युवा बनाए रखा है और कितने ही बूढ़े पारों[1] को मरते देखा है और उनकी क्षरणशील मोटाइयों से अपने स्वास्थ्य को पुष्ट किया है। नीम हकीमों की उन बोतलों के बदले जिनमें अचेरन[2] और मृत सागर[3] से लाया गया मिश्रण भरा है और जिन्हें हम कभी-कभी नाव के आकार की लम्बी और कम गहरी वैगनों में ढोए जाते देखते हैं क्या न मैं रामबाण औषधि के लिए प्रभात के अमिश्रित विशुद्ध पवन का सेवन करूं? प्रभात का पवन! यदि दिन के मूल स्रोत प्रभात के समय लोग इसका सेवन न कर सकें तो क्या न कुछ पवन को बोतलों में भरकर उन लोगों के लाभ के लिए सुरक्षित रख लिया जाए जो इस जन्म का प्रातः संसार सेवन करने का अपना टिकट खो चुके हैं। लेकिन याद रखिए ठण्डे से ठण्डे तहखाने में भी यह पवन दोपहर तक बना का बना नहीं रह सकता। यह

---

१ १४८३ से १६३५ तक जीवित पार नामक एक किसान जिसने १५२ वर्ष की आयु पाई।
२ टर्की की एक नदी। साथ ही ग्रीस की एक नदी जो आयोनियन सागर में गिरती है।
३ दक्षिणी फिलिस्तीन का एक झील

बहुत पहले ही डाट का उड़ा गया और अरोरा (उषा) के पीछे-पीछे पश्चिम की ओर भाग गया। मैं उस हाइजिया[1] का पुजारी नहीं हूँ जो जड़ी-बूटी से इलाज करने वाले वृद्ध एस्कुलेपियस[2] की बेटी थी और स्मारकों पर जिसे एक हाथ में एक साँप और दूसरे में एक प्याला—जिसमें कभी-कभी साँप कुछ पीता जाता है—पकड़े हुए चित्रित किया गया है। मैं तो जुपिटर का प्याला थामे चलनेवाली उस हीबे[3] का उपासक हूँ जो जूनो[4] और जंगली सलाद की बेटी थी और जिसमें देवों और मानवों को यौवन की शक्ति वापस दिला देने की ताकत थी। शायद वही एक युवती इस धरती पर हुई है जो पूरी तरह स्वस्थ, पुष्ट और नीरोग थी। जिधर भी वह चली जाती थी, उधर ही वसन्त आ जाता था।

---

१ स्वास्थ्य की देवी

२ एक औषध एवं चिकित्सा विज्ञान का देवता था। इसने मृतक को जिला दिया था, जिससे रुष्ट होकर जियस ने उसे मार डाला था।

३ यौवन की देवी, जियस की बेटी और हरक्युलिस की पत्नी

४ रोमन धर्म में जुपिटर की पत्नी, विवाह और नारियों की देवी

आए गए

मैं संग-साथ को अधिकांश लोगों की तरह ही पसन्द करता हूं। मिल गए किसी भी कुलीन सज्जन से कुछ समय के लिए जोंक की तरह ही चिपट जाने को मैं तैयार रहता हूं। प्रकृति से संन्यासी मैं नहीं हूं और यदि काम पड़े तो शायद किसी पक्के पियक्कड़ से भी अधिक देर तक मैं मधुशाला में बैठा रह सकता हूं।

मेरे घर में तीन कुर्सियां थीं, एक एकान्त के लिए, दूसरी मित्राचार के लिए और तीसरी सत्संग के लिए। जब कभी आशा से अधिक बड़ी संख्या में मिलनेवाले आ जाते तो तीसरी एक कुर्सी ही उन सबके लिए बच रहती। लेकिन साधारणतया वे लोग खड़े रहकर ही अपना काम चला लेते। आश्चर्य का ही विषय है कि एक छोटा-सा घर कितने सारे स्त्री-पुरुषों को अपने में समा सकता है। कभी-कभी पचीस या तीस आत्माएं सशरीर मेरी छत के नीचे आ जमा होतीं और फिर भी इतना अधिक निकट आ जाने का अहसास किए बिना ही हम एक-दूसरे से अलग भी हो जाते। हमारे बहुत-से सार्वजनिक और निजी भवनों में अनगिनत कमरे होते हैं, हाल होते हैं और शराब एवं अन्य शान्तिकालीन गोला-बारूद को जमा करने के लिए तहखाने होते हैं। मेरे विचार में ये सब उनमें रहनेवालों के लिए अनावश्यक रूप से बड़े होते हैं। ये भवन इतने विशाल और भव्य होते हैं कि मानव इनमें रेंगने वाले कीड़ों जैसे लगने लगते हैं। यदि कभी ट्रेमण्ट या एस्टर या मिडिलसेक्स भवन के बाहर कोई हरकारा अपना बिगुल बजाए तो हो सकता है कि रहनेवालों के बदले कोई चूहा ही निकलकर बाहर दालान में आए और तत्काल ही सीढ़ियों के किसी छेद में जा घुसे।

इतने छोटे घर में कभी-कभी एक असुविधा मैंने महसूस की है। वह यह कि जब मैं और मेरा अतिथि हम दोनों मिलकर बड़े-बड़े शब्दों में बड़े-बड़े विचार प्रकट करने लगते हैं तो हम दोनों के बीच काफी फासला नहीं बच पाता। विचारों को

व्यवस्थित होने के लिए और अपना रंग जमाने में पहले एक-दो करवटें बदलने के लिए थोड़ा खुला स्थान चाहिए। यह जरूरी है कि विचार की गाड़ी अगल-बगल मुड़-तुड़ और उछल के बाद पहले एक अन्तिम स्थिर गति प्राप्त कर ले तभी वह श्रोताओं के कानों में पड़े नहीं तो वह दूसरे कान से बाहर निकल जाएगी। हमारे वाक्य भी स्वयं को खोलने और नियमित पंक्तिबद्ध करने के लिए अवकाश की अपेक्षा करते हैं। राष्ट्रों की ही तरह व्यक्तियों के बीच भी उनकी यथोचित चौड़ा और स्वाभाविक मामला होनी चाहिए। यहाँ तक कि बीच में पर्याप्त तटस्थ प्रदेश भी होना चाहिए। तालाब के दूसरे किनारे खड़े किसी साथी से बातें करने में मुझे अनोखा रस मिला करता है। मेरे घर में हम सब इतने निकट होते कि एक दूसरे की बात सुनना आरम्भ कर ही न सकते और इतना धीमे हम बात न करते कि एक-दूसरे की बात सरलता से सुनी जा सके। यदि कभी आप शान्त जल में बहुत पास-पास दो पत्थर फेंक दें तो एक की लहरें दूसरे को काटने लगती हैं। ठीक यही हमारे साथ भी होता। यदि आपका उद्देश्य सिर्फ गाल बजाना और जोर-जोर से बोलना-मात्र हो तब तो एक-दूसरे के गाल से गाल भिड़ाकर खड़े होना और एक-दूसरे की साँसें सहना सम्भव हो सकता है। लेकिन यदि हम गम्भीर होकर विचार-पूर्वक बातें करना चाहते हैं तो हम एक-दूसरे से इतनी दूर तो खड़ा होना पड़ेगा ही कि शरीर की गर्मी को और नमी को उड़ जाने का अवसर मिल सके। यदि हम उसके निकटतम समग्र का लाभ उठाना चाहते हैं जो हम सबमें छिपा है और जो शब्दों की अभिव्यक्ति से ऊपर या परे है तो हम चुप ही नहीं रहना होगा बल्कि शारीरिक रूप से इतना दूर-दूर भी बैठना पड़ेगा कि किसी भी दशा में एक-दूसरे की बात सुनना हमारे लिए सम्भव न हो सके। यदि इस स्तर से सोचें तो वाणी उनकी उन्हीं की सुविधा के लिए है जो ऊँचा सुनते हैं। कितनी ही अच्छी बातें चिल्लाकर कही ही नहीं जा सकतीं। जब हमारी बातचीत उच्च और उदात्त स्तर तक पहुँचने लगती हम अपनी कुर्सियाँ क्रमशः पीछे की ओर सरकाने लगते यहाँ तक कि वे पीछे की दीवारों से लग जातीं और तब वहाँ काफी स्थान न बच रहता।

मेरे घर के ठीक पीछे की चौड़ाई का जंगल मेरा सबसे बढ़िया दीवानखाना था। अभ्यागतों के लिए चिर प्रस्तुत वह प्रकृति का खुला बैठकखाना था और उसके कालीन पर सूर्य की किरणें कभी-कभी ही पड़ पाती थीं। गर्मियों के दिनों में जब कुछ प्रतिष्ठित अतिथि आ जाते तो मैं उन्हें वहाँ ले जाता और कोई अमूल्य सेवक उसके

मिलने गया तो वह बहुतायत का मौसम था और उन्होंने किसी बात की कमी न रहने दी।

व्यक्ति कहीं भी क्यों न रहता हो लोग उसे निराश नहीं करेंगे। अपने जीवन के किसी भी अन्य अवसर की अपेक्षा जंगल में रहने के समय अधिक लोग मुझसे मिलने जुलने आए। मतलब यही है कि कुछ लोग मेरे पास आते रहे। किसी भी अन्य जगह की अपेक्षा मिलने बैठने का वहाँ अधिक अनुकूल वातावरण था। लेकिन सांसारिक काम-काज को लेकर तो कम ही लोग मेरे पास आते थे। मेरे नगर से इतनी दूर रहने के कारण मिलने आनेवाले छँट जाया करते थे। मैं इतनी दूर हट कर एकाकीपन के उस विशाल समुद्र में रहने लगा था जिसमें समाज की नदियाँ अपने को खाली करती हैं। फलतः मेरी जरूरत को देखते हुए सिर्फ बहुत बढ़िया मिट्टी ही मेरे चारों ओर जमा होती थी। इसके अतिरिक्त समुद्र की दूसरी ओर स्थित अनखोजे-अनगाहे महाद्वीपों के संकेत भी वहाँ बैठे-बैठे ही मुझे मिल जाया करते थे।

एक सच्चे होमर युगीन या पफलागोनिया[1] के निवासी जैसे व्यक्ति के सिवाय भला और कौन आज की भी सुबह मेरे घर तक पहुँच सकता है। आगन्तुक का नाम इतना बढ़िया और काव्यात्मक है कि मैं उसे यहाँ तक नहीं छाप सकूँगा। वह कनाडा वासी एक लकड़हारा है और दिन भर में पचास डाक बाटने की क्षमता रखनेवाला डाकिया भी है। उसने अपना पिछला भोजन अपने कुत्ते द्वारा मारे गए हिममूषक का पकाकर किया था। होमर के बारे में इस आगन्तुक ने भी सुन रखा था। और इसका ख्याल था कि पुस्तकें न हों तो भला बरसात के दिन किसके सहारे काटे जाएँ लेकिन बहुत सी बरसातें बीत जाने पर भी एक पूरी पुस्तक भी वह शायद नहीं पढ़ सका था। किसी पादरी ने जो ग्रीक भाषा पढ़ सकता होगा गाँव के गिरजाघर में उसे बाइबल पढ़ना सिखाई होगी। लेकिन अब एक किताब लिए वह मेरे सामने बैठा है और मुझे अनुवाद कर-करके उस पुस्तक को उसे सुनाना पड़ रहा है। विषय है पैट्रोक्लस को उदास देखकर एकिलीज का उसे फटकारना पैट्रोक्लस एक नन्ही

१ एशिया माइनर का एक प्राचीन नगर

२ एकिलीज ग्रीस का एक वीर योद्धा था। वह पीलियस का पुत्र एवं ईकस का पौत्र था। थिसली के फ्थिया नामक स्थान पर मिरमिडन नामक एक जाति रहती थी। एकिलीज इनका राजा था। यह पद इलियड से लिया गया है।

लड़कों की तरफ आंखों में आंसू भरे तुम क्यों बैठे हो भला

'क्या अकेले तुम्हें थिया में कोई खबर मिली है
गाग कहते हैं टकर का पुत्र मिनासाम अभी जीवित है
ईसम का पुत्र पानियम भी मिरमिदनों के बीच रहता है
यदि इनमें से कोई मर जाए तभी तो हम भारी शोक मनाएं चाहिए।

वह कहता है बहुत बढ़िया। सफेद बबूल की छाल की एक बड़ी गठरी उसकी बगल में है जिसे पिछले इतवार के दिन उसने एक बीमार के लिए इकट्ठा किया था। वह कहते उठता है इस काम के लिए आज ही जाने में कोई हर्ज नहीं है। उसके लिए होमर एक महान लेखक था पर उसने क्या लिखा यह वह नहीं जानता। उसमें अधिक सीधा-सादा व्यक्ति प्रकृति का पुत्र कठिनाई से ही मिलेगा। पापकर्म और रोग जो दुनिया के ऊपर एक गम्भीर नैतिक छाया डाल देते हैं उसके लिए कठिनाई से ही अस्तित्व रखते हैं। लगभग बाईस वर्ष पहले जब वह अट्ठाईस साल का था वह अपने पिता का घर छोड़कर अमरीका में बसने के लिए चला आया था। वह धन कमाकर एक फार्म वह भी शायद अपनी जन्मभूमि में ही खरीदना चाहता था। उसका शरीर बड़े ही अनगढ़ ढांचे में ढला था मजबूत पर ढीला ढाला इस पर भी काफी शालीनता धूप से पकी मोटी गर्दन काली घनी भौंहें नीरस और नीली आंखें जिनमें समय-समय पर एक भावाभिव्यक्ति कौंध जाती थी। एक भूरे कपड़े की चपटी टोपी एक भद्दा भूरे रंग का कोट और गाय के चमड़े के जूते वह पहनता था। मांस वह बहुत अधिक खाता था। मेरे घर से कुछ मील पर ही वह काम करता था और अपना खाना एक टीन की बाल्टी में अपने साथ ही ले जाया करता था। खाने में ठण्डा मांस अक्सर ठण्डे उडचक और एक पत्थर की बोतल में कॉफी होती थी। कभी-कभी कॉफी वह मुझे भी दिया करता था। पूरी गर्मी वह लकड़ी काटने का काम करता था। बहुत सुबह ही वह उठ जाता और मेरे खेत के पार करके आगे चला जाता था अमरीकियों की तरह वह जल्दबाजी या घबराहट से कोई काम नहीं करता था। किसी भी कामना पर वह अपने को चोट न पहुंचने देता था। इस बात की चिन्ता उसे नहीं थी कि वह मकान का किराया भी न निकाल पा रहा है। अक्सर जब उसका कुत्ता किसी हिमसूअर को मार देता तब पन्द्रह आधे घण्टे तक वह सोचता कि

रात तक के लिए इस तालाब के पानी में छिपा दें या नहीं। तब वह एक मील चल कर वापस घर जाता और उसे ठीक ठाक करके घर के तहखाने में सुरक्षित रख जाता। जब वह सुबह ही सुबह जाता होता, तो कहता "ये कबूतर कितने मोटे-ताजे हैं। यदि मेरा धंधा मुझे प्रतिदिन काम करने पर विवश न करे तो मैं कबूतर हिममूषक खरगोश और तीतरों का शिकार करके अपने लिए काफी मास इकट्ठा कर लिया करूं। अरे एक दिन में ही सप्ताह भर की जरूरत पूरा कर लिया करूं।"

वह एक कुशल लकड़हारा था और अपना काम आडम्बरपूर्ण कलात्मक ढंग से करता था। वह पेड़ों को ऐसे काटता था कि ठूंठ जमीन के साथ समतल हो जाते और एक स्लेजगाड़ी उनके ऊपर से सरक सकती। इस प्रकार बाद में जो अंकुर फूटते वे अधिक पुष्ट होते। इसके बाद पूरे पेड़ को जड़कर सिर पर रखने के बदले वह उसके टुकड़े करता और इतने पतले कि उन्हें अन्त में हाथ से तोड़ा जा सके।

मुझे वह पसन्द आया था क्योंकि वह अकेला था खामोश प्रकृति का था और यह मन अपने हाल में मस्त था। वह सन्ताप और खुशमिजाजी का खजाना था और यह मन उसकी आंखों से फूटा पड़ता था। उसकी प्रसन्नता अमिश्रित थी। कभी कभी मैं जंगल में जाकर उसे पेड़ गिराते हुए देखता। वह एक अवर्णनीय तृप्ति से युक्त हंसी हंसकर मेरा स्वागत करता और यद्यपि वह अंग्रेजी भी अच्छी तरह बोल लेता था पर कनाडा की फ्रांसीसी में मुझे प्रणाम करता। जब मैं उसके पास पहुंचता तो वह काम करना बन्द कर देता और अधस्फुट आनन्द के साथ अभी अभी गिराए गए चीड़ के तने की बराबर में लेट जाता उसकी अन्दरवाली छाल को छीलता उसका एक गोला बना लेता तथा हंसते और बातें करते हुए उसे चबाता जाता। उसमें पशु प्रेरणाओं की इतनी अधिकता थी कि जब भी कोई बात उसे छू देती और लोटपोट होने पर विवश कर देती तो वह हंसते-हंसते धरती पर लुढ़क जाता और फिर उठता "भगवान कसम मैं यहां लकड़ियां काटते रहकर अपने को काफी मनोरंजित कर सकता हूं। मुझे किसी और खेल की जरूरत नहीं है।" कभी-कभी फुरसत होने पर वह जंगल में ही घूमता और नियम से कुछ-कुछ देर बाद अपनी जेबवाली पिस्तौल दागता जैसे अपनी ही सलामी दे रहा हो। इस प्रकार अपना मनोरंजन करता। जाड़ों में वह आग जलाए रखता और दोपहर के समय उसी पर एक केतली में अपनी कॉफी गरम करता। जब वह एक लट्ठे पर बैठकर अपना खाना खाता तो कभी-कभी चिड़ियां

आकर उसकी बाह पर बैठ जाती और उसकी उंगलियों में थम आत पर अपनी चोंच चलाती और वह कहता, अपन चारों ओर इन नन्हे 'नवहनागों' का खेलना मुझे बड़ा अच्छा लगता है।'

उसमें मानव का पशु विशेष रूप में विकसित हुआ था। शारीरिक सहिष्णुता और तृप्ति में वह चीड़ और चट्टान का चचेरा भाई था। एक बार मैंने उससे पूछा क्या कभी-कभी रात के समय तुम थकान महसूस नहीं करते? एक सचाई भरी गम्भीर दृष्टि मुझपर डालकर उसने उत्तर दिया था अपने जीवन में थकान का अनुभव मैंने कभी किया ही नहीं। लेकिन बौद्धिक और आध्यात्मिक मानव उसमें वसे ही सोया पड़ा था जैसे बच्चे में सोया होता है। उसे उसी सरल और असफल पद्धति से शिक्षा मिली थी जिससे कैथोलिक पादरी आदिवासियों को पढ़ाया करते हैं। उस पद्धति में शिष्य सचेतन स्तर तक नहीं बस विश्वास और श्रद्धा के स्तर तक ही शिक्षित हो पाता है। उसमें बच्चे को परिपक्व व्यक्ति नहीं बनाया जाता बस बच्चा ही रहने दिया जाता है। जब प्रकृति ने उसे बनाया तो उसने उसे एक बलिष्ठ देह और आत्मतृप्ति दे दी और हर तरफ से उसे श्रद्धा और विश्वास का सहारा दे दिया जिससे वह अपने जीवन के सत्तर वर्ष बच्चा बने रहकर ही गुजार दे। वह इतना अकृत्रिम और अपरिष्कृत था कि किसी भी परिचय में उसका परिचय नहीं दिया जा सकता था। भला क्या एक हिममूषक को आप अपने पड़ोसी से परिचित करा सकते हैं? जैसे आपने उसे दूर निकाला था वैसे ही पड़ोसी को भी उसे दूर लेना ही पड़ेगा। वह अपने-आपसे कोई प्रयास नहीं करेगा। लोग उसे काम का पैसा देते हैं और इस प्रकार उसे भोजन-कपड़ा देते हैं। उनके साथ विचार विनिमय वह कभी भी नहीं करता था। यदि उसे कभी कोई आकांक्षा न करनेवाला विनम्र व्यक्ति कहा जा सके तो वह इतना सरल और निसर्गत विनम्र था कि विनम्रता उसका कोई अलग गुण नहीं रह गया था, न ही वह उसकी धारणा-कल्पना करने में सक्षम था। ज्ञानी लोग उसके लिए उपदेवता के समान थे। अगर कभी उससे कहा जाए कि ऐसा हो कोई व्यक्ति आ रहा है तो उसका व्यवहार करने का तरीका ऐसा होता जैसे कि वह सोच रहा हो कि ऐसा महान व्यक्तित्व भला मुझसे क्या चाह सकता है। वह तो पूरी जिम्मेदारी स्वयं ही उठा लेगा और मुझे भूल जाएगा। प्रशंसा वह कभी नहीं सुनता था। लेखक और उपदेशक का वह विशेष सम्मान करता था। उनके कारनामे उसके लिए आश्चर्यजनक थे। जब मैंने उसे बताया कि मैं भी काफी

लिखना हूँ तो बहुत देर तक तो वह यही सोचता रहा कि मेरा मतलब मात्र लिपि लेखन से है क्योंकि वह स्वयं भी बहुत ही सुन्दर लेख लिख लेता था। कभी-कभी रास्ते की बर्फ पर उसके गाँव का नाम बड़े ही सुन्दर ढंग से ठीक फ्रांसीसी प्रणाली में लिखा मुझे दीख पड़ता और मैं समझ जाता कि वह यहाँ से गुजरा है। मैंने उससे पूछा क्या अपने विचारों को लिपिबद्ध करने का विचार भी कभी तुम्हारे मन में आया है? उसने उत्तर दिया था, मेरा अक्षर ज्ञान तो उनके लिए है जो पढ़ या लिख नहीं सकते। अपने विचारों को लिखने की मैंने कभी कोशिश नहीं की है। नहीं मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता हूँ। मैं नहीं जानता कि पहले क्या लिखूँ। यह सब तो मुझे मार ही डाले। और फिर साथ ही साथ हिज्जे करने की भी समस्या रहती है।

मैंने सुना है एक प्रतिष्ठित विद्वान और सुधारक ने एक बार उससे पूछा था 'तुम संसार को बदलना चाहोगे या नहीं?' मुझसे एक आश्चर्यमिश्रित आनन्द ध्वनि निकालते हुए और यह परवाह न करते हुए कि इस प्रश्न का उत्तर तो पहले भी दिया गया होगा उसने कहा था नहीं मुझे तो यही काफी पसन्द है। यदि कोई दार्शनिक उससे सम्बन्ध रखे तो उसे नित्य कितनी ही बातें सूझा करें। एक अजनबी को तो यही लगता था कि आम बातों के बारे में उसे जरा भी जानकारी नहीं है। पर कभी-कभी मुझे उसमें वह मानव दीख पड़ता जो पहले कभी नहीं देखा था। तब मैं समझ ही न पाता था कि वह शेक्सपियर जितना ज्ञानी मानव या एक बालक जितना सरल और अजान उसमें एक उत्तम काव्य चेतना देखूँ या घोर जड़ता। कस्बे के एक आदमी ने एक बार मुझसे कहा था जब मैं छोटी सी काली टोपी पहने इसे सीटी बजाते हुए गाँव में चक्कर घूमते देखता हूँ तो मुझे लगता है कि यह कोई वेश बदले कोई राजकुमार है।

किताबों के नाम पर उसके पास एक जन्त्री थी और एक गणित की पुस्तक। गणित में वह काफी कुशल रहा था। जन्त्री उसके लिए एक प्रकार का विश्वकोष थी। उसका अनुमान था कि उसमें मानव ज्ञान का सार निहित है। और अंश में कुछ दूर तक ऐसा है भी। अक्सर विभिन्न सामयिक सुधारों के बारे में मैं उसे बताता रहता और उन पर अपना अपना सरल और व्यावहारिक दृष्टिकोण रखने में वह भी कभी चूक न करता। ऐसे विषयों के बारे में उसने पहले कभी कुछ न सुना था। मैंने उससे पूछा क्या तुम कारखानों के बिना काम चला सकते हो?

उसने कहा मैंने तो घर का बुना यह वस्माट कपडा पहन रखा है और मेरे लिए यह बहुत बढिया है। क्या तुम चाय और काफी को छोड सकते हो ? क्या इस प्रदेश म पानी को छोडकर कोई अन्य पेय पिया जाना उचित है ? उसने पानी मे विषगजर (हमलाक) के पत्ते गलाकर उस पानी को पिया था और उसके विचारानुसार गर्मिया म यह पेय पानी से तो बहतर ही रहता है। जब मैंने पूछा कि क्या तुम सिक्के के बिना काम चला सकते हो, तो उसने सिक्के के लाभो का ऐसे वणन करना आरम्भ कर दिया जैसे कि वह सिक्के की सस्था के उद्भव और विकास का निर्दयतम दार्शनिक शैली म परिपाक कर रहा हो और पण (Pecunia) शब्द के मूल पर प्रकाश डाल रहा हो। उसने बताया सोचिए तो यदि मेरे पास एक बैल हो और मैं किसी दुकान म सुई धागा खरीदना चाहू तो पशु के किसी न किसी अग को हर बार गिरवी रखने फिरना कितना असुविधाजनक और असम्भव होगा। कितनी ही सस्थाओ के पक्ष म वह किसी भी दार्शनिक से बढिया तक दे सकता था क्योकि वह उनका उतना ही वणन करता था जितनी कि वे सस्थाए उससे सम्बन्धित थी और उनको चालू रखने के ठोस वास्तविक कारण ही वह प्रस्तुत करता था क्योकि कल्पना कोई अन्य कारण उसे नही सुझा पाती थी। एक अन्य अवसर पर उसे बताया गया कि अफलातून ने मानव की परिभाषा बिना पखोवाला दो परो का पशु कहकर की है। उसे बताया गया कि एक आदमी ने मुर्गे के पख नोचे और बोला देखो यह है अफलातून द्वारा प्रतिपादित आदमी। यह सुनकर एक महत्त्वपूण अन्तर की ओर उसने सकेत किया कि इस उपमा म घुटने गलत तरफ मुडे है। कभी-कभी भावावेश में वह कह उठता, अहा बातें करना मुझे कितना अच्छा लगता है। मैं, भगवान की कसम, पूरे दिन बातें करता रह सकता हू। एक बार कई महीनो तक मैं उससे न मिल सका, मिला तो मैंने उससे पूछा इन गर्मियो के लिए क्या कोई नया विचार तुम्हारे दिमाग म आया है ? उसने उत्तर दिया 'वह आदमी जिसे मेरी तरह श्रम करना है जो विचार उसके दिमाग म आ चुके है उन्हे यदि न ही भूले तो अच्छा है। इससे वह लाभ म ही रहेगा। शायद तुम्हारा आदमी जिसके सग तुम मेंड गोडते रहे हो भागने की सोच रहा है। तब तुम्हारा दिमाग वही लगा रहेगा और तुम अपने घास माथे के बारे म ही सोचते रहोगे।' ऐसे अवसरो पर कभी-कभी आरम्भ म ही वह मुझसे पूछ बैठता क्या कोई नया सुधार तुम कर सके हो ? जाडो के एक दिन मैंने उससे पूछा क्या तुम अपने म सन्तुष्ट हो ? मैं उसे बताना चाहता

था कि उसके अन्तरंग में बाहर के पादरी का सूक्ष्म प्रतिरूप वर्तमान है और इस जीवन का एक उच्चतर तथ्य भी है। 'मैं सन्तुष्ट हूँ!' उसने उत्तर दिया, 'कुछ लोग एक चीज़ पाकर सन्तुष्ट हैं, कुछ दूसरी। और एक व्यक्ति जिसके पास काफी कुछ है इसी बात से सन्तुष्ट हो सकता है कि वह आग की तरफ पीठ और मेज़ की तरफ पेट करके बैठ जाए।' किसी भी तरह उसे संसार के प्रति एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए मैं तैयार न कर सका। जो भी ऊँची से ऊँची बात वह समझ सका वह सीधी सादी उपयोगिता की बात ही थी। पशु से इतनी ही बात समझ पाने की आशा की जा सकती है। और व्यवहारतः यह बात अधिकांश लोगों के विषय में सच है। यदि कभी मैं उसके सामने प्रस्ताव रखता कि तुम अपनी जीवन पद्धति में सुधार क्यों नहीं करते तो वह बिना कोई दुःख प्रकट किए सिर्फ इतना कह देता कि अब इसके लिए बहुत देर हो चुकी है। फिर भी वह ईमानदारी और ऐसे ही अन्य गुणों में पूरी आस्था रखता था।

उस व्यक्ति में कितनी भी कम क्यों न हो एक निश्चित [illegible] मौलिकता मुझे दीख पड़ी थी। अक्सर मैं देखता कि वह मन ही मन चिन्तन कर रहा है और अपने निजी विचार रख रहा है। यह बात इतनी दुर्लभ है कि इसके लिए मैं दस मील चलकर जा सकता हूँ। यह बात मानव समाज की कितनी ही संस्थाओं के नवसृजन की क्षमता रखती है। यद्यपि वह हिचकिचाता रहता था और शायद अपने को स्पष्टतः व्यक्त करने में असफल भी रहता था पर उसके प्रयास के पीछे एक व्यक्त करने योग्य विचार हमेशा कसमसाया करता था। पर उसकी विचारणा इतनी आदिम थी और पाशवृत्तियों में इतनी दबी थी—यद्यपि किसी भी मात्र पढ़े लिखे आदमी से उसकी संभावनाएँ अधिक थीं—कि कोई भी उल्लेखनीय बात उसमें से कठिनाई से ही उभरकर ऊपर आती थी। उसका अस्तित्व यह बतलाता था कि जीवन के निम्नतम स्तरों में भी स्थायी रूप से दीन और अशिक्षित लोगों के मध्य भी प्रतिभा सम्पन्न मानव मिल सकते हैं। ऐसे व्यक्ति या तो अपने निजी विचार ही रखकर चलते हैं या दिखने का नाटक एकदम नहीं करते। वे उतने ही अथाह होते हैं जितना कि यह वाल्डेन सरोवर माना जाता है फिर मटमैले और कीचड़-सने वे कितने ही क्यों न हों।

कितने ही यात्री चलते चलते मुझसे मिलने और मेरे घर को अन्दर से देखने आते और बहाने के रूप में आकर मुझसे पानी माँगते। मैं उन्हें बता देता कि

मैं पानी तालाब म नकर पीता हू। मैं उम तरफ मकत कर दता और व चाहन ता एक नुस्या भी उन्हें द दना। पहली अप्रल व आमपाम प्रतिवप काफी हलचल हुआ करती है और मभी नाग यहा म वहा मफर किया करत हैं। बहुत दूर रहन पर भी प्रतिवप व इन आन-जानवाना मे मैं वचित न रह पाना और मेर भाग्य का अतिथिया का मग हिस्मा मुझे मिनता। इनम कितन ही बड अजीबन्म नाग भी होन। घमगानाओ म और यहा-वहा रहनवान कितन हा अपरचिरा बुद्धि व लाग भी मुझ्मे मिनन आन। मैं काशिश करता कि जितनी भी बुद्धि उनके पाम है व उमका उपयोग करें और मरे मामन उमका मवीकार करन। एन अवमरा पर मैं प्रना मो ही अपनी बातचीत का विषय बना नना और इम प्रकार मग मनचाहा पूरा हो जाता। सच यह है कि उनम म बहुत-म नागा का मैंने नगर व प्रतिष्ठित लोगा म और नियना वे तथाकथित मरग्क्षका म अधिक बुद्धिमान पाया है। मैं मोचन नगता कि क्या न उनम परस्पर अदला-बदला कर दी जाए। बुद्धि व बार म मैंन यह मीखा कि अपकचरी और परिपक्व बुद्धि म कोई विशप अन्तर नहा है। एक दिन यह ही मरन स्वभाव का मीधा माधा एक भिखारी मर पाम आया। इम और बहुत-से लोगा वे माथ एक मड क रूप म इम्नमान किए जान मैंन देखा था। अर्थात उस मेत म एक डाल पर खडा कर दिया या बिठा दिया जाना जिमम यह पशुआ का और अपने को भी इधर-उधर भागन फिरन म राकता रह। इम व्यक्ति न मरी तरह ही रहन का इच्छा व्यक्त का। उमन अत्यन्त मादगी और मचाइ क माथ जा तथाकथित विनम्रता म या ता ऊची चीज है या फिर बहुत नाची है मुझ बनाया कि मैं बुद्धि की दृष्टि म बहुत हीन हू। यही उमक शब्द थ। मरना न एमा ही मुझ बनाया है। फिर भी उमका अनुमान था कि भगवान उमकी भी उतनी ही रक्षा करते हैं जितनी कि औरा की। वह कहता गया मैं मच म ठीक बचपन म एमा ही रहा हू। मुझम अधिक बुद्धि नहा रहा है। मैं और बच्चा का तरह नही था। मरा दिमाग कमजार है। मैं ममझना हू भगवान को यहा मर्जी थी। और अपन शब्दा की सचाइ व प्रमाणरूप वह मरे मामन खडा था। मर लिए वह एक आध्या त्मिक गुत्थी थी। मुझ कठिनाइ म ही कोई एमा आदमी मिला था जिमकी मम्भा बनाए उमके जमी थी। जा कुछ उमन कहा वह अत्यन्त मरल मच्चा और ईमान दारी से भरा था। और यह भी मच है कि जिम अनुपात म वह अपन को नीच गिराता हुआ दीम पडता था उतना हा वह ऊचा था। पहल १०। मैं

गा, पर यह नीति था बडी ही उत्तम और बुद्धिमत्तापूर्ण। मुझे लगा कि इस
ब और हीनबुद्धि भिखारी ने सचाई और स्पष्टवादिता का जो आधार मेरे
मने रखा है यहा से बातचीत को आरभ करके उसे सन्तो के सलाप मे भी ऊचे
र तक ले जाया जा सकता था।

कुछ अतिथि मेरे पास उस वर्ग के भी आए जिन्हे वस्तुत गरीबो मे साधारण
या नहीं गिना जाता लेकिन जिन्हे गिना जाना चाहिए क्योकि कुछ भी हो
मार के निर्धन समाज मे तो वे हैं ही। ये अतिथि आपके आतिथ्य की नही आपकी
हायता आपकी चिकित्सा की याचना करने आते हैं। वे बडा ही व्यग्रता से आपसे
दद मागते हैं और अपनी प्रार्थना से पहले की भूमिका मे आपको यह जता देते
ैं कि एक बात के लिए वे कृतसकल्प हैं जो यह है कि वे अपनी सहायता अपने-आप
कभी नही करेगे। मैं चाहा करता हू कि मेरा अतिथि वास्तविक भुखमरा न हो
चाहे किसी भी कारणवश दुनिया भर मे अधिक भूख उसे भले ही लगी हो। जो दान
के पात्र होते हैं वे अतिथि नही होते। कुछ लोग मेरे पास एसे भी आते थे, जिन्हे
इस बात का अहसास कभी नही होता था कि बस अब उन्हे चले जाना चाहिए। मैं
उन्हें छोडकर अपने काम पर चल देता और निरन्तर बढती दूरी से उनकी बातो के
उत्तर देता जाता। इस स्थान परिवर्तन की ऋतु मे हर स्तर की बुद्धि के लोग मुझे
मिलते। उनमे से कुछ तो इतने अधिक बुद्धिमान होते थे कि अपनी बुद्धि का उप
योग करना भी व न जानते थे। भागे हुए गुलाम आते जिनके आचरण बेतिहर
मजदूरो जसे होते। वे रह रहकर कुछ सुनने का उपक्रम करते उसी तरह जसेकि
एक दतकथा मे लोमडी पीछा करनेवाले शिकारी कुत्तो का भौंकना सुना करती
थी। वे मेरी ओर बडी दयनीय दृष्टि से देखते। जसेकि वह रहे हो

आ ईसाई क्या तुम मुझे वापिस भेज दोगे?

उनमे से एक दरअसल भागे हुए गुलाम की मैंने उत्तर की ओर चल जाने मे
सहायता दी थी। ऐसे लोग आते थे जिनके दिमाग मे बस अकेला एक विचार होता
था जसे मुर्गी के पास एक बच्चा हो और वह भी बत्तख का बच्चा निकल
आए। ऐसे लोग भी आते थे जिनके मन मे हजारो विचार होते थे पर सुलझे हुए
नही। वे उन मुर्गियो की तरह होते थे जिन्हे एसे सौ बच्चे इकट्ठे सौंप दिए जाए जो
सबके-सब एक ही पतगे के पीछे भाग रहे हो और हर सुबह उनमे से बीसियो
विचार खो जाए और उनका मस्तिष्क सदैव उडे और बौखला जाए। कुछ लोगों

के पास टागा के बदले बस विचार होते थे। उनकी उपमा एक प्रकार के बौद्धिक कनखजूरा से दी जा सकती है जो आपको भी यहा से वहा सब ओर रेंगने पर विवश कर दें। एक आदमी ने प्रस्ताव रखा कि व्हाइट माउण्टेन्स की तरह यहा भी एक रजिस्टर रख लिया जाए जिसमे आनेवाले अपने हस्ताक्षर कर दें। लेकिन दुख है कि मेरी स्मरण-शक्ति इतनी तेज है कि मैंने ऐसा करना आवश्यक नहीं समझा।

अपने पास आनेवालो की कुछ विशेषताओ को परखे बिना मैं न रह सका। लडके-लडकिया और जवान स्त्रिया साधारणतया जगल मे पहुचकर बहुत प्रसन्न दीख पडते। वे सब तालाब मे झाकते फूलो को देखते और इस प्रकार अपने समय का सदुपयोग करते। व्यापारी लोग यहा तक कि किसान भी सिर्फ मेरे अकेलेपन और अपने काम धधे के बारे मे ही बातें करते और किसी न किसी चीज का जिक्र करके कहते कि तुम हमसे बहुत अधिक दूरी पर रहते हो। वे कहते जरूर थे कि कभी-कभी जगल मे घूमना हमे बहुत अच्छा लगता है पर स्पष्ट दीख पडता था कि वह उन्हे अच्छा नही लगता। व्यस्त आतुर लोग जिनका समय कोई जीविका अथवा उसे बनाए रखने मे बीत जाता है पादरी जो ईश्वर के विषय मे ऐसे बात करते है जैसे कि उनके पास इस विषय का एकाधिकार हो और जो विचारो की विभिन्न धाराओ को सहन नही करते। डाक्टर और वकील आते और अस्थिरचित्त गृहस्वामिनिया आती जो मेरी अनुपस्थिति मे मेरी अलमारी मे झाकती और बिस्तर को उलट-पलटकर देखती और यह जानने का यत्न करती कि मेरी चादर अधिक साफ है या उनकी। ऐसे युवक जो युवक नही रह थे और जो इस निष्कर्ष पर पहुच चुके थे कि काम धधो की दृष्टि से पिटे पिटाए मार्गों पर चलने मे ही सबसे अधिक सुरक्षा है—ऐसे सब व्यक्ति आम तौर पर घोषणा करते कि मेरी जैसी स्थिति मे रहकर कोई भी बढिया काम करना सम्भव नहीं है और यह बात वे डके की चोट पर कहते। हर आयु के स्त्री-पुरुष बूढे डरपोक और दुर्बलमन लोग जिनके चिन्तन का विषय अधिकतर रोग और आकस्मिक दुर्घटना और मृत्यु जैसे विषय ही रहा करते जिनके लिए जीवन खतरो से भरा पूरा है जो यहा सोच सकते कि सकट है ही नही यदि उसके बारे मे सोचा न जाए। ऐसे लोगो का विचार रहता कि समझदार आदमी रहने के लिए सबसे अधिक सुरक्षित स्थान ही ध्यानपूर्वक चुनता है जहा एक पल की चेतावनी पर भी अमुक डाक्टर को बुलाया जा सके। उनके लिए ग्राम शब्द एक ऐसे समूह का नाम है जो पारस्परिक सुरक्षा के लिए वचनबद्ध है। आप

मानिए कि एसे लोग दवाओं की पेटी साथ लिए बिना वर चुनने भी जाने को तयार नहीं होंगे। तत्त्व की बात यह है कि जो जीवित है उसके लिए मरने का खतरा हमेशा बना रहता है। और जिस अनुपात में वह अपने को जीते हुए भी मर के समान बना लेता है उतने ही अनुपात में वह खतरा कम किया जा सकता है। बठे-बठे भी उतना ही खतरा है जितना कि दौडते हुए समझा जाता है। अन्त में स्वत ही बन बठे सुग न्व महाराज भी मेरे पास आते और ऐसे लोगों का आचरण सबसे अधिक उत्थान वाला होता। वे सोचा करते कि मैं निम्न पक्तियां ही हमेशा गाता रहता हूँ

यह है वह घर जिसे मैंने बनाया है
यह है वह व्यक्ति जो मेरे बनाए घर में रहता है।

लकिन शायद उन्हे पता नहीं था कि तीसरी पक्ति इस प्रकार है

ये है वे लोग जो उस व्यक्ति को परेशान करते हैं
जो मेरे बनाए घर में रहता है।

मुझे मुर्गियां मार डालनेवाले कुत्तों का डर नहीं था क्योंकि मैं मुर्गियां नहीं पालता था। लेकिन मुझे आदमियों का शिकार करनेवालों का डर जरूर था।

इन अंतिम किस्म के आगन्तुकों की अपेक्षा कहीं अधिक आनन्ददायक लोग भी मेरे पास आते थे। बेर चुनने के लिए आए बच्चे रेल-श्रमिक जो इतवार के दिन साफ कपडे पहनकर निकलते हैं मछियारे और शिकारी कवि और दार्शनिक। संक्षेप में वे सब सच्चे और ईमानदार यात्री वहां आते थे जो ग्रामों को दरअसल छोडकर स्वच्छन्दता के उपभोग के लिए जंगलों में आया करते हैं। मैं एसे लोगों का स्वागत इन शब्दों में करने के लिए तैयार रहता था अंग्रेजो तुम्हारा स्वागत है अंग्रेजो तुम्हारा स्वागत है। क्योंकि मैं इस जाति का संसर्ग प्राप्त कर चुका था।

सेम का खेत

मरे मन म सम की कतारा का लम्बाई का यदि जोरा जाता ना लगभग सात मील बनती। इस बीच उस बाई हुई सम का निराया जाना अनिवाय हा गया था। मैं बुआई करता चला गया था और अन्तिम कतार की बुआई क समय पहला काफी उग आई था। जब उनकी निराई का टाला नहीं जा सकता था। हरक्यूलीज[1] की तरह का यह जो छोटा-सा आत्मसम्मानपूर्ण श्रम स्थिरभाव स मुझ करना पडता था इसका क्या अथ था मैं समझ नहीं पाता था। यद्यपि सम मरी जरूरत से कहीं ज्यादा था पर मैं अपनी इन कतारा स प्रेम करन लगा था। यह सम मुझ धरती म चिपट रहन का विवश कर रही थी और इसम आण्टियस[2] की तरह मुझे शक्ति ही मिलती थी। पर मैंने इन्हें उगाया क्या? यह सिर्फ भगवान ही जानता है! सारी गर्मी मैं इस अजीब-स श्रम म लगा रहा। धरती के इस हिस्स पर जहा पहल सिर्फ पजपत्ती कुष्मदरी जामन और इसी तरह के पौध मीठे जगली फल और सुन्दर फूल उगा करते थे वहा अब उनक बदल यह सम उगाने की कोशिश मैं करता रहा। इन समा ने मरे बारे म और मैंने समा के बारे म क्या जाना? मैं उनकी पालना-पोसना हू उन्हें निराता हू बहुत सुबह म बहुत रात तक उनकी देख रख करता हू और दिन भर मेरा यही काम रहता है। सचमुच म इनक पत्ते चौडे और बढ़िया लगत हैं। ओस का बूदें और वर्षा मेरी सहयोगिनी हैं जो सूखी मिट्टी को सींचती हैं। नहीं तो मिट्टी म अपनी उर्वरता है तो कितना। यह तो एकदम असमर्थ और अयोग्य है। कीड़े मकोडे ठडे दिन और मदम खरगोश य हिमसूपक मरे शत्रु हैं। हिमसूपक ता एक चौथाई एकड सम कुतर-कुतरकर साफ कर डाला

---

1 ग्रीक पुराणों का भीम जिन्हें अपने राजा की आज्ञा पर बारह असम्भव कार्य करने पड़े थ।
2 लीबिया का एक दैत्य जो अजय था, क्योंकि धरती के स्पर्श स उसमें अद्भुत शक्ति सचरित होती रहती थी। इसे हरक्यूलीज ने मारा था।

हैं। जानसट और अन्य पौधों को उखाड़ फेंकने का और उनके इस प्राचीन जंगली बगीचे को उजाड़ देने का मुझे क्या अधिकार है? खैर, जल्दी ही बची-खुची सेमें बहुत मस्त होकर उनके काम की न रह जाएगी और अपने नये शत्रुओं का सामना करने के लिए आगे बढ़ेंगी।

मुझे अच्छी तरह याद है जब मैं चार वर्ष का था तब बोस्टन से यहाँ मेरे कस्बे में मुझे लाया गया था और मैं इन्हीं जंगलों और इसी खेत में से गुजरकर तालाब तक पहुँचा था। यहाँ का दृश्य मेरी स्मृति पर अंकित प्राचीनतम दृश्यों में से एक है और आज इस रात मेरी बाँसुरी की स्वर-लहरी उसी तालाब के पानी के ऊपर गूँज रही है। आयु में मुझसे बड़े चीड़ के वृक्ष अभी तक खड़े हैं। जो कुछ गिरा दिए गए हैं उनके ठूँठों से मैंने अपना खाना पकाया है। लेकिन चारों ओर नये पौधे उग रहे हैं और किसी बच्चे की आँखों के लिए एक नया दृश्य तैयार हो रहा है। इस चरागाह में जानसट की सदाबहार उन्हीं जड़ों से नये अंकुर फिर फूट उठते हैं। अपने शैशव के सपने इस शानदार दृश्य को एक नया रूपाकार देने का स्वयं मैंने भी प्रयत्न किया है। मेरी उपस्थिति और मेरे श्रम के प्रभाव और परिणाम को सेम के पत्तों, गेहूँ की बालों और आलू की बेलों के रूप में देखा जा सकता है।

इस पहाड़ी भूमि के लगभग ढाई एकड़ के टुकड़े को मैंने बोया था। लगभग पन्द्रह वर्ष पहले ही यह भूमि साफ की गई थी। जड़ों की दो या तीन कतारें तो स्वयं मैंने उखाड़कर फेंकी हैं। इसीलिए कोई खाद मैंने इसमें नहीं डाली। लेकिन गर्मियों में जब मैं खुदाई कर रहा था तब तीरों की नोकें मिट्टी में मिली मुझे मिलीं। इनसे पता लगा कि कोई अत्यन्त प्राचीन जाति यहाँ रहा करती थी। वह अब लुप्त हो गई है और उसने श्वेतों के आने से बहुत पहले इस धरती को साफ किया था और इतना जोता-बोया था कि मिट्टी में आगे यही फसल देते रहने की शक्ति नहीं रही थी।

किसी हिममूषक या गिलहरी के सड़क पर उतरने से अथवा सूर्य के बलूत की झाड़ियों से ऊपर उठने से बहुत पहले ही जबकि ओस चारों ओर बिखरी मिलती है अन्य किसानों की चेतावनी के बावजूद मैं अपने सेम के खेत में से हठीली घास मोथ को उखाड़ने के काम में लग जाता था। मैं तो आपको भी परामर्श दूँगा कि ओस के रहते रहते ही सम्भव हो तो अपना सब काम आप समाप्त कर डालें। इतनी सुबह मैं नंगे पैर ही काम करता था और प्लास्टिक का काम करनेवाले एक

कलाकार की तरह शाम में भीगी पाली खेत में इक्के-दुक्के घूमता था। लेकिन दिन चढ़ आने पर पेड़ धूप में जलने लगते थे। सूर्य ममता को निगलने के लिए आवश्यक प्रकाश मुझे दे देता था। उस कंकरीली पीली पहाड़ी धरती पर आगे-पीछे होता हुआ ८२ गज लम्बी हरी कतारों के बीच में धीमे धीमे आगे बढ़ता था। इन कतारों का एक सिरा चन्दन की झाड़ियों के एक कुंज में समाप्त होता था जिसकी छाया में मैं विश्राम ले सकता था तो दूसरा सिरा कृष्णबदरी की झाड़ियों से एक मकान में समाप्त होता था। जितनी देर में मैं एक कतार को खत्म कर दूसरी तक पहुंचता, रेखियों का हरापन और भी गहरा हो उठता था। मैं घास-पौधे को उखाड़ता, मैं वृक्षों को ताजी मिट्टी देता और अपने बाएं हाथ से मेहनती घास-पौधे को बढ़ावा देता था। मैं पौधों को मिट्टी की प्रेरणा देता था कि वह ग्रीष्म ऋतु के अपने उच्छ्वासों को चिरायता मिर्च और बाजरे के रूप में व्यक्त न करें बल्कि पत्तों और फलियों के रूप में व्यक्त करें। धरती से मैं कहता कि वह श्रम के बदले सम का नाम उच्चारित करे। यही मेरा प्रतिदिन का काम था। क्योंकि मुझे घोड़ों या पशुओं की मजदूरी या ऐसे आलसियों या नहरों की कृषि के उन्नत साधनों का कोई सहारा प्राप्त नहीं था, इसलिए मेरा काम बहुत धीमे धीमे चलता था। फिर भी सामान्य की अपेक्षा अपनी सेवा में मैं कहीं अधिक घुल-मिल गया था। लेकिन शारीरिक श्रम खून-पसीना एक करने की सीमा तक भी क्यों न किया जाए, निम्नतम कोटि की दीर्घसूत्रता नहीं कहा जा सकता। उसमें एक स्थायी और अक्षय नैतिकता निहित रहती है और ऐसा श्रम एक विद्वान को तो बड़े ही ठोस परिणाम प्रदान करता है। लिंकन और वेलैंड में से होकर पश्चिम की ओर पता नहीं किधर जाने वाले यात्रियों की दृष्टि में तो मैं एक बड़ा ही परिश्रमी किसान था। वे तो अपनी घोड़ागाड़ियों में घुटनों पर टिकाए रहते और लगाम को ढीली छोड़कर आराम से बैठे होते थे जबकि मैं उस घर में रहकर धरती पर कठोर परिश्रम करता हुआ दांव पर लगा होता था। लेकिन मेरा घर जल्दी ही उनकी दृष्टि और विचारों से अलग हट जाता था। सड़क के दोनों ओर बहुत लम्बी दूरी तक यही एक मात्र खेत जोता-बोया उन्हें मिलता था। यात्री उसका अनिर्वचनीय आनन्द लेते हुए आगे बढ़ जाते थे। कभी-कभी खेत में काम करते किसान के कानों में इन यात्रियों की गप्पों और आलोचनाओं का कुछ अंश भी पड़ जाता जो उसे सुनाने के लिए नहीं कहा जाता था। "सेम इतनी देर में! कोई मटर! इतनी देर में!" क्योंकि अब

दूसरे किसान निराना शुरू कर देते थे, तब भी मैं बोना ही रहता था। रहि पर चलनेवाला किसान इस बात का पता नहीं पाता था। चारे के लिए मक्का ? क्या भई चारे के लिए मक्का ? भूरा कोट और काली टोपी पहन एक भला आदमी पूछ उठता है। और कठोर आकृतिवाला वह किसान अपने घोड़े को हाँकता हुआ यह पूछने के लिए मेरे पास आ खड़ा होता है कि जब खेत में खाद तुमने नहीं डाली है तो तुम कर क्या रहे हो ? वह बताता है थोड़ी बची-खुची गन्दगी डालो या थोड़ा कूड़ा-करकट यानी राख या गारा ही। लेकिन मेरे पास ढाई एकड़ का खेत था और गाड़ा के बदले सिर्फ एक निराना थी जिसे मैं दोनों हाथों से खींचता था। खाद बहुत दूर मिलती थी और घोड़ा गाड़ियों के प्रति मुझमें एक विरक्ति थी। यात्री लोग खड़खड़ाते हुए गुजरते तो मेरे खेत का मुकाबला मार्ग के पीछे छूटे अन्य खेतों से जोर जोर से करते। इससे मैं जान जाता कि कृषि-संसार में मेरा क्या स्थान है। श्री कालमन[1] ने अपनी रिपोर्ट में मेरे खेत का उल्लेख नहीं किया था। बात यह है कि *जिन्हें मानव ने अभी सवारा नहीं है उन जंगली खेतों में प्रकृति जो कुछ पैदा कर देती है* कौन उसका हिसाब किताब रखने जाता है। अंग्रेजी घास की फसल को बड़े ध्यान से तोला जाता है। आर्द्रता को जाँचा जाता है। तेजाब के क्षार और सज्जी का प्रयोग किया जाता है। लेकिन जंगलों में गड्ढों तालाब के छिद्रों चरागाहों में जो बढ़िया किस्म की तरह तरह की फसलें उगती हैं उन्हें आदमी कभी काटने नहीं जाता। यह कहिए कि मेरा खेत उन जंगली और इन ग्रामीण खेतों का सम्बन्ध सूत्र था। कुछ राज्य सभ्य होते हैं और कुछ असभ्य अथवा जंगली। इसी प्रकार मेरा खेत किसी बुरे अर्थ में नहीं एक अधकर्षित खेत था। मेरी बोई सेम सहर्ष अपनी आदिम जंगली स्थिति की ओर लौट रही थी। मेरी निराना उनके मनोरंजन के लिए ग्रामीण कृषि-संगीत (राज ए वाग) प्रस्तुत किया करती थी। पास ही भोज वृक्ष की सबसे ऊँची टहनी पर बैठी भूरे रंग की थ्रैशर चिड़िया जिसे कुछ लोग *लाल मविस कहना पसन्द करते हैं आपके संग से प्रफुल्लित होकर सारी सुबह* गाती रहती है। उसे तो साथ चाहिए। आपका खेत यहाँ नहीं होगा तो किसी और किसान के खेत पर जा बैठेगी। जब आप बीज बोने होते हैं तो वह चिल्लाती है ये बिखेर दो बिखेर दो ढक दो ढक दो खींच लो खींच लो। लेकिन मक्का मैंने नहीं बोई था। और ये सब थ्रैशर जैसे शत्रु से सुरक्षित थीं। थ्रैशर के असंगत

१ १८३७ से १८४१ तक आ रा नक कामन जिन्होंने एक कृषि-पत्रिका निकाली थी।

संगीत और एक या बीस शाखाओं पर किए गए भौंरे नृत्य की तुलना में क्या कुछ सम्बन्ध सम्भव है? फिर भी मैं गीली रात या शाम में उन्हीं को अधिक पसन्द करता हूँ। यह एक मस्ती किस्म की सर्वोत्तम याद थी जिसमें मेरी पूरी आस्था थी।

जैसे-जैसे मैं अपनी निराई में खेत की कतारों की ताज़ी मिट्टी देता जाता था मैं इतिहास में अनुल्लिखित उन जातियों के अवशेषों को अस्त-व्यस्त करता जाता था जो आदिम युगों में इस आकाश के नीचे रही थीं। युद्ध और शिकार के उनके छोटे-छोटे हथियार आज के दिन भी सूर्यास्त में निकल आए थे। वे प्राकृतिक पत्थरों में मिले-जुले पड़े थे। इनमें से कुछ पर आदिवासियों द्वारा आग में जलाए जाने के चिह्न थे और कुछ पर धूप में झुलसे जाने के। जिन लोगों ने अभी कुछ समय पहले ही इस भूमि को जोता होगा उनके बर्तनों और शीशों के टुकड़े भी यहाँ मिल जाते थे। जब मेरी निराई पत्थरों से टकरा जाती तो एक संगीत पैदा होता जो जंगलों में और आकाश में गूँज उठता। वह मेरे उस श्रम का अनुचर होता जो तत्काल ही एक अथाह फसल मुझे दे जाता। अब वह सेम जिसे मैं निराता था सेम न रहती और न ही मैं वह रहता जो सेम निराता था। उस समय यदि मैं याद करता ही तो एक दयनीय भाव और साथ ही गर्व के भाव से भरकर जान-पहचानवाले उन सभी लोगों को याद करता जो बाइबिल की कथाओं के संगीत-रूपक देखने के लिए नगर चले गए थे। नाइटहॉक नामक बाज़ तीसरे पहर की धूप में सिर के ऊपर मँडराता। कभी-कभी मैं दिन भर काम में लगा रहता और तब यह पक्षी आँख में अथवा आसमान की आँख में पड़े एक कंकड़ की तरह मुझे प्रतीत होता। रह-रहकर एक सपाटे के साथ वह नीचे आता। उससे ऐसी आवाज़ होती मानो आकाश फट कर चिथड़े चिथड़े हो गया हो। पर वह चोगा तत्काल ही सावना में रहित ज्यों का त्यों दीख पड़ता। नन्हीं चिड़ियाँ हवा में भर उड़ती हैं। वे अपने अंडे धरती पर नंगी रेत पर या पहाड़ियों की चोटियों पर चट्टानों पर देती हैं। वहाँ कोई उन्हें सरलता से देख नहीं सकता। वे तालाब की नन्हीं लहरों के समान तनु और शालीन लगती हैं जैसे कि हवा ने पत्तों को आकाश में उड़ा दिया हो। प्रकृति की विभिन्न चीज़ों में ऐसी ही सजातीयता है। बाज़ लहरों का हवा में उड़नेवाला भाई है। वह उनका निरीक्षण करता है और उनपर तैरता है। हवा में फैले हुए उसके कड़ियाँ पर समुद्र के जल के बिन परों के जवाब हैं। कभी-कभी मैं हवा पर चढ़े बाज़ों को ऊँचे आकाश में चक्कर काटते देखता। एक बार वे ऊँचे जाते फिर नीचे आते। एक

दूसरे से सटते और अलग हो जाते। मुझे लगता जैसे वे मेरे ही विचारों के मूर्तरूप हों। जंगली कबूतरों की एक जंगल से दूसरे जंगल तक की उड़ानें भी मुझे आकर्षित करती हैं। वे एक हल्की थरथराहट और फड़फड़ाहट की ध्वनि पैदा करते और हवा की सी तेजी से उड़ जाते। कभी-कभी किसी गला हुए जड़ को मरा निराना उलटता तो उसके नीचे एक गन्दी अशुभ अजनबी-सी चितकबरी सरटन (सलमैण्डर) निकलकर भागती। यह मिस्र देश और नील नदी की निशानी है पर आज हमारी समकालीन भी है। जब मैं रुककर अपनी निरानी पर झुकता तो ये आवाजें और ये दृश्य कतारों के बीच कहीं भी खड़े होकर मैं देखता और सुनता। यह ग्रामीण प्रदेश जो एक असीमित मनोरंजन हमें प्रदान करता है यह सब उसीका एक हिस्सा है।

दशहरा के दिन नगर में बड़ी बड़ी तोपें दागी जाती हैं। उनकी आवाज यहां जंगलों में मेल की बन्दूकों जैसी लगती है। सैनिक बाजों की स्वर-लहरियां भी कभी कभी इतनी दूर तक आ पहुंचती। इस प्रदेश के एकदम दूसरे किनारे पर अपने खेत में खड़ा होकर जब मैं बन्दूकों-तोपों का छूटना सुनता तो मुझे ऐसा लगता जैसे गुब्बारा फूट रहा हो। और जब कभी सेना की परेड होती और मुझे इस बात का पता न होता तो सारे दिन मुझे कुछ ऐसा अनुभव होता रहता जैसे अन्तरिक्ष को एक किस्म की खाज सी या कोई रोग सा आरम्भ हुआ या कलकव्रण हो गया है जैसे कि जल्दी ही उसकी सतह बस फटने ही वाली है। बहुत देर बाद हवा का एक अनुकूल झोंका मैदानों पर से और वलय मार्ग पर से झपटता हुआ आता और मुझे रंगरूटों की परेड की सूचना देता। बहुत दूर पर की यह भनभन ऐसी लगती जैसे कि किसीकी मधुमक्खियां उड़ गई हों और वर्जिल के परामर्श के अनुसार पड़ोसी अपने घरेलू बरतनों में से मधुरतम स्वरवाले किसी बरतन पर टनटन करके उन्हें फिर से छत्ते में लाने का प्रयास कर रहे हों। और जब आवाज मर जाती और भनभन रुक जाती और हवा के अनुकूलतम झोंके भी कोई सूचना न लाते तो मैं समझ जाता कि अन्तिम मधुमक्खी भी निश्चिन्ततम के छत्ते में सुरक्षापूर्वक ले आया गया है और अब उन मक्खियों का ध्यान उस शहद पर केन्द्रित है जिसमें छत्ता लिपा है।

मुझे गर्व होता कि मासाचुसेट्स और हमारे पितृदेश की स्वतन्त्रता ऐसे समय हाथों में है। जब मैं दुबारा अपनी निराई में लगता तो मेरा हृदय एक अवर्णनीय विश्वास से भरा होता और मैं भविष्य में एक स्थिर आस्था लेकर सहर्ष

अपने काम में लग जाना।

जब कभी गांव में कई बैंड एकसाथ बजने लगते तो ऐसा लगता जैसे पूरा गांव एक विशाल धौंकनी है और शोर में ये सब मकान एक एक करके फैलेंगे और ढह जाएंगे। लेकिन कभी-कभी सचमुच ही एक बड़ी ही उत्तम और प्रेरक स्वर-लहरी इन जंगलों तक पहुंचती। कोकिल-गान की आवाज़ भी सुन पड़ती और मुझे महसूस होता कि मैं पूरी रुचि से किसी मसिहकन आदिवासी का ढोल बजा सकता हूं— हम हमेशा तुच्छ चीज़ों के लिए ही उम्मीदवार क्यों बनें?—और मैं इधर-उधर देखता कि कोई हिममूषक या स्कंक सामने पड़ जाए जिसपर मैं अपनी वीरता आज़मा सकूं। मुझे ऐसा लगता कि सैनिक बाजों की यह ध्वनि फिलिस्तीन से आ रही है और गांव के ऊपर छाए ददवाह के पत्तों के सिरों को धीमे कांपते और थरथराते देखकर मुझे लगता कि प्राचीन धर्मयुद्धों[1] के सैनिक अन्तरिक्ष में चले जा रहे हैं। यह दिन महान दिवसों में से एक था लेकिन मेरे खेत में से आकाश ठीक वैसा ही दीख पड़ रहा था जैसा कि वह प्रतिदिन दीखता है और उसमें कोई भी अन्तर नहीं था।

सेमों के साथ यह लम्बा परिचय एक अनोखा अनुभव रहा। मैंने उन्हें बोया निराया काटा और साफ किया और बेचा। यह अन्तिम काम सबसे सख्त काम था। इसमें यह भी जोड़ लूं क्योंकि मैंने उन्हें चखा भी। मैं इन सेमों को जानने के लिए कृतसंकल्प था। जब वे उग रही थीं तो मैं पांच बजे सुबह से लेकर दोपहर तक उन्हें निराता और शेष दिन साधारणतया अन्य कामों में बिताता। जरा सोचिए, विभिन्न किस्मों के घास-पात से आदमी कैसा विचित्र जान-पहचान और आत्मीयता बना लेता है! उनका वर्णन करें तो एक पुनरुक्ति जैसी प्रतीत होगी पर श्रम करते समय कभी पुनरुक्ति बिलकुल नहीं लगती थी। देखिए, इन कोमल पौधों को हम निर्दयता से उखाड़ डालते हैं। अपनी निराई से हम एक घृणित पक्षपात करते हैं। एक जाति को नष्ट करते हैं जबकि दूसरी को यत्नपूर्वक पालते पोसते हैं। वह रोमन चिरायता है, वह सुअर घास है, वह अमरन्त है, वह पादरर घास है। उन्हें पकड़ो उखाड़ो, उनकी जड़ों को धूप में सूखने के लिए डाल दो।

---

[1] तुर्कों के हाथ से ईसा मसीह की जन्मभूमि को छीनने के प्रयत्न में यूरोप तथा तुर्कों के बीच हुए धर्मयुद्ध।

इनका एक रेशा भी छाया में न रहे। यदि रह जाएगा तो ये अपने आप ही करवट बदल लेंगे और जम जाएंगे और दो ही दिन में कन्द की तरह फिर हरे हो उठेंगे। यह भी एक लम्बा युद्ध था। सारसों[1] के साथ नहीं बल्कि घास मोथे के साथ, ट्राय[2] के उन वीरों के साथ जिनकी पीठ पर सूर्य वर्षा और ओस है। प्रतिदिन सेमें देखतीं कि मैं एक निरानी हाथ में लिए उनकी रक्षा के लिए उनके शत्रुओं की संख्या क्षीण करने के लिए और मृत हुए घास मोथे से खाइयां पाटने के लिए चला आ रहा हूं। कितने ही जानदार तुर्रेदार हेक्टर[3] जो अपने साथियों की भीड़ से एक फुट ऊंचे उठ झूम रहे होते मेरे हथियार से कटकर गिर पड़ते और धूल में लोट जाते।

गर्मियों के उन दिनों को जिन्हें मेरे कुछ साथियों ने बोस्टन या रोम में ललित कलाओं की साधना में बिताया अन्यों ने उन्हें भारत में रहकर ध्यान मनन में गुजारा और कुछ ने लन्दन या न्यूयार्क में व्यापार को अर्पित किया उन्हीं का उपयोग मैंने न्यू इंगलैंड के किसानों के बीच किसानी में किया। इसलिए नहीं कि पाइथागोरस[4] का अनुगामी और प्रकृति से शाकाहारी होने के कारण सेमों की आवश्यकता मुझे भोजन के लिए थी चाहे मैं उनकी लप्सी बनाऊं या उन्हें देकर बदले में चावल ले लूं, पर शायद इसलिए कि कुछ को आत्मानकार और आत्माभिव्यक्ति के लिए भी तो खेतों में काम करना ही चाहिए जिससे कि एक दिन ऐसे लोग दृष्टांत बन सकें। कुल मिलाकर यह एक दुर्लभ मनोरंजन था। यदि यह बहुत लम्बे समय तक चलता रहता तो व्यसन बन जाता। मैंने सेमों में खाद नहीं डाली और उन्हें एकसाथ ही निराया भी नहीं। लेकिन जितना भी निराया असाधारण रूप में अच्छी तरह निराया और मुझे उसका फल भी मिला। एवलिन ने कहा है, सच यह है कि कोई भी खाद वैसा नहीं जैसा इस लगातार हलचल खुदाई और कुदाल

---

१ ग्रीक पुराणों में एक राजा फिनियस की कथा आती है। उसे शाप था कि वह खाना नहीं खा सकेगा। जब भी वह खाने बैठता सारस आते और सब कुछ खा जाते। बरसों यही होता रहा। फिर जेसन ने उसे मुक्त कराया।

२ ग्रीक पुराणों का प्रसिद्ध नगर जो भारत के महाभारत का युद्ध क्षेत्र बना और जिसे पूरी तरह ध्वस्त कर दिया गया था।

३ ट्राय के राजा प्रायम का वीर पुत्र हेक्टर जिसे एकिलीज ने मारा था।

४ ५८२ ई० पू० में जन्मे एक ग्रीक दार्शनिक।

से मिट्टी की उलटा-पलटी का मुकाबला नहीं कर सकती। एक और जगह उनने कहा है, 'मिट्टी विशेषकर यदि ताजी हो तो उसमें एक चुम्बक होता है जो नमक, शक्ति अथवा वह जो चाहिए जीवनदायी तत्त्व को अपनी ओर खींच लेता है। सारे श्रम और हलचल के पीछे यही रहस्य है। पापण के लिए यह अनिवार्य है। गोबर अथवा अन्य गन्दगियों के प्रयोग का इस तरीके की तुलना में बड़ी गौरवपूर्ण स्थान है जो पानी के सामने उसके प्रतिनिधि विकार' का होता है। फिर यह खेत बजर उजाड़ पड़े इन खेतों में से एक था जो छुट्टियां मना रहे थे।' सर कनल्म डिग्बाइ[1] द्वारा निर्दिष्ट सम्भावना के अनुसार इस खेत ने भी हवा में से मूल तत्त्वों को ग्रहण कर लिया था। फलतः मैंने बारह बुशल सेम उगा लिए।

यह शिकायत की जाती है कि श्री कालमैन ने उच्चस्तरीय किसानों के खर्चीले प्रयोगों का ही उल्लेख किया है। इसलिए अपने आय-व्यय का पूरा विवरण मैं यहां दिए देता हूं।

मेरा व्यय इस प्रकार था

निराली	० ५४
जुताई हैंगाई खुदाई	७ ५० बहुत अधिक
सेम के बीज	३ १२[1]
आलू के बीज	१ ३३
मटर के बीज	० ४०
शलजम के बीज	० ०६
पुतले के लिए सफेद कपड़ा	० ०२
तीन घण्टों के लिए हल का भाड़ा और एक लड़का	१ ००
फसल ढोने के लिए घोड़ागाड़ी	० ७५
कुल	१४ ७२[1] डालर

---

1 १६०३ से १६६५ तक अंग्रेज लेखक, कूटनीतिज्ञ और नौसैनिक

इनका एक रेशा भी छाया में न रहे। यदि रह जाएगा तो ये अपने आप ही करवट बदल लेंगे और जम जाएँगे और दो ही दिन में प्याज की तरह फिर हरे हो उठेंगे। यह भी एक लम्बा युद्ध था। सारसों[1] के साथ नहीं बल्कि घास पात के साथ, ट्राय[2] के उन वीरों के साथ जिनकी पीठ पर सूर्य, वर्षा और ओस है। प्रतिदिन ये मुझे देखते कि मैं एक कुदाली हाथ में लिए उनकी रक्षा के लिए उनके शत्रुओं की संख्या क्षीण करने के लिए और मरे हुए घास पात से खाइयाँ पाटने के लिए चला आ रहा हूँ। कितने ही जोशीले तुर्रेदार हेक्टर[3] जो अपने साथियों की भीड़ से एक फुट ऊँचे उठे झूम रहे होते मेरे हथियार से कटकर गिर पड़ते और धूल में लोट जाते।

गर्मियों के उन दिनों को जितने भर कुछ साथियों ने बोस्टन या रोम में ललित कलाओं की साधना में बिताया, अन्यों ने उन्हें भारत में रहकर ध्यान मनन में गुज़ारा और कुछ ने लन्दन या न्यूयार्क में व्यापार को अर्पित किया, उन्हीं का उपयोग मैंने न्यू इंग्लैंड के किसानों के बीच किसानी में किया। इसलिए नहीं कि पाइथागोरस[4] का अनुगामी और प्रकृति से शाकाहारी होने के कारण सेमों की आवश्यकता मुझे भोजन के लिए थी, चाहे मैं उनकी लप्सी बनाऊँ या उन्हें देकर बदले में चावल ले लूँ, पर शायद इसलिए कि कुछ को आत्मालंकार और आत्माभिव्यक्ति के लिए भी तो खेतों में काम करना ही चाहिए जिससे कि एक दिन ऐसे लोग दृष्टान्त बन सकें। कुल मिलाकर यह एक दुर्लभ मनोरंजन था। यदि यह बहुत लम्बे समय तक चलता रहता तो व्यसन बन जाता। मैंने सेमों में खाद नहीं डाला और उन्हें एक साथ ही निराया भी नहीं। लेकिन जितना भी निराया असाधारण रूप में अच्छी तरह निराया और मुझे उसका फल भी मिला। एवलिन ने कहा है, "सच यह है कि कोई भी खाद वैसा नहीं जैसा यह लगातार हलचल, खुदाई और कुदाल

---

1. ग्रीक पुराणों में एक राजा पारियस की कथा आती है। उसे शाप था कि वह खाना नहीं खा सकेगा। जब भी वह खाने बैठता सामने [illegible] और सब कुछ खा जाते। बरसों यही होता रहा। फिर [illegible] ने उसे मुक्त कराया।
2. ग्रीक पुराण का प्रसिद्ध नगर जो आज के महाभारत का युद्ध क्षेत्र बना और जिसे पूरी तरह ध्वस्त कर दिया गया था।
3. ट्राय के राजा प्रायम का वीर पुत्र हेक्टर जिसे एकिलीज ने मारा था।
4. ५८२ ई० पू० में जन्मे एक ग्रीक दार्शनिक।

स मिट्टी की अनटा-पलटी का मुकावला नहीं कर सकती।' एक और जगह उसने कहा है, 'मिट्टी विशेषकर यदि ताजी हो तो उसम एक चुम्बक होता है जो नमक, शक्ति अथवा कह लीजिए जीवनदायी सत्त्व को अपनी ओर खींच लेता है। मारे श्रम और हलचल के पीछे यही रहस्य है। पोषण के लिए यह अनिवार्य है। गोवर अथवा अन्य गन्दगियों के प्रयोग का इस तरीके की तुलना मे वही गौरवपूर्ण स्थान है जो पादरी के सामने उसके प्रतिनिधि 'विकार' का होता है। फिर यह खेत वजर, उजाड पड़े उन मेंना म से एक था जो छुट्टिया मना रहे थे।' सर केनेल्म डिगवाइ[1] द्वारा निर्दिष्ट सम्भावना के अनुसार इस खेत ने भी हवा म से मूल सत्त्वा को ग्रहण कर लिया था। फलत मैंने बारह वुशल सेम उगा लिए।

यह शिकायत की जाती है कि श्री कालमैन न उच्चस्तरीय किसानो के खर्चीले प्रयोगो का ही उल्लेख किया है। इसलिए अपने आय व्यय का पूरा विवरण मैं यहा दिए देता हू।

मेरा व्यय इस प्रकार था

निरानी	० ५४
जुताई हगाई हराइ	७ ५० बहुत अधिक
सम के बीज	३ १२½
आलू के बीज	१ ३३
मटर के बीज	० ४०
शलगम के बीज	० ०६
पुतले के लिए सफेद कपडा	० ०२
तीन घण्टों के लिए हल का घोडा और एक लडका	१ ००
फसल लाने के लिए घोडागाडी	० ७५
कुल	१४ ७२[1] डालर

---

1 १६०३ से १६६५ तक जीवित अंग्रेज लेखक, कूटनीतिज्ञ और नाविक

मेरी आय इस प्रकार थी

नौ बुशल और बारह क्वार्ट सेम बेची		१६ ९४
पाच बुशल बड आलू		२ ५०
नौ बुशल छोटे आलू		२ २५
घास		१ ००
डठलें		० ७५
	कुल	२३ ४४ डालर
धन के रूप म लाभ		८ ७१½ डालर

सेम उगाने म जो अनुभव मैंने किए वे ये हैं छोटे सफेद साधारण सेम पहली जून के आसपास लम्बाई के रुख तीन फुट का और चौडाई के रुख अठारह इच का फासला देकर बो दें। हर बार बीजों को ध्यान से देख लें कि उनम मिलावट न हो। सबसे पहले देख लें कि बीजों को कीट न खा गए हो। जहा ऐसा हो गया हो वहा नये बीज बो दें। यदि खेत के चारो ओर बाड न हो तो हिमशूकरों का ध्यान रखें। ये सबसे पहले फूटनेवाली नन्ही कोमल कोंपलो को कुतरकर साफ कर जाते हैं। जब बाद मे कल्ले फूटते हैं तब वे भी इनकी नजर स नहीं बचते। ये अकुरो को भी और फलियो को भी गिलहरी की तरह सीधे खडे होकर खा जाते हैं। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण यह बात है कि यदि आप पाले से बचना चाहते हैं और अपनी फसल के अच्छे दाम उठाना चाहते है तो जितना भी शीघ्र हो सके फसल को काट लें। इस प्रकार आप खासी हानि से बच जाएगे।

इसके साथ ही यह अनुभव भी मैंने प्राप्त किए मैंने अपने से कहा अगली गर्मियो म मैं इतना श्रम करके सेम और मक्का की फसल नही उगाऊगा। अगर बीज नष्ट न हो गए तो मैं सचाई ईमानदारी, सादगी, आस्था अबोधता जसे बीजो को ही बोऊगा, और मैं देखूगा कि ये सब इस धरती म कम परिश्रम और कम खाद डालकर भी उगते हैं या नही और मुझे स्वास्थ्य दे पाते हैं या नहीं। मुझे विश्वास है कि यह धरती ऐसे बीजो के लिए बजर नही हो गई है। यह बात मैंने अपने से कही थी। पर दुख की बात है कि अगली गर्मिया बीत गई हैं उनसे अगली भी और उससे अगली भी। पाठकगण मुझे आपसे कहना पडता है कि जो बीज मैंने बोए थे यदि वास्तव म वे उन गुणो के ही बीज थे तो वे घुन-लगे थे अथवा

अपना महत्व था चुके थे और इसीलिए उग्र रहा। साधारणतया लोग उतने ही वीर अथवा कायर होते हैं जितने कि उनके पूर्वज रहे थे। इस पीढ़ी के लोग भी निश्चित रूप से सस्ता और मूल्य ही प्रतिरूप ठीक उसी ढंग से बोर चना जाएंगे जिस मन्दिरा पर न प्रतिमामी लोग वाला करते थे और ना उन्होंने यहां पहली बार आ बसनेवाले लोगों का निश्चय था। जबकि यही भाग्य की विडम्बना हो। अभी पीछे एक दिन एक बूढ़े को देखकर मुझे विस्मय हुआ। वह अपनी निगनी से कम से कम सत्तरवीं बार धरती में घोड़ा डाल रहा था और ऐसा वह अपनी थकान बनाने के लिए नहीं कर रहा था। लेकिन न्यूइंग्लैंड के लोग नव प्रयास क्यों न करें? क्या वे अपने बाग खानू घास की फसल और बगीचा पर ही इतना ज़ोर न दें बल्कि और दूसरी फसलें भी उगाएं? क्यों हम मैम के बीजों की बजाय तो इतने चिन्तित रहते हैं पर मनुष्यों की नई पीढ़ी के विषय में ज़रा भी चिन्तित नहीं होते? यदि हम कोई ऐसा व्यक्ति मिले जिसमें उपर्युक्त गुणों में से गुणा से जिन्हें हम सभी अन्य उत्पादनों से अधिक मूल्यवान मानते हैं लेकिन जो अधिकतर हवा में हो उड़ते और तैरते रहते हैं जहां जमा ली हैं और वे फल फूल उठे हैं तो निश्चय ही हम बहुत प्रसन्न होना चाहिए। सत्य अथवा न्याय जैसे सूक्ष्म और अवर्णनीय गुणों वाला व्यक्ति—भले ही वे गुण सूक्ष्म न्यूनतम हो अथवा एक नई किस्म के हो—इसलिए वह सरकार पर से चला आ रहा है। हमारे राजदूतों को आदेश मिलना चाहिए कि ऐसे बीज यहां भेजें और कांग्रेस को चाहिए कि वह उन्हें सारे देश में बंटवाने में सहायता दे। हम कभी भी ईमानदारी के गुण के साथ औपचारिकता नहीं बरतनी चाहिए। यदि हममें योग्यता और मित्रता का गुण किंचित भी हो तो हम एक-दूसरे को कभी भी प्रवंचित अपमानित अथवा तिरस्कृत नहीं करना चाहिए। हम कभी भी एक-दूसरे से जल्दबाजी में नहीं मिलना चाहिए। अधिकतर लोगों से मैं कभी नहीं मिलता क्योंकि लगता है जैसे उनके पास समय नहीं है और वे अपनी सेमा में व्यस्त हैं। जो आदमी ऐसा कठोर परिश्रम कर रहा है जो अपनी निगनी अथवा अपने फावड़े पर काम के बीच में ऐसे झुकता है जैसे लाठी पर झुक रहा हो—कुकुरमुत्ते की तरह नहीं बल्कि जबकि वह आंशिक धरती में से उग उठा हो बस ऐसे जबकि अबाबील उड़कर धरती पर चला करती है सीधा नहीं सीधा न कुछ अधिक—ऐसे आदमी के विषय में

मेरी आय इस प्रकार थी

नौ बुशल और बारह क्वाट सेम बेची	१६ ६४
	२ ५०
पाच बुशल बड आलू	२ २५
नौ बुशल छोटे आलू	१ ००
घास	० ७५
डठलें	२ ४४ डालर
कुल	८ ७१½ डालर

धन के रूप मे लाभ

सेम उगाने म जो अनुभव मैंने किए व य हैं छोटे सफेद साधारण सेम पहली जून के आसपास लम्बाई के रुख तीन फुट का और चौडाई के रुख अठारह इच का फासला देकर बो दें। हर बार बीजो को ध्यान से देख लें कि उनम मिलावट न हो। सबसे पहले देख लें कि बीजो का कीडे न खा गए हो। जहा ऐसा हो गया हो वहा नय बीज बो दें। यदि खेत के चारो ओर बाड न हो तो हिममूषको का ध्यान रख। ये सबसे पहले फूटनेवाली नन्ही कोमल कोपलो को कुतरकर साफ कर जाते हैं। जब बाद मे कल्ले फूटते हैं तब वे भी इनकी नजर से नहीं बचते। ये अकुरो को भी और फलियो को भी गिलहरी की तरह सीधे खडे होकर खा जाते हैं। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण यह बात है कि यदि आप पाले से बचना चाहते हैं और अपनी फसल के अच्छे दाम उठाना चाहते हैं तो जितना भी शीघ्र हो सके फसल को काट लें। इस प्रकार आप खासी हानि से बच जाएगे।

इसके साथ ही यह अनुभव भी मैंने प्राप्त किए मैंने अपने से कहा अगली गर्मियो म मैं इतना श्रम करके सेम और मक्का की फसल नहीं उगाऊगा। अगर बीज नष्ट न हो गए तो मैं सचाई ईमानदारी सादगी आस्था अबोधता जस बीजो को ही बोऊगा और मैं देखूगा कि य सब इस धरती म कम परिश्रम और कम खाद डालकर भी उगते हैं या नही और मुझे स्वास्थ्य दे पाते हैं या नहा। मुझे विश्वास है कि यह धरती ऐसे बीजो क लिए बजर नही हो गई है। यह बात मैंने अपने स कही थी। पर दुख की बात है कि अगली गर्मिया बीत गई हैं उनके अगली भी और उनके अगली भी। पाठकगण मुझे आपसे कहना पडता है कि जो बीज मैंने बोए थे यदि वास्तव म वे उन गुणो क ही बीज थे तो वे घुन लगे थे अथवा

अपना मरव खो चुके थे और इसीलिए उग नहा। साधारणतया लाग उतने ही वीर अथवा कायर होते है जितने कि उनके पूर्वज रहे थे। इस पीढी के लोग भी निश्चित रूप से मक्का और सेम ही प्रतिवर्ष ठीक उसी ढग से बोते चले जाएगे जिससे सदियो पहले आदिवासी लोग बोया करते थे और जो उन्होने यहा पहली बार आ बसनेवाले लोगो को सिखाया था। जसकि यही भाग्य की विवशता हो। अभी पीछे एक दिन एक बूढे को देखकर मुझे विस्मय हुआ। वह अपनी निरानी से कम स कम सत्तरवी बार धरती म घाइया डाल रहा था और ऐसा वह अपनी कब्र बनाने के लिए नहा कर रहा था। लेकिन न्यू इग्लैंड के लोग नये प्रयाग क्यो न करे? क्यो वे अपने अन्न, आलू, घास की फसल और बगीचा पर ही इतना जोर न दें बल्कि और दूसरी फसलें भी उगाए? क्यो हम सेम के बीजो को लेकर तो इतने चिन्तित रहते है पर मनुष्या की नई पीढी के विषय म जरा भी चिन्तित नही दीखते? यदि हम कोई ऐसा व्यक्ति मिले जिसम उपयुक्त गुणा ने, उन गुणो ने जिन्हे हम सभी अन्य उत्पादनो से अधिक मूल्यवान मानते हैं, लेकिन जो अधिकतर हवा म ही उडते और तरते रहते हैं, जडें जमा ली हैं और वे फल फूल उठे हैं, तो निश्चय ही हम बहुत प्रसन्न होना चाहिए। सत्य अथवा न्याय जैसे सूक्ष्म और अवर्णनीय गुणोवाला व्यक्ति—भले ही य गुण उसम न्यूनतम हो अथवा एक नई किस्म के हो—देखिए वह सडक पर स चला आ रहा है। हमारे राजदूता को आदेश मिलना चाहिए कि ऐसे बीज यहा भेजें और काग्रेस को चाहिए कि वह उन्हे देश भर म बटवाने मे सहायता दे। हम कभी भी ईमानदारी के गुण के साथ औपचारिकता नही बरतनी चाहिए। यदि हमम योग्यता और मित्रत्व का गुण किचित भी हो तो हम एक-दूसरे को कभी भी प्रवचित अपमानित अथवा निष्कासित नही करना चाहिए। हम कभी भी एक-दूसरे से जल्दबाजी म नही मिलना चाहिए। अधिकतर लोगो से मैं कभी नही मिलता क्योकि लगता है उनके पास समय नही है और वे अपनी सेमा म व्यस्त हैं। जो आदमी एसा कठोर परिश्रम कर रहा है जो अपनी निरानी अथवा अपने फावडे पर काम के बीच म एस झुकता है जस लाठी पर झुक रहा हो—कुकुरमुत्ते की तरह नहीं बल्कि जसकि वह अशत धरती मे से उग उठा हो वस ही जसेकि अबाबील उतरकर धरती पर चला करती है सीधी नही, सीधी स कुछ अधिक—एस आदमी के विषय म हम कुछ नही कहेंगे।' और जस हा वह बोलन लगा, उसके पख रह रहकर फड़

उठने जैसेकि वह उड जाना चाहता हो पर तभी वह उनको सिकोड लेता।" ऐसे आदमी से बातें करने में, लगता है जैसेकि हम किसी फरिश्ते से बातें कर रहे हों। हो सकता है रोटी सदा ही हमें शक्ति न दे सके, लेकिन जब हम नहीं पहचान पाते कि हमें क्या रोग है, तब मानव अथवा प्रकृति में किसी भी उदार गुण को ढूढ निकालना, एक विशुद्ध उत्साहपूर्ण आनन्द में हिस्सा बटाना बडा ही लाभदायक होता है। इससे हमारे जोडो की सख्ती कम हो जाती है और हम लचीले और प्रसन्नचित्त बन जाते हैं।

प्राचीन काव्यों और पुराणों से पता चलता है कि कृषि-कर्म अतीत मे एक पवित्र कला रहा है। लेकिन आज हम बडे ही असम्मानपूर्ण ढग से जल्दबाजी और लापरवाही के साथ खेती करते हैं। कारण यह है कि हमारा उद्देश्य सिर्फ यह रहता है कि हम किसी न किसी प्रकार विशाल खेतो और भारी फसलो के मालिक बन जाए। आज हम न कोई त्योहार मनाते हैं न उत्सव और न जलूस निकालते हैं। पहले इन सबके द्वारा किसान अपने कर्म की पवित्रता का भाव व्यक्त किया करता था अथवा उसके पवित्र उद्गम की स्मृति को ताजा रखता था। तथाकथित पशु मेलो और धन्यवाद दिवसो को उस अर्थ मे लिया ही नही जा सकता। आज वे किसान को तो लाभ और दावतें ही आकर्षित करती हैं। वह रोम के कृषि देवता सिरीस और स्वर्ग के देवता जुपिटर (भारतीय इन्द्र) की नहीं बल्कि यूनान के धन-देवता नारकीय प्लूटस की पूजा करता है। हममे से कोई भी ईर्ष्या, स्वार्थ और एक गिडगिडाने की आदत से मुक्त नही है। हम धरती को सम्पत्ति अथवा प्रमुख रूप से पैसा बनाने का साधन मात्र मानते हैं। इससे धरती की शोभा विकृत होती है। कृषि कर्म हमारी अपनी आखो मे गिर जाता है और किसान निम्नतम कोटि का जीवन व्यतीत करता है। वह प्रकृति से परिचय रखता है पर एक डाकू की तरह। कैटो[1] ने कहा है, कृषि कर्म से मिला लाभ विशेष रूप से पवित्र अथवा न्याय पूर्ण होता है। वारो[2] के अनुसार रोम के प्राचीन लोग धरती को माता और सिरीस के रूप मे पुकारते थे। उनका विचार था कि धरती को जोतनेवाले एक पवित्र और लाभदायक जीवन बितानेवाले होते हैं और वही हैं जो रोम के कृषि देवता राजा सटर्न के असल वंशज हैं।

१ २३४ से १४९ ई० पू० तक प्रसिद्ध रोमन सामन्त और कृषि लेखक
२ ११६ से २७ ई० पू० तक प्रसिद्ध एक रोमन विद्वान और लेखक

हम यह भूल जाते हैं कि सूय जुते हुए खेतो, चरागाहो और जगलो पर समान भाव से चमकता है। उसकी किरणो को य सभी समान रूप से प्रतिबिम्बित करते और पीते हैं। सूय अपने दनिक भ्रमण म प्रकृति का जो एक शोभनीय चित्र देखता है, जुते हुए खेत तो उसका एक अश मात्र हैं। उसकी दष्टि म सारी धरती ही एक बगीचे के समान है। इसीलिए हम सूय की ज्योति और उसकी ऊष्मा के लाभो को समान आस्था और उदारता से ग्रहण करना चाहिए। यदि मैं सेमो की इस फसल को बहुत महत्त्व देता हू और वष के अन्त म उसे काट लेता हू तो इसमे क्या ? यह लम्बा चौडा खेत, जिसकी मैंने इतने दिनो तक देखरेख की मान मुझे ही अपना प्रमुख सरक्षक नहीं मान सकता। मुझसे अलग कितने ही अन्य प्रभाव उससे अधिक अनुकूल हैं। वे उसे सीचते हैं और हरा भरा बनाते हैं। इन सेमो म वे फल भी निहित हैं जिन्हें मैंने नहीं काटा है। क्या वह आशिक रूप से हिमप्रपक जसे पशुओ के लिए भी नहीं उगे हैं ? गहू की बाली के लिए लटिन भाषा म जो शब्द है उसका अथ है आशा। गहू ही किसान की एकमात्र आशा नहीं होनी चाहिए। दाने के लिए लटिन म जो शब्द है उसका अथ है पदा करना। पौधा सिफ दाना ही तो पैदा नहीं करता। यदि ऐसा समझ लिया जाए तो हमारी फसलें कम सराब हो सकती हैं ? क्या मुझे उस घास पात के दानो की उपज पर भी आनन्दित नहीं होना चाहिए जो पक्षियो का भोजन है ? यह अपेक्षाकृत कम महत्त्व की बात है कि खेत सिफ किसानो के ही खलिहानो को भरें। एक सच्चा किसान व्यथ की चिन्ता छोड देगा। गिलहरी को इस बात की फिक्र कहा होती है कि इस वष जगल में चेसनट पदा होंगे या नहीं ? इसी प्रकार वह तो खेतो की उपज पर अपने स्वत्वाधिकार को त्याग देता है। वह अपना दनिक श्रम प्रतिदिन पूरा करता चला जाता है और मन ही मन प्राथमिक ही नहीं, अन्तिम लाभो की भी बलि दे देता है।

गाव

दोपहर से पहले भी खेत को निराकर और गायन पढ़ लिखकर ...में बहुधा तालाब में दुबारा नहा लेता था। किसी टिटहरी के पीछे पीछे तालाब के उस पार के एक कुंड तक मैं तैरता चला जाता और इस प्रकार अपने शरीर से श्रम की धूल मिट्टी को धो डालता अथवा अध्ययन से पड़ी झुर्रियां को सीधा कर लेता। हरएक दो दिन के बाद मैं गाव जाना और वहा उस मुह से उस मुह तक अथवा इस अखबार से उस अखबार तक निरन्तर घूमती रहनेवाली गप्पों को सुनता। यदि हामियो पैथी की खुराक जितनी मात्रा में इन गप्पों का सेवन किया जाए तो ये सच ही उतनी ताजगी देनेवाली होती है जितनी कि पत्तों की सरसराहट और मेढकों की तान भारी। मैं आदमियों और लड़कों का दर्शन के लिए गाव में उसी प्रकार घूमता जैसे मैं चिड़ियों और गिलहरियों को देखने के लिए जगल में घूमता था। वहा चीड़ के पत्तों से टकराती चलनेवाली हवा के स्थान पर मैं गाड़ियों की खड़खड़ाहट सुनता। मेरे घर से दूर एक ओर तो नदी के तटवर्ती घास के मैदान में छोटे दरों की एक बस्ती थी और दूसरी ओर देवदारु और चीड़ों के गुल्मों की छाया में व्यस्त लोगों का एक गाव था। सच ही मुझे वे लोग चरागाहों के कुत्तों जितने ही अजीब लगते थे। उनमें से प्रत्येक अपनी मांद के द्वार पर बैठा हुआ या गप मारने के लिए पड़ोसी के घर की ओर झपटता हुआ ही दीख पड़ता था। मैं अक्सर उनकी आदतों का अध्ययन करने वहा जाता। गाव मुझे एक विशाल समाचार-कक्ष प्रतीत होता था। जैसे कभी स्टेट स्ट्रीट की रेडिंग एण्ड कम्पनी में हुआ करता था उस कक्ष के एक कोने में भी अखरोट, किशमिश, नमक, आटा और दूसरी किराने की चीजें रहती थी। कुछ लोगों की समाचारों की भूख इतनी विकट होती है, और उनकी पाचनशक्ति इतनी पुष्ट होती है कि वे सारी आयु बिना हिले-डुले सार्वजनिक स्थानों में बैठे रह सकते हैं और समाचार सामयिक हवाओं की तरह

उनके कानो में फुसफुसाते और उनमें समाते रह सकते हैं। जैसे कि वे ईथर को साम ले रहे हों। ये समाचार उनमें एक सूनापन और पीड़ा के प्रति जड़ता ही पैदा करते हैं नहीं तो यह सब सुनना बहुत कष्टकर होना चाहिए। पर इसका उनकी जीवन चेतना पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता। जब कभी भी मैं गाव से से गुजरता मैं ऐसे ही प्रतिष्ठित लोगों की पंक्ति के दर्शनों में कठिनाई से ही बच पाता। किसी सीढ़ी पर बैठकर धूप खाते हुए, अपने शरीर को आगे की ओर झुकाते हुए और अपनी आखो से, पंक्ति के दोनों ओर बड़ी ही विषयाकुल दृष्टि फेंकते हुए मैं उन्हें देखता। कभी वे किसी गोदाम से पीठ लगाए जेबों में हाथ डाले स्तम्भों पर खड़ी स्त्री प्रतिमाओं की तरह ऐसे खड़े मिलते जैसे कि उसे ऊपर को उठा रहे हों। घरों से बाहर खड़े होने के कारण जो भी हवा में होता वे उसीको सुन लेते। ये लोग उन मोटा पीसनेवाली चक्कियों के समान होते हैं जिनमें अन्न को पहले यहां लापरवाही से दरड़ा जाता है और उसके बाद उसे अन्दर अधिक बढ़िया और महीन पीसनेवाली चक्कियों पर पहुंचा दिया जाता है। मैंने देखा है कि किराने की दुकान, मद्यपानगृह डाकखाना और बैंक गाव की जान होते हैं। पूरे यन्त्र के आवश्यक अंग के रूप में गाव में सुविधाजनक स्थानों पर एक घण्टी एक बड़ा तोप और एक आग बुझाने का इंजन भी रखा रहता है। उस गाव की गलियां में घर एक-दूसरे के आमने-सामने इस क्रम से बने थे कि मानव जाति में अधिकतम लाभ उठाया जा सके कि हर यात्री को उनकी मार झेलते हुए बीच में से भागना पड़े और स्त्री-पुरुष और बच्चे सभी उसपर एक हाथ चलाने का आनन्द ले सकें। अब जो लोग इस पंक्ति के निकटतम रहते थे जहां से कि वे अधिकतम देख सकते और दीख सकते थे और व्यक्ति पर पहला मुक्का चला सकते थे, उन्हें अपनी स्थिति की अधिक कीमत चुकानी पड़ती थी। जो लोग उपांचल में छितरे निवास मकानों में रहते थे जहां कि पंक्ति टूट गई थी और लम्बे रिक्त स्थान बीच बीच में छूटे थे जहां कि आगन्तुक दीवार फादकर या गायों की पगडंडियों पर से बचकर भाग सकता था उन्हें मकान या जमीन का बहुत थोड़ा किराया देना पड़ता था। आगन्तुक को फंसाने के लिए सब तरफ साइनबोर्ड लटके थे। कभी वह भूख बुझाने के लिए सार्वजनिक गृह और शराबखाना की ओर खिंचता कभी वह किसी आकर्षक चीज की दुकान पर सूखा चीजों की अथवा जौहरी की दुकान पर आता और कभी बाल बनवाने के लिए नाई की, जूता पहनने के लिए जूते बनानेवाले की

और कपड़े सिलवाने के लिए दर्जी की दूकान में घुस जाता। इसके अतिरिक्त एक स्थायी पर भयंकर निमन्त्रण उसे प्राप्त था कि वह इनमें से किसी भी घर का आतिथ्य स्वीकार कर ले और ऐसी स्थिति में लोग उससे बहुत अधिक आशा बांध लेते थे। अधिकतर इन खतरों से मैं आश्चर्यजनक ढंग से बच जाया करता था। मैं दृढ़तापूर्वक बिना किसीसे भी बातचीत किए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता चला जाता। जिन्हें दोनों ओर पंक्तिबद्ध लोगों के मुक्के खाने का खेल खेलना है उन्हें मैं ऐसा ही करने की सम्मति दूंगा। कभी मैं आरफियस[1] की तरह अपने विचारों को बहुत ऊंचाई पर रखता जैसे कि उसने अपनी सारंगी पर देवताओं की स्तुति गाकर साइरनों[2] की आवाज को दबा दिया था और इस प्रकार वह खतरे से बच गया था। कभी-कभी मैं अचानक ही छलांग लगा जाता और मेरा अता पता कोई भी बता न पाता। मैं ऐसे अवसरों पर शिष्टता का विशेष ध्यान न रखता और किसी मेड़ की रिक्तता में छिपने से भी न कतराता। कुछ घरों में अबाध की तरह घुस जाने की भी मुझे आदत थी। वहां मेरा अच्छा स्वागत होता था और वे लोग समाचारों का तत्त्व और उनका ब्यौरा सब कुछ—क्या कुछ दब गया है, युद्ध और शान्ति की सम्भावनाएं क्या हैं और दुनिया के अधिक देर तक मिले जुले रहने की आशा है या नहीं—जान लेने के बाद मुझे पिछले दरवाजे से बाहर निकाल देते और मैं फिर जंगल में भाग जाता।

जब कभी मैं बहुत अधिक देर तक गांव में टिका रहता तब खासकर अंधेरी और तूफानी रात में गांव के जगमगाते बैठकखाने या भाषणगृह से निकलकर, रई या मक्का का थैला कंधे पर लटकाए जंगल में बने अपने विश्रामदायक बन्दरगाह की ओर अंधकार पर तैरते हुए जाना बड़ा ही सुहाना लगता था। मैं बाहर से अपने को कस-कसा लेता और अपने को विचारों की आनन्ददायक भीड़ के बीच और अन्दर खींच लेता। अपने बाह्य व्यक्ति को पतवार पर बिठा देता और यदि लहरें शान्त होतीं तो पतवार को भी बांध देता और चल देता। जैसे मैं खेता

---

१ २ अपोलो एवं म्यूज़ कैलियोप का पुत्र आरफियस एक कवि और संगीतकार था। सर्वे भार मिना द्वीपों के बीच रहनेवाली साइरन नाम की समुद्र-परियां अत्यन्त मधुर स्वर में गाकर नाविकों को अपने पास खींचकर मार डाला करती थीं। आरफियस ने देवताओं की स्तुति इतने जोर से गाई कि उसकी आवाज के नीचे साइरनों की आवाज दब गई और वह बच गया।

जाना, कितने ही उत्तम विचार मुझमें उठने जाते। यद्यपि कितने ही भीषण तूफानों का मैंने भेला है पर किसी भी ऋतु में मैंने स्वयं को परित्यक्त या त्रस्त अनुभव नहीं किया। जंगलों में, साधारण रातों में भी, लोगों के अनुमान से कहीं अधिक अंधेरा रहता है। रास्ता पहचानने के लिए बहुधा मुझे राह के ऊपर पेड़ों के बीच के आकाश की ओर देखना पड़ता। जहां गाड़ी की लीक न होती, वहां भर ही पैरों से बनी इतनी-सी पगडण्डी को मैं महसूस करने की कोशिश करता या हाथों से छू-छूकर विशेष वृक्षों के सम्बन्ध से मार्ग पहचानता। दृष्टांत के लिए जंगल में चीड़ के दो वृक्षों के बीच अठारह इंच से अधिक का फासला नहीं था। मैं इनके बीच में से गुजरा करता था। अंधेरी रातों में ये मार्ग की पहचान में सहायक होते थे। कभी कभी एक अंधेरी और धुंधली रात में इसी प्रकार दूर से घर लौटते हुए जब आंखें कुछ न देख सकतीं, पैर पर ही अपनी राह बनाते तब मैं सपने में डूबा और खोया-खोया सा चलता जाता और मेरा ध्यान तभी टूटता जब मेरे हाथ अपने घर की सांकल को खोलने के लिए उठते होते। ऐसी स्थिति में अपने चलने का एक कदम भी मुझे याद न रहता और मैं सोचता कि यदि मेरी आत्मा इस शरीर को छोड़ जाए तब भी यह शरीर इसी प्रकार घर पहुंच जाएगा जैसे हाथ बिना किसी की सहायता के मुंह तक पहुंच जाते हैं। कितनी ही बार जब कोई मिलनेवाला संध्या तक ठहर जाता और रात अंधेरी होती, तो मैं अपने घर के पिछवाड़े के गाड़ी के मार्ग तक उसे छोड़ने जाता और संकेत से उसे बता देता कि तुम्हें अमुक दिशा में जाना है, और वह दिशा का ध्यान आंखों की सहायता से नहीं पैरों की ही मदद से रख पाता। ऐसी तरह एक बहुत अंधेरी रात में मैंने दो युवकों को उनके मार्ग पर लगाया। वे तालाब में मछली पकड़ने आए थे और जंगल में से होकर लगभग एक मील आगे रहते थे और इन मार्गों के अभ्यस्त थे। एक या दो दिन बाद उनमें से एक ने मुझे बताया कि उस रात बहुत रात गए तक वे अपने घर के चतुर्दिक ही चक्कर काटते रहे और सुबह के लगभग घर पहुंचे। इस बीच कई बार जोर की वर्षा आई, पेड़ों के पत्ते निचुड़ने लगे और वे बुरी तरह सराबोर हो गए। मैंने सुना है कि जब अंधेरा इतना घना होता है कि एक कहावत के अनुसार उसे चाकू से काटा जा सकता है तब लोग गांव की गलियों में भी रास्ता भूल जाते हैं। कुछ लोग, जो उपांचल में रहते हैं और अपनी गाड़ियों में बैठकर खरीदारी के लिए नगर आते हैं रात वहीं काटने के लिए बाध्य हो जाते हैं। कितने ही स्त्री-पुरुष किसीसे मिलने आए और

"तुम लोग जो शासन राय चलाते हो, तुम्हे सजाए लागू करने की क्या जरूरत है ? पुण्य मे प्रेम करो और लोग पुण्यात्मा वन जाएंगे। बडे आदमी का पुण्याचरण पवन के समान होता है और साधारण व्यक्ति का घास की तरह। जब हवा ऊपर से चलती है तो घास झुक जाती है।

सरोवर

कभी-कभी जब मानवा के ससम और उनकी गप्पा से मुझे अजीण हो जाता और गाव के मित्रो से उक्ता उठता, तब मैं अपनी स्वाभाविक सीमा से और अधिक दूर पश्चिम की ओर चला जाता और इस प्रदेश के अभी तक अनदखे हिस्सा म 'नये वना और नये चरागाहा मे जा निकलता अथवा जब सूय डूब रहा होता तो मैं फयर हैवन पहाडी पर हकलबरी और नीलबदरी खाकर अपना पेट भरता और कई दिना के लिए काफी बडा एक ढेर भी जमा कर लेता। जो व्यक्ति फलो को खरीदता है या उन्हे बाजार मे बेचने के लिए उगाता है वह उनका वास्तविक स्वाद प्राप्त नही कर सकता। उस स्वाद को प्राप्त करने का बस एक ही रास्ता है। लेकिन बहुत ही थोडे लोग उस रास्त पर चलते ह। यदि आप हकलबरियो का स्वाद जानना चाहते है तो किसी ग्वाल से या किसी तीतर से पूछिए। जिसन कभी हकलबरिया नही तोडी यदि वह कहे कि मैंने उनका स्वाद लिया है ता वह एक बेहूदा बात कहता है। हकलबरिया तो बोस्टन नगर तक पहुचती ही नही। वे तो बस अपनी तीन पहाडियो पर उगती हैं और नगरवाले उन्ह जान तक नही पाते। फल का स्वादिष्ट और अनिवाय अश तभी नष्ट हो जाता है जब बाजार की गाडी म रगड खा-खाकर उसकी कान्ति उड जाती है और जो बच रहता है वह चारा मात्र होता है। जब तक ईश्वरीय न्याय जीवित है एक भी अछूती हकलबरी आज तक पहाडियो से उस ओर भेजी ही नही जा सकती।

कभी-कभी अपने निराई के काम से निपटकर मैं किसी एक साथी के साथ जा मिलता जो सुबह से ही तालाब की सी या तैरते पत्ते की सी स्थिरता और खामोशी के साथ मछलिया पकड रहा होता और अब तक जा चुका होता। तरह-तरह की विचारणाओ म डूबे रहकर मेरे पहुचने की घडी तक वह इस निष्कष पर पहुच चुका होता कि वह भी सायनाइट्स क प्राचीन सम्प्रदाय से ही सम्बन्ध रखता

है। एक वृद्ध था जो बहुत बढ़िया मछियारा था और लकड़ी के काम में भी बहुत कुशल था। वह मेरे घर को मछियारा के आराम के लिए बनाया गया घर सहर्ष कहता था। जब वह मेरे दरवाजे में बैठकर अपने जाल को सवारता तो मुझे भी बड़ी प्रसन्नता होती थी। कुछ ही देर में हम दोनों तालाब पर होते। वह नाव के एक सिरे पर बैठता मैं दूसरे पर। हम दोनों बातें अधिक न कर पाते क्योंकि अपनी आयु के बाद के दिनों में वह बहरा हो गया था। पर वह रह रहकर एक भजन गुनगुनाता जिसका मेरे चिन्तन में बहुत काफी मेल बैठ जाता। इस प्रकार हमारा संभाषण एक अविच्छिन्न संगीत के रूप में चलता और यह मेरे में चलनेवाली बातचीत की अपेक्षा कहीं अधिक सुखकर होता। जब सदा की भांति बातचीत के लिए कोई भी मेरे आसपास न होता तब मैं एक चपटी लकड़ी से नाव की लकड़ी को थपथपा कर एक गूंज पैदा करता जो चारों ओर के वनों में घूम जाती और फैल जाती। जंगली पशुओं के रखवाले की तरह इन ध्वनियों प्रतिध्वनियों को मैं तब तक छेड़ता रहता जब तक वनों में भरी घाटियों और झाड़ियों में से एक गुरगुराहट न फूटने लगती।

गर्म सन्ध्याओं में बहुधा मैं नाव में बैठकर बांसुरी छेड़ देता। पर्च मछलियां मेरे चारों ओर चक्कर काटने लगतीं जैसेकि मैंने उन्हें मोह लिया हो। वन की टूटी हुई लकड़ियां सरोवर की तली में बिखरी पसलियां जैसी प्रतीत होतीं और चांद उनके ऊपर तैरता होता। इससे पहले भी गर्मियों की अंधेरी रातों में किसी साथी को लेकर मैं तालाब पर बहुत दिन हुए कभी कभी आया करता था। तब दुस्साहस ही मेरा उद्देश्य होता था। हम एकदम पानी से सटकर आग जलाते। हमारा विचार रहता कि इससे मछलियां आकर्षित होती हैं। एक धागे पर कीड़ों का गुच्छा चिपका कर हम पाउट मछलियां पकड़ते। जब बहुत रात बीतने पर हम निपट चुकते, तो जलती हुई लकड़ियों को ऊपर आकाश में आतिशबाजियों की तरह उछालते। वे वापस तालाब में आकर गिरतीं और हिस्स की सी आवाज के साथ बुझ जातीं और हम स्वयं को घुप्प अंधेरे में अटकलें लगाते हुए पाते। अब हम सीटियां बजाते हुए, इस घनघोर अंधेरे को चीरते हुए मानवों की बस्ती की ओर वापस चल देते। लेकिन अब तो मैंने तट पर ही अपना घर बना लिया था।

कभी-कभी गांव की किसी बैठक में घरवालों के सो जाने के बाद तक बैठे रह कर मैं जंगल में वापस लौटता तो अगले दिन के भोजन के विचार से आधी रात के समय चांदनी की छाया में नाव में बैठकर मछलियां पकड़ता। उस समय

उल्लू और लामटिया रात्रि-गीत गाती और मैं बहुत पास से ही कहीं से किसी अज्ञात चिड़िया का रह रहकर चहचहाना सुनता रहता। मेरे लिए ये अनुभव बड़े ही स्मरणीय और मूल्यवान थे। तट से सौ डेढ़ सौ गज की दूरी पर चालीस फुट गहरे पानी में मैं अपनी नाव को खड़ा कर देता। चांदनी में अपनी पूंछ से चोट करके सतह पर गड्ढे बनानेवाली छोटी पर्च और शाइनर मछलियों में मैं घिर जाता। एक लम्बी पीली सुतली के माध्यम से मैं चालीस फुट तल रहनेवाली रहस्यमय नारकीय मछलियों से संलाप करता। कभी-कभी जब मैं रात की मीठी हवा में इधर-उधर भटकता, तो साठ फुट लम्बी एक सुतली को जल में सरोवर के चारों ओर खींचता चलता और देखता कि जब-तब इस सुतली के साथ साथ एक हलकी थिरकन-सी पैदा होती है जो इस बात का संकेत है कि कुछ जीव एक अनिश्चित पर संशयास्पद उद्देश्य लेकर उसके पास-पास घूम रहे हैं और मन ही मन एक निर्णय पर नहीं पहुंच पाते हैं। बहुत देर बाद हाथ के ऊपर हाथ रखकर धीरे धीरे कर्णी, ऐंठती एक मांगवाली पाउट मछली को मैं ऊपर हवा में उठाता। विशेषकर अंधेरी रातों में जब विचार बहुत दूर दूसरे लोक में सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय के विषयों में उलझ जाते हैं उस समय सपनों में बाधा डालनेवाला यह हलका-सा धक्का बड़ा ही अजीब लगता है और स्वयं को प्रकृति से दुबारा जोड़ पाना कठिन हो जाता है। मेरी इच्छा होने लगती है कि मैं अपना कांटा नीचे पानी में फेंकने के साथ-साथ ऊपर हवा में भी फेंकूं। नीचे का जल ऊपर के पवन से अधिक घना कठिनाई से ही होगा, और इस प्रकार मैं एक कांटे से दो मछलियां पाऊं।

वाल्डेन की शोभा इतने स्तर की ही है। सुन्दर वह बहुत है पर उत्कृष्ट की सीमा तक नहीं पहुंचती। जो व्यक्ति बार-बार यहां न आया हो या इसके तट पर रहा न हो उसे यह अधिक आकर्षित नहीं करेगी। फिर भी गहराई और विशुद्धता की दृष्टि से यह सरोवर इतना महत्त्वपूर्ण है कि इसका विशेष वर्णन किया ही जाना चाहिए। यह हरे पानी का एक साफ और गहरा कुआं है। यह आधा मील लम्बा है और इसकी परिधि पौने दो मील है। इसका क्षेत्रफल लगभग साढ़े इकसठ एकड़ होगा। चीड़ और बलूत के जंगल के बीच यह एक अजस्र जल-स्रोत है। बादलों और भाप के सिवा पानी की आमद और निकासी का कोई अन्य साधन यहां नहीं दिखाई पड़ता। इसके चारों ओर पहाड़ियां खड़ी हैं जो ठीक इसके पानी से

उठकर चालीस से अस्सी फुट तक ऊंची चली गई हैं। दक्षिण-पूर्व और पूर्व की दिशा में चौथाई और तिहाई मील के भीतर ये क्रमशः लगभग सौ और डेढ़ सौ फुट तक ऊंची उठ गई हैं। ये पूरी तरह जंगलों में ढंकी हुई हैं। हमारे वालकाड का सारा पानी कम से कम दो रंगों का पाया जाता है। एक रंग तब का है जब हम उसको दूर से देखते हैं। जब उसे हम बहुत निकट से देखते हैं तब दूसरा पर अधिक सही रंग हमें दीख पड़ता है। पहला रंग प्रकाश पर निर्भर है और आकाश के सकेत पर बदलता है। गर्मियों में साफ मौसम में विशेषकर जब जल उद्वेलित हो, तब वह नीले रंग का दीख पड़ता है। और अधिक दूरी में सभी जल एकसमान हो नजर आते हैं। जब तूफान आया हो, तब वह कभी-कभी गहरे मलेटी रंग का दीख पड़ता है। समुद्र के विषय में यह प्रसिद्ध है कि वातावरण में बिना किसी प्रकट परिवर्तन के भी उसका जल एक दिन नीला और एक दिन हरा दीख पड़ता है। मैंने अपनी नदी को देखा है। जब सब कुछ बर्फ से ढका होता है तब उसका जल भी और बर्फ भी घास की तरह हरे रंग का नजर आता है। कुछ लोग नीले रंग को तरल हो या ठोस विशुद्ध जल का रंग मानते हैं। लेकिन यदि नाव में बैठकर पानी में सीधे नीचे झांकें तो उसके कितने ही विभिन्न रंग दीख पड़ते हैं। वाल्डेन एक ही कोण से देखने पर भी कभी नीला और कभी हरा प्रतीत होता है। धरती और आकाश के बीच में रहकर यह दोनों का रंग ग्रहण कर लेता है। पहाड़ी की चोटी से देखने पर इसमें आकाश का रंग प्रतिच्छायित दीखता है। लेकिन निकट से देखने पर, तट के पास जहां नीचे का रेत नजर आता है वहां एक पीली आभा लिए होता है। उससे आगे का रंग हलका हरा और फिर आगे ताल सरोवर के बीच तक पहुंच कर एकसमान गहरा हरा बनता चला जाता है। कुछ अवसरों पर पहाड़ी की चोटी से देखने पर भी तट के पास तक इसका साफ गहरा हरा दीख पड़ता है। कुछ लोग इसका कारण पूरी वनस्पतियों को बताते हैं लेकिन पत्तों के बिना भी पड़ने वसन्त में रेल की पटरी के नीचे रेतीले तट के पास भी यह उतना ही हरा होता है। इसी इन्द्रधनुषाकार तटवर्ती जल का भी यही रंग है। यह वही हिस्सा है जहां वसन्त ऋतु में तालाब की तली में प्रतिबिम्बित और धरती में प्रसारित सूर्य की गर्मी से बर्फ सबसे पहले पिघलती है और जमे हुए मध्यभाग [illegible] एक [illegible] भी बन जाती है। इस प्रदेश के अन्य जलों की [illegible] में [illegible] का जल उद्वेलित होता है [illegible]।

पर प्रतिबिम्बित करने लगती है अथवा प्रकाश अधिक मात्रा में जल में घुल जाता है तब वह जल थोड़ा दूर से देखने पर भी आकाश से भी अधिक गहरे नीले रंग का दीखने लगता है। ऐसे समय जल की सतह पर से प्रतिबिम्ब को देख पाने के लिए, जब जब मैंने अर्ध निमीलित आँखों से दृष्टिपात किया है, मुझे जल का रंग अद्वितीय *अवर्णनीय, हल्का नीला दीख पड़ा है। यह वैसा ही था जैसाकि सीसा हुई या* धूपछाँही रंग का सिल्क और तलवार की धार का होता है, आकाश के रंग से भी अधिक आसमानी। लहरों के उस ओर का रंग, जो अभी-अभी इस ओर की तुलना में कीचड़ भरा दीख पड़ा था अब मूल जैसा ही गहरा हरा दीख पड़ता है। जहाँ तक मुझे याद है यह शीशे के रंग का सा हरिताभ नीला होता है ठीक वैसा ही जैसाकि पश्चिम में सूर्यास्त से पहले के बादलों के बीच-बीच में झाँकनेवाले टुकड़ों के आकाश का होता है। लेकिन इसीके गिलास भर पानी को यदि प्रकाश के सामने किया जाए तो वह वैसा ही वर्णशून्य होगा जैसाकि उतनी ही मात्रा की हवा। सभी जानते हैं कि शीशे की एक बड़ी तश्तरी हरे रंग की आभा लिए होती है। कारीगर लोग आकार को इस बात का कारण बताते हैं क्योंकि उसी तश्तरी का एक छोटा-सा टुकड़ा वर्णहीन होता है। मैं कभी यह सिद्ध न कर सका कि हरा रंग प्रतिबिम्बित करने के लिए वाल्डेन के जल का कितना बड़ा आकार काफी होगा। हमारी नदी का पानी सीधे एकदम पास से देखनेवाले को काला या बहुत भूरा दीख पड़ता है और यह अधिकतर तालाबों की तरह ही नहानेवाले के शरीर को एक पीली आभा प्रदान कर देता है। लेकिन तालाब का जल बिल्लौर जैसा शुद्ध है और तैरनेवाले को अलबास्टर पत्थर जैसी श्वेतिमा प्रदान कर देता है। अब यह और भी अधिक अप्राकृतिक प्रतीत होता है क्योंकि व्यक्ति के हाथ-पैर फैलकर और विकृत-से होकर एक दैत्याकृति का आभास देने लगते हैं और किसी माइकल एंजेलो[1] के लिए अध्ययन के उपयुक्त विषय बन जाते हैं।

जल इतना पारदर्शी है कि पचीस या तीस फुट की गहराई तक की तली भी आसानी से दीख जाती है। जल पर तिरते हुए सतह से कितने ही फुट नीचे पर्च और शाइनर मछलियों के झुंड के झुंड आप देख सकते हैं। ये शायद सिर्फ एक इंच लम्बी ही होती हैं लेकिन पर्च मछलियाँ अपनी तिरछी रेखाओं के कारण साफ पहचान

---

[1] १४७५ से १५६४ तक के इटली का प्रसिद्ध मूर्तिकार

पडती हैं। आप सोच सकते हैं कि ये मछलियां जो वहां जी लेती हैं तो अवश्य ही तापस जाति की होगी। बहुत वर्ष पहले एक जाड़े में जब मैं पिकरल मछलियां पकड़ने के लिए बर्फ में छेद कर रहा था तो जैसे ही मैं किनारे पर पहुंचा, मेरी कुल्हाड़ी उछलकर वापस बर्फ पर जा पड़ी और जैसे कि इसे किसी शैतान ने प्रेरित किया हो वह बीस पचीस गज फिसलकर सीधे एक छेद में नीचे उतर गई। पानी इस स्थान पर लगभग बीस फुट गहरा था। उत्कंठावश मैं बर्फ पर लेट गया और मैंने छेद में से झांका। कुल्हाड़ा एक ओर को हटकर सिर के बल टिकी थी और उसका बेंटा सीधा खड़ा ताल के जल के साथ धीमे धीमे हिल रहा था। बेंत वहां तब तक एसे ही सीधा खड़ा रहता और हिलता रहता जब तक कि वह समय के प्रभाव से गल न जाता। पर मैंने वैसा न होने दिया। मैंने अपने पास की बर्फ काटनेवाली छेनी से एक और सूराख ठीक उसके ऊपर बनाया। तब मैंने पड़ोस में उपलब्ध सबसे लम्बे बेंत को चाकू से काटा। एक फन्दा बनाकर उसके सिर में बांधा और फन्दे को मूठ की गांठ पर लाकर कस दिया और इस प्रकार कुल्हाड़ी को वापस खींच लिया।

तालाब का तट किसी फर्श की चिनाई के उपयुक्त चिकने गोल सफेद पत्थरों की पट्टी से बना है। खाली रेत बस एक या दो जगह ही है। कई स्थानों पर तट का ढलाव इतना गहरा है कि एक छलांग में आप डुबाऊ पानी में पहुंच सकते हैं। और यदि जल अद्भुत रूप से पारदर्शी न हो तो वहां यहां से आगे तली न दीखे और उसके दर्शन फिर उस पार तल के ऊपर उठने पर ही हो सकें। कुछ का विचार है कि यह ताल अतल है। इसमें कहीं भी कीचड़ नहीं है। कोई भी व्यक्ति सरसरी दृष्टि से देखकर भी कह देगा कि घास तो इसमें है ही नहीं। घास के छोटे छोटे मैदानों को छोड़कर जिनमें पानी भर आया था और जो [illegible] समुचित रूप से ताल के अंग हैं ही नहीं बारीकी से देखने पर भी कोई मोट [illegible] अथवा

बना है। और जाड़ों के मध्य तक में लगता के ऊपर चमकदार हरी घास उग आती है।

हमारे ज़िले में लगभग दो मील पश्चिम की ओर नाइन एकर कॉर्नर में ठीक ऐसा ही 'व्हाइट सरोवर' नामक एक और सरोवर भी है। यहाँ से बारह मील की परिधि में स्थित अधिकतर तालाबों से मैं परिचित हूँ पर कुएँ की सी प्रकृति का इतना शुद्ध कोई तीसरा सरोवर मुझे नहीं दीख पड़ा। एक के बाद एक कितनी ही जातियों और पीढ़ियों ने इसका जल पिया है, इसकी प्रशंसा की है, इसकी गहराई नापी है। वे सभी व्यतीत हो चुकी हैं पर इसका जल अभी तक उतना ही हरा और पारदर्शी है। एक उछलकर बहनेवाला जलस्रोत यह नहीं है। शायद बसन्त की उस सुबह भी जब आदम और हौवा को ईडन के बगीचे से निष्कासित किया गया था, वाल्डन सरोवर अस्तित्व में आ चुका था। और तब भी बसन्त की हल्की मीठी वर्षा उसपर पड़ी थी, कुहरा छाया था, दक्षिणी पवन चली थी, अगणित बत्तखें और हंस जिन्होंने आदम और हौवा के पतन के बारे में कुछ नहीं सुना था, उसपर तैर रहे थे क्योंकि उनके लिए तो तब भी ऐसी विशुद्ध झील ही काफी थी। उस समय भी यह सरोवर उमड़ता था और संकुचित होता था। अपना पानी यह स्वच्छ बना चुका था और उस आज के से रंग में रंग चुका था। तब भी स्वर्ग का अधिकार-पत्र इसे मिल गया था कि स्वर्गीय ओस का संचित करनेवाला संसार में यह अकेला वाल्डन सरोवर होगा। कौन जानता है कि कितनी विस्मृत जातियों के साहित्यों में इसे कैस्टेलियन फाउण्टेन[1] की तरह याद किया गया है और स्वर्णयुगों में किन परियों ने यहाँ निवास किया था? यह प्रथम कोटि का हीरा है जो कॉनकार्ड के मुकुट में जड़ा है।

लेकिन जो मानव पहली बार इस कुएँ पर आए थे वे अपने पगों के चिह्न शायद यहाँ छोड़ गए हैं। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ है कि किनारे पर घने पेड़ जहाँ अभी काटे गए हैं वहाँ भी पहाड़ी के सँकरे ढलान पर संकरा अलमारी के तख्तों जैसा मार्ग तालाब को घेरता-सा पहचान पड़ता है। यह क्रम से उठता है, गिरता है, पानी के किनारे तक पहुँचता है और पीछे हटता है। यह भी शायद उतना ही पुराना है जितना कि इस प्रदेश में मानव का अस्तित्व। आदिम शिकारियों के पैरों ने इस

---

[1] शायद स्पेन के प्राचीन [illegible] स्रोत के नाम से सम्बन्धित

बनाया है और भूमि के वर्तमान स्वामी भी समय-समय पर अनजाने ही इसपर चल लेते हैं। जाड़े के दिनों में, जब हलकी-सी बर्फ पड़ चुकी हो तालाब के बीचोबीच खड़े होकर देखें तो यह पगडण्डी विशेष रूप से स्पष्ट दीख पड़ती है। घास और टहनियाँ इसे छिपा नहीं पातीं और चौथाई मील के घेरे में एक लहरदार सफेद रेखा के रूप में यह साफ उभर उठती है लेकिन गर्मियों में बहुत निकट से देखने पर भी यह कठिनाई से ही दीख पाती है। लगता है जैसे बर्फ इसे दुबारा छाप देती है वह भी एक स्पष्ट उभार देकर तराशे हुए टाइप में। एक दिन कभी यहाँ बनाए जाने वाले बंगलों के अलंकृत फर्शों पर भी शायद इन पगडण्डियों के चिह्न सुरक्षित बच जाएं।

यह सरोवर चढ़ता है और उतरता है पर ऐसा नियमित रूप से होता है या नहीं और होता है तो ऐसा किस अवधि के बाद होता है यह कोई नहीं जानता यद्यपि बहुत-से लोग जानने का दिखावा करते हैं। साधारणतया यह जाड़ों में चढ़ा होता है और गर्मियों में उतरा हुआ और ऐसा मौसम की सामान्य आर्द्रता और शुष्कता के अनुसार नहीं होता। जिन दिनों मैं वहाँ रहता था उन दिनों की तुलना में तालाब कब-कब एक या दो फुट नीचा रहा और कब-कब कम से कम पाँच फुट तक चढ़ा यह मुझे याद है। एक ओर रेत की एक सँकरी पट्टी पानी में अन्दर तक चली गई है। शायद १८२४ की बात है, पास तट से लगभग तीस गज आगे इस पट्टी पर मैं चाउडर (मछली और बिस्कुट से बना एक खाद्य) उबालकर खाया करता था। इसके पच्चीस वर्ष बाद तक ऐसा किया जाना सम्भव न हो सका। इसके विपरीत कुछ वर्ष बाद सामान्य तट से लगभग अस्सी गज दूर की ओर जंगल से एक एकान्त गढ्ढे में मैं नाव पर बैठकर मछलियाँ पकड़ा करता था। यह सारा स्थान अब घास का मैदान बन चुका है। यह बात जब मैं अपने मित्रों को बताता था तो वे विश्वास नहीं कर पाते थे। तालाब स्थिरतापूर्वक दो वर्षों तक चढ़ा है और अब १८५२ की गर्मियों में जिन दिनों मैं वहाँ रहता था उसकी अपेक्षा, यह ठीक पाँच फुट ऊँचा है अर्थात उतना ही ऊँचा है जितना यह तीस साल पहले था और उस घास के मैदान में अब फिर मछलियाँ पकड़ी जा रही हैं। इस प्रकार बाहर की ओर पानी की सतह में छः-सात फुट का अन्तर पड़ जाता है। पर चारों ओर की पहाड़ियों से जो पानी अन्दर आता है वह मात्रा में नगण्य ही होता है। इसलिए इस बाढ़ के कारण अवश्य ही अन्दर कहीं वर्तमान गहरे जल-स्रोत

ही हगे। अब लीजिए इन गर्मियों म तालाब का पानी फिर उतरने लगा है। इस उतार चढ़ाव के बारे म एक बात उल्लेखनीय है कि ऐसा विशेष अवधियों के बाद होता हो या नहीं, पर लगता है इसको पूरा होने मे कितने ही वर्ष लग जाते हैं। मैंने इसकी एक बाढ़ और दो उतारों के अंश देखे हैं। मुझे आशा है कि बारह या पन्द्रह वर्ष बाद जल फिर उतना ही उतर जाएगा जितना कि मैं सदा से देखता आया हूं। जल का आमद और निकासी के लिए उपस्थित स्थान जो परिवर्तन पैदा करते हैं उनको ध्यान म रखते हुए एक मील पूर्व की ओर स्थित फ्लिण्टस सरोवर भी और बीच म पड़नेवाले छोटे-छोटे अन्य सभी तालाब वाल्डेन के अनुसार ही बरतते हैं। इनमें भी वाल्डेन के साथ-साथ ही जल की सतह अभी कुछ दिन पहले ही उच्चतम हो पाई है। जहां तक मेरा ध्यान जाता है यह बात व्हाइट सरोवर के लिए भी सच है।

इन लम्बी अवधियों के बाद वाल्डेन के इस उतार चढ़ाव से कम से कम एक लाभ अवश्य होता है। जब पानी इतना ऊंचा चढ़ जाता है और एक या अधिक वर्षों तक ऐसा ही बना रहता है तब आसपास चलना तो निस्सन्देह कठिन हो जाता है, पर यह जल पिछले चढ़ाव के बाद किनारे पर उग आई झाड़ियों और पौध—चीड़, बेंत मिदुर एस्प आदि को नष्ट कर डालता है। जब जल उतरता है तब तट बिलकुल साफ और अबाध मिलता है। कई तालाबों और उन सभी जलस्रोतों के विपरीत जिनमे प्रतिदिन ज्वार भाटे आते हैं जल के न्यूनतम रहने की अवस्था म भी इसका तट स्वच्छतम रहता है। मेरे घर के ठीक सामने पन्द्रह फुट ऊंचे चीड़ के पेड़ों की एक पंक्ति थी। इसे जल ने ऐसे नष्ट कर दिया जैसेकि लीवर नीचे रखकर उखाड़ फेंका हो, और इस प्रकार इनके बढ़ाव को रोक दिया। इन पेड़ों के आकार से पता चलता है कि कितने वर्षों बाद जल इतना ऊंचा चढ़ा है। तालाब इस उतार चढ़ाव के द्वारा अपने तट पर अपना अधिकार स्थापित करता है और उसे खुरचकर साफ रखता है। पेड़ अपना अधिकार समझकर तट पर नहीं उग सकते। ये तट, इस झील के होंठ हैं जिनपर दाढ़ी नहीं उग सकती। वह समय समय पर इन होंठों को चाटकर साफ करता है। जब पानी चढ़ा होता है तब मिदुर, सरपत और मेपल अपने तनों से बड़ी मात्रा में लाल रेशेदार जड़ें धरती म तीन या चार फुट ऊंचे तक पानी म चारों ओर फैला देते हैं जैसेकि वे अपने को स्थिर रखने का प्रयत्न कर रहे हों। नीलबरी की झाड़ियां जो साधारणतया

बिलकुल फल नहीं देती, इन परिस्थितियों में बढ़िया फसल दे डालती है।

कुछ लोगों के लिए यह एक गुत्थी है कि तट पर पत्थर इतनी सुघड़ता से कैसे जड़ गए। मेरे नगर के लोगों में एक किंवदन्ती प्रसिद्ध है। सबसे अधिक वृद्ध लोगों ने मुझे बताया है कि यह उन्होंने अपनी जवानी में सुनी थी। किंवदन्ती यह है कि बहुत प्राचीन समय में एक बार आदिवासी लोग यहाँ की एक पहाड़ी पर, जो आकाश में उतनी ही ऊँची उठी थी जितना नीचे अब यह तालाब धरती में धँसा है, एक सम्मेलन कर रहे थे। कहानी के अनुसार उन्होंने बहुत अशलील आचरण किए। (आदिवासियों पर ऐसा दोष कभी नहीं लगाया जा सकता।) जब वे इस प्रकार व्यस्त थे तो पहाड़ी अचानक काँपी और नीचे धँस गई। वाल्डन नाम की एक बुढ़िया ही सिर्फ बच पाई और उसके नाम पर सरोवर को यह नाम मिला। अनुमान किया गया है कि जब पहाड़ी काँपी तो ये पत्थर सब ओर से लुढ़क आए और यह वर्तमान तट बन गया। कुछ भी हो, यह तो निश्चित है कि बहुत पहले कभी तालाब यहाँ नहीं था और अब वह है। यह आदिवासी दन्तकथा मेरे द्वारा पहले कहे उल्लिखित उस वृद्ध व्यक्ति के विवरण में भी रंच मात्र नहीं कटती। उस वृद्ध को स्पष्ट स्मृति है कि अपना नाप जोख का डण्डा लेकर जब वह यहाँ आया था तो उसने इस चरागाह से हलकी-सी भाप उठती देखी थी और एक अजूबे के वश वह दृढ़तापूर्वक नीचे की ओर संकेत करने लगा था। तभी उसने निर्णय कर लिया था कि यहाँ एक कुआँ खोदा जाए। इन पत्थरों के सम्बन्ध में बहुतों का विचार अभी तक यह है कि पहाड़ियों पर लहरों की प्रतिक्रिया से ये यहाँ आ पाए, यह बात कठिनाई से ही जँचती है। लेकिन मैंने देखा है कि चारों ओर की पहाड़ियाँ इसी प्रकार के पत्थरों से आश्चर्यजनक रूप से भरी हुई हैं। फलतः तालाब में निकटतम स्थित रेल की पटरी के दोनों ओर इन पत्थरों को दीवारों के रूप में इकट्ठा कर लिया गया है। विशेष बात तो यह है कि तट जहाँ सबसे अधिक आकस्मिक है वहीं पत्थर भी सबसे अधिक हैं। इसलिए चाहे दुर्भाग्यवश ही कहिए मेरे लिए यह कोई रहस्य नहीं रह गया है। इन पत्थरों से तट को बिछानेवाले को मैं पहचान सकता हूँ। यदि यह नाम किसी सफ़न वाल्डेन जैसी किसी अंग्रेज़ी बस्ती के नाम पर नहीं रखा गया है तो मैं समझता हूँ इसका मूल नाम 'वाल्ड इन'—दीवार बाँध और दीवार वाली गई है—सरोवर होगा।

तालाब मेरे लिए तो एक खुदा-खुदाया कुआँ था। वर्ष में चार महीने

इसका जल उतना ही ठण्डा रहता है जितना कि वर्ष भर स्वच्छ रहता है। मैं समझता हूँ इस अवधि में यह इस प्रसंग का यदि सर्वोत्तम नहीं तो किसी भी अन्य जलाशय जितना ही बढ़िया तो जरूर आता है। जाड़ों में हवा के प्रति उन्मुक्त जलाशयों का जल हवा से सुरक्षित सोतों और कुओं की तुलना में अधिक ठण्डा होता है। ६ मार्च, १८४६ के दिन इस तालाब के जल को मैंने तीसरे पहर पाँच बजे से लेकर अगले दिन दोपहर तक अपने रैन के कमरे में रखा। उस समय कमरे का तापमान तो सूर्य के छत पर चमकने के कारण ७० तक पहुँच चुका था। लेकिन जल का तापमान ४२° रहा और यह गाँव के टंडे में ठण्डे कुएँ से तत्काल खींचे गए जल से एक अंश अधिक ठण्डा था। उसी दिन बायलिंग स्प्रिंग का तापमान ४५° था। अर्थात् इसका जल अन्य सभी परीक्षित जलों से अधिक उष्ण था यद्यपि गर्मियों में इसका जल सबसे ठण्डा रहता है जबकि छिछले और मटमैले पानी के बावजूद बाहर का पानी इसमें नहीं मिलता। गर्मियों में वाल्डेन का जल धूप पड़ने पर भी अन्य जलाशयों जितना गर्म नहीं होता। इसका कारण इसकी गहराई है। सबसे गर्म मौसम में मैं बहुधा एक बाल्टी भर पानी अपने तहखाने में रख देता हूँ। वहाँ यह रात भर में ठण्डा हो जाता है और यह दिन भर ठण्डा रहता है। कभी मैं पड़ोस के एक और स्रोत से भी पानी ले आता हूँ। एक सप्ताह रखे रहने पर भी उस तालाब का जल वैसा ही रहता है जैसे कि अभी भरा गया हो और उसका स्वाद भी खराब नहीं होगा। कोई किसी भी तालाब के किनारे यदि गर्मियों में शिविर लगाए तो सिर्फ इतना ही करे कि एक बाल्टी पानी कुछ फुट गहराई में शिविर की छाया में रख छोड़े। तब उस बर्फ के प्रयोग की जरूरत नहीं पड़ेगी।

वाल्डन में से एक विलक्षण मछली सात पौण्ड की पकड़ी गई थी। एक अन्य मछली बड़े वेग से रील को खींचती ले गई। मछियारा उसे देख नहीं सका इसलिए निश्चिन्त भाव से उसने उसे आठ पौण्ड अंदाजा। इसके अतिरिक्त पर्च और पाउट मछलियाँ जिनमें से कुछ दो-दो पौण्ड का होगा, शाइनर, चीवी अथवा रोच बहुत थोड़ी ब्रीम और कुछ ईल भी जिनमें एक चार पौण्ड की थी यहाँ पकड़ी गई थीं। वजन ही मछलियों के यश का आधार होता है और इसीलिए इस वर्णन में मैंने भार का विशेष उल्लेख किया है। जहाँ तक मेरे सुनने में आया है बस इतनी ही ईल मछलियाँ यहाँ पाई गई हैं। मुझे पाँच इंच लम्बी एक छोटी-सी मछली भी कुछ-कुछ याद है जो दोनों बाजुओं की ओर से चाँदी के रंग की थी और पीठ पर से हरी थी। लेकिन

पर कुछ-कुछ शान्तिका (हेम) की तरह की थी। इसका उल्लेख मैंने प्रमुखतया इसीलिए किया है कि मेरे इस यथार्थ वर्णन में कहानी के तत्त्व भी मिल सकें। वैसे यह सरोवर मछलियों की दृष्टि से विशेष उर्वर नहीं है। बहुत अधिक नहीं पर पिकरल मछली ही यहाँ की प्रमुख उपज है। एक बार मैंने कम से कम तीन प्रकार की पिकरल मछलियाँ बर्फ पर पड़ी देखीं। पहले प्रकार की पिकरल लम्बी उथली फौलादी रंग की थी। ऐसी मछलियाँ सबसे अधिक नदियों में ही पकड़ी जाती हैं। दूसरे प्रकार की पिकरल चमत्कार सुनहरे रंग की कुछ हरी आभा लिए हुए थी और आश्चर्यजनक रूप से गहरी थी। साधारणतया यही यहाँ सबसे अधिक मिलती है। तीसरी दूसरी के से आकार की और सुनहरे रंग की थी पर इसके बाजुओं पर छोटे छोटे गहरे भूरे अथवा काले धब्बे पड़े हुए थे तथा थोड़े-से हलके रक्तवर्ण के धब्बे भी इनमें मिले थे। ये बहुत कुछ ट्राउट मछलियाँ जैसी थीं। 'रेटीक्यूलेटम' यह विशेष नाम इनके लिए उपयुक्त नहीं ठहरता। इनका नाम तो ग्यूटेटम होना चाहिए। ये सभी बहुत ठोस मछलियाँ हैं और अपने आकार से अधिक भारी हैं। शाइनर, पाउट और पर्च भी और इस सरोवर में मिलनेवाली सभी मछलियाँ नदी और दूसरे जलाशयों की मछलियों की अपेक्षा अधिक स्वच्छ सुन्दर और ठोस मांसवाली हैं और इन्हें अन्य मछलियों से सरलतापूर्वक अलग किया जा सकता है। कारण यह है कि यहाँ का पानी अधिक साफ है। बहुत-से मत्स्य-वैज्ञानिक इनमें से कुछ को देखकर शायद कई नई किस्मों की स्थापना कर सकें। यहाँ मेंढकों और कछुओं की भी एक बढ़िया जाति वर्तमान है। कुछ शम्बुक भी यहाँ मिलते हैं। छछूंदर और ऊदबिलाव भी अपने चिह्न इसके आसपास छोड़ जाते हैं। कभी-कभी घूमता फिरता कोई कीचड़ का कछुआ भी यहाँ आ निकलता है। कभी कभी जब मैं प्रातः हो अपनी नाव को ठेलता, तो रात भर उसके नीचे छिपा पड़ा हुआ एक बड़ा कीचड़ का कछुआ निकलकर भागता। बत्तखें और हंस वसन्त और पतझड़ में यहाँ आकर आ जाते हैं। सफेद पेटवाली अबाबीलें सरोवर के जल को छूती हुई उड़ती हैं और टिटिहरियाँ गर्मी भर इसके पथरीले किनारों पर भूला भूलती हैं। कभी-कभी पानी के ऊपर झुके सफेद चीड़ पर बैठा कोई मछलीमार बाज मेरे आने पर उड़ जाता है। पर फ्लिंट हैवन की तरह किसी ने इस सरोवर को शायद ही कभी अपवित्र किया हो। अधिक से अधिक वर्ष में एक बार एक लून पक्षी आता है। उल्लेखनीय जीव-जन्तु ये ही हैं जो आजकल इस सरोवर पर मिलते

हैं। यदि शान्त मौसम में नाव पर से देखें तो रेती के पूर्वी तट के पास के सामान्यतया आठ या दस फुट गहरे पानी में और तालाब के कुछ और हिस्सों में भी, मुर्गी के अंडों से भी लघु आकार के छोटे छोटे पत्थरों के छः फुट व्यासवाले और एक फुट ऊँचे गोल ढेर पानी के अन्दर बने मिलते हैं। मजा यह कि वहाँ चारों ओर रेत के सिवाय कुछ भी नहीं होता। पहले पहल देखकर आश्चर्य होता है कि शायद आदिवासियों ने इन्हें किसी मतलब से बर्फ पर बनाया होगा और बर्फ के पिघलने पर ये नीचे बैठ गए होंगे। पर ये इतने नियमित और इनमें से कुछ स्पष्ट ही इतने ताजे होते हैं कि यह अनुमान ठीक नहीं लगता। ये नदियों में मिलनेवाले ढेरों जैसे ही होते हैं। लेकिन चूषक या तम्बू मछलियाँ तो यहाँ होतीं नहीं। फिर किन मछलियों ने इन्हें बनाया होगा। शायद ये चीवी मछलियों के घोंसले होते हैं। ये सब सरोवर के तल को एक मधुर रहस्य प्रदान कर देते हैं।

तट इतना काफी ऊबड़-खाबड़ है कि मन को उकताता नहीं। मैं अपने मन की आँखों से गहरी खाड़ियोंवाले दन्तदार पश्चिमी तट को, अधिक ठोस और ऊँचे उत्तरी तट को और उस दक्षिणी तट को देख रहा हूँ जिसमें बड़े ही सुन्दर घुमाव हैं और एक पर दूसरे कितने ही अन्तरीप बन गए हैं जिनके मध्य कितने ही अनदेखे खड्ड हैं। पहाड़ियों के बीच एक छोटी झील—पहाड़ियाँ जिसके जल के किनारों से ही चारों ओर ऊपर उठ गई हैं ऐसी झील—के बीच में चारों ओर के वन की स्थिति जितनी अच्छी एवं जितनी स्पष्ट रूप में सुन्दर लगती है उतनी और कहीं भी नहीं लगती। कारण यह है कि जिसपर वन का प्रतिबिम्ब पड़ रहा है वह जलाशय इस स्थिति में वन के लिए उसकी सर्वोत्तम अग्रभूमि बन जाता है और उसका घुमावदार किनारा वन की प्राकृतिक और समुचित सीमा का काम देता है। उस स्थल के सिवाय जहाँ कुल्हाड़ी से कोई भाग साफ कर दिया गया है या कोई खेत जोत लिया गया है पूरे चित्र में न कोई अनगढ़पन दीखता है और न ही अधूरापन। पेड़ों को जल की ओर फैलने के लिए काफी अवसर होता है और उनमें से प्रत्येक अपनी सबसे पुष्ट शाखा को उस दिशा में फैलाता है। लगता है जैसे प्रकृति ने एक स्वाभाविक गोट बुन दी हो। आगे किनारे की छोटी झाड़ियों से आरम्भ करके उचित क्रम में सबसे ऊँचे पेड़ों तक उठ जाता है। मनुष्य के हाथों की कारीगरी के बहुत ही कम चिह्न यहाँ दीख पड़ते हैं। गत हजार वर्ष पहले की तरह ही आज भी सरोवर का जल किनारों को नहला रहा है।

किसी भी प्राकृतिक दृश्य की सबसे सुन्दर और अभिव्यंजक विशेषता उसकी झील होती है। झील धरती की आंख है। इसमें झांकनेवाला व्यक्ति मानो अपनी ही प्रकृति की गहराई को नापता है। तट के निकट उगनेवाली वनस्पतियां इसपर पड़ी पलकों के बालों की झालर हैं और चारों ओर की वनाच्छादित पहाड़ियां और टीले इसकी भौंहें हैं।

सितम्बर के एक शान्त दिन के तीसरे पहर सरोवर की पूर्वी सीमा पर समतल रेतीले तट पर खड़े होकर जबकि एक हलकी धुंध के कारण सामने की तट रेखा अस्पष्ट हो गई हो, मैंने समझा है कि 'झील की शीशे की तरह दमकती सतह' यह उक्ति कहां से आई है। यदि आप सिर के बल खड़े होकर देखें तो यह तल हवा में उड़नेवाले मकड़ी के कड़ियों में बन्धे जाल के उस एक धागे जैसा प्रतीत होगा जो घाटी के आर पार खिंच गया हो, जो चीड़ के सुदूरस्थ वनों के प्रतिपट में चमक रहा हो और वायुमण्डल की एक तह को दूसरी से अलग कर रहा हो। आप शायद सोच उठें कि उसके साथ नीचे चलकर सामने की पहाड़ियों तक सूखे पहुंचा जा सकता है और अबाबीलें जो इसके ऊपर उड़ रही हैं शायद इसपर बैठ भी सकती हैं। और सच ही कभी-कभी वे जल की सतह के नीचे तक ऐसे डुबकी लगा बैठती हैं जैसे गलती कर बैठी हों और उनका भ्रम निवारण हो जाता है। जभी आप सरोवर पर पश्चिम की ओर दृष्टिपात करते हैं आपको अपने दोनों हाथ आंखों के ऊपर लगा लेने पड़ते हैं क्योंकि सूर्य और उसका प्रतिबिम्ब दोनों ही चमक रहे होते हैं और दोनों ही समान रूप से जगमगाते होते हैं। यदि उन दोनों के बीच में आप तल को सूक्ष्मतापूर्वक देखें तो वह शाब्दिक ही आपको शीशे जैसा दीख पड़ेगा। बस वही स्थान इसके अपवाद हैं जहां स्केटर कीड़े थोड़ी थोड़ी दूरी पर पूरी सतह पर बिखरे हैं और धूप में अपनी हलचल से अत्यन्त नोप विम्म की एग दन्धिया भमक सतह पर पैदा करते हैं। कभी-कभी एक बत्तख अपने पंख फैलाती है अथवा जैसाकि मैं कह चुका हूं कोई अबाबील इतनी गहरी डुबकी लगाती है कि पानी को छू जाए। बस ऐसे अवसरों को छोड़कर सतह शीशे जैसी ही दीख पड़ती है। कभी-कभी ऐसा होता है कि कुछ दूर पर कोई मछली तीन या चार फुट ऊंचे हवा में उछलकर एक चाप बनाती हुई फिर पानी में कूद जाती है। जहां से वह निकलती है और फिर जहां डुबकी लगाती है दोनों स्थानों पर एक विनारा सी कौंध उठती है। कभी कभी तो चाप का पूरा वृत्त स्पष्ट बन जाता

है। पानी के बीच से रोयें सतह पर उड़ते और तैरते रहते हैं और मछलियां इन्हें झपटकर जल में पुनः लीन हो जाती हैं। सतह पिघलाकर ठंडे किए गए उस शीशे की तरह प्रतीत होती है जो अभी जमा नहीं है। जो कुछ धब्बे उसपर दीख पड़ते हैं वे मानो शीशे के बनाव में अवशेष बचे हों। स्वच्छ और सुंदर दीख पड़ते हैं। अक्सर एक अधिक समतल और धुंधला जल शेष से अलग साफ दीख पड़ता है जबकि उसे एक अदृश्य मकड़ी के जाले ने अथवा जल पर विश्राम लेनेवाली जलपरियों की छड़ी ने अलग कर दिया हो। किसी भी पहाड़ी की चोटी से आप ताल के किसी भी भाग में मछलियों को उछलते देख सकते हैं। पिकरेल या शाइ-नर सरोवर की शांत और स्निग्ध सतह से कीड़े पकड़ती हैं। यह साधारण सा तथ्य मछलियों द्वारा किया गया यह हत्याकाण्ड, कितने विस्तार और विवरण के साथ प्रकाशित होता है, यह बात बड़ी ही अजीब लगती है। अपने सुदूरस्थ घर से पानी में पड़ी गोल भंवरों को जब वे तीस गज व्यासवाली होती हैं मैं भली भांति पहचान लेता हूं। चौथाई मील की दूरी से जल की शांत सतह पर निरंतर आगे बढ़ते हुए एक वाटर-बग तक को साफ देखा जा सकता है क्योंकि वह दो झुकी हुई रेखाओं के बीच एक हलकी लकीर सी खींचता चलता है। स्केटर कीट जल पर रेंगते हुए ऐसी लकीर नहीं बनाता जो नजर आ सके। लेकिन जब सतह काफी उद्वेलित होती है तब न उसपर स्केटर होते हैं न वाटर बग। शांत दिनों में ही किनारे के अपने आवास-घरों से ये निकलते हैं और क्रमशः रुक रुककर वेगपूर्वक बढ़कर पूरी सतह को नाप जाते हैं। पतझड़ के किसी एक बढ़िया दिन जब सूर्य की धूप बहुत प्यारी लगती है ऊंचाई पर खड़े किसी ठूंठ पर ताल की ओर मुंह करके बैठना और आकाश के और पेड़ों के जल पर पड़ते प्रतिबिम्बों के कारण अन्यथा अदृश्य सतह पर निरन्तर बनती जाती मण्डलाकार भंवरों का अध्ययन करना एक बड़ा ही शान्तिप्रद काम है। जल के इस भारी फैलाव पर कोई ऐसी हलचल नहीं जो तत्काल ही धीमे से उसी प्रकार शान्त न हो जाती हो जिस प्रकार गागर की डुबकी से तल पर कांपती हुई लहरें तट में लीन हो जाती हैं और तभी फिर सब कुछ शान्त हो जाता है। कोई मछली फुदकती नहीं और कीड़ा सतह पर गिरता नहीं कि ये मण्डलाकार भंवरें उसकी सूचना सब तक पहुंचा देती हैं। ये वृत्त मानो सौन्दर्य की रेखाएं हैं, ये ताल के जलस्रोतों के निरन्तर फूटते रहने की निशानियां हैं, ये उसकी नाड़ी की धड़कनें हैं और उसके वक्ष का उठना गिरना है। आनन्द

और बन्ना दाना वा निहरना म कोई विभेद नही किया जा सकता। ताल का
न्दय कितना नार्तापूर्ण है। मानव निर्मित वस्तुए तक दीप्तमान हैं। हर पत्ता
टहनी पत्थर और मक्डा का जाला इस तीसरे पहर के समय बस ही चमक रहा
है जैसे कि वसन्त की सुबह य सब चीजे आस स नदवा दमकती है। चप्पू की
अथवा किसी चीन्हे की हर हरकत एक ज्योति स्फोट सा पदा करती है और जब
चप्पू पानी पर गिरता है तो कितना मीठी गज निकलती है।

सितम्बर या अक्तूबर के एस दिन वाल्डन जगल के बीच जडे हीरे जसा
लगता है। इसके चारो ओर जड पत्थर मेरी आखो को ता बस ही मूल्यवान लगत
हैं जैसे कि य बहुत अमूल्य अथवा दुलभ हो। ताल जितनी सुदर विशुद्ध और
साथ ही इतनी बडी चीज शायद धरातल पर और मिल ही नही सकती। इसक
चारो ओर किसी हदबन्दी की जरूरत नही है। जातिया आती है और चली जाती
है पर स्म विकृत नहा कर पाती। यह वह दपण है जिस कोई पत्थर तोड नहीं
सकता इसका पारा कभी उडेगा नहीं इसके मुलम्मे को प्रकृति निरतर सवारती
रहती है। कोई तूफान कोई धूल मिट्टी इसके सदा चमकनेवाल तल का धुधला
नहीं कर सकत। हर प्रकार की अपवित्रता इस दीप्ति म पडकर डूब रहती है।
सूय की धूमिल कूची उसकी यह प्रकाश किरणो की झाडन उसको सदा धाती
पोछती रहती है। यह तो निगाही सांसे अपन ऊपर टिकने नही देता बल्कि
अपनी सासो का सतह स बहुत ऊपर बादल बनाकर भेज देता है और तब भी य
बादल उसकी गोदी म प्रतिबिम्बित होते रहते हैं।

जल का यह क्षेत्र पवन म निहित प्राणो को ही तो स्पष्टाकार द रहा है। नव
जीवन और हरकत यह निरन्तर ऊपर से प्राप्त कर रहा है। धरती पर तो घास और पेड ही
यह धरती और आकाश के बीच की चीज है। धरती पर तो घास और पेड ही
मिलते हैं लेकिन यहा तो हवा म पानी स्वय थिरक उठता है। पवन यहा इसम
टकरा रहा है यह मैं प्रकाश की लकीरो अथवा उसकी लहर को देखकर पहचा
सकता हू। आश्चर्य ही बात है कि हम नीचे इसकी तली तक को देख सकते हैं
अन्तत हम शायद पवन की तली को भी इसी प्रकार देख सकेंगे और मालूम
सकेंगे कि सूक्ष्मतम प्राण उसम कहा निहित हैं।

अक्तूबर के अन्तिम भाग म जब सख्त पाला पडने लगता है तब हम्बर
बाहर बग अन्तिम रूप से विलुप्त हो जाते हैं। तब और नवम्बर म किस

शात दिन म कोई भी चीज सतह पर ज़रा भी हलचल पदा नहा करती। नव म्बर के एक दिन दोपहर बाद की बात ह। यद्यपि आकाश पूरी तरह बादलो मे ढका था और हवा कुहर से भरी थी पर कई दिनो की आधी-वर्षा के बाद एकदम शान्ति थी। उस समय मैंने देखा, ताल आश्चर्यजनक रूप से शान्त और स्थिर था और उसकी सतह को पहचानना तक कठिन पड रहा था। अक्तूबर के चमक दार रगो की नही, चारो ओर की पहाडियो की मलो प्रतिच्छाया ही पानी पर पड रही थी। यद्यपि मैं यथासम्भव मद गति से ही सतह पर से बढ रहा था पर नाव से पैदा होनेवाली वत्त जितनी दूर तक दष्टि जाती थी फलते जा रहे थे और छायाओ को पसलियो जसा आकार प्रदान कर रहे थे। सतह पर कुछ दूर तक ढकन पर यहा-वहा हलकी-सी दमक मुझे दीख पडी जैसेकि पाले से बचे खुचे स्केटर कीड़े वहा इकट्ठे हो गए हो अथवा उन स्थलो पर नीचे तली म फरते सोते ऊपर की शात सतह को विचलित कर रहे हो। जब मैं धीमे धीमे खेकर वहा पहुचा तो यह देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि पाच पाच इच लम्बी ताबे क रग की हजारो छोटी छोटी पच मछलिया वहा हर पानी म खिलवाड कर रही थी। वे निरन्तर सतह तक आती और उसम भवर पैदा करती और कभी कभी ऊपर बुलबुल छोड जाती। एस पारदर्शी और अथाह प्रतीत होनेवाले जल पर जिसपर बादलो की प्रतिच्छाया पड रही थी लगता था जसे मैं एक गुब्बार म बैठा हुआ पर तर रहा होऊ। मछलियो का तैरना मुझे ऐसा लग रहा था जसेकि वह एक प्रकार का उडना या मडराना हो और वे मछलिया न होकर पक्षियो क घने झुण्ड हो जो मेरे ठीक नीचे से दायें या बायें होकर गुजर रह हो और बादल जस उनक पर उनके चारो ओर फल हो। इस प्रकार क कितने ही झुड तालाब म वतमान थे। इससे पहल कि वफ का झिलमिली सूय के विस्तत प्रकाश को उन तक पहुचाने से रोक द वे स्पष्ट कुछ दिनो का अवकाश लाभ उठा रह थ। कभी-कभी मछलियो क य समूह एसा आभास द जाते जसेकि हलक पवन ने सतह पर चोट की हो अथवा वर्षा की बूदें उसपर टपकी हो। जब मैं लापरवाही स उनक पास पहुचकर अचानक उन्हें चौंका देता तो व छप छप की आवाज करते अपनी पूछो म एसी लहरें उठाते जसेकि किसी भाड़ीनुमा टहनी स पानी पर आघात किया गया हो और तत्काल ही गहराइयो म उलटकर छिप जातीं। अन्त में हवाएं उठीं कुहरा बढा और लहरों ने शोरगुल शुरू कर दिया।

जब पत्न मछलियाँ रहने की जगह बहुत ऊँची करती पानी में आधी ऊपर उठ जाती और तीन इंच लम्बे सफेद बाल धन्य सतह के ऊपर एकमात्र उभर जाते। एक वर्ष ५ सितम्बर के दिन मैंने सतह पर कुछ भंवर देखे। हवा कुहरे में भरी थी। मैंने समझा कि फौरन ही बड़े जोर की वर्षा आनेवाली है। मैंने नाव में चप्पू सँभाले और घर की ओर नाव बढ़ाई। यद्यपि अभी गालों पर बूंदों को मैंने नहीं भाना था पर वर्षा बहुत तेजी से बढ़ती प्रतीत होती थी और मैं पूरी तरह भीग जाने की आशंका कर रहा था। पर अचानक ही भंवर रुक गए क्योंकि सरजमीन इन्हें पर्च मछलियों ने पैदा किया था जो चप्पुओं की आवाज से डरकर गहराइयों में भाग गई थीं। मैंने स्वयं उनके समूहों को विलुप्त होते देखा। आखिर तीसरे पहर का समय मुझे सूखा ही गुजारना पड़ा।

एक वृद्ध पुरुष ने जो लगभग साठ वर्ष पहले इस तालाब पर अक्सर आया करता था मुझे बताया कि उन दिनों यह तालाब चारों ओर के वनों के कारण अंधेरा सा रहता था। कभी कभी बत्तखें और अन्य जलपक्षियों के कारण यहाँ बड़ी हलचल रहती थी। बहुत-से गरुड़ भी यहाँ आते थे। वह वृद्ध यहाँ मछलियाँ पकड़ने आया करता था और इसके लिए तट पर पड़ी लकड़ी के लट्ठों से बनी एक छोटी सी डोंगी का प्रयोग किया करता था। यह डोंगी दो सफेद चीड़ के लट्ठों को खोदकर और उन्हें साथ जोड़कर बनाई गई थी। सिरों पर से इसे चौकोर काट दिया गया था। यह बड़ी भद्दी थी लेकिन बहुत सारे वर्षों तक यह काम देती रही और तब शायद पानी भर जाने के कारण तली में बैठ गई। यह किसकी थी वृद्ध नहीं जानता था। असल में तो यह सरोवर की थी। वह वृद्ध हिकरी की छाल के टुकड़ों को आपस में बाँधकर लंगर के लिए रस्सी बना करता था। एक और वृद्ध ने जो कुम्हार था और क्रान्ति से पहले यहाँ रहा करता था उसे बताया था कि सरोवर की तली में एक लोहे की पेटी पड़ी है। कभी-कभी यह तैरकर ऊपर आ जाती है पर ज्यों ही आप इसकी ओर बढ़ें यह गहरे पानी में गायब हो जाती है। उस पुरानी डोंगी के बारे में सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई थी जिसने शायद किसी आदिवासी नौका का स्थान लिया होगा जो बनी तो उसी सामग्री से नौकी पर अधिक आकर्षक रही होगी। वह डोंगी पहले तट पर उगा वृक्ष होगा जो पानी में गिर गया होगा और तब पानी पर वहाँ तैरता रहा होगा। इस सरोवर के लिए यह सर्वोत्तम नाव थी। मुझे याद है जब मैंने पहले-पहल इन गहराइयों में झाँका

था, तो मुझे वृक्षों के कितने ही बड़े-बड़े तने तली में पड़े दीख पड़ते थे। ये तने या तो कभी आँधी से उखड़कर पानी में गिर पड़े होंगे या कटाई के समय बर्फ पर छोड़ दिए गए होंगे क्योंकि उन दिनों लकड़ी सस्ती थी। पर अब वे सब अधिकांश लुप्त हो चुके हैं।

जब पहली बार मैंने वाल्डन पर नाव खेई थी तो यह ऊँचे ऊँचे चीड़ और बलूत के सघन जंगलों से घिरा था। इसकी कुछ घाटियों में अंगूर की बेलें जल के पासवाले पेड़ों पर चढ़ गई थीं और उन्होंने कुंज बना लिए थे जिनमें नाव प्रवेश कर जाती थी। सरोवर की तट स्थित पहाड़ियाँ इतनी सीधी और खड़ी हैं और उनपर उगे हुए जंगल इतने ऊँचे हैं कि यदि पश्चिमी किनारे से देखा जाए तो ऐसा लगता है जैसे कि ये किसी वन्य दृश्य को देखने के लिए बनी बैठने की सीढ़ियाँ हैं। जब मैं और भी छोटा था तब मैं नाव को बीच में ले जाकर जल पर पश्चिमी पवन के अनुकूल बहता रहता था। गर्मियों के तीसरे पहर भर मैं सीट पर उलटा लेटा रहता और जागते हुए भी सपनों में डूबा रहता। मैं तभी जागता जब मेरी नाव तट की रेत में टकराती और मैं यह देखने के लिए उठता कि मेरा भाग्य मुझे किस तट पर छोड़ गया है। ये दिन वे थे जब आलस्य ही सबसे आकर्षक और उत्पादक उद्यम प्रतीत होता था। दिन के सबसे मूल्यवान अंश को इस प्रकार बिताने के लिए मैं कितनी ही बार चोरी से पहले ही भाग निकला हूँ। उन दिनों मैं धन की दृष्टि से न सही, गर्मियों के दिनों और धूप के घण्टों की दृष्टि से बहुत धनी था और उन्हें मुक्त होकर खर्च करता था। मुझे इस बात का खेद नहीं है कि मैंने अधिक समय किसी कारखाने में या अध्यापक के काम में नहीं बिताया। लेकिन जब से मैंने इन तटों को छोड़ा है लकड़हारों ने इन्हें और भी उजाड़ बना डाला है। अब कितने ही वर्षों तक वन के अगल-बगल के रास्तों में टहलना घूमना फिरना और बीच-बीच में वनस्पतियों के बीच से झाँककर पानी को देखना सम्भव नहीं हो सकेगा। आज यदि मेरी सरस्वती मौन ही रहे तो उसे क्षमा किया जाए। यदि उनके कुंजों को काट डाला जाए तो भला आप कैसे आशा कर सकते हैं कि पक्षी गाएँगे?

तली में पड़े पेड़ों के तने, पुराना लट्ठे की डोंगी और चारों ओर के घने वन अब सब कुछ बीत चुका है और गाँववाले नहाने या जल पान के लिए तालाब तक जाने के बदले सोच रहे हैं कि कम से कम गंगा जितने पवित्र उस जल को पाइपों द्वारा गाँव तक ले जाएँ और इससे अपने बर्तन धोए जाएँ। वे टोंटी घुमाकर या

प्याग दबाकर ही अपने वाल्डन को पा लेना चाहते हैं। वह शैतान लौह-अश्व जिसकी कानों को फाड़नेवाली हिनहिनाहट पूरे जिले में सुनी जाती है, जिसने बॉयलिंग स्प्रिंग को अपने पैरों से गंदला बना दिया है और जो वाल्डन तट के जंगलों को नोचकर ले गया है — ट्रायवाला यह घोड़ा[1] जिसे भाड़े के टट्टू यूनानियों ने बनाया था और जिसके पेट में एक हजार आदमी थे। इस प्रदेश का योद्धा वह मूर हॉल का मूर कहाँ है जो डीपकट पर उसका सामना करे और इस फूली हुई महामारी की छाती में अपना प्रतिशोध भरित भाला घुमेड़ दे।

जितने भी चरित्रों का परिचय मैंने अब तक पाया है उनमें शायद वाल्डेन सर्वोत्तम है और इसने अपनी पवित्रता को अच्छी तरह सुरक्षित रखा है। कितने ही व्यक्तियों की उससे समकक्ष रखा गया है पर उनमें से बहुत कम ही इस सम्मान के योग्य हैं। यद्यपि लकड़हारों ने पहले इसका यह तट और फिर वह तट नंगा कर दिया है और उन्होंने और आयरलैंडवालों ने उस लकड़ी से सूअरों के बाड़ों जैसी अपनी झुग्गियाँ बना ली हैं, रेल की पटरी ने इसकी सीमाओं को भंग कर डाला है और बर्फ साफ करनेवालों ने इसे खिनो लिया है, पर यह अपने में अपरिवर्तित ही है। इसमें वही जल है जिसे मैं अपने यौवन में देखता था। जितना भी परिवर्तन आया है वह सब मुझमें ही आया है। अपनी इतनी लहरों के बावजूद इसपर एक भी स्थायी झुर्री नहीं पड़ी है। यह चिरयुवा है और प्राचीनकाल की तरह ही आज भी मैं एक हारिल अबाबीलों को डुबकी लगाते और सतह पर से कीड़े पकड़ते देख सकता हूँ। आज रात मुझे फिर यह प्रतीत हुआ जैसे पिछले बीस वर्षों से मैंने इसे लगभग प्रतिदिन नहीं देखा है। क्या यही तो है वह वाल्डन जंगलों के बीच स्थित वह झील जिसे बहुत वर्ष पहले मैंने खोज निकाला था। पिछले जाड़ों में जिस तट पर का जंगल काट दिया गया था वहाँ अब फिर उतने ही जोर से दूसरा जंगल उगा आ रहा है। जो विचार तब उसके मन में उठ रहा था वही अब भी उठ रहा है। यह वही तरल हर्ष और आनन्द है जो स्वयं इसके और इसके स्रष्टा के लिए है और शायद मेरे लिए भी है। यह निश्चय ही किसी ऐसे वीर पुरुष का काम है जिसमें छल नहीं था। उसने अपने हाथ में इस जल को गोलाई दी, इसे गहरा

[1] ट्राय नगर को जब हराया न जा सका तब शत्रु ने एक विशाल घोड़ा बनाया जिसके पेट में एक हजार शत्रु सैनिक छिप गए। घोड़े को नगर के द्वार के पास छोड़ दिया गया। ट्रायवाले उसे भीतर ले गए। रात को शत्रु ने आग लगाकर नगर जला डाला।

बनाया और इसे विचारों में साफ किया और इस सरोवर को वालडेन के नाम वसीयत कर गया। मैं इसके चेहरे से पहचान सकता हूँ कि उसीकी प्रतिच्छाया इसपर पड़ा करती है और मैं लगभग कह सकता हूँ, ओ वाल्डेन, क्या यह तुम हो ?

'किसी पंक्ति को शोभित करने
का सपना मैं नहीं देखता
वाल्डेन के मैं निकट निकटतर
ईश स्वर्ग के आ न सकूँगा
मैं इसका पथरीला तट हूँ
और पवन जो इसपर बहती
मेरे हाथों की मुट्ठी में
इसका जल है और रेणु है।
और गहनतम तल को इसने
मन में ऊँचा स्थान मिला है।'

रेल के डिब्बे इसे देखने के लिए कभी नहीं रुकते फिर भी मैं समझता हूँ इंजानियर, फायरमैन और ब्रेकमैन आदि मौसम भर का टिकट रखनेवाले यात्री इसे बहुधा देखते हैं और उनके लिए यह दृश्य देखना सर्वाधिक उपयोगी भी है। इंजीनियर रात में कभी नहीं भूलता अथवा उसकी अन्त प्रकृति नहीं भूलती कि कम से कम दिन में एक बार उसने शान्ति और पवित्रता का ऐसा दृश्य देखा है। चाहे एक बार ही क्यों न देखा हो, वह स्टेट स्ट्रीट की ओर इंजन की कालिख को धो डालने में सहायक होता है। किसीने प्रस्ताव रखा है कि इसे 'भगवद्बिन्दु' कहा जाए।

मैंने ऊपर कहा है कि वाल्डेन में जल के आगमन और बहिर्गमन के लिए दृश्य स्रोत कोई नहीं दीख पड़ता। पर एक ओर तो यह अस्पष्टत और अप्रत्यक्षत फ्लिण्ट्स सरोवर से सम्बद्ध है। फ्लिण्ट्स अधिक ऊँचाई पर है और इन दोनों के बीच छोटे-छोटे तालाबों की एक पूरी शृंखला पड़ती है। दूसरी ओर स्पष्टत और प्रत्यक्षत यह कानकार्ड नदी से जुड़ा है। नदी निचली सतह पर है और उस तरफ के मार्ग में भी तालाबों की कमी ही कभी वर्तमान है। हो सकता है भू-गर्भ

विज्ञान के अनुसार किसी अत्यन्त प्राचीन युग म यह शृंखला नालरूप म बही हो। भगवान की मनाही ह नहा ता थोडी सी खुदाई के बाद यह कडी दुबारा पूर्ववत बह सकती है। इस प्रकार इतने लम्बे समय तक आत्मकेन्द्रित और सयमी ढग से रहन पर यह सरोवर इन वना क सन्यासी जैसा बन गया है और इसने एक अनोखी विशुद्धता प्राप्त कर ली है। तब भला किस दु ख न होगा यदि फ्लिण्ट्स सरोवर का अपेक्षाकृत अशुद्ध जल इसम मिल जाए अथवा इसे समुद्र की लहरा म मिलकर अपने माधुर्य को खो देना पडे ?

निकट म स्थित फ्लिण्ट्स सरोवर अथवा सैंडी (रेतीला) ताल हमारी सबसे बडी भील है। यह धरती से घिरा एक समुद्र है और वाल्डन स लगभग एक मील पूर्व म है। यह काफी बडा है। इसका क्षेत्रफल लगभग एक सौ सत्तानवे एकड बताया जाता है। मछलियो की दृष्टि स भी यह बहुत उर्वर है पर यह अपेक्षाकृत कम गहरा है और उतना आश्चर्यजनक रूप स शुद्ध भी नही है। मैं वनो को पार करके बहुधा मनोरंजन के लिए उसकी ओर जाया करता था। यह इसके लिए उपयुक्त है। वहा हवा का अपने गालो म स्वच्छन्द भाव से टकराना आप सह और लहरो की दौड का दखें और नाविको के जीवन का याद करें। पतझड के दिनो म जब तेज हवाए चलती है चेस्टनट इकट्ठे करने के लिए मैं वहा जाया करता था। चेसनट पानी म गिरकर और बहकर मर परो क पास आ जाते थे। एक दिन जब मैं इसके दलदली तट पर चल रहा था और ताजी फुहारें मेरे चेहरे पर पड रही थीं तब एक नाव के जर्जर अवशेष के पास मैं जा निकला। नाव के दोनो पक्ष नष्ट हो चुके थे। इसके चपटे तल का छाप-सी ही कठिनाई स वहा नागरमोथे के पौधो के बीच बची थी। फिर भी इसका आकार एकदम स्पष्ट रूप म पहचान पडता था कि जैसे कि यह एक बडा पात्र हो जो गलकर मिट्टी म मिल चुका हो पर जिसकी नसें अभी तक मिट्टी म साफ उभरी हो। समुद्र-तट पर जैसे अवशेष की कल्पना की जा सकती है वैसा ही प्रभावशाली यह भी था और इससे भी उतनी ही गम्भीर शिक्षा मिलती थी। तालाब का यह तट अब वनस्पति म ढकी एक उभरी भूमि मात्र रह गया है और इस तट के रूप म पहचाना नहीं जा सकता। नागरमोथे और मोटी घास के पौधे इस पर उग आए हैं। इस तालाब की उत्तरी सीमा म रेतीली तली पर पडे लहरो के चिह्न मुझे बडे अच्छे लगते थे। पानी के दबाव के कारण किसी भी चलनेवाले के

परा को य चिह्न जमे हुए और सख्त लगा करते थे। इन चिह्नों के अनुरूप ही आनि वासियों की मा पत्ति म तक के पीछे एक ठहरान हुए नागरमाथे एमं उग जाए य जसे लहरा न ही इन्हें वहा बोया हो। वहा मुझे शायद पाइपवट की बटिया घास अथवा जडो स बनी अजीब-सी गेंदें भी काफी बडी सख्या म देखने को मिलीं। इनका व्यास आधे इच से लेकर चार इच तक का होता था, और य पूरी तरह गोल होती थी। य छिछले पानी म रेतीली तलो पर बहकर आती और चली जाती थी और कभी-कभी किनारे पर भी फेंक दी जाती थीं। य या तो ठोस घास होती थीं या इनके बीच म थोडी-सी रेत भी होती थी। पहले-पहल आप यही कहेंगे कि गोल पत्थरों की तरह इन्हें भी लहरो न ही बनाया है। लकिन आधे इच लम्बे सबसे छोटे गोले भी एक जैसी ही घटिया सामग्री स बने हैं और व वर्ष की एक विशेष ऋतु म ही बनते हैं। फिर मैं समझता हू कि लहरें इतना बनाती नहीं जितना एक चीज को जो स्थिरता प्राप्त कर चुकी है जर्जर करती हैं। गेंदों ने अपना यह आकार अनिश्चित समय तक सूखे रहकर ही प्राप्त किया होगा।

फ्लिण्टस सरोवर! हमारे पास नामों की कमी दरिद्र, कितनी अधिक है! उस गन्दे और जडबुद्धि किसान को जिसका खेत इस स्वर्गीय सरोवर से सटा है और जिसने निर्दयतापूर्वक इसके तटों को नंगा बना दिया है क्या अधिकार था कि वह अपना नाम इस तालाब को दे। पैसे को दांत से पकडनेवाला एक कजूस जो एक डालर की अथवा सेंट की चमकदार सतह को अधिक पसन्द करता है क्योंकि उसम वह अपने पीले चेहरे को देख सकता है जो तालाब पर रहनेवाली जगली बत्तखों को भी बेगाना घुसआइ मान सकता है स्त्रों के से मुख और शरीरवाला और पक्षी के से पर और पजोवाले एक काल्पनिक दैत्य के तरीके से पकडने की लम्बी आदत के कारण जिसकी उंगलियां टेढी और पजो जैसी बन गई हैं उस किसान के नाम पर इस तालाब का नाम पडा और मेरे नाम पर नहीं! जिसने इसे कभी देखा नहीं जो इसमे कभी नहाया नहीं जिसने कभी इसे प्यार नहीं किया इसकी रक्षा नहीं की, जिसने कभी इसके प्रति अच्छे शब्द नहीं कहे और इसके निर्माण पर भगवान का धन्यवाद नहीं दिया उस व्यक्ति का दर्शन या उसकी बातें सुनने तो मैं तालाब पर नहीं जाता। अच्छा होता यदि इसमें तैरनेवाली मछलियों के नाम पर इसपर आनेवाले जगली पक्षियों या चौपायों के नाम पर, इसके किनारों पर उगनेवाले जगली फूलों के नाम पर अथवा किसी वन्य मानव या बच्चे के नाम पर जिसका

जीवन का सूत्र इसके इतिहास के साथ गथा हुआ हो, उसका नाम रख लिया जाता। उसके नाम पर नहीं जो अधिकार के रूप में बस एक अदालती कागज लिखा सकता है जिसे उस जसे ही दिमागवाले किसी पडोसी अथवा विधिवेत्ता ने दिया होगा उसके नाम पर नहीं जो केवल पसे की भाषा म सोचता है जिसकी उपस्थिति मात्र म तट अभिशप्त हो जाता ह जिसने चारो ओर की भूमि को नगा कर डाला है, जो सहष इसके सारे पानी को सुखा सकता है जिसे इसी बात का दुख है कि यह अंग्रेजी घास का खेत या अम्लबदरी का क्षेत्र नहीं है—जिसकी दृष्टि म इस तालाब को प्राप्त करने का कोई लाभ ही नहीं है—जो इसे सुखाकर इसकी तली के कीचड को बेच डाल सकता है। यह सरोवर उसकी मशीन नहीं चला सकता और इसके दर्शन म वह गौरव का अनुभव नहीं करता। मैं उसके श्रम का सम्मान नहीं करता, मैं उसके उस खेत का भी सम्मान नहीं करता जहा की हर वस्तु कीमत रखती है। सम्भव हो सके तो किसान खेत की प्राकृतिक सुषमा को और अपने भगवान को भी ले जाकर बाजार म चढा कर दे और उसम कुछ उठा सके तो उठा ले जो अपने तथाकथित भगवान के पास के लिए बाजार जाता है जिसके खेत म से कोई चीज मुफ्त नहीं मिल सकती जिसके खेत फसल नहीं घास के मदान फल नहीं, पेड फल नहीं बस डालर पैदा करते हैं जो फलो की सुन्दरता से प्रेम नहीं करता जो फलो को तब तक पका हुआ नहीं मानता जब तक वे डालरो मे परिवर्तित न हो जाए। मुझे तो वह गरीबी दो जो सच्चे वभव का उपभोग करती है। मेरी दृष्टि म किसान उतने ही अनुपात म सम्माननीय और रोचक है जितने अनुपात म वह गरीब है गरीब किसान! एक आदर्श फाम वही है जहा घर कूडे कचरे के बीच घर कुकुरमुत्ते की तरह खडा हो मनुष्य घोडा, बल और सुअर के साफ और गन्दे सभी कमरे एक-दूसरे से सटे हो और आदमियो से ठसा ठस भरे हो। फाम चर्बी से सना एक विशाल क्षेत्र होना चाहिए जिसम से खाद दूध और मक्खन की गध एक साथ उठे। कृषि के उच्चस्तर के अतगत जहा लोगो के दिलो और दिमागो की खाद डाली जाए! जसेकि आप गिरजाघर के आगन म आलू उगाना चाहते हो। आदश फाम ऐसा होता है।

नहीं, नहीं, यदि अति प्राकृतिक दृश्य के सर्वोत्तम अंगो के नाम मनुष्यो के नामो पर ही रखने की उमग है तो वे श्रेष्ठतम और योग्यतम पुरुष ही होने चाहिए। हमारे सरोवरो के कम स कम आईकेरियन सागर जसे सच्चे नामो

पर रखे जाने चाहिए। इस सागर के तट मे आज भी एक वीर कृत्य की प्रतिध्वनि उठा करती है।

गूज़ सरोवर छोटा सा है और वह फ्लिण्ट्स सरोवर के मार्ग में पडता है। फेयर हैवन कानकाड नदी का ही एक बढाव है। इसका क्षेत्रफल लगभग सत्तर एकड़ बताया जाता है और यह दक्षिण पश्चिम की ओर एक मील पर है। लगभग चालीस एकड का व्हाइट सरोवर फेयर हैवन से डेढ माल आगे है। ऐसा है मेरा यह झीलों का देश। कानकाड नदी और ये सब मेरे जल स्रोत हैं। दिन और रात वर्ष पर वर्ष जमा भी गल्ला मैं इनके पास ले जाता हू उसे ही ये पीस डालते हैं।

लकड़हारो ने रेल की पटरी ने और मैंने स्वय भी वाल्डेन को तो दूषित कर डाला है, पर यह हमारे इन सरोवरा में सबसे सुदर नही तो सबसे आकर्षक सरोवर है—जगलों की मणि व्हाइट सरोवर। चाहे यह नाम इसके जल की आश्चर्यजनक विशुद्धता के कारण दिया गया हो या इसकी रेत के रग के कारण यह नाम है साधारण और हल्का ही। यह और वाल्डेन इतने समान हैं कि आप कहेगे कि अवश्य ही भूगर्भ में कही ये परस्पर सम्बद्ध हैं। इसका तट भी वैसा ही पथरीला है और इसके जल का रग भी वाल्डेन जैसा ही है। अत्यधिक गर्मी की ऋतु में जब हम जगलो में से इसकी खाडिया पर दृष्टिपात करते हैं उन खाडिया पर जो बहुत गहरी नही हैं और जिनके तल की छाया सतह को रगती रहती है तो इसका पानी धुधले नीले-हरे अथवा मटमैले रग का दीखता है। बहुत वर्षों पहले रेगमाल कागज बनाने के लिए गाडिया भर रेत इकट्ठा करने के लिए मैं वहा जाया करता था। उसके बाद में वहा जाना मैंने बराबर जारी रखा। वहा जाने रहनेवाले एक व्यक्ति ने प्रस्ताव रखा है कि इसका नाम वाइरिड (हरी) झील रख दिया जाय। यदि निम्न घटना को देखें तो इसका नाम शायद पील चीड़वाला सरोवर होना चाहिए। लगभग पद्रह वर्ष पहले तक इसमें कुछ गज आगे गहरे पानी में एक चीड़ का शिखर था सतह से कुछ ऊपर उठा हुआ आप देख सकते थे। यह चीड़ एक विशेष जाति का था जिसे यहा पीला चीड़ कहा जाता है और यह एकदम अलग जाति का नहीं है। कुछ लोगो का अनुमान था कि जब यह तालाब खोदा गया था तब उस जगल का एक पेड़ था जो इस स्थल पर खड़ा था। मुझे पता लगा है कि बहुत पहले सन् १७६२ में कानकार्ड प्रदेश का एक मानचित्रात्मक वर्णन इसी

व एक नागरिक न मासासचुटम की एतिहासिक सस्था के सग्रहा के लिए तयार किया था। वाल्डन और व्हाइट सरोवरा के विषय म बताने के बाद लखक लिखता है जब जल कम हाता है उस समय व्हाइट सरोवर के मध्य म एक वक्ष को देखा जा सकता है। लगता है जहा यह इस समय खडा है वही यह उगा भी था। इसकी जडे सतह के जल से पचास फुट नीचे है। इसका शिखर टूटा हुआ है और उस स्थान पर इसका व्यास चौदह इच है। १८४९ के बसन्त म सडबरी स्थित इस तालाब के निकटतम रहनवाले एक व्यक्ति स मैंने बातचीत की थी। उसने बताया था कि दस या पन्द्रह वष पहले उसीने इस पड को बाहर निकलवा लिया था। जहा तक उसे याद था यह पेड तट म साठ या पचहत्तर गज दूर तीस अथवा चालीस फुट गहरे पानी म खडा था। जाडा के दिन थे और वह दोपहर से पूव बफ निकलवा रहा था। तभी उसने निश्चय किया कि पडासिया की सहायता से तीसरे पहर इस प्राचीन पीले चीड के पड का बाहर निकलवा लिया जाए। उसने बफ को काटकर किनारे तक एक माग बनाया और बलो की सहायता स उसे ऊपर खीचकर उस माग म से बाहर निकाल लिया। अभी वह उस पूरी तरह निकाल भी न पाया था कि यह देखकर उसे आश्चय हुआ कि पेड पानी म उल्टा खड़ा था। तना ऊपर था और शाखाओ के ठठ नीचे। ऊपर का अन्तिम भाग रेतीली तली म गहरा धसा हुआ था। पड तने पर लगभग एक फुट के व्यास का था। उसने आशा की थी कि इसम स बहुत बल्लिया लम्बी चीर जा सकेंगी। लेकिन यह इतना गला हुआ निकला कि केवल जलाने के काम ही आ सकता था। उसका कुछ भाग तब तक भी उसके सायबान म पडा था। उसके तने पर कुल्हाडी के और कठ फोडवा की चाचो के चिह्न थ। उसका विचार था कि तट पर यह वक्ष उखडा हुआ पडा होगा। अन्त म आधी के जोर म यह तालाब म जा गिरा होगा। इसका ऊपर का सिरा जब पानी म फूलकर भारी हो गया होगा तब भी तना सूखा और हल्का रहा होगा। तभी यह सिर के बल नीचे बठ गया होगा। उसके पिता जो अस्सी वष का था यह स्मरण नही कर सका कि कब यह वक्ष वहा नही था। कुछ भारी और बडे लकडी के कुन्दे अब भी तली म पडे देखे जा सकते हैं। सतह की लहरो के कारण य एस प्रतीत होत हैं जसे कि बहुत बड बड साप दौड रह हो।

इस सरोवर को किसी नाव न बहुत कम दूषित किया है क्योकि मछियारे के लिए यहा बहुत कम आकषण है। सफेद लिली को उगाने के लिए कीचड की

जरूरत होती है इसके अथवा साधारण मीठे पानी के बदले तट के साथ-साथ पथरीली तली में नीला पंकज ही यहाँ के शुद्ध पानी में उगता है। जून के महीने में हमिंग बर्ड इनपर आती हैं। इनके नीलाभ पत्तों और इनके फूलों दोनों का ही रंग और विशेषकर इनके प्रतिबिम्ब का रंग मेघनील जल में अनोखा साम्य रखता है। ये स्वच्छ सरोवर और वाल्डेन प्रकाश की झीलें हैं। ये विशाल बिल्लौरों की तरह धरातल पर जड़े हैं। यदि इन्हें स्थायी रूप में जमा दिया जाए और ये इतने छोटे हो सकें कि पकड़े जा सकें तो निश्चय ही गुलाम इन्हें हीरे समझकर सम्राटों के मुकुटों के लिए ले जाएँ। लेकिन ये तरल हैं और विशाल हैं और हमारी सन्तानों के लिए ये सदा-सदा के लिए सुरक्षित हैं। इसीलिए तो हम इनका अनादर करते हैं और किसी कोहिनूर के पीछे भागते हैं। ये इतने पवित्र हैं कि बाजार में इनका मूल्य नहीं लगाया जा सकता। कूड़ा-कचरा इनमें बिल्कुल नहीं है। हमारे जीवन से भी कितने अधिक सुन्दर ये हैं और हमारे चरित्रों से भी कितने अधिक पारदर्शी हैं। किसान के बाग के सामने की तलैया की अपेक्षा जिसमें बत्तखें तैरती हैं ये सरोवर कितने अधिक साफ हैं। यहाँ साफ जंगली बत्तखें मिलती हैं। कोई मानव ऐसा नहीं है जो प्रकृति के सौन्दर्य का आदर कर सके। कलंगियाँ लगाए पक्षी और उनकी स्वर लहरियाँ फूलों के साथ संगत और एकस्वर हैं लेकिन कौनसा युवक अथवा युवती है जो प्रकृति की प्रचुर वन्य सुंदरता की तुलना में ठहर सके। प्रकृति नितान्त अकेली ही पनपती है नगरों में रहनेवाले लोगों से बहुत दूर। स्वर्ग की बातें करके आप धरती का अपमान करते हैं।

वेकर फार्म

कभी कभी मैं घूमता घूमता चीड व कुजा की तरफ निकल जाता। लहराती टहनियो म सुसज्जित य चीड प्रकाश मे ओत प्रोत एमे लगते थे जसेकि ये मदिरा के शिखर हो अथवा समुद्र पर कोई जहाजी बडा खडा हो। ये इतने कोमल हरे और छायादार थ कि ड्रुइडम¹ न बलूत के वक्षा को छोडकर इनम पूजन करना आरम्भ कर दिया होता। फिलण्टस सरोवर म परे दियार के जगलो तक भी मै पहुच जाता जहा श्वत नील वरिया स ढके पड ऊचे स ऊचे उठते जाते थे और वल्हाल के समक्ष खडे होने के उपयुक्त थे और जहा धूपचन्दन की झाडिया फलो स भर गजरो की तरह धरती को ढक देती हो। अथवा उन दलदली प्रदशो की तरफ मैं चला जाता जहा सफेद झाऊ क पडो म उस्निया जाति की शिलावल्का वन्दनवारो की तरह लटकी हो और दलदल के दवताओ के लिए गोलमजो का काम दनवाले कुकुरमुत्ते धरती को ढके हो और तितलिया अथवा सीपो की तरह वानस्पतिक घाघ सुदर खुम्बिया ठढो को सुसज्जित किए हों जहा स्वाम्प पिंक और डागवुड उग हो लाल आल्डरबेरी पिद्दियो की आखो की तरह चमक रही हो जहा बक्सवक वायू मे आई सख्त स सख्त लकडी म नालिया बना देता है और उस कुचल डालता है जहा जगली हालीबरिया की सुन्दरता को दखकर दशक अपना घर भूल जाता है और जहा कितने ही अन्य अनाम और वर्जित जगली फल जो मर्त्यों क लिए आस्वाद्य नहीं हो सकते उस चकाचौंध कर दत हैं और वह उनकी आर आकर्षित हो उठता है। किसी विद्वान क पास जाने के बदल मैं इन विशेष प्रकार क वक्षो को दखने चला जाता हू जो पास-पडोस म दुलभ हैं, जो दूर किसी चरागाह म बीच या किसी दलदल या जगल क मध्य अथवा किसी पहाडी की चोटी पर हो खड मिलते हैं उदाहरण क लिए काला भोजप र जिसक दो फुट व्यासवाले वृक्ष

¹ प्राचीन क[illegible] जाति के पुरोहित

बढिया नमून हमारे यहा हैं इसका भाई चीता भोज, जो ढीली सुनहरी पादाक पहनता है और जिसम म काले भोज की सी ही सुगध आती है, करज, जिसका सुन्दरतापूवक लिखन से चिनिन हर प्रकार से पूण लगा दडा ही साफ होता है। इसके कुछ बिखरे छितरे नमूनों के सिवाय अच्छे ऊचे पटा के सिफ एक छोटे-स झुड को हा मैं जानता हू जो इस प्रदेश म बच रहा है और जिसके बारे मे यह कहा जाता है कि इन्हें उन कबूतरों ने बोया था जो एक बार पाम के ही 'बीच-नटा के लोभ म फस गए थे। इसकी लकडी को तोडा जाए तो इसके बीच का चानी की तरह चमकनेवाला अश दखन ही योग्य होता है। इसके अतिरिक्त बाम, हानबीम क्टिस आक्साइेन्लिस अथवा कृत्रिम देवदार जिसका केवल एक ही अच्छा उगा हुआ पड हमारे यहा है। चीडक कुछ अधिक ऊचे वग, एक शिंगल का पड अथवा साधारण म अधिक बढिया विषगजर जो जगल के बीच बौद्ध पगोडे की तरह खडा है और एस कितन ही अन्य वक्षा के नाम मैं ल सकता हू। सर्दी-गर्मी इन्हीं बढिया के दशन के लिए मैं पहुचा करता था।

एक बार एसा हुआ कि मैं एक इन्द्रधनुष के ठीक नीचे खडा था। यह इन्द्र धनुष वायुमण्डल की निचली पत म वतमान था और चारों ओर की घास और पत्ता का ऐसे रग रगा था कि य सब मुझे ऐसे चकाचौंध किए डालते थे जसेकि मैं रगीन शीशा म से देख रहा होऊ। इन्द्रधनुष के प्रकाश की एक झील सी बन गई थी और कुछ देर के लिए मैं उसम पडी डालफिन मछली बन गया था। यदि यह प्रकाश अधिक देर तक रहता तो शायद मेरे कार्यों और मेरे जीवन को भी रग देता। जब मैं रेल की पटरी के साथ साथ बनी पगडडी पर चलता था तो अपनी छाया के चारों ओर एक ज्योति-वश देखकर आश्चय म पड जाता था। यह अपने विशेष व्यक्ति होने का भ्रम मुझमे पदा करता था। एक आदमी ने घोषणा की थी कि जयारलडवाला की छाया के चारों ओर ऐसा ज्योतिवत्त नहीं बनता। ऐसा तो यहा के निवासियों और उनमें से भी कुछ विशिष्ट लोगा के साथ ही होता है। बनवनुतो सेलिनी अपने सस्मरणो म लिखता है कि जब वह सेन्ट ऐजेलो के दुग म यन्दी था तब उसे एक भयानक सपना दीखा अथवा किसीन उसे दशन दिए और उसके बाद म प्रात और साय उसके सिर की छाया के चारों ओर एक चमत्कार ज्योति वत्त पदा होने लगा। वह इतना म हो या प्रात म ऐसा निस्सन्देह होता और जब घास ओस म गीली होती तो यह वत्त विशेष रूप म स्पष्ट दीख पडता।

सम्भवत वही दृश्य है जिसका मैंने ऊपर जिक्र किया है जो प्रभात म विशेषकर दीख पडता है। ऐसा यद्यपि स्थायी रूप स हुआ करता है पर यह साधारणतया दीख नही पडता। इसलिए सेलिनी जस व्यक्ति की चपल कल्पना म इसका एक अधविश्वास बन जाना बहुत स्वाभाविक था। इसके अतिरिक्त वह कहता है कि इस उसने बहुत ही थोडे लोगा को दिखाया है। लेकिन क्या व लोग वास्तव म ही प्रतिष्ठित नही है जो इस बात की चेतना रखत है कि उन्हे जरा भी प्रतिष्ठा मिली है।

एक दिन तीसरे पहर जगल स होकर म मछलिया पकडने के लिए फेयर हैवन की ओर चल दिया। म साग सब्जी के अपन घटते हुए भण्डार को बढाना चाहता था। मेरा माग मुझे बकर फाम के साथ जुड प्लजेण्ट मीडो म से ले गया। इस स्थान के बारे म एक कवि न लिखा है

> आपका प्रवश एक सुहाने खेत म होना है
> जहा फला व काई सन पड खड हैं
> एक ताजा बढिया साता है
> जिसम मस्कवश बहती है
> और पारे जसी चचल टाउट
> झपटती फिरती है।'

वाल्डेन जाने म पहले मने यही रहने की सोची थी। मने यहा सब तोड न ह साने को लोभा और मस्कश और टाउट मछलिया को डराया था। एक तीसरे पहर की बात है —उस प्रहर की जो बहुत लम्बा प्रतीत हुआ करता है जिसम बहुत-सी घटनाए घटने की सम्भावना रहती है जो हमारे प्राकृतिक जीवन का एक बहुत बडा भाग होता है। जब म चला था तो उसका आधा बीत चुका था। अचानक माग म बौछार पडने लगी और मुझ एक चीड के पड क नीचे आध घटे के लिए खडा हो जाना पडा। मने टहनिया को अपने सिर पर ढक लिया और अपना रूमाल आड किया और यद्यपि दर बाद जब पानी म खडी मेरी आधी ऊचाई जितनी लम्बी विकरन घास पर मेरी दृष्टि गई तभी अचानक जोर क बादल घिर आए और बिजली इतने जोरा स कडकने लगी कि म उसकी आवाज सुनने के सिवाय

और कुछ भी न कर सका। मन साँचा शकु के आकार की बिजली की इस चमक के द्वारा एक गरीब निःशस्त्र मल्यार का उखाड़कर देवताओं का सचमुच ही भय का अनुभव हुआ होगा। बहुत पास ही एक झोपड़ी थी जो सड़क से लगभग आधा मील पर थी, लेकिन तालाब के बहुत निकट थी और बहुत समय से खाली पड़ी थी। मैं उसी ओर भागा।

'अपनी आयु के पूरे दिनों में
यहाँ कवि ने बनाया था
एक छोटा सा घर
जो अब विनाश की ओर बढ़ रहा है।

इस प्रकार की एक कहानी प्रसिद्ध है। लेकिन अब उसमें जानफील्ड नाम का एक आयरलैंडवासी अपने कई बच्चों के साथ रहता था। सबसे बड़ा चौड़े चेहरेवाला लड़का था जो काम में अपने पिता की सहायता करता था और अब उसके साथ साथ वर्षा से बचने के लिए कीचड़ में से भागा चला आ रहा था। सबसे छोटा बच्चा किसी आदिवासी के से झुर्रियां पड़े शंकु के आकार के चेहरेवाला था। वह अपने पिता के घुटने पर ऐसे बैठता था जैसे कि राजाओं के महल में बैठा हो और गन्दगी और भूख के बीच में बने अपने घर में से आगन्तुक पर बड़ी उत्कण्ठापूर्ण दृष्टि डालता था। शिशु होने का लाभ उसे प्राप्त था। जानफील्ड का गरीब भूखा मगर बच्चा होने के कारण वह एक उच्चवंश की अन्तिम कड़ी या आशा संसार की आशा और उसका दत्तगी नक्षत्र था। इसके सिवाय शायद वह और कुछ नहीं जानता था। बाहर बड़े जोर की वर्षा होती रही और कड़क बढ़ती रही और हम सब घर के उस भाग के नीचे बैठे रहे जो सबसे कम चूता था। पहले भी बहुत बार मैं वहाँ बैठा था। यह परिवार जिस जहाज से अमरीका आया होगा उससे बहुत पहले भी कई पहले में मैं वहाँ बैठा रहा हूँ। जानफील्ड एक ईमानदार परिश्रमी परन्तु साधनहीन सीधा सादा आदमी था। उसकी पत्नी भी एक वीर स्त्री थी और अपने ऊँचे चूल्हे पर लगातार कितने ही खाने पका सकती थी। अपना चिकना गोल चेहरा और खुली छाती लिए और एक हाथ में झाड़ू का स्थायी रूप से थाम वह यह आशा करती थी कि एक दिन उनकी भी दशा सम्भल जायगी। लेकिन ऐसा कोई लक्षण वहाँ था नहीं दीखते थे। मुर्गियाँ भी वर्षा से बचने के लिए

यहां आश्रय न लिया था और वे परिवार के सदस्यों की तरह ही कमरे में चारों ओर अकड़ती घूम रही थीं। मैं सोचता हूं वे इतनी मानववत बन गई थीं कि उन्हें भूना नहीं जा सकता था। वे खड़ी होकर मेरी गायों में भागती थीं और मेरे जूते पर अपनी चोंच चलाती थीं। इसी बीच गृहस्वामी ने मुझे अपनी कहानी बता डाली कि किस प्रकार वह एक पड़ोसी किसान के लिए कठोर परिश्रम करके एक दलदली भूमि को ठीक कर रहा है और वह एक चरागाह को फावड़े से खोद रहा है। इसके लिए उसे एक एकड़ पर दस डालर व उस भूमि का एक वर्ष तक इस्तेमाल करने का अधिकार मिलेगा और आवश्यक खाद मिलेगी। उसका चौड़े मुंहवाला छोटा सा लड़का प्रसन्नतापूर्वक उसके साथ काम कर रहा है और नहीं जानता कि उसके पिता ने कितना गलत सौदा कर लिया है। मैंने अपना अनुभव बताकर उसकी मदद करनी चाही। मैंने उसे बताया तुम मेरे निकटतम पड़ोसियों में से एक हो। मैं जो यहां मछलियां पकड़ने आया हूं और एक आवारा जैसा दीख पड़ता हूं तुम्हारी ही तरह अपना जीवन बसर कर रहा हूं। मैं एक सुघड़ हल्के और साफ घर में रहता हूं। उसकी कीमत तुम्हारे इस खंडहर के वार्षिक किराये से कठिनाई से ही अधिक होगी। चाहो तो तुम भी एक या दो महीने के भीतर अपना महल स्वयं बनाकर खड़ा कर सकते हो। मैं चाय या काफी या मक्खन या दूध या ताजा मांस नहीं खाता और मुझे इन सबको पाने के लिए श्रम नहीं करना पड़ता। फिर जब मैं कठोर श्रम नहीं करता तो ज्यादा खाना भी नहीं। अपने खाने पर मुझे बहुत ही कम व्यय करना पड़ता है। लेकिन क्योंकि तुमने चाय काफी मक्खन दूध और मांस का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया है तुम्हें इनकी कीमत चुकाने के लिए अधिक कठोर परिश्रम करना पड़ता है और इस प्रकार हुई शारीरिक क्षीणता को पूरा करने के लिए तुम्हें खाना भी ज्यादा पड़ता है। इस प्रकार यह मामला जितना लम्बा है उतना ही चौड़ा भी है। असल में यह लम्बे से चौड़ा ही अधिक है क्योंकि तुम असन्तुष्ट हो और इस सौदे में तुमने अपना जीवन नष्ट कर डाला है। फिर भी अमरीका आने में तुमने लाभ देखा क्योंकि यहां तुम प्रतिदिन चाय काफी और मांस पा सकते हो। लेकिन सच्चा अमरीका वही है जहां तुम ऐसी जीवन-पद्धति अपनाने में स्वतन्त्र हो जिसमें इन सबके बिना भी तुम अपना काम चला सको। जहां राज्य तुम्हें गुलामी युद्ध और अन्य अनावश्यक खर्चों का भार उठाने के लिए विवश करने का प्रयास नहीं करता। क्योंकि ये सब बातें

उपयोग वस्तुओं के प्रयोग का ही प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष परिणाम हैं।—मैंने जान कर उससे सभी बातें कीं मानो वह दार्शनिक हो अथवा दार्शनिक बनना चाहता हो। यदि मानव के आत्मशुद्धि का प्रयास आरम्भ करने के फलस्वरूप धरती के समस्त चरागाहों को जंगली स्थिति में छोड़ देना पड़े तब भी मुझे प्रसन्नता ही होगी। मनुष्य अपनी संस्कृति के लिए क्या सर्वोत्तम है यह जानने के लिए मानव को इतिहास पढ़ने की ज़रूरत नहीं है। पर आयरलैण्डवासियों की संस्कृति के लिए आवश्यक है कि वे एक प्रकार का नैतिक फावड़ा लेकर बढ़ें। मैंने उसे बताया कि चूंकि तुम इतना कठोर श्रम करते हो इसलिए तुम्हें भारी जूते और मजबूत कपड़े चाहिए और वे सब जल्दी ही गन्दे हो जाएंगे और फट जाएंगे। लेकिन मैं हल्के जूते और बारीक कपड़े पहनता हूँ जिनकी कीमत आधी भी नहीं पड़ती। चाहे तुम सोचो कि मैं एक बड़े आदमी के से कपड़े पहने हूँ पर बात वैसी है नहीं और मैं एक या दो घण्टों में मनोरंजन के तौर पर बिना श्रम के इतनी मछलियां पकड़ सकता हूँ जो मेरे लिए दो दिन तक काफी हों और यदि मैं उन्हें बेचूं तो एक सप्ताह के गुज़ारे का पैसा वे मुझे दे जाएं। यदि तुम और तुम्हारा परिवार सादगी से रह सकें तो सब मनोरंजन के लिए ही गर्मियों में हकलबेरियां तोड़ने जा सकते हैं।—जॉन ने आह भरी और उसकी पत्नी कूल्हे पर हाथ रखे घूरती रही। मुझे लगा कि दोनों सोच रहे हैं कि क्या अभी उनके पास यह सब करने के लिए पर्याप्त पूंजी और पर्याप्त हिसाबी बुद्धि हो सकेगी। उनके लिए तो ऐसा करना अनुमान से ही गणना करके चलने जैसा था और वे साथ-साथ समझ नहीं पा रहे थे कि इस तरीके से वे कैसे किनारे लग पाएंगे। इसलिए मेरा अनुमान है कि वे अभी तक अपने ही ढंग पर साहसपूर्वक जीवन जी रहे हैं और उसका पूरा शक्ति लगाकर मुकाबला भी कर रहे हैं। पर उनके पास जीवन के भारी भरकम स्तम्भों में प्रवेश-योग्य मार्ग बना लेने और उन्हें पूरी तरह उखाड़ फेंकने की युक्ति नहीं है। वे जीवन को इस हाथ-दो-हाथ से ग्रहण करते हैं जैसे कि कोई छेनी को पकड़े। वे बहुत ही हानिप्रद ढंग से जूझते हैं। दुःख की बात है कि जॉनफील्ड बिना गणना के जूझ रहा है और असफल हो रहा है।

मैंने उससे पूछा "क्या तुम कभी मछलियां पकड़ते हो?" "हां हां। जब तब फुरसत में कभी मछलियां पकड़ लेता हूँ। बढ़िया पर्च मछलियां।" "तुम चारा क्या प्रयोग करते हो?" "मैं कीड़ों से शाइनर पकड़ता हूँ और उन्हें लगाकर पर्च

फसाता हूं। पर आशापूर्ण चमकते हुए चहरे से उसकी पत्नी बोल उठी, "जान अच्छा हो तुम अब आओ। लकिन जान असमंजस में रहा।

बौछारें रुक गई थी। पूर्व के जंगला पर चमक आया इंद्रधनुष सुहानी सन्ध्या की आशा दिला रहा था। इसलिए मैं चल दिया। जब मैं बाहर निकल आया तो मैंने पीने को पानी मांगा। उस घर को पूरा देख लेने के लिए मैं कुए की तली भी देख लेना चाहता था। लकिन वहा का तल छिछला था और उसमें बालू और पत्थर थे। रस्सी टूट चुकी थी और डोल अप्राप्य था। इस बीच चूल्हे का एक बर्तन चुना गया पानी को साफ किया गया और काफी सलाह मशविरे और विलम्ब के बाद जल एक ही आदमी को दिया गया। ठंडा करने के लिए और मिट्टी की तली में बिठा देने के लिए पानी को कुछ देर रखा नहीं जा सकता था। मैंने अपनी आखें बन्द की कुशलतापूर्वक मतलब से निचले पानी को खोजकर मैंने मिट्टी को बचाया और आतिथ्य के उस जल की जितनी लम्बी घूंट मैं खींच सकता था मैंने खींची। ऐसे मामले में मैं नकचढ़ा जैसा व्यवहार नहीं करता।

वर्षा के बाद जब मैं उस आइरिश के घर से चला और फिर से मछलियां पकड़ने की जल्दी में परित्यक्त चरागाहों कीचड भरे गढो और दलदलों उजाड़ और जंगली स्थानों में से मार्ग बनाता हुआ सरोवर की ओर तेजी में बढ़ा तो एक क्षण के लिए मैं सोच उठा कि मेरे लिए जिस स्कूल और कालिज भेजा गया है यह सब धंधा कितना तुच्छ है। लकिन मैं पहाड़ी के ढलान पर रक्ताभ पश्चिम की ओर दौड़ पड़ा। इन्द्रधनुष मेरे कन्धे पर था और स्वच्छ हवा में तैरकर आती हलकी टन टन की आवाज पता नहीं कहा से आकर मेरे कानों में भिन गई। मेरा प्रेरणा मुझसे कह उठी— दिनों दिन दूर-दूर तक जाकर मछलियां पकड़ो और शिकार करो। और अधिक दूर जाओ और निःशंक भाव से चश्मों के किनारे और घरों के पास विश्राम लो। अपने यौवन में अपने स्रष्टा को याद रखो। चिन्ताओं से मुक्त होकर प्रभात में पहले उठो और साहस के काम करो। दोपहर तक तुम दूसरी झीलों के तट पर पहुंच जाओ और जहां भी रात पड़ जाए उसे ही अपना घर समझ लो। इनसे बड़े मैदान नहीं हैं और न यहां खेले जा सकने हैं उनसे उत्तम खेल नहीं हैं। अपनी प्रकृति के अनुकूल इन दलदलों और झाड़ियों की तरह जो कभी अंग्रेजी बाग नहीं बन सकेगा उगो और बढ़ो। बिजलियों को कड़कने दो। यदि वे किसान की फसलों को हानि पहुंचाती हैं तो चिन्ता मत करो। तुम्हारे लिए इसका यह सन्देश तो

नहीं है। जब लोग गाड़ियों और ठेलों की खोज में भागते हैं तुम बादलों के साथ आश्रय लो। जीवन निर्वाह तुम्हारा व्यवसाय नहीं, तुम्हारा मनोरंजन बने। भूमि का उपभोग करो पर उसके स्वामी मत बनो। आस्था और उद्यम की कमी के कारण मनुष्य खरीदते, बेचते और दासों की तरह जीवन निर्वाह करते वहीं के वहीं रह जाते हैं।

'ओ बेकर फार्म!
प्राकृतिक दृश्य, जिसका सर्वोत्तम अंश है
थोड़ी सी भोली धूप!
आमोद प्रमोद के लिए कोई भी तुम्हारे
रेल-खादन में मस्त चरागाह की ओर नहीं दौड़ता।
तुम किसी से बहस नहीं करते
प्रश्नों से कभी घबराते नहीं
मोटी मोटी सदर की गबरडीन पहने
तुम प्रथम क्षण जितने ही अब भी मग्न हो।
प्रेम करनेवालो आओ
घृणा करनेवालो आओ
पवित्र भाव के शिशु
और राज्य के गाई-फाक्स आओ
अपने षड्यन्त्रों को
पेड़ की शाखाओं से लटका दो!

रात पड़ने पर बराबर के खेत में अथवा गली में जहाँ घर की प्रतिध्वनियाँ मीलों का पीछा करती रहती हैं वे हम स्वयं घर लौट आते हैं। उनका जीवन अटल रहता है क्योंकि वे अपने ही निःश्वासों को बार-बार अपने फेफड़ों में भरते रहते हैं। प्रातः-सायं उनकी छायाएँ उनके दैनिक कदमों से आगे तक बढ़ जाती हैं। हमें बहुत दूर से साहसपूर्ण कार्य करके, खतरे झेलकर, खोजयात्राओं से नया अनुभव और नये संस्कार लेकर प्रतिदिन घर के पास आना चाहिए।

मेरे तालाब तक पहुँचने से पहले ही एक नवीन प्रेरणा ने जानफील्ड का मन बदल दिया था। उसने सन्ध्या से पहले ही खोदने का मजदूरी का काम छोड़ दिया

था और वह बाहर निकल आया था। लेकिन वह बचारा दो चार ही मछलिया पकड पाया जबकि मैं भरपूर पकड रहा था। वह कहन लगा कि यह उसका भाग्य है। लेकिन जब नाव म हमन परस्पर जगह बदल ली तो शायद भाग्य न भी जगह बदल ली। बचारा जानफील्ड ! मेरा विश्वास है कि वह इस लख को नहीं पढेगा नहा तो वह इमस लाभ उठा पाता। इस आदिम अवस्थाआवाल नय देश म किसी पुरान हेय तरीक म जीवन जीन की सोचना पच मछलिया को शानदार स पकडना अन्याय शारिक है भा ही कभी-कभी यह बढिया चारा सिद्ध होता हो। उसका भाग्य उसके अपन हाथ म है फिर भी वह गरीब है। गरीब रहन के लिए ही वह पैदा हुआ है। आयरलड की गरीबी या गरीब जिन्दगी को अपना 'आदम की दादी' को और दलदली जीवन-पद्धति का उसन उत्तराधिकार म पाया है। वह या उसके बच्च इस दुनिया म तब तक उन्नति नहीं कर सकत जब तक उनके चौडे पजावाल दलदलो म चलन क उपयुक्त पगा का टलारिया[१] चप्पलें नही मिल जाती।

---

१ दलदल पार हा का पतवार चप्पलें

उच्चतर नियम

जब मैं पकड़ी हुई मछलियाँ लिए बाँस को अपने पीछे घिसकाता हुआ जंगल में से होकर घर लौट रहा था तब अंधेरा हो चुका था। अचानक एक हिम-मूषक को मैंने सामने से बचकर भागते देखा। उसे देखते ही जंगली उल्लास की एक अजीब-सी थिरक मैंने अपने अन्दर महसूस की और उसे पकड़कर कच्चा चबा जाने की तीव्र लालसा मुझमें उद्दीप्त हो उठी। यह बात नहीं कि मैं उस समय भूखा था। मुझमें तो वह वनलालसा ही जोर मार रही थी जिसका कि वह हिममूषक स्वयं प्रतिनिधि था। जिन दिनों मैं सरोवर पर रहा करता था उन दिनों एक-दो बार बड़े अजीब उन्माद के साथ अधभूखे शिकारी कुत्ते की तरह किसी भी ऐसे पशु की खोज में जिसे मैं कच्चा चबा डालूँ मैं जंगल को नाप गया हूँ। मांस का कोई भी टुकड़ा उस समय मेरे लिए तिरस्कार्य न होता। जंगली-पन के भयानक से भयानक दृश्य हमारे इतने परिचित हो चुके हैं कि हम उन्हें गिनती में लेते ही नहीं। मैंने अपने में सभी लोगों की तरह एक ओर तो एक उच्चतर अथवा तथाकथित आध्यात्मिक जीवन के प्रति झुकाव पाया है और दूसरी ओर एक आदिम और वन्य जीवन की लालसा भी मुझे अपने में दीख पड़ी है। मैं दोनों का ही समान रूप से सम्मान करता हूँ। मैं जंगली जीवन को संस्कृत जीवन से कम प्यार नहीं करता। मछली पकड़ने में जो वन्यता और दुस्साहसिकता है वे मुझे अभी तक इसकी ओर प्रेरित करती हैं। कभी-कभी मुझे अच्छा लगता है कि मैं जीवन को हिंस्र दृष्टि से देखूँ और अपने दिन का अधिक भाग जानवरों की तरह बिताऊँ। प्रकृति से मेरे इस निकटतम परिचय का श्रेय शायद बचपन में ही मेरे मछली पकड़ने और शिकार खेलने के शौक को है। ऐसे शौक बहुत आरम्भ में ही प्रकृति से हमारा परिचय करा देते हैं उसमें हमें रमा भी देते हैं नहीं तो इस छोटी आयु में हमारी उससे बहुत ही कम जान-पहचान हो पाए। मछियारे शिकारी

लकड़हारे और अन्य लोग जो मैदानों और जंगलों में ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं और एक अनोखे ढंग से स्वयं भी प्रकृति के ही अंग बन जाते हैं अपने काम धंधों के मध्यान्तरों में टटकर प्रकृति निरीक्षण करते हैं। इसके लिए उनकी मानसिक स्थिति प्रकृति के पास माशाभ पहुँचनेवाले दार्शनिकों अथवा कवियों की अपेक्षा अधिक अनुकूल होती है। प्रकृति उनके सामने स्वयं का ख्याल देने में झिझकती नहीं। प्रेरी के मैदानों का यात्री स्वभावतः ही एक शिकारी मिसौरी और कोलम्बिया नदियों के उद्गम स्थलों का यात्री शिकार का जाल फैलानेवाला और सेंट मेरी के झरनों का घुमक्कड़ एक मछियारा होता है। जो व्यक्ति सिर्फ यात्री है वह बासी और अधूरी चीजें सीखता है और उसे प्रामाणिक नहीं माना जा सकता। जब वैज्ञानिक विवरणों के माध्यम से उन लोगों का व्यावहारिक अथवा अन्तःप्रेरणा से उपलब्ध ज्ञान हम तक पहुँचता है तब हम उसमें अत्यधिक रुचि रखते हैं क्योंकि वही तो सच्ची मानवता है अथवा वही मानव के अनुभवों का सच्चा लेखा है।

वे लोग गलती पर हैं जो यह कहते हैं कि एक अमरीकी के पास मनोरंजन के साधन बहुत कम हैं क्योंकि उसे सार्वजनिक छुट्टियाँ अधिक नहीं मिलतीं और अमरीका के बड़े और बच्चे इंग्लैंडवालों जितने खेल भी नहीं खेलते। कारण यह है कि यहाँ मछली मारने और शिकार खेलने जैसे आदिम किन्तु निःसंग मनोरंजनों का स्थान अन्य किस्म के खेल अभी तक नहीं ले सके हैं। मेरे समवयस्कों में न्यू इंग्लैंड का दस और चौदह के बीच का हर लड़का चिड़िया फँसाने का जाल अपने पास रखता था। शिकार करने और मछली मारने के उसके क्षेत्र किसी अंग्रेजी सामन्त के शिकारक्षेत्रों की तरह सीमित और सुरक्षित नहीं होते थे। वस्तुतः वे क्षेत्र से भी वे अधिक असीम होते थे। तब क्या आश्चर्य कि वह खेल के मैदान में अधिक नहीं ठहर पाता। लेकिन अब परिवर्तन आने लगा है जिसका कारण मानवता की वृद्धि नहीं शिकार के जानवरों की निरन्तर बढ़ती कमी है। शिकारी ही शायद शिकार किये जानेवाले पशुओं का सबसे बड़ा मित्र होता है। मानवतावादी समाज भी इस बात का अपवाद नहीं है।

भोजन में विविधता लाने के लिए भी कभी-कभी मैं तालाब से मछलियाँ पकड़ा करता था। सच मैं दरअसल उसी किस्म की आवश्यकता से प्रेरित होकर करता था जिससे परिचालित होकर आदिम मछियारों ने ऐसा किया होगा। इस

वृत्ति के विरुद्ध कितनी भी मानवतावादी दलीलें में दूँ, वे सब कृत्रिम हैं। उनका सम्बन्ध मेरी भावनाओं से इतना नहीं जितना मेरी विचारणा से है। इस समय यह सब मैं सिर्फ मछली पकड़ने के बारे में ही कह रहा हूँ। बहुत पहले से ही चिड़ीमारी के सम्बन्ध में मेरे विचार इससे भिन्न रहे हैं और वन निवास के लिए जाने से पहले ही मैंने अपनी बन्दूक बेच दी थी। यह नहीं कि मैं दूसरों की अपेक्षा कम मानवीय हूँ बल्कि यह कि मछली पकड़ने का अपनी भावनाओं पर विशेष प्रभाव पड़ता मैंने कभी नहीं देखा। मछलियों या कीड़ों के प्रति मेरे मन में कभी भी दया का भाव नहीं उठा। यह मेरी आदत बन गई थी। जहाँ तक चिड़ीमारी का सम्बन्ध है, विगत वर्षों में बन्दूक मैं इसीलिए रखता था क्योंकि मैं पक्षी विज्ञान का अध्ययन करना चाहता था और नये अथवा दुर्लभ पक्षियों की खोज में रहता था। पर मैं स्वीकार करता हूँ कि अब मैं यह सोचने पर विवश हो गया हूँ कि पक्षी विज्ञान के अध्ययन का इससे भी बढ़िया तरीका मौजूद है। वह है पक्षियों की आदतों का बहुत अधिक निकट से निरीक्षण करना। सम्भवतः मात्र इसी कारणवश मैं बन्दूक छोड़ देने पर राजी हो गया हूँ। मानवतावादी आधार पर किए गए आक्षेपों को मैं पुष्ट नहीं मानता। मुझे इस बात में सन्देह है कि इन शिकारों का स्थान इतने ही लाभप्रद खेल कभी भी ले सके हैं। इसीलिए जब भी मेरे मित्रों ने मुझसे सलाह ली है कि वे अपने लड़कों को शिकार खेलने दें या नहीं, तो मैंने 'हाँ' ही कहा है। मुझे याद आया है कि यह मेरी शिक्षा का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा रहा है कि उन्हें शिकारी बनाओ। पहले-पहल खिलाड़ी ही सही, पर सम्भव हो तो अन्त में उन्हें ऐसे शक्तिशाली शिकारी बनने दो कि इस या किसी भी जगत में प्राप्त बड़े से बड़े शिकार को भी वे अपने लिए काफी न मानें। वे मानवों के शिकारी और मछियार भी बनें। यहाँ तक तो मैं कवि चासर की ननं से पूरी तरह सहमत हूँ—

> जो कहते हैं कि शिकारी धार्मिक जन नहीं होते
> उन्होंने कोई बहुत काटे की बात नहीं कही है।

व्यक्ति के और जाति के भी इतिहास में एक युग आता है, जब 'अल्गानक्विनों'[1] की भाषा में शिकारी ही 'सर्वोत्तम जन' होते हैं। जिस लड़के ने बन्दूक को चलाना

---

1 अमरीका की एक शक्तिशाली आदिवासी जाति

कभी दबाया ही नहा उसपर तरम खाने के सिवाय और क्या किया जा सकता है! यह अधिक मानवीय नहा बन गया है। उसकी शिक्षा की दुखद उपेक्षा की गई है। मेरा यह उत्तर उन युवकों को दृष्टि म रखकर ही है जो शिकार के इस उद्यम मे जुटे हैं। मेरा विश्वास है कि वे शीघ्र ही उसम ऊपर उठ जाएगे। लडकपन की विचारशून्य आयु के पार पहुचकर कोई भी मानवीय व्यक्ति उस प्राणी को जो उस जितनी ही अवधि तक जीने का अधिकारी है अविचारपूवक नहीं मारेगा। खरगोश भी जीवन के छोर पर पहुचकर बच्चे की तरह ही चीखता है। माताओ! मैं आपको चेतावनी देता हू कि मेरी सहानुभूति सामान्य मानवतावादी विवेक-बुद्धि का अनुसरण सदा ही नहीं करती।

एक युवक का वन के और अपने व्यक्तित्व के सबस मौलिक अश के साथ प्रथम परिचय इसी प्रकार होता है। वह पहल-पहल एक शिकारी या मछियारे के रूप म ही वहा पहुचता है। यदि उसम एक अधिक अच्छे जीवन के बीज होते हैं तो अन्त म वह अपने समुचित लक्ष्य को पहचान लेता है। शायद वह कवि या प्रकृतिवादी बन जाता है और बन्दूक और काट को पीछे छोड जाता है। अधिकाश लोग इस दृष्टि से अपरिपक्व हैं और रहेंगे। कुछ देशो मे पादरी द्वारा शिकार किया जाना असाधारण बात नहीं है। ऐसा पादरी अच्छे गडरिये का कुत्ता तो बन सकता है पर इजील म वर्णित अच्छा गडरिया नहीं बन सकता। यह देखकर मुझे यह आश्चय हुआ है कि लकडी काटने बर्फ तोडने जसे धधो को छोडकर जो एक काम एक व्यक्ति के सिवाय मेरे सभी साथी नागरिको को—चाहे वे पिता थे या बच्चे—पूरे आधे दिन तक वाल्डन सरोवर पर रोक रख सका है जहा तक मेरी जानकारी है वह मछली पकडने का काम ही है। साधारणतया जब तक बहुत सारी मछलिया उनके हाथ न आ जाए वे अपने को भाग्यवान नहीं मानते अथवा नहीं समझते कि समय का पूरा मुआवजा उन्हे मिल गया है यद्यपि तालाब का दृश्य देखने का अवसर तो उन्हे निरन्तर प्राप्त रहता ही है। मछली मारने की आकांक्षा रूपी कीचड के तली म बठने और उद्देश्य के पवित्र होने तक तो शायद हजारो बार ही उन्हे वहा जाना पडे। पर इसम सन्देह नहीं कि विशुद्धीकरण की यह प्रक्रिया लगातार जारी रहेगी। राज्यपाल और उसकी समिति के सदस्यो को इस सरोवर की हल्की-सी स्मृति है क्योंकि जब वे लडके थे तब मछली पकडने के लिए वहा गए थे, पर अब वे इतने प्रौढ और सम्भ्रान्त बन गए हैं कि मछलियां पकडने नहीं जा

मवत । इसमें अधिक और कुछ ज्यक बारे म व कभी भी नहीं जानेंगे । फिर भी अत समय स्वग जाने की आशा ता व करते ही हैं । यदि विधान मडल कभी वाल्डेन का ध्यान करता है तो बस वहा मछली पकडन क लिए डाल जानवाले काटा की सख्या का नियत्रण करन क लिए हा । लेकिन व काटा मे भी उस काटे क बारे म कुछ नहा जानत जिससे स्वय सराहर का फसाया जाए और जिसपर चारे की जगह विधान को ही चिपका दिया जाए—सम्य जातियो म भी इसी प्रकार भ्रूण मानव विकास करता हुआ शिकारी की स्थिति म स गुजरता है ।

पिछल वर्षों म मैंने बार-बार यह महसूस किया है कि थोडा आत्मसम्मान म गिरे बिना मछली पकडन का काम मैं कर नहीं पाता । बार-बार मैंने मछलिया पकडी हैं । मैंने इस काम म कुशलता प्राप्त की है और अपन बहुतस साथियो की तरह इसके प्रति मुझम एक आन्तरिक झुकाव भी है जा समय-समय पर उभर उठता है । लेकिन जब भी मैंने यह काम किया है मैंने यह महसूस किया है कि यदि मैं मछलिया न पकडता ता अधिक अच्छा हाता । मैं समझता हू यह कहकर मैं गलती नहीं कर रहा हू । प्रभात की प्रथम किरणा की तरह यह एक दबी-दबी-सी सूचना ह । सृष्टि के अधम स्तरा म सम्बन्ध रखनेवाली अन्तवृत्ति मुझम निस्सन्देह मौजूद है फिर भी हर वष क साथ मैं मछियारा उत्तरोत्तर कम हाता जा रहा हू यद्यपि यह भी नहा कि मानवीय भावा की और विवेक की मुझम वृद्धि ही हो रही हा । प्रस्तुत समय ता मैं बिल्कुल भी मछियारा नही रहा हू । लेकिन यदि मुझे फिर किसी उजाड वन म रहना मिल ता मैं एक पक्का मछियारा और शिकारी फिर म बन जाऊगा । इसके अतिरिक्त मास और इस प्रकार क भाजन आदि म एक अनिवाय गन्दगी है । आज मैं समझने लगा हू कि किस भाव म प्रेरित होकर काफी अधिक खच करक भी घर यह प्रयास करता रहता है कि वह प्रतिदिन साफ-सुथरा और प्रतिष्ठित नजर आए और हर प्रकार की दुर्गन्ध से और कुरूपता स दूर रहकर आनन्दप्रद बना रहे । कसाई का मास पकानेवाले नौकर का और महाराज का—इन सबका काम मैंने स्वय हा किया है और मैं ही वह सज्जन रहा हू जिसके लिए यह सब पकाया गया है । इसलिए जा कुछ मैं कह रहा हू वह असामान्य रूप म पूण अनुभव क बाद कह रहा हू । मांसाहार क प्रति मेरी वितृष्णा का व्यावहारिक कारण है उसकी गन्दगी । इसके अतिरिक्त जब मछली का पकडकर साफ करके पकाकर मैं खा चुकता ता मुझे निश्चित रूप लगता कि मेरा पेट भरा नहीं है । म

लगता कि भोजन नगण्य और अनावश्यक रहा है और जितनी कीमत उसको चुकानी पड़ी है उतना लाभ उससे नहीं हो सका है। थोड़ी सी रोटी और कुछ आलू इतना ही काम कर जाते परेशानी भी कम होती और गंदगी भी। अपने बहुतेरे मित्रों की तरह किंतु हो वर्षों तक माँस या चाय या काफी आदि का सेवन मैंने कठिनाई से ही कभी किया। यह इसलिए नहीं कि इनके कुछ दुष्प्रभावों से मैं परिचित हो गया था। बल्कि इसलिए कि इन चीजों को मैं अपनी कल्पना से मेल न बिठा सका। मांसाहार के प्रति वितृष्णा किसी अनुभव का परिणाम नहीं है। वह तो सहज अन्तर्वृत्ति है। निम्न स्तर का जीवन बिताना और कितने ही विषयों में कठिनाइयाँ झेलना मुझे अधिक आकर्षक लगता था। यद्यपि ठीक ऐसा ही मैंने कभी नहीं किया लेकिन अपनी कल्पना की तृप्ति के लिए मैं काफी दूर तक गया। मेरा विश्वास है कि एक प्रत्येक व्यक्ति को जो अपने उच्चतर गुणों अथवा कवि प्रतिभा को सर्वोत्तम रूप में बनाए रखने के लिए व्यग्र रहा है विशेषकर मांसाहार से और किसी भी प्रकार के अत्याहार से दूर रहना पड़ा है। किर्बी और स्पेंस[1] की कृतियों में मैंने पढ़ा है और कृमिशास्त्रियों द्वारा कहा हुआ यह एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि कुछ कीड़े अपनी स्वस्थ स्थिति में खान के शरीरावयवों में मौजूद रहते हुए भी उनका उपयोग नहीं करते। कृमिशास्त्रियों ने यह सामान्य नियम बना लिया है कि सभी कीड़े इस स्थिति में लार्वा की स्थिति की अपेक्षा बहुत कम खाते हैं। पेटू कैटरपिलर जब तितली बन जाता है और पेटू डिम्भ मक्खी बन जाता है एवं या तो वह शहद या किसी अन्य मीठे रस से ही सन्तुष्ट हो जाते हैं। तितली के पंखों के नीचे छिपा उसका पेट उसके लार्वा का ही प्रतिनिधि है। यही वह चीज है जो उसे कृमिभक्षी बनने को आकर्षित करती है। लार्वा स्तर का आदमी भी अधिकांश ऐसा ही होता है। फिर पूरी की पूरी जातियाँ जो मनोराज्य अथवा कल्पना से शून्य हैं सभी लार्वा स्थिति में हैं और उनका विशाल उदर उनका पता खोलता है।

जो हमारी कल्पना को कष्ट न पहुँचाए ऐसा भोजन पकाना और खिलाना अत्यन्त ही कठिन काम है। लेकिन मैं समझता हूँ जब हम शरीर को भोजन देते हैं तो अपनी कल्पना को भोजन देना भी बहुत ही आवश्यक है। दोनों को एकसाथ

[1] कीटाणु के दो लेखक

एक ही मज पर बठना चाहिए। फिर भी शायद ही ऐसा किया जा सके। फलो का मयमित भोजन यदि हम करें तो अपनी भूख पर लज्जित होने की हम जरूरत नहीं है और न ही वह हमारी उच्चतम साधना म बाधक है। लेकिन जैसे ही भोजन म अतिरिक्त मसाला मिलाया कि उसने जहर का काम किया। उत्तम स्वादिष्ट भोजन खाकर रहना उचित नहीं है। शाकाहार हो या मासाहार वही भोजन जिसे अन्य लोग प्रतिदिन ही पकाकर आपको खिलाते हैं यदि उसे ही स्वय अपने हाथो से पकाते हुए आप लोगो को पकड लिया जाए तो आप शर्म से गड उठेंगे। लेकिन जब तक इसके उल्टा नहीं होता तब तक हम सभ्य नहीं हैं। तथाकथित भद्र स्त्री पुरुष हम भले ही हो सच्चे स्त्री पुरुष हम नहीं हैं। निश्चय ही यह सकेत है कि क्या परिवतन लाया जाना है। यह प्रश्न बेकार है कि मासाहार के लिए कल्पना को क्यो तैयार नहीं किया जा सकता। मैं इतने से सन्तुष्ट हूँ कि उसे तैयार नहीं किया जा सकता। मानव मासभक्षी पशु है क्या यह एक कलक ही नहीं है? सच है कि वह बहुत दूर तक दूसरे पशुओ के शिकार पर जीवित रह सकता है और रहता है पर यह एक शैतानियो तरीका है। जो आदमी खरहो का शिकार करने और ममनो को काटने चलता है वह इस बात को अधिक अनुभव कर सकता है। जो व्यक्ति मानव को एक अधिक निर्दोष और भरपूर भोजन तक सीमित रहना सिखाता है वह निश्चय ही इस जाति का उद्धारकर्ता है। मेरा आचरण चाहे जैसा भी क्यो न रहा हो, मुझे इस बात म कोई भी सन्देह नहीं कि अपने उत्तरोत्तर सुधार क्रम म मासाहार का त्याग मानव-जाति के भाग्य का उसी प्रकार एक अनिवाय अंग है जिस प्रकार जगली मानवो ने अधिक सभ्य जातियो के सम्पर्क म आने के बाद एक-दूसरे को खाना छोड दिया।

यदि मानव अपनी प्रज्ञा के मन्दतम पर स्थायी और निश्चित सत्य सकेतो को सुने तो वह अनुमान नहीं कर सकेगा कि किस चरम या कहिए पागलपन की सीमा तक ये सकेत इसे ले जाएगे। फिर भी जैसे जैसे वह अधिक दृढ निश्चय और निरन्तर बनता जाता है वैसे-वैसे ही उसका माग तय होता जाता है। एक स्वस्थ व्यक्ति भी जिस एक दबी-दबी पर असन्दिग्ध आपत्ति का अनुभव करता है वही मानव जाति के तर्कों और रीति रिवाजो पर अन्तत हावी हो जाती है। कोई व्यक्ति ऐसा नहीं जिसने प्रज्ञा का अनुसरण किया हो और उसने उसे विपथगामी न बना दिया हो। इसका परिणाम शारीरिक दुबलता होगा। फिर भी शायद

ही कोई इस परिणाम को अफसोस की बात मान क्योंकि यह तो उच्चतर सिद्धांतो के अनुकूल जीने की बात है। यदि आपके दिन और रात ऐसे बन जाए कि आप उनका सहष स्वागत करें और जीवन फूलो और मधुर गन्धवाली जडियो की तरह एक सुवास छोड़े वह अधिक लचीला, अधिक तारक मण्डित और अधिक अमर बन जाए—तो यही आपकी सफलता है। सारी प्रकृति आपको बधाई देगी और क्षण भर के लिए अपना अभिनन्दन करने का आपका अधिकार होगा। महानतम उपलब्धिया और मूल्य यथोचित मूल्याकन से बहुत दूर रहते हैं। हमे सहज ही सन्देह हो उठता है कि उनका अस्तित्व भी है या नहीं। हम जल्दी ही उन्हे भूल जाते है। पर व सर्वोच्च यथाथ होते है। सम्भवत सबसे अधिक वास्तविक और असाधारण तथ्यो को मानव दूसरे मानव तक पहुचा ही नहीं सकता। मेरे दैनिक जीवन की फसल बहुत कुछ प्रभात और सन्ध्या के रगो जितनी ही अस्पृश्य और अवर्णनीय होती है। वह तो किसी तारे की थोडी-सी धलि है और इन्द्रधनुष का एक खण्ड है जो मेरे हाथ मे आ गया है।

फिर भी जहा तक मेरा सम्बन्ध है मैं कभी असाधारण रूप से कट्टर नहीं बन सका। मैं जरूरत पडने पर कभी-कभी बडे स्वाद से भुना हुआ चूहा खा लेता। मुझे प्रसन्नता है कि मैं इतने दिनो तक शराब के बदले सिर्फ पानी पीकर रहता रहा। क्योकि मैं एक अफीमची के स्वग मे नसर्गिक आकाश को अधिक पसन्द करता हू। मैं प्रसन्नतापूवक हमेशा गम्भीर बना रहना पसन्द करूगा। फिर नशे मे चूर होने के भी अनन्त स्तर हैं। मेरा विश्वास है कि एक विवेकी पुरुष का एक मात्र पेय तो पानी ही है। शराब उतना उत्तम पेय नहीं है। गम काफी का एक प्याला पीकर सुबह की और चाय पीकर सन्ध्या की सम्भावनाओ पर पानी फेर देने के बारे मे क्या कहा जाए! जब मैं उनके लिए लालायित होता हू तब मैं कितना गिर जाता हू! सगीत तक नशा पैदा कर सकता है। प्रत्यक्षत ऐसे मामूली कारणो ने ग्रीस और रोम का विनाश कर दिया था और यही इगलैंड और अमरीका का भी नष्ट कर देगे। सभी नशो मे कौन ऐसा है जो हवा का श्वासो मे भरकर उसमे मस्त होना नहीं चाहेगा? बहुत समय तक स्थूल श्रम करते जाने का यह आपत्तिजनक परिणाम मैंने पाया है कि उसने मुझे सयमशून्य खाने और पीने पर विवश किया है। लेकिन सच कहूं तो आजकल इस बारे मे मैं अपने को कम नियमबद्ध पाता हू। मैं खाने की मेज पर धर्म भावना को लेकर कम ही बैठता हू और अपनी

वा की आकांक्षा नहीं करता। यह इसलिए नहीं कि मैं पहले की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान बन गया हूं बल्कि—मैं आत्मस्वीकार कर लूं चाहे इस कितना भी बुरा क्यों न समझा जाए —इसलिए कि आयु के साथ मैं अधिक ग्रामीण और लापरवाह हो गया हूं। जैसाकि कविता के बारे में माना जाता है शायद ऐसे प्रश्नों का जवानी में ही हम सर्वाधिक स्वागत करते हैं। मेरा आचरण यहां कहीं नहीं है बल्कि मेरी विचारणा यहां प्रस्तुत है। फिर मैं अपने को उन विशेषाधिकारप्राप्त लोगों में से मान ही नहीं सकता जिनके बारे में वेदों में कहा है जिसका सर्वव्यापी सर्वोच्च परमात्मा में सच्चा विश्वास हो वह जो भी सामने आ जाए उसे ही खा सकता है। अर्थात वह यह पूछने के लिए विवश नहीं है कि भोजन के लिए क्या है अथवा उसे किसने पकाया है। लेकिन जैसाकि एक हिंदू व्याख्याकार ने स्पष्टीकरण दिया है वेदों ने ऐसे पुरुषों के इस विशेषाधिकार को विपत्ति के समय तक के लिए सीमित किया है।

कौन है जिसने कभी-कभी उस भोजन में अवर्णनीय आनंद प्राप्त न किया हो जो उसने भूख में अग्नि होकर नहीं खाया था? यह सोचकर मैं रोमांचित हो उठता हूं कि स्वाद की एक साधारण स्थूल अनुभूति विशेष को यह श्रेय प्राप्त है कि उसने मुझे एक प्रत्यक्ष ज्ञान कराया स्वाद ने मुझे एक प्रेरणा दी एक पहाड़ी पर खाए बेरों ने मेरी प्रज्ञा को भी भोजन दिया। थेंग-सू[1] ने कहा है जब आत्मा स्वयं अपनी स्वामी नहीं होती तब व्यक्ति देखता है और कुछ भी नहीं देखता, वह सुनता है पर कुछ भी नहीं सुनता वह खाता है पर भोजन का स्वाद महसूस नहीं करता।' जो व्यक्ति भोजन का सही स्वाद महसूस कर सकता है वह कभी भी पेटू नहीं बन सकता जो महसूस नहीं कर सकता वह इसके सिवाय कुछ और नहीं हो सकता। एक पवित्रतावादी (प्यूरिटन) अपना भूरा सख्त रोटी को उसी लालसा के साथ खा सकता है जिससे कि एक उच्चाधिकारी एक कछुए को खाता है। मुंह में पहुंचा हुआ भोजन व्यक्ति को भ्रष्ट नहीं करता बल्कि लालसा भ्रष्ट करती है जिससे साथ वह उसे खाता है। न किस्म और न ही मात्रा बल्कि ऐंद्रिय स्वाद निष्ठा इसे पतित करता है जबकि खाया हुआ भोजन हमारे अन्दर के पशु के पोषण के लिए नहीं होता न ही वह हमारे आध्यात्मिक

---

1 एक चीनी दार्शनिक।

जावन की प्रेरणा के लिए होता है कि उन कीड़ों का भोजन बनने के लिए होना ये जो हमपर हावी हो जाते है। अगर एक शिकारी कीचड़-कछुआ और छछूंदरों के और ऐसा ही अन्य जंगली चीजों के स्वाद के वश में है तो एक उच्चवर्ग की महिला बछड़े के पैर से बनाई गई जेली के अथवा समुद्र पार की सारडिन मछली के पीछे पागल है। दोनों की स्थिति समान है। शिकारी तालाब की ओर जाता है तो वह स्त्री अपने परिरक्षक बर्तन की ओर। आश्चर्य तो यह है कि वे आप और मैं यह गंदा पशुओं का सा खान-पान और पीने मात्र का जीवन जीते कैसे है!

हमारा पूरा जीवन इतना नैतिक है कि स्तम्भित करता है। वहा एक क्षण के लिए भी पुण्य और पाप के बीच संधि नहीं होती। अच्छाई ही वह लगा हुआ धन है जो कभी मारा नहीं जाता। धरती के चारों ओर गूंजनेवाली वीणा ध्वनि में इसीपर बल होता है और उसका यही तत्त्व हमें रोमांचित करता है। वीणा विश्व की बीमा कम्पनी की वह फेरीवाली है जो उसके कानूनों को बेचती फिरती है और बदले में थोड़ी-सी अच्छाई की कीमत ही बस हमें चुकानी पड़ती है। यद्यपि अंततः यौवन उदासीन हो जाता है पर विश्व के नियम कभी विरक्त नहीं होते। वे सदा ही अर्थात् भावुक लोगों के पक्ष में रहते हैं। मधुर पश्चिमीय पवन की वाणी सुनिए। उसमें निश्चय ही एक फटकार छिपी है और वह भाग्यहीन है जो उसे नहीं सुन सकता। हम एक तार को छेड़ नहीं अथवा एक कदम आगे बढ़ें नहीं कि आकर्षक नीति-वचन आकर हमपर चिपक जाते हैं। कितने ही कर्णकटु स्वर यदि उनमें कुछ दूर पर सुने जायें तो संगीत जैसे सुन पड़ते हैं और यह हमारे जीवन की तुच्छता पर एक गर्वपूर्ण मधुर व्यंग्य है।

हम अपने अन्दर एक पशु को उपस्थित पाते हैं जो उतना ही जागरित मिलता है जितनी कि हमारी उच्चतर प्रकृति गहरी नींद में सोयी होती है। यह एक रेंगने वाला ऐन्द्रिय जंतु है जिसको शायद पूरा तरह समाप्त नहीं किया जा सकता और उसी तरह जैसे कि जीवन और स्वास्थ्य में से भी उन कृमियों को खतम नहीं किया जा सकता जो हमारे शरीर में भरे हैं। हम इस जन्तु से भाग सकते हैं पर उसके स्वभाव को बदल नहीं सकते। मुझे आशंका है कि इसका अपना एक स्वास्थ्य है जिससे वह स्वस्थ रहता है। इसीलिए हम भले-चंगे तो रह सकते हैं फिर भी जरूरी नहीं कि पवित्र भी हों। पांच दिन हुए एक सूअर का निचला जबड़ा मुझे मिला। सफेद और मजबूत दांत उसमें जड़े थे। इससे मुझे संकेत मिला कि आध्यात्मिक से

और आप सबके लिए स्वयं गधा नहीं बनना
नहीं तो मानव-सुअरों का रेवड़ ही नहीं
बल्कि वह शैतान भी है जिसने उन्हें भयानक क्रोध में भरा है
तथा और भी बदतर बना दिया है।'

यद्यपि ऐन्द्रियता कितने ही रूप ग्रहण करती है पर सभी रूपों के पीछे चीज एक ही है। आदमी खाता हो या पीता हो, सम्भोग करता हो या सोता हो वह एक ही प्रकार की इन्द्रियपरायणता से यह सब करता है। ये सब एक ही लालसा के विभिन्न रूप हैं। व्यक्ति को इनमें से किसी एक काम में लिप्त देख लिया जाए तो यह निर्णय किया जा सकता है कि व्यक्ति विशेष कितना अधिक ऐन्द्रियक है। अपवित्र पवित्रता को न सहन कर सकता है न उसके साथ अपना मेल बिठा सकता है। जब रेंगनेवाले जन्तु के बिल के एक द्वार पर आक्रमण किया जाता है तब वह स्वयं को दूसरे द्वार से प्रकट कर देता है। यदि आप ब्रह्मचारी बनना चाहें तो आपको संयमी बनना होगा। ब्रह्मचर्य क्या है ? यदि व्यक्ति ब्रह्मचारी है तो वह कैसे जाने कि वह क्या है। वह नहीं जानेगा। हमने इस गुण के बारे में सुना है पर हम नहीं जानते कि यह क्या है। हमने जो अफवाह सुनी है उससे मिलती-जुलती बात हम कह देते हैं। श्रम करने से बुद्धिमत्ता और पवित्रता आती है। आलस्य से अज्ञान और ऐन्द्रियता। विद्यार्थी के मन का आलस्य ही उसकी इन्द्रियपरायणता है। एक गन्दा आदमी सामान्यतः आलसी होता है। वह अँगीठी के पास बैठता है, सूर्य उसपर सीधा चमकता है। वह बिना थके खाली बैठा रहता है। यदि आप गन्दगी से और सब प्रकार के पापों से बचना चाहें तो लगन से काम करें। फिर चाहे वह घुड़साल साफ करने का ही काम क्यों न हो। प्रवृत्ति को वश में करना कठिन है लेकिन उसे वश में किया ही जाना चाहिए। यदि आप एक असंस्कृत व्यक्ति की अपेक्षा अधिक पवित्र नहीं हैं यदि आप उससे अधिक अपनी वासनाओं का निग्रह नहीं करते, यदि आप उससे अधिक धार्मिक नहीं हैं तब आपके ईसाई होने का क्या लाभ है ? मैं धर्म की कितनी ही प्रणालियों से परिचित हूँ जो असंस्कृत मानी गई हैं और जिनके अभिनव पाठक को लज्जा से भर देते हैं किन्तु चाहे वे मात्र पूजा आदि तक ही सीमित क्यों न हों वे उसे नये प्रयास करने की प्रेरणा देते हैं।

इन सब बातों को कहने में मैं हिचक रहा हूँ, लेकिन विषय के कारण नहीं

क्योंकि मर न न कितने अश्लील हैं इस बात की मुझे ज़रा भी परवाह नहीं है बल्कि इसलिए क्योंकि अपनी अपवित्रता को प्रकाश दिए बिना मैं उसक बारे म कुछ भी नहा बना सकता। हम एक प्रकार की ऐंद्रियता के बार म खुलकर बातें कर त हैं पर दूसरी क बारे म चुप रहत हैं। हम इतन पतित हैं कि मानव प्रकृति के आवश्यक कृत्यो क बारे मे भी सहजता मे बातें नहीं कर सकते। प्रारम्भिक युगा म कुछ देशा म हर कृत्य की आदरपूवक चर्चा की जाती था और उस कानून स नियमित किया जाता था। हिन्दू विधि निर्माता के लिए कोई भी बात वह आधुनिक रुचि क कितना भी विरुद्ध क्या न लगे उपेक्षणीय या नगण्य नहीं थी। वह खान पीन सभोग करन और लघुशका तथा दीघशका करने-जैसी बाता के भी नियम बनाता है। वह, जा तुच्छ है उस महत्त्व दता है और इन बाता का मामूली बनाकर इनसे गलत रूप म बचना नहीं।

हर व्यक्ति अपने शरीर रूपा मन्दिर का निमाता है। इसम वह अपने इष्ट की पूजा विशुद्ध अपनी पद्धति से करता है। इसके स्थान पर पत्थरो पर छेनी चलाकर वह इस निमाण म बच नहो जाता। हम सभी शिल्पी और चित्रकार है। मास रक्त और हड्डिया ही हमारी सामग्री हैं। हर उच्चता मानव के रूपाकार को तत्काल सम्कृत करना आरम्भ कर दती है और हर हीनता और ऐंद्रियता उसे पशुवत् बनाती हैं।

सितम्बर की एक सन्ध्या क समय दिन भर के कठोर श्रम के बाद जॉन फामर अपन द्वार बठा है। उसका मस्तिष्क अब भी कम अधिक अपन धन्धे क बार म ही माच रहा है। नहा धोकर वह अपने बौद्धिक व्यक्तित्व का मनारजन करन बठ गया। सन्ध्या कुछ ठण्डी थी और उसके कुछ पडोसी पाला पडन की आशका कर रहे थ।

था। उसीकी तरह रुक-रुककर वह कमरे की दीवारों पर भी चढ़ जाता। एक दिन जब मैं बेंच पर कोहनी टेके लेटा था, वह मेरे कपड़ों पर और मेरी बांह पर चढ़कर उस कागज के चारों ओर चक्कर लगाने लगा जिसमें मेरा खाना लिपटा था। मैंने खाना अपने से सटाए रखा। मैं उससे बचाता रहा और उसके साथ आंख-मिचौनी खेलता रहा। अंत में मैं पनीर का एक टुकड़ा अपने अंगूठे और उंगलियों के बीच में थामे रहा। वह आया, मेरे हाथ पर बैठकर उसने उसमें मुंह मारा, मक्खी की तरह अपना पंजा और चेहरा साफ किया और चला गया।

एक कौए ने मेरे सायबान में घोंसला बना लिया और रॉबिन ने घर के सामने खड़े चीड़ के पेड़ पर। जून में तीतर, जो बड़ा ही शर्मीला पक्षी है, मुर्गी की तरह कुड़कुड़ाता हुआ और अपने बच्चों को पुकारता हुआ उन्हें घर के पिछवाड़े के जंगल में लाकर खिड़कियों के पास से गुजरता। अपने पूरे व्यवहार में स्वयं को वह इन जंगलों की मुर्गी सिद्ध करता था। जैसे ही आप पास पहुंचते हैं, मां का इशारा पाकर बच्चे अचानक बिखर जाते हैं, जैसे कि एक भोंका उन्हें उड़ा ले गया हो। सूखे हुए पत्तों और टहनियों से वे इतने एकरूप हैं कि यात्री उनके पास होने की आशंका से मुक्त इन बच्चों के समूह के बीच ही अपना पैर रख दे और फलतः बड़ी चिड़िया के उड़ने की सर-सर, उसकी चीख-पुकार को और चूं-चूं की ध्वनि को सुनकर ही असलियत को जान सके। तभी वह देखे कि उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए तीतर अपने पंखों को फड़फड़ा रहा है। फिर तीतर पंखों को उठाकर आपके चारों ओर इस तरह चक्कर काटेगा कि कुछ क्षणों तक तो आप यह समझ ही न सकेंगे कि यह कौन-सा जंतु है। बच्चे तीतर स्थिर और सीधे रूप में बैठते हैं, अपना सिर पत्तों के नीचे डालते हैं और कुछ दूरी से दिए जानेवाले अपनी मां के निर्देशों का ध्यान ही बस वे रखते हैं। दुबारा यदि आप उनके पास पहुंचेंगे तो वे भागेंगे नहीं और स्वयं को प्रकट नहीं करेंगे। उन्हें बिना पहचाने आप उनपर अपना पैर रख सकते हैं अथवा एक मिनट के लिए उनपर अपनी दृष्टि जमा सकते हैं। इस समय मैंने उन्हें अपने खुले हाथ पर बिठाया है। वे अपनी मां और अपनी अंतर्वृत्ति के प्रति ईमानदार रहते हुए बिना डरे या कांपे बस वहां बैठ गए हैं। उनकी यह अंतर्वृत्ति इतनी पक्की है कि एक बार जब मैंने उन्हें पत्तों पर दुबारा रख दिया तो उनमें से एक अचानक एक तरफ को लुढ़क पड़ा। दस मिनट बाद भी मैंने उसे ठीक उसी स्थिति में पड़ा हुआ पाया। वे अन्य पक्षियों के बच्चों की तरह

अनुभव से उत्पन्न नहीं होते बल्कि चूजों में भी अधिक विकसित और जन्मजात होते हैं। उनकी सूरत गम्भीर आत्मा की और किन्तु सारी अभिव्यक्ति बड़ी ही स्मरणीय होती है। लगता है जैसे सारी बुद्धि ही उनमें प्रतिबिम्बित हो गई हो। लगता है जैसे सिर्फ शैशव की पवित्रता ही उनमें नहीं है बल्कि अनुभव से प्राप्त स्पष्ट विवेक भी है। [illegible] जन्म के साथ उनकी आँखें पैदा नहीं हुई थीं। वह तो उनमें प्रतिबिम्बित ज्ञानवान आकाश का [illegible] है। [illegible] पैदा नहीं होता। यात्री को ऐसे पारदर्शी कुएँ में झाँकना अवसर नहीं मिलता। [illegible] अथवा [illegible] शिकारी [illegible] ही समय बिना [illegible] को मार डालता है और वे भाँति बच्चे किसी भी पशु या पक्षी का शिकार बनने के लिए बच जाते हैं। अथवा वे उन सूखे पत्तों में लीन हो जाते हैं जिनसे वे बहुत अधिक साम्य रखते हैं। कहा जाता है कि किसी मुर्गी द्वारा पाले जाने पर भी बाज के उपस्थित होते ही वे तत्काल बिखर जाते हैं और खो जाते हैं क्योंकि उन्हें पुकार इकट्ठा करनेवाली माँ की पुकार अब उनके कानों में नहीं पड़ती। [illegible] मुर्गियाँ [illegible] यही थे मेरे चूजे।

मैंने खुदाई करके साने का साफ भूरा पानी एक कुएं जैसे गहरे गढ़े में इकट्ठा कर लिया था। एक बाल्टी भर पानी पूरे ताल का गड़गड़ाए बिना मैं इसमें से ले लिया करता था। गर्मियों में सरोवर का पानी तो बहुत गर्म हो जाता था। मैं पानी लेने के लिए ही प्रतिदिन यहां आया करता था। जंगली मुर्गी इधर भी अपने बच्चों को ले आया करती थी। दलदल में वह कीड़ों को खोजती बच्चों के एक फुट ऊपर से उड़ती हुई किनारे तक पहुंच जाती और बच्चे उसके नीचे पंक्ति बनाकर दौड़ते। जब वह मुझे देख लेती तो बच्चों को छोड़कर मेरे चारों ओर चक्कर पर चक्कर लगाती चार या पांच फुट दूरी तक आ जाती और पंखों और टांगों को टूटा हुआ सा प्रदर्शित करके मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती। उधर बच्चे उसके निर्देशानुसार घोंसे में घूम घूमकर तारस्वर में चीं-चीं करते इकहरी पंक्ति में दलदल में होकर आगे बढ़ जाते। अथवा कभी कभी मुर्गी को तो मैं देख न पाता पर उनके बच्चों की चूं-चूं सुनता। वहां भी जंगली फाख्ता सोते के जल पर बैठती अथवा सफेद चीड़ की कोमल डालियों पर एक से दूसरी पर होती हुई मेरे सिर पर से उड़ती। सबसे नजदीक वाली टहनी पर ऊपर से नीचे की ओर दौड़ती हुई लाल गिलहरी विशेष रूप से परिचित और उत्कंठित दीखती। किसी आकर्षक स्थल पर जरा कुछ अधिक देर आप बैठिए और जंगल के सभी रहनेवाले एक एक करके अपना रूप आपको दिखा जाएंगे।

कुछ कम शान्त किस्म की घटनाएं भी मैंने यहां देखी हैं। एक दिन जब मैं लकड़ियों की ढेरी या कहिए जड़ों की ढेरी के पास पहुंचा तो मैंने दो बड़े चींटों को एक लाल और दूसरे उससे भी बड़े लगभग आध इंच लम्बे काले चींटे को भयानक रूप में गुत्थम-गुत्था होते देखा। एक बार दूसरे को पकड़कर व छूटने नहीं देते संघर्ष करते हैं मल्लयुद्ध करते हैं और लकड़ी के टुकड़े पर ही निरंतर उनका पलटी करते रहते हैं। दूर तक देखने पर मैं आश्चर्यचकित रह गया कि लकड़ियां ऐसी ही योद्धाओं से ढकी हुई थीं। यह द्वन्द्वयुद्ध नहीं था। यह तो एक संग्राम था जो चींटों की दो जातियों में चल रहा था। लाल चांटे वाले चींटों से जा भिड़ते थे और अक्सर दो लाल तो एक काला। इन मिरमिडनों[1] की सेनाओं से

---

1. ग्रीस के थिसेली का एक जाति जिसने ट्राय के युद्ध में एकिलीज़ के अधिनायकत्व में भाग लिया था।

लकडिया व मरे ढेर की सभी पहाडिया और घाटिया भरी था और लाल और काल दोना के ही मृतक और मरणासन्न धरती पर बिखरे थ। यही एक युद्ध है जिसे मैंन कभी भी देखा है और यही वह युद्धभूमि है जिसपर उस समय मैं घूमा हू जबकि युद्ध जोरा पर था। यह एक परस्पर विनाशक युद्ध था। एक ओर थे गणतन्त्रवादी लाल और दूसरी ओर साम्राज्यवादी काले चीटे। हर तरफ वे एक सहारक द्वन्द्व म जुटे थे। फिर भी जरा भी तो शोर नही हो रहा था। फिर मानव-सनिक इतना दढता से लडते भी तो नही। एक जोडे को मैंन देखा। दोना लकडी के टुकडा के बीच एक धप से चमकती घाटी मे बुरी तरह परस्पर गुथे हुए थे। दोपहर के समय उन्होंने युद्ध आरम्भ किया और सूरज ढलने तक या तो लडते रह या मर गए। छोटे लाल सनिक ने पाप की तरह शत्रु की छाती से अपने को चिपका लिया था। कितनी बार वह उस मदान पर लुढकता-पुढकता था पर एक पल के लिए भी थूथनी के पास के उसके एक स्पर्श शृग (फीलर) पर चोट करने से नही रुकता था। एक स्पश शृग को ता वह पहले ही काटकर फेंक चुका था। काला अधिक बलवान चीटा उस इधर स उधर पटक रहा था। और बहुत पास आकर मैंने देखा कि वह उसके कई अगा को काट भी चुका था। व बुलडागा से भी अधिक खूखारी क साथ लड रहे थे। उनमे से कोइ भी पीछे हटने के लिए तयार नही था स्पष्ट ही उनका नारा था, 'विजय पा लो या मर जाओ। इसी बीच इस घाटी की ओर पहाडी की तरफ से एक अकेला चीटा आ निकला। स्पष्ट ही वह जोश से भरा था। या तो उसन अपन शत्रु को मार डाला था या अभी तक युद्ध म हिस्सा ही नही लिया था। दूसरी बात ही ठीक लगती थी क्योकि उसका कोई भी अ टूटा हुआ नहा था। उसकी मा ने शायद उस यह आज्ञा देकर भेजा था कि या त जीतकर लौटना या मरकर। शायद यह कोई ऐकिलीज था जिसने अलग रहकर अप क्रोध को पाला था और अब अपन पेट्रोक्लस[1] को बचाने के लिए या उसका बदला लेने क लिए चला आया था। दूर खडे होकर उसन इस असमान-द्वन्द्व को देख क्योकि काले चीटे लाल स दुगन बडे थे। वह तेज चलकर पास आया। उन योद्धाओ म आध इच की दूरी के भीतर जमकर खडा हुआ और अवसर देखकर काले सनि की ओर उछल पडा। शत्रु की सामनवाली दायी टाग की जड पर आघात करः

[1] एकिलीज का एक साथी

उसने शुरू कर दिया। प्रत्याघात के लिए उसका अपना कौन सा अंग चुना जाय यह उसने शत्रु पर छोड़ दिया। इस प्रकार तीन योद्धा अपने जीवन के लिए लड़ रहे थे। एक नया आकर्षण प्रस्तुत हो गया था जिसने पिछले सभी द्वन्द्वों और युद्धों को लज्जित कर दिया था। इसी बीच मैंने देखा कि दोनों पक्षों के अपने-अपने बाजे भी थे जो विशेष लकड़ियों पर जमे थे। वे सुस्त पड़े सैनिकों में जोश भरने और मरनेवाले योद्धाओं को प्रसन्न करने के लिए अपनी अपनी राष्ट्रीय धुनें बजा रहे थे। मुझे भी यह देखकर वैसा ही जोश चढ़ आया जैसा कि तब चढ़ता जब वे सब मानव होते। जितना भी आप सोचेंगे दोनों के बीच अन्तर कम प्रतीत होगा। निश्चय ही यदि अमरीका के इतिहास में नहीं तो कम से कम कानकाड के इतिहास में तो किसी भी ऐसे युद्ध का उल्लेख नहीं मिलता जो लड़नेवालों की संख्या की दृष्टि से या उनके द्वारा प्रदर्शित, देशभक्ति और वीरता की दृष्टि से इस युद्ध का क्षण भर भी मुकाबला कर सके। संख्या और संहार को देखें तो यह या तो आस्टरलिट्ज[1] का युद्ध था या ड्रेसडेन[2] का। कानकाड का युद्ध[3]! देशभक्तों के पक्ष के दो मरे और लूथर ब्लानचर्ड घायल हुआ। यहाँ तो हर चींटी एक बटरिक थी। गोलियाँ चलाओ भगवान के लिए गोलियाँ चलाओ!' और हजारों ने डेविस और होसमर वाला भाग्य पाया। उनमें एक भी किराये का टट्टू नहीं था। मुझे कोई सन्देह नहीं कि हमारे पूर्वजों की तरह ही ये भी एक सिद्धान्त के लिए लड़ रहे थे। इनका युद्ध चाय पर तीन पेनी का कर छुड़ाने के लिए नहीं लड़ा जा रहा था। जो इस युद्ध में सम्बन्धित थे उनके लिए इस युद्ध का परिणाम उतना ही महत्त्वपूर्ण और स्मरणीय होगा जितना कि कम से कम बंकरहिल[4] के युद्ध का हुआ था।

ये तीन जवान जिनका मैंने विशेषरूप से वर्णन किया है लकड़ी के जिस टुकड़े पर लड़ रहे थे उसे मैं अपने घर ले आया। उसे मैंने अपनी खिड़की की चौखट पर एक गिलास से ढककर रख दिया जिससे कि मैं इनके युद्ध का शेष देख सकूँ। एक माइक्रोस्कोप को पहले लाल चींटे के ऊपर टिकाकर मैंने देखा कि यद्यपि वह शत्रु की

[1] मोराविया के एक नगर में नेपोलियन और आस्ट्रिया और रूस के बीच लड़ा गया युद्ध
[2] १८१३ में नेपोलियन के विरुद्ध लड़ा गया युद्ध
[3] अमरीका के स्वतन्त्रता संग्राम के आरम्भ में लड़ा गया युद्ध
[4] १७७५ में हुए स्वतन्त्रता समर का एक युद्धस्थल